प्रकाशक :
मंत्री, अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ,
राजघाट, काशी

●

पहली बार : ५,०००
मार्च, १९६०
मूल्य : दो रुपया

●

मुद्रक :
पं० पृथ्वीनाथ भार्गव,
भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, वाराणसी

प्रकाशकीय

नेड की यह करुण आत्मकथा हमारे मानव-समाज के उस अंग की करुण कथा है, जिसके रोम-रोम से एक ही ध्वनि निकलती है—'ऐसा भी क्या जीना !'

कुष्ठ-रोगियों के अनुभवी सेवक पेरी वर्गेस की यह अमर रचना Who Walk Alone (हू वाक एलोन) पत्थर को भी द्रवित करनेवाली है। इसमें कुष्ठ-रोग से पीड़ित उन अभागे भाई-बहनों के जीवन की, सुख-दुःख की और छटपटाहट की कहानी है, जिन्हें समाज छूना भी नहीं चाहता, जिन्हें अपने पास भी फटकने नहीं देना चाहता और जिनकी छाया से भी वह मुँह सिकोड़ता है!

समाज से निर्वासित होकर, समाज से ठुकराये जाकर भी वे जीवित रहते हैं, रहना चाहते हैं, इसका क्या रहस्य है, इसकी झाँकी हमें इस पुस्तक के पृष्ठ-पृष्ठ में मिलेगी ।

महारोग से पीड़ित ये असंख्य भाई-बहन हमारी सहानुभूति और करुणा, दया और उदारता के पात्र हैं । इनकी सेवा मानवता की सर्वोत्तम सेवा में से एक है।

हमारा विश्वास है कि इस आत्मकथा से हमारे देशवासियों का ध्यान महारोग की इस भयंकर समस्या की ओर आकृष्ट होगा और ईसा, गांधी जैसे महापुरुषों के चरण-चिह्नों पर चलकर कुछ महान सेवक इस उपेक्षणीय सेवा-क्षेत्र की ओर आकृष्ट होंगे ।

रोग-शैया पर पड़े हुए इसके लेखक ने हमें इसके अनुवाद की सहर्ष अनुमति प्रदान की, इसके लिए हम उनके आभारी हैं । वर्गेस दम्पति का अभी हाल में मिला ईसा-जयन्ती का स्नेहिल सन्देश हमें उनके दया और करुणा से ओतप्रोत हृदय की अद्भुत झाँकी कराता है ।

हम समझते हैं कि कुष्ठ-सेवा के क्षेत्र में यह अमर रचना महत्त्वपूर्ण योगदान करेगी ।

वसन्तोत्सव, २०१६
१२ मार्च, १९६०

अनुक्रम

जीवन-संगिनी कोरा

को

कुष्ठ-रोगियों की सेवा में

जो मेरा साथ देती हैं

और

जिसने यह आग्रह किया कि

यह कथा अवश्य कही जाय !

लेखक का निवेदन

यह एक अमेरिकन सैनिक की कहानी है। फिलीपाइन टापुओं में स्पेन के साथ अमेरिका का जो युद्ध हुआ था, उसमें वह एक सैनिक के रूप में गया था। वहाँ से स्वदेश लौटने के कई वर्ष वाद उसे कोढ़ दिखाई दिया। इस दुर्भाग्य ने केवल उसीको नहीं सताया, वरन् उस समय के अमेरिकन सैनिकों में से तीस से भी अधिक आदमी फिलीपाइन टापुओं के कूलियन या सेवू के कोढ़िस्तानों में या अमेरिका के लूजियाना-राज्य के कुष्ठालय में वीमारों के तौर पर रहे थे।

भाई नेड का वृत्तान्त मैंने केवल इसीलिए पेश किया है कि मैं उसे अच्छी तरह जानता था। दूसरा कारण यह है कि इस रोग से संघर्ष करने का इसका काम पूरा हो चुका है और अव वह इस रोग से लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हो चुका है। किन्तु मुख्य कारण तो यह है कि इस रोग से आक्रान्त हो जाने पर उस भयानक संसार में प्रवेश करने के कारण जिस नयी परिस्थिति के साथ उसे संघर्ष करना पड़ा और उसमें उसने जो विजय प्राप्त की, वह मानव-जाति के इतिहास की एक अद्भुत वीर-गाथा है, ऐसा मुझे लगा। मैं ऐसे वहुत से अमेरिकन योद्धाओं को तथा अन्य वीसियों लोगों को व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ, जिन्होंने अत्यन्त निराशाजनक परिस्थितियों में पहुँचने पर भी रोगग्रस्त होने पर इस नये संसार में नेड के समान ही वहादुरी के साथ अपना जीवन विताया है। इनमें से कितनों ही को नेड के जितना या इससे भी अधिक नुकसान उठाना पड़ा है। कितनों ही की गृहस्थी वड़ी अच्छी जम गयी थी और उन्हें अपनी स्त्रियों तथा वच्चों से विछुड़कर आना पड़ा था।

यह पुस्तिका भाई नेड की स्मृति को अर्पित है। किन्तु उनके साथ-साथ यह

उन सभी को अर्पित है, जो दुर्भाग्य से मनुष्य पर आनेवाले इस अत्यंत दुःखप्रद संग्राम में अकेले हाथों लड़े हैं या अब भी लड़ रहे हैं। नेड के जीवन के जिन प्रसंगों का वर्णन मैंने यहाँ किया है, वे अधिकांश में उन्हीं पर गुजरे हैं। किन्तु बहुत थोड़े प्रसंग उन दूसरे जीवित और मेरे परिचित व्यक्तियों के जीवन में से भी इसमें जोड़ दिये गये हैं, ताकि श्री नेड तथा इन दूसरे व्यक्तियों को भी कोई न पहचानें; क्योंकि वे अज्ञात बने रहना चाहते हैं।

जीवित व्यक्तियों के असली नाम देने से उनके जीवन और भविष्य पर अनिष्ट प्रभाव पड़ने की आशंका होती हैं। इसलिए उनके नाम बदल दिये हैं। किन्तु पुस्तक को अधिक काल्पनिक और अद्‌भुत बनाने के लिए उनकी वास्तविकता में फेरफार नहीं किया है। इसमें उल्लिखित सभी खास-खास बातें सही और सच्ची हैं।

पुस्तक आत्मकथा की भाषा में लिखी गयी है। यह इसलिए कि भाई नेड लैंगफर्ड, उनके कुत्ते, उनका मकान, उनका कारोबार, जिस झण्डे को उन्होंने अपनी सेवाएँ अर्पित कीं, उसीकी छाया में अपने को विसर्जन कर देने की उनकी अभिलाषा और शिकारों में मारे हुए उनके तमाम जानवर ये सब मेरे लिए इतने सच्चे और प्रत्यक्ष हैं कि जितने हो सकते हैं। एक दिन वह और उनके साथी ग्राण्ट हाथीघास की बीड से तीन जंगली सुअर मारकर लाये, तब मैं भी उनके साथ था। शिकार के शौकवालों में आम तौर पर जो उत्साह, जोश और उमंगें होती हैं, वह उनकी रग-रग में थीं। नेड अपने पिता के बारे में कहा करते थे कि वे एक मर्द आदमी थे। यही नेड के बारे में भी कहा जा सकता है।

× × ×

पिछले पन्द्रह वर्षों से मेरा सारा समय कोढ़ी स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों के काम में जा रहा है। इस सम्बन्ध में दो महत्त्वपूर्ण प्रश्नों की तरफ मेरा ध्यान

आर्कपित हुआ है। एक तो रोग पर पूर्ण विजय पाने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान करने की जरूरत और दूसरा यह कि महारोगी भी मनुष्य ही हैं, यह ध्यान में रखते हुए उनकी रहन-सहन, उनकी जरूरतें और उनकी विकसित या विकास करने योग्य शक्तियों, उनकी सँभाल, और खास तौर पर उपचारों में जो सुधार हो रहे हैं, उनसे उनके पुनः अच्छे-चंगे होने की आशा—आदि का महत्त्व।

रोग की दृष्टि से कोढ़ का विवेचन करना डॉक्टरों का काम है। इस पुस्तक में मेरा यह प्रयास रहा है कि मैं पाठकों को कोढ़ीवास में ले जाकर उन्हें दिखाऊँ कि वहाँ भी हर्ष और शोक हैं, वाहर की अपेक्षा भिन्न प्रकार का, किन्तु जीवन है सचमुच और पूर्ण जीवन होता है। मृत्यु, नहीं। किसी समय इन लोगों को कानून की दृष्टि से सचमुच—मरे हुए—मान लिया गया था। यूरोप में यह रूढ़ि थी कि जिसे कोढ़ हो जाता, मंदिर में जाकर उसका श्राद्ध किया जाता। आज तो यह आशा पैदा हो गयी है कि महारोगी को उपचार के लिए कुछ समय अलग रखने के वाद रोगमुक्त होने पर उसे पुनः नीरोगी समाज में सम्मिलित किया जा सकता है।

रोग से आक्रान्त अनेक स्त्री-पुरुषों से मेरा परिचय है। इसलिए मैं जानता हूँ कि यह संकट किस प्रकार एकाएक और अकल्पित रीति से मनुष्य पर आ जाता है। इस रोग में वर्ण, वर्ग और राष्ट्र का कोई भेदभाव नहीं है। वगैर पूर्व-सूचना के अचानक यह आक्रमण करता है और इसके शिकार को अपना धन्धा वगैरह छोड़ना पड़ता है। वढ़ई, कारीगर, कहार, वकील, शिक्षक और खुद डॉक्टर भी इसके शिकार हो जाते हैं। यदि स्त्रियों को होता है, तो उन्हें उनके पतियों से अलग करना पड़ता है और पुरुषों को होता है, तो पत्नियों से अलग करना पड़ता है। वच्चों को माता-पिता से और माता-पिता को वच्चों से अलग करना पड़ता है। यह रोग मनुष्य को कितना निराश और पागल तक कर देता है, सो

मैं जानता हूँ। इस निराशा में से निकलकर फिर दिमाग को ठिकाने लाने में तथा जो सुख और सन्तोष जीवन म प्राप्त करने के लिए मनुष्य सदा यत्नशील रहता है, उसे नवीन जीवन में प्राप्त करने के लिए मनुष्य को अपने साथ कितना युद्ध करना पड़ता है, इसका अवलोकन मैंने अनेक के जीवनों में किया है। इसे देखकर इन रोगियों की वहादुरी के प्रति मेरे दिल में वड़ा आदर है।

मैं जिन-जिन कुष्ठालयों में गया हूँ, वहाँ के विशेषज्ञों और संचालकों ने वगैर किसी संकोच अथवा विलम्ब के मेरे सामने वे सारे प्रश्न रख दिये हैं, जो उन्हें परेशान करते रहे हैं। इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। किन्तु इससे भी अधिक आभारी मैं उन रोगियों का हूँ, जिन्होंने अपने ऊपर तथा अपने कुटुम्बीजनों के ऊपर इस रोग के कारण गिरे हुए भार के वारे में निःसंकोच भाव से वातें की हैं।

●

ऐसा भी क्या जीना !

एक अजीब बात है कि पुराने गिर्जाघरों के खण्डहरों को देखकर लोगों को अलौकिक स्फूर्ति होती है, किन्तु मनुष्यों के खण्डहरों को देख-कर ऐसा कुछ नहीं लगता।

—चेस्टरटन

चरिता

: १ :

मुझे जरा भी पता नहीं कि जो चीज मेरे जीवन का अंत करनेवाली थी, वह कब और कहाँ पैदा हुई। पता लगना भी असंभव ही है। हाँ, इतना जरूर कहा जा सकता है कि जिस दिन कोलोराडो स्वयंसेवकों के दल के साथ मैं कावाइट (फिलीपाइन) में जहाज से उतरा और बगावत खतम होने पर वहाँ से अमेरिका जाने के लिए पुनः जहाज पर चढ़ा, इसी बीच किसी दिन यह हुई होगी। इसके बाद नौ वर्ष तक मुझे तो पता भी नहीं लगा कि ऐसी कोई बात हुई है।

सन् १८९८ की वसंत की बात है। मैं कॉलिज में तीसरे वर्ष में पढ़ रहा था। जिस दिन का यह किस्सा है, मैं अपने कमरे में बैठा केमिस्ट्री की किताब में से कुछ समझने की कोशिश कर रहा था। दोपहर के खाने की घण्टी की राह देखता रहा। एकाएक वह बजी और मैं जँभाई लेता हुआ उठा। फुटबॉल के उस्ताद ने उस दिन वसंताभ्यास के लिए हमें बेहद जल्दी जगा दिया था। फिर भी मुझे लगा कि घण्टी कुछ जल्दी बज रही है। इतने में तो कहीं से साइरेन की आवाज आयी और गिर्जाघर के घण्टे भी बजने लग गये।

चार-चार सीढ़ियाँ कूदता मैं लपका। नीचे पहुँचते ही बॉब सेलर्स ने मुझे पकड़ लिया। वह मेरे ही कमरे में रहता और विश्वविद्यालय का फुलबैक था। मैं सबसे पीछे रहता।

"हम तो चले नेड!" वह चिल्लाया—"स्पेन के साथ लड़ाई छिड़ गयी है।"

हम मैदान की तरफ भागे। चारों तरफ से विद्यार्थी उमड़े आ रहे थे। बैंड अपनी जगह पर खड़ा हो गया। हम उसके पीछे हो गये। मेरा खयाल है कि बहुत से अध्यापकों को छोड़ दें, तो भी हम सब पूरे-के-पूरे पाँच सौ विद्यार्थी वहाँ आ जुटे थे।

अव तक तो वैंड यों ही तू तू, भूँ भूँ करता रहा। किन्तु ज्यों ही हमारी कतारें वनीं, वैंड मास्टर डेक्स्टर जोर से कुछ चिल्लाया। वैंड के जवानों के अलावा हम लोग कुछ भी न सुन सके कि उसने क्या कहा। परन्तु उसकी दोनों वाँहें ऊपर उठीं और ऐसे झटके देती दीखीं, मानो हवा को हिला रही हों। इसके साथ ही एक फौजी धुन के स्वर वैंड से निकलने लगे।

हम सव तो मानो पागल हो गये। शहर के वींच से कूच करता हुआ हमारा दल चल पड़ा। नगरनिवासी रास्ते की दोनों ओर कतार वाँधे खड़े थे और जयजयकार की ध्वनि से हमें उत्साह दिला रहे थे। इस तरह दो घण्टे चलने पर हम तो थककर चूर हो गये। किन्तु सत्तर वरस का प्रेक्सी कतार के आगे वरावर उसी प्रकार कदम वढ़ाये चला जा रहा था—सिर उठा हुआ और ठोढ़ी वाहर निकली हुई, हम सवसे वढ़कर! यों हमारे पुराने कालेज के छोटे वैण्ड में कोई वहुत दम नहीं था। परन्तु आज निःसन्देह उसमें युद्ध का जोश कूट-कूटकर भरा हुआ था। "स्पेन को अपने किये का फल भोगना होगा। वह समझता क्या है? हमारे जहाज डुवाता है![1] गरीव क्यूवा को सताता है! उसे इसका फल भोगना ही होगा। हम विद्यार्थी उसे सवक सिखाने में मदद करेंगे।"

हमें वहुत देर नहीं ठहरना पड़ा। शाम चाचा[2] ने पचहत्तर हजार स्वयंसेवकों की माँग की। कोलोराडो में एक पलटन खड़ी की गयी। हम लोगों में से भी वहुत-से उसमें शरीक हो गये। शीघ्र ही हम छावनियों में पहुँच गये। हमें सिपाही वनाया जाने लगा। वन्दूक चलाना तो हम जानते थे, परन्तु युद्धकला में इससे अधिक कुछ नहीं सीखे थे।

सान-अन्टानियो में तालीम पानेवाले एक दल के वारे में हम लोगों के वीच वड़ी जोशभरी वातें सुनी जा रही थीं। इसमें अधिकतर ग्वाले और

---

१. क्यूवा टापू के 'हवाना' वन्दरगाह में अमेरिका का मैन नामक एक सैनिक जहाज डुवा दिया गया था।

२. संयुक्त राज्य, अमेरिका की सरकार।

रेड-इण्डियन थे। इन्हें रूजवेल्ट के 'रफ-रायडर्स' कहा जाता था। टेडी रूजवेल्ट[1] न्यूयार्क का एक रंगीला जवान था, जो अक्सर हमारे यहाँ अपने जंगली घोड़े पर सवार होकर भालू का शिकार करने के लिए आया करता। लियोनार्ड वूड नामक एक पुरुष इस दल का कर्नल था। हमने उसके बारे में बहुत सुना था। वह एक फौजी डॉक्टर था और जैरोनियो नामक रेड-इण्डियन कौम के विरुद्ध लड़कर उसने बड़ी नामवरी पायी थी। मैंने निश्चय किया कि यदि संभव हो, तो मैं इस दल में पहुँच जाऊँ। बॉब सेलर्स भी यही सोच रहा था। हमने सुना कि सान-अन्टानियो जाते समय कर्नल वूड बीच में उतरकर हमारे दल का निरीक्षण कर फिर आगे बढ़ेंगे। हमने निश्चय किया कि किसी तरह उनसे मिलकर हम प्रार्थना करें कि वे हमें अपने दल में शरीक कर लें। परन्तु इसमें हम सफल न हो सके। मैं सिर्फ उनके कामदार (ए. द. द. कांग् Aide de camp) से मिल सका। उसने कहा कि "जितने जवानों की उन्हें जरूरत थी, उससे कहीं अधिक की भरती हो चुकी है। इसलिए हमें राह देखनी होगी।"

कामदार से बातचीत कर अपने खेमे की तरफ जाने के लिए मैं मुड़ा ही था कि खुद वूड से मेरी मुठभेड़ हो गयी। कितना शानदार आदमी था वह! सीधा, ऊँचा, चमड़ी का रंग धूप से पक्का और बदन छरहरा—मानो नेतृत्व का अवतार हो! उसकी चर्या ही कुछ ऐसी थी। तुरन्त एक तरफ हटकर मैंने उसे सैनिक अभिवादन किया। जवाब में उसने भी गम्भीरतापूर्वक अभिवादन का स्वीकार किया। इस निमित्त से उसने एक नजर में मुझे नीचे से ऊपर तक देख लिया और एक मुस्कराहट के साथ चला गया। मेरे शरीर में सिर से पैर तक प्रसन्नता की बिजली दौड़ गयी। वह तो चला गया, परन्तु मैं उसकी उस मुस्कराहट को कभी नहीं भूला। मानो वह कह रही थी कि एक सैनिक दूसरे सैनिक को पहचानता है। उनके साथ जाने के अवसर के लिए मैं क्या नहीं दे सकता था?

---

१. संयुक्त राज्य अमेरिका का एक राष्ट्रपति (१९०१-१९०८) 'टेडी' थियोडोर का संक्षिप्त रूप है। जीवनकाल १८५८ से १९१९। स्पेन के साथवाले युद्ध में 'रफ रायडर्स' के नाम से एक सेना खड़ी करके उसने खुद युद्ध में भाग लिया था। उसे शिकार और प्रवास का जबरदस्त शौक था।

छावनी में हमें अनेक सप्ताह रहना पड़ा। फिर अफवाहें सुनी जाने लगीं कि हमें प्राय: फिलीपाइन टापुओं में भेजा जायगा। यह सुनकर हमारे जोश का पारा बराबर बढ़ता ही जा रहा था; क्योंकि हमारे डेवे ने मनीला की खाड़ी में स्पेन के काफले पर जो विजय प्राप्त की थी, उसने हमारी कल्पनाशक्ति को अत्यधिक उत्तेजित कर दिया था। फिर एक दिन तीन दिन की छुट्टी दे दी गयी। इसीसे हम जान गये कि अब हमें यहाँ से जल्दी ही चल देना है।

घर से विदा लेने के लिए तीन दिन का समय बहुत कम था, फिर भी मैंने इसका अधिक-से-अधिक उपयोग कर लिया। ओजार्क की टेकरियों की तलहटी में स्थित मिसोरी ग्राम में मेरा घर था। लैंगफोर्ड परिवार तीन पुश्तों से इस मकान में रहता था, जिसमें समय-समय पर सुधार, मरम्मत और परिवर्धन होता रहा। मिसौरी से दस मील पर जरिक्स हमारा सबसे नजदीक का शहर था।

जब हमारी गाड़ी स्टेशन पर पहुँची, तो मेरे स्वागत को देख किसी अनजान आदमी को तो यही खयाल होता कि कोई राजकुमार आ रहा है। सारा स्टेशन भर गया था। पिताजी आये थे। उनका सीना तना हुआ था। माँ भी थीं और उनके पीछे भाई टाम और बहन मावेल। ये सब स्टेशन पर बग्घी में आये थे, जो हमारे घर से पूरा मीलभर नहीं होगा। बूढ़ा वॉश (नीग्रो नौकर) घोड़ों के मुँह के पास इस शान से खड़ा था, मानो उसे सारी पृथ्वी का राज्य मिल गया हो। स्टेशन पर टहलनेवालों की संख्या में कोई पचास आदमी बढ़ गये। मैं सटक जाना चाहता था, परन्तु पिताजी ने आगे बढ़कर मेरा हाथ पकड़ लिया। माँ ने तो वहीं मुझे अपनी बाँहों में भर लिया था। कितना संकोच मुझे हुआ। टाम और मावेल इतने शरमा रहे थे, जिसकी हद नहीं। मानो उन्हें ऐसा लग रहा था कि उनके संकोच से ऊबकर मैं जो उन्हें ढूँढ़ने की कोशिश कर रहा था, सो उनका बड़ा भाई नहीं, बल्कि कोई अपरिचित आदमी था।

× × ×

मैं दो दिन घर पर रहा। इसके बाद मुझे याद आ रही है, जनरल ग्रीन के 'चीन' नामक जहाज पर जाने की। अमेरिका के काफले में वह सबसे अच्छा जहाज था। इस पर हम एक हजार से अधिक ही थे। इनमें एक तो कोलोराडो

स्वयंसेवकों की (अर्थात् हमारी) पलटन थी, दूसरी संयुक्त राज्य की पैदल सेना की आधी पलटन और एक थी—इंजीनियरों की छोटी-सी टुकड़ी ।

हम रवाना हुए । 'चीन' और 'सिनेटर' दोनों जहाज साथ-साथ चलने लगे । उनका मुँह पश्चिम की तरफ था । उनके इंजिनों की घरघराहट मुझे ऐसी मालूम हो रही थी, मानो मेरे पैरों की नाड़ी बोल रही हो ।

'अरे जमीन पर चलनेवाले, यह चला तू । अब कई दिनों तक जमीन पर कदम नहीं रख सकेगा ।'—इंजिन का भोंपू सारे जहाज को मानो कंपित कर रहा था । फिर तो वन्दरगाह के सभी जहाज शामिल हो गये । चार हजार सिपाहियों को लेकर काफला मनीला के मार्ग पर था । 'कलोन' और 'झीलांडिया' जहाज भी हमारे पीछे-पीछे निकल पड़े । हम गोल्डन गेट (स्वर्ण-द्वार) की तरफ चले ।

एक घण्टे बाद तो दूसरे जहाजों की ओर देखने की भी मुझे फुरसत नहीं रही । हमारे साथ नौकर-सिपाहियों का एक छोटा-सा नायक था । आदमी घमण्डी था । ऐसा लग रहा था, मानो इस लड़ाई में मुझे सदा तंग करते रहने का ही उसने निश्चय कर लिया हो ।

किन्तु अमेरिका के स्वतन्त्रता-दिवस (४ जुलाई) तक हम एक दूसरे से खुलकर मिल नहीं पाये थे । उस दिन हमें रोज के कार्यक्रम से छुट्टी मिली । यह भूल तो नहीं कही जा सकती थी । कितनी ही खानगी दुश्मनियाँ पक गयी थीं और फूट पड़ने का मानो मुहूर्त ही देख रही थीं । वॉब और मैं जहाज के पिछले हिस्से के एक एकान्त कोने में कठघरे पर झुककर खड़े थे । दोनों को घर की याद आ रही थी । शायद यह बात हमारे चेहरों से भी प्रकट हो रही थी ।

"माँ की याद आ रही है बच्चाजी ?"

मैंने ऊपर देखा । वह नायक कमर पर दोनों हाथ रखे खड़ा-खड़ा दाँत निपोर रहा था । इस मसखरी को अधिक सहन करने जितना धीरज मुझमें नहीं रहा । मैंने एक थप्पड़ उसके गाल पर जड़ दी । परन्तु उसने इतनी तेजी से मुँह फेर लिया कि मेरा हाथ उसे सिर्फ छूता हुआ निकल गया । मेरे बाँये गाल पर उसने इतनी जोर से चाँटा मारा कि मुझे तो तारे दीखने लग गये । लड़ाई शुरू हो गयी । नौकरी करनेवाले सिपाहियों में कितने ही छोकरे बहुत तीखे होते हैं । सौभाग्य से मैं भी मुक्केबाजी की कुछ तालीम ले चुका था । हम दोनों भिड़ गये ।

इतने में वॉब गरज उठा : "पछाड़ दे इसे यार !" कमर पकड़कर मैंने उसे उठाया और दोनों धड़ाम से नीचे गिरे। उसका तो दम टूट गया था। एक साथी पास में ही खड़ा था। वह हम पर झपटा, परन्तु वॉब ने उसकी बाँह पकड़ ली।

"रुक जा, यहाँ तेरा कोई काम नहीं है।"

"छोड़ दे मुझे। क्या चाहता है तू ? मुझे फुटबॉल बना देना चाहता है ? सिपाहियों के बीच ऐसे झगड़े नहीं होने चाहिए।"

हम दोनों साथ खड़े हो गये। हँसते हुए उसने हाथ मिलाने के लिए अपना चौड़ा पंजा आगे बढ़ाकर कहा : "ठीक है बच्चा, तू चल सकता है। अब हम इस बात को भूल जायें।"

हमने हाथ मिलाये।

मनीला की खाड़ी के मुहाने के सामने से कॉरीजिडर टापू एक बड़े नीलम की भांति चमक रहा था। ज्यों-ज्यों वह नजदीक आने लगा, त्यों-त्यों डेक पर देखनेवालों की भीड़ बढ़ने लगी।

"खाड़ी बहुत सुन्दर है, क्यों नेड !"—वॉब बोला।

बात सही थी। दूसरी तरफ का किनारा अभी और पंद्रह मील दूर था, ऊँचे भाग मुश्किल से दिखाई देते थे। हम पूर्व की तरफ झुके। यहाँ से मनीला कोई तीस मील रहा होगा। उसी तरफ हम मुड़े। जहाज की बाँयी तरफ लूजोन का पार्वत प्रदेश ऊपर उठने लगा। हम अटकलें लगाते हुए खड़े थे कि क्या अभी तक लड़ाई चल रही होगी ! बहुत नजदीक पहुँचने पर एक डाक की किश्ती आयी। उससे ज्ञात हुआ कि लड़ाई बराबर जारी है।

हम कावाइट बंदरगाह में उतरे। स्पेन के जो जहाज लड़ाई में पूरी तरह से डूब न सके थे, उनके काले-काले ढाँचे बंदरगाह के शांत समुद्र में जहाँ-तहाँ ऊपर तैर रहे थे। उस दिन जहाँ अपना पड़ाव डालकर हम ठहरे थे, वहाँ गरम देश की बरसात के मौसम का पहला स्वाद हमें मिल गया। मूसलधार वर्षा हुई। हमने कीचड़ में चलने का अनुभव किया। हमारी छोलदारियाँ और कम्बल सभी भींग गये। फिर भी गरमी इतनी थी कि मानो हम उबल रहे थे। बावर्ची आग सुलगाने के प्रयत्न में इधर से उधर दौड़ते और वर्षा को कोसते रहे।

सुबह वर्षा थमी और उष्ण देशों की धूप का आनंद हमने लिया। कुछ ही

दिन वाद मनीला[1] की तरफ हमें रवाना कर दिया गया। वहाँ के किले में स्पेन की फौज दुवककर घुसी वैठी थी।

वड़ी लड़ाई जैसी कोई वात नहीं थी। सच पूछिये तो दोनों में से एक तरफ भी प्राणहानि जैसी वात के लिए कोई कारण नहीं था। स्पेन की फौज अपने आपको वचाकर सुरक्षित रूप से निकलकर चली जाय, इसकी रत्तीभर भी संभावना नहीं थी। पीछे से उसे फिलीपाइन की फौज ने घेर रखा था और सामने अमेरिकन फौज तथा जहाज खड़े थे।

अंत में जव शहर जीत लिया गया (१८९८), तो हम सवको लगा कि अव शीघ्र ही स्वदेश लौट चलेंगे। एक प्रकार से यह चीज हमें प्रिय नहीं थी; क्योंकि अव तक मनीला का समुद्र और शहर के वीच से गुजरनेवाली पासिग नदी को छोड़ फिलीपाइन का कोई भी भाग हम देख नहीं पाये थे। परन्तु हमने सोचा था, उससे कहीं अधिक समय तक हमें अकल्पित रूप में फिलीपाइन में रुक जाना पड़ा। अफवाहें फैल रही थीं कि फिलीपाइन की जनता कुछ उपद्रव करेगी। सुना जाता था कि ये लोग तत्काल स्वतंत्रता चाहते हैं और अमेरिकन नेता वह देने के लिए तैयार नहीं हैं।

इस लंवे समय में वॉव और हम किले के अन्दर खूव आनंद लेते रहे। प्राकारवेष्टित यह शहर तीन सौ वर्ष पुराना है। वड़े-वड़े छेदों से वाहर मुँह निकालनेवाली तोपें और पहरेदारों की मीनारें हमारे लिए एकदम नयी चीजें थीं। मकानात कितने वड़े-वड़े थे! सैकड़ों वर्ष के पुराने! वह प्राचीन महल! पासिग नदी के तीर पर मालाकायान नामक एक नया महल भी था, परन्तु पुराना महल भी अभी तक खड़ा था। रोमन कैथोलिक पंथ का सुंदर गिर्जाघर और पुराने सरकारी मकान भी हमारे अमेरिका के सरकारी मकानों जैसे नहीं थे। ऐसा लग रहा था, मानो हम कहानियों की किसी दुनिया में पहुँच गये थे। हल्की ढालवाले लम्वे मार्ग किले की दीवालों के सिरे तक चले गये थे। वहाँ से मनीला के समुद्र पर दूर तक नजर डाली जा सकती थी। डेवे का

---

१. मनीला : फिलीपाइन टापुओं के लूजोन नामक टापू में यह एक मुख्य शहर और वंदरगाह है। आवादी कोई सात आठ लाख के करीव होगी।

आरमार उसमें लंगर डाले पड़ा था। दूसरी तरफ खाई में छिपी हुई फिलीपाइन की सेनाएँ पड़ाव डाले हुए थीं। उसके पीछे फिलीपाइन द्वीप का असली प्रदेश था।

चाँदनी रातों में जब भी कभी संभव होता, दॉव और मैं दीवालों पर चढ़ जाते। नदी के उस पार की वस्तियों में एक रहस्य और आकर्पण मालूम पड़ता। वहाँ क्या होगा, यह जानने की हमें बड़ी उत्सुकता रहती। जितने फिलीपाइनों के साथ हमारा संपर्क हुआ, वे सभी हमें अच्छे लगे। वे प्रेमी, शिष्टाचारी, सेवाभावी और नम्र मालूम हुए। जब हम मनीला जाते, तो एक-दो दिन के लिए हमारे खाने-पीने का प्रवन्ध करने का भार एक बूढ़े गाड़ीवान पर डाला जाता था। वह किराये का इक्का चलाता था। उसका नाम था ज्वान (जॉन)। वह सुवह से लेकर रात में देर तक मिहनत करता। उसके साथ उसका वफादार टट्टू भी दौड़ता रहता। उस गरीव को धीरे-धीरे कौन चलने देनेवाला था। उसकी छोटी-छोटी टापें दूसरे हजारों टट्टुओं की टापों के साथ ताल मिलाती रहतीं। मनीला का यह एक विशेष संगीत था।

जॉन का मकान फिलीपाइनों की दरिद्रता का नमूना था। वहाँ ताड़ की एक किस्म होती है, जिसे 'नीपा' कहते हैं। उसका मकान इसी नीपा की पत्तियों से वुने टट्टर और वाँस का वना हुआ था। जमीन से एक खास ऊँचाई पर वह खम्भों पर वना था और एक निसैनी पर चढ़कर उसमें पहुँचना पड़ता था। उसमें एक छोटा-सा रसोईघर, एक भण्डार और एक सोने-वैठने का कमरा—इस प्रकार तीन कमरे थे। वह जो थोड़े-से सेण्ट (आने) कमाता, वे उसके कुटुम्व के लिए साग-सब्जी, चावल, कभी-कभी कुछ मछलियाँ और इसके टट्टू के लिए चन्दी—इतने में खर्च हो जाते। फिर भी मेरे जैसे अनजान और जवरदस्ती के वने अतिथियों का वह और उसकी पत्नी रोजारियो जिस प्रेम से स्वागत करते और अच्छी-से-अच्छी चीजें वनाकर खिलाते, उसे मैं कभी भूल नहीं सकता। आधे दर्जन के करीव उनके गेहुँए रंग के वच्चे थे। उनके साथ मैं घुल-मिल गया। इससे उन्हें वहुत आनंद हुआ। फिलीपाइनों के साथ मेरा यह पहला परिचय था। परन्तु ज्यों-ज्यों वर्प वीतते गये, त्यों-त्यों उनके वारे में मेरी यह राय अधिकाधिक दृढ़ होती गयी कि ये लोग मिलनसार, प्रेमी और भाईचारा करने-निवाहनेवाले होते हैं।

ज्यों-ज्यों गरमी बढ़ती गयी और पतझड़ शुरू हुई, त्यों-त्यों फिलीपाइन फौज की स्थिति विषम होती गयी। दोनों पक्षों के बीच जो मतभेद थे, उनके औचित्य और अनौचित्य के बारे में हम सैनिकों को कोई खास जानकारी नहीं थी। सफाई पलटन के जवान ओवर टाइम (ड्योढ़ा) काम करते थे। हमें भी किले के बाहर की खाई पाटने तथा अन्य साधारण सफाई के कामों में लगा दिया गया था। शीतला और विषमज्वर का प्रकोप था ही, हैजे के प्रकोप की अफवाहें भी फैल रही थीं।........महीनों बीत गये। ऐसा कोई चिन्ह नजर नहीं आ रहा था कि हमें स्वदेश लौट जाने की इजाजत मिल सकेगी। अंत में एक दिन इस आशय का हुक्म-हमें मिला कि फिलीपाइन फौज के सिपाहियों को हथियार लेकर हमारी सीमा में प्रवेश न करने दिया जाय।

हुक्म जारी होने के कुछ ही समय बाद वहाँ बलवा हो गया। तारीख चार फरवरी को आधी रात में पुल के पास पहरा देनेवाले हमारे सिपाही ने तीन फिलीपाइन सिपाहियों को हमारी हद में घुसते देखा। उसने उन्हें जोर से 'हॉल्ट' का हुक्म दिया, परन्तु वे रुके नहीं। इस पर पहरेदार ने उन पर फायर कर दिया। एक तरफ से अमेरिकनों की क्रेग बन्दूकें और दूसरी तरफ से बलवाइयों की मॉसर बन्दूकें चलने लगीं। महीनों से अन्दर ही अन्दर सुलगती हुई आग एकाएक भभक उठी। वास्तव में यही असली लड़ाई थी। सुबह तक तो अमेरिकन सेना नदी लाँघकर देश के अन्दर काफी दूर तक चली गयी। कैलिफोर्निया की हमारी एक पलटन ने तो इतनी जल्दी की कि स्थानीय भूगोल का ज्ञान न होने के कारण वह रास्ता भूल गयी। लड़ाई समाप्त होने तक इस पलटन के जवान हमारे मजाक का विषय बने रहे।

इसके बाद फौजों का विभाजन और तैनाती हुई। जिन स्वयंसेवकों का सेवा-कार्य समाप्त हो गया था, उनमें से मेरे जैसे बहुत-से स्वयंसेवक फौज में बाकायदा शामिल हो गये। मैं भी शाम चाचा की सेना का एक स्थायी अंग बन गया।

आगे चलकर एमीलियो आग्विनॉल्डो को, जिसका नाम बहुत प्रसिद्ध हो गया था, पकड़ लाने के लिए मुझे नियुक्त किया गया। उसे पकड़ने का अर्थ था—उड़ते पंछी के पीछे दौड़ना।

× × ×

हमारी पहली मुठभेड़ मनीला की सीमा पर हुई। वलवाई हमारी राह देख रहे थे। वे खाइयों में वरावर छिपे वैठे थे। जहाँ तक मुझे पता है, हमारी पलटनें वीस थीं और हमें लगभग अठारह मील की पंक्ति वनानी थी। हम आगे जरूर वढ़ रहे थे, पर वहुत धीरे-धीरे और वड़ी कठिनाई से। तैंतालीस दिन हमने खाइयों में ही काट दिये। इन दिनों दिन के चौवीस घण्टों में से वीस घंटे वर्षा होती रहती। हमें कीचड़ में लेटना पड़ता। कई वार हम फिसलकर गिर भी जाते। इस प्रकार हमारी सूरत सूअरों जैसी दिखने लग गयी थी।

तारीख १० को हमने कालूकान सर किया। उस दिन मुझे साहस का कुछ स्वाद मिला। मोनटाना के स्वयंसेवकों को एक सन्देश पहुँचाने के लिए हमारे कप्तान ने मुझे भेजा। दुश्मनों की नजरों से वचने के लिए छिपता-छिपता मैं अपना रास्ता तय कर रहा था। वाँसों की एक झाड़ी पार कर खुले मैदान में पहुँचा। वहाँ से धान के खेतों के उस तरफ मुझे एक मकान दिखा। मैंने समझा कि हमारी छावनी के जिस केन्द्र पर मुझे पहुँचना है, वह यही होगा। आस-पास दोस्त या दुश्मन कोई नहीं दीखता था। होशियारी के साथ मैं उस तरफ दौड़ा। मुझे अन्देशा हुआ कि आस-पास कोई है। गोली की सनसनाहट भी सुनायी दी। साथ ही मेरे मुँह पर धूल भी उड़ी। इसके वाद तुरन्त चारों तरफ से गोलियों की वर्षा होने लगी। मैं दौड़कर उस मकान के दरवाजे में घुसा। इतने में मैंने किसीको चिल्लाते हुए सुना।

"अरे वेवकूफ! कहाँ जा रहा है, कोई खयाल भी है?....वह तो कोढ़ीघर है।"

सुनते ही मैं इस तरह वाहर कूदा, मानो अन्दर से किसीने मुझे धक्का मारा हो। मैं सन्न-सा हो गया! कोढ़ी-घर! नहीं-नहीं, ये लोग शायद मेरा मजाक- कर रहे हैं। रविवार की धर्म-शिक्षा में मैंने कोढ़ियों की वातें जरूर सुनी थीं। परन्तु मुझे सपने में भी यह खयाल नहीं था कि आज भी इस तरह के रोगी संसार में होंगे। रास्ते के दूसरी तरफ एक कब्र-स्तान की दीवालों के पीछे से यह आवाज आयी थी। मैंने अनुमान लगाया कि मोनटाना के स्वयंसेवक वहीं होंगे। उस कठिन स्थान को पार कर मैं अमेरि-कन सिपाहियों के वीच वहाँ पहुँचा। कब्रस्तान की दीवालों की ओट में छिप-कर कुछ दूरवाले जंगल की तरफ वे वगैर निशाने के गोलियाँ वरसा रहे थे।

कप्तान को मैंने वह सन्देश सुना दिया। उसने मुझे आज्ञा दी कि मैं वहीं सावधानी के साथ ठहरूँ। उस मकान के अन्दर के लोगों को मैंने जान लेकर खेतों की तरफ भागते हुए देखा। कोढ़ियों में भी गोलियों के प्रति दूसरों की अपेक्षा कोई अधिक सद्भाव नहीं दिखाई पड़ा। यह बात मेरी समझ में नहीं आयी। वे मृत्यु का स्वागत क्यों नहीं करते? मैंने सोचा कि यदि मैं कोढ़ी होता, तो मृत्यु को अपना उद्धारक देवदूत समझता।

× × ×

इसके बाद के महीने ऐसे अनुभवों से भरे हुए हैं, जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता। सान जासिन्टो की लड़ाई में हम जीते जरूर, पर आग्विनॉल्डो कहाँ था? वह तो हमें धोखा देकर भाग निकला था। हमें कहाँ जाना चाहिए, इसे मानों वह तय कर दिया करता। बलवाई अपने प्रदेश को जानते थे और दाँत पीसकर बराबर लड़ रहे थे। हम लड़ते-लड़ते आगे बढ़ते जाते थे। किन्तु वह चालाक हर बार हमें धोखा देकर आगे बढ़ जाता। हमने सुना कि वह बोन्टोक पहुँच गया है। यह मुंडमाल* देश का मुख्य शहर था। वहाँ जाने के लिए हम चले। परन्तु वहाँ पहुँचने पर हमें समाचार मिला कि बलवाई तो यहाँ से चले गये हैं। हमने देखा कि उनका अन्तिम मार्ग पोलिस पर्वत के शिखर के बाद लुप्त हो गया। यह उस पर्वतमाला का लगभग डेढ़ मील (आठ हजार फुट) ऊँचा शिखर है। थके-माँदे हम लोगों ने उस शहर की गूजरी (हाट के मैदान) में अपना पड़ाव डाला। लोग हमें देखने के लिए कुतूहलपूर्वक एकत्र हुए। नंगे बच्चे, सिर्फ लहंगा पहनी स्त्रियाँ और लुंगी बाँधे पुरुष! कितनी ही स्त्रियाँ—यदि उनके होठों को न देखें तो—सुन्दर मालूम होती थीं। दिनभर पान खा-खाकर उनके होंठ खून के समान लाल हो रहे थे। वे अच्छे नहीं दिखते थे।

एक रात वहाँ विश्राम करने के बाद हम फिर आग्विनॉल्डो की तलाश में निकले। वह अपने ढंग का पक्का धूर्त था। पोलिस की चोटी पार कर बानाउ तक

---

* इस देश के निवासियों के बारे में यह मान्यता थी कि वे मनुष्यों के सिर एकत्र करनेवाले शिकारी हैं।

हम उसके पीछे-पीछे गये। यह अनुभव जीवनभर याद रहने लायक था। विशाल सीढ़ियों के समान अथवा नदी के तीर पर बने घाटों के समान धान के खेतों को पार कर हम जा रहे थे। इस तरह के खेत संसार में सचमुच एक अजीव वस्तु होनी चाहिए। तीन हजार वर्ष हो गये, वहाँ के निवासियों ने पर्वतों की ढालों को इस प्रकार एक के ऊपर एक चढ़नेवाली सीढ़ियों के समान खोद-खोदकर खेत बना लिये हैं। बड़े खेतों के आस-पास बन्द बना दिये। कहीं कहीं तो ये बन्द तीस-तीस, चालीस-चालीस फूट तक चले गये हैं। अविश्रान्त परिश्रम कर अपने खेतों के लिए मिट्टी भी नीचे से पहाड़ पर पहुँचायी गयी है। इन खेतों को सींचने के लिए पहाड़ी झरने भी खेतों में ले गये हैं। इस प्रकार नीचे से लेकर ऊपर ठेठ शिखर तक हरे-हरे खेत, एक के ऊपर एक रखी विशाल सीढ़ियों के समान, मनोहारी दिखाई देते हैं। जीवन-निर्वाह के साधन देने में अपना हाथ बँटानेवाली सैकड़ों ऊँची-नीची सीढ़ियाँ वहाँ फैली हुई हैं। इस प्रकार इस जंगली और अज्ञानी मानी जानेवाली कौम ने इस वीरान पर्वत को अन्न का भण्डार बनाकर भूखों के पेट भरने का साधन बना दिया है।

आग्विनॉल्डो ने हमें फिर एक बार धोखा दिया और अन्त तक वह हमारे हाथ नहीं आया। यह काम बाद में दूसरों ने किया। परन्तु आग्विनॉल्डो को एक श्रेय जरूर है कि उसने इस पृथ्वी के एक अति सुन्दर प्रदेश का दर्शन हमें कराया। हमें वापस मनीला भेज दिया गया। कुछ समय बाद आग्विनॉल्डो पकड़ लिया गया और बलवा खतम हुआ। फिर भी छोटी-छोटी छापामार लड़ाइयाँ जारी ही रहीं। इसके बाद मुझे दक्षिण के टापुओं में जहाँ-तहाँ भेजा गया। इस प्रकार मेरा कुछ समय बीत गया। अन्त में मुझे वापस लूजोन* भेजा गया।

× × ×

मेरी स्मृति अब मुझे दक्षिण के एक कस्बे में ले जा रही है। वहाँ कुछ समय मुझे अपनी छावनी के रोजमर्रा के काम करते हुए रहना पड़ा था। ये दिन

---

* फिलीपाइन द्वीप-समूह का यह मुख्य टापू है। आबादी ४० लाख। मनीला इसीका मुख्य शहर है।

बड़े थका देनेवाले थे। वहाँ जीवन में न कोई नवीनता थी, न विविधता। हम कुछ ही आदमी थे और हमें फिलीपाइनों के अलग-अलग परिवारों में रखा गया था। मैं जिस परिवार के साथ रहता था, वह 'नोलास्को' नाम से जाना जाता था। यह एक ऊँचे वर्ग का परिवार था। इसका निवास साधारण लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छा—सुविधाओंवाला था। मकान लकड़ी का था। फर्श बाँसों की नहीं, लकड़ी के पटियों की थी। लोग आतिथ्यशील होने के कारण उन्होंने मुझे एक स्वतन्त्र कमरा दे दिया था। मेरे लिए यह एक अनपेक्षित वैभव था। इसके कारण यहाँ का निवास मेरे लिए अकल्पित रूप में सुखी हो गया। इस परिवार में एक बालिका थी। फिलीपाइन की सुन्दरियों में इसकी गिनती की जा सकती थी। फिलीपाइन की कितनी ही बालिकाएँ ड्रेसडेन की गोरी बालिकाओं के समान ही सुन्दर और नाजुक होती हैं। उसका नाम था, चरिता (कारीटा), जिसका अर्थ होता है—सुन्दर-मुखी। यह नाम भी मुझे बहुत अच्छा लगता। मुझे लगा कि मैं उससे प्रेम भी करता हूँ। मेरे मन में यह कल्पना भी होने लगी कि इससे शादी कर इन्हीं द्वीपों में कहीं बस जाऊँ।

परन्तु तब तक तो जितने समय के लिए फौजी नौकरी करने का मैंने वादा किया था, वह पूरा हो गया और मैं स्वदेश के लिए रवाना हो गया। माँ, पिता-जी, भाई और देश के दूसरे मित्रों की याद सताने लगी। ◆◆◆

संज्ञाशून्य बाँह : २ :

मैं अमेरिका पहुँचा। फिर एक बार उसी स्टेशन पर कुटुम्बी जनों से भेंट हुई। गाड़ी रुकी। मैं अपने डिब्बे से बाहर कूदता हूँ, तब तक तो घर के सारे लोग वहाँ आ पहुँचे। बूढ़े बाँश की घोड़ेवाली गाड़ी के बदले इस बार मैंने उसे एक बगैर घोड़ेवाली गाड़ी से निकलते हुए देखा। फिलीपाइन जाने से पहले मैंने इस तरह की कुल पाँच-छह गाड़ियाँ देखी थीं। उस समय ये इतनी कम थीं। मुझे मनुष्यों से जितनी दिलचस्पी थी, उतनी ही इस गाड़ी से भी हो गयी। भीड़ ने जयजयकार किया और शहर के पुराने बैंड ने 'समुद्र के उस पार के वीर' का गान शुरू किया।

मुझे कुछ भी सूझ नहीं रहा था। इतने में एक बच्चा इतनी जोर से बोला कि मुझे भी वह सुनाई दिया : "देखिये तो, इसके बदन पर फौजी वर्दी भी नहीं है।" तब मुझे खयाल हुआ कि लोगों ने मुझसे किसी दूसरे प्रकार के ठाट-बाट की उम्मीद की थी।

माँ तो पहले जैसी ही लगी—हँसमुख और कम बोलनेवाली। भीगी-भीगी, आँसूभरी आँखों से उसने मुझे अपने हृदय से लगा लिया। पिताजी ने पीठ ठोंकी। मेरे दोनों हाथ अपने हाथों में पकड़कर कहा : "आ गया बेटा वापस ! बहुत अच्छा हुआ।"

मुझे उनका चेहरा अच्छा नहीं लगा। वे बहुत बूढ़े लग रहे थे। चेहरे पर कुछ फीकापन आ गया था। माबेल एकदम बदल गयी थी। चार वर्ष पहले जिस खिलवाड़ी लड़की को मैं छोड़ गया था, क्या यह वही थी ! वह शरीर पर सलवटेदार लम्बी बाँहोंवाला, कमर में तंग, भड़कीला और जमीन को छूनेवाला घेरदार फ्रॉक तथा पक्षियों के पर लगा बहुत बड़ा टोप पहनी थी। क्या यह माबेल ही है ? उसकी पोशाक और खास तौर पर उसका टोप मुझे बहुत विचित्र लगा। परन्तु उसने मुझे बाद में विश्वास दिलाया कि वह तो ताजा से ताजा फैशन था। टॉम तो पहले जैसा ही सीधा-सादा था। अब वह लगभग

तेरह वर्ष का हो गया था। ऊँचा हो गया था और आवाज भी कुछ मोटी हो गयी थी। हँसते हुए बड़े लोगों के समान उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

"तुझे एक-आध गोली तो लगी होगी न ?"—यह था उसका पहला सवाल ! और दूसरा प्रश्न था कि "तूने कितने फिलस्तीनों को मारा ?" (फिलस्तीन और फिलीपाइन के भेद को वह बच्चा क्या जाने !) और तीसरा प्रश्न था— "तू कितना सोना लाया ?" अखबारों में इन द्वीपों के धन के विषय में बहुत-सी बातें छपती रहती थीं। अंत में पिताजी ने उसे रोका और हमारे गाँव के मेयर तथा आस-पास खड़े लोगों में कुछ से मेरा परिचय कराया।

स्पेन के साथवाले इस युद्ध में मेरा प्रवेश और वापसी भी जुलूस के साथ ही हुई। मोटर का छाता हटाकर उसे खुला कर दिया गया। आगे-आगे बैण्ड चलने लगा और उसके पीछे मेरे स्वागत के लिए आये लगभग सौ आदमियों का समुदाय ! टाम ने इंजन का हैण्डिल मारा। चलने से पहले उसने बन्दूकों के धड़ाके के समान कुछ आवाज की और जुलूस चल दिया। चींटी की चाल से हमने मुख्य मार्ग तय किया। रास्ते के दोनों तरफ दूकानदार और ग्राहक बाहर निकलकर अपने-अपने रूमाल हिला मेरा स्वागत कर रहे थे। डंवाखाने के सामनेवाले उद्यान पर हम रुके। वहाँ एक नया बैण्ड-स्टैण्ड बन गया था। पहले से कोई सूचना दिये बगैर मुझे यहाँ उतार लिया गया और मंच पर चढ़ने के लिए कहा गया। उत्साह के साथ सब लोग खड़े हो गये। मेयर और पादरी के प्रशंसात्मक भाषण हुए। मुझे लगा कि धरती जगह दे, तो कहीं छिप जाऊँ। परन्तु यहाँ तो उल्टा मुझे भाषण देने के लिए कहा गया।

मैंने सबको निराश कर दिया। लोगों ने आशा की थी कि मैं युद्ध की मारकाट के रोमांचकारी चित्र उनके सामने पेश करूँगा। अखबारों में उन्होंने मुंडमाल के शिकारियों और कच्चा मांस खानेवाले लोगों के भयंकर वर्णन पढ़े थे। इनके विषय में लोग अधिक जानना चाहते थे। परन्तु मुझे तो याद आ रही थी लूजोन के छोटे-छोटे कस्बों की, उनकी शांत गूजरियों की, वहाँ के पुराने पत्थरीले मंदिरों की, उनके ताड़ के झोपड़ों की, धान के खेतों की, उनमें काम में लाये जानेवाले टेढ़े हलों की और कीचड़ में चलनेवाले पाड़ों की। फिर मुझे वहाँ की जनता की भी याद आ रही थी। उस बूढ़े गाड़ीवान का चित्र भी मेरी

आँखों के सामने खड़ा हो गया, जिसके साथ मैं दो-एक दिन रहा था। मुझे याद आयी, मैक्सिमिनो के नोलास्को-परिवार की और उसकी सुन्दर लड़की चरिता की, जिससे शायद मैं विवाह भी कर लेता। मैंने जो कुछ कहा, उसमें फिलीपाइनों की प्रशंसा ही थी। यह सब लोगों ने विनयपूर्वक सुन तो लिया। किन्तु मुझे लगता है कि मेरा भाषण उन्हें फीका ही लगा।

आखिर हम इस समारोह से मुक्त हुए। किन्तु इसके बाद महीनों तक लोग मुझे रास्ते में रोक-रोककर तरह-तरह के प्रश्न पूछते ही रहते। टाम तो कभी छोड़ता ही नहीं था। वह दिन-रात प्रश्न पूछता ही रहता। सचमुच इस शैतान ने खोद-खोदकर इतना पूछा कि एक-एक बात मुझसे निकाल ली। चरिता के विषय के मेरे भाव भी उसने मुझसे जान लिये और विनोदपूर्वक पूछा: "क्या तू उससे शादी नहीं करेगा? आज भी उसके विषय में तेरे मन में प्रेम तो दीखता ही है। फिर तेरे कहने के अनुसार वह लड़की भी योग्य ही मालूम होती है।"

बेशक, वह लायक थी। मैं तो राह भी देखता था कि उसका पत्र कब आता है। हम दोनों ने एक दूसरे की भाषा थोड़ी-थोड़ी सीख ली थी। वह मुझे टागा-लोग पढ़ाती और मैं उसे अंग्रेजी पढ़ाता। हमने यह तय कर लिया था कि वह मुझे अंग्रेजी में पत्र लिखेगी और मैं उसे टागालोग में लिखूँगा। किन्तु महीनों बीत जाने पर भी उसका एक भी पत्र नहीं आया।

घर के लोगों ने मान लिया था कि कुछ समय तो मुझे छुट्टी की जरूरत होगी ही। इसलिए कुछ समय तो मैंने इधर-उधर घूमने में, खेती की देखभाल में और पिताजी के धन्धे को समझने में बिता दिया। पिताजी के पास दो खेत थे, इसके अलावा जारिका में, वे माल खरीदते-बेचते और उसका संग्रह करने का धन्धा करते थे। मेरी अनुपस्थिति में उनका यह धन्धा बढ़ गया था। आस-पास के शहरों में भी उन्होंने अपनी शाखाएँ खोल दी थीं। लगभग सौ गाड़ी-गाड़े और माल का एक बड़ा गोदाम वे चलाते थे। खानों की यन्त्र-सामग्री, फर्नी-चर तथा दूसरे व्यापारों के लिए आवश्यक सामग्री—मतलब यह कि सब प्रकार का माल लाने, पहुँचाने और संग्रह करने का काम वे करते। धन्धा अच्छा जोरों से चल रहा था।

एक दिन मैं पिताजी के साथ उनके कार्यालय में गया। हम लोग जरा जल्दी पहुँच गये थे। हमारे पास लगभग दो सौ घोड़े थे। वे अस्तबल के ऊपर की मंजिल से ढाल के रास्ते (सीढ़ियों के नहीं) नीचे उतरते और गाड़ियों में जुतते जाते थे। घोड़ों की मिलती हुई जोड़ियाँ और चमकीला साज-सामान देखते ही बनता था। पिताजी डाक देख रहे थे और मैं इधर-उधर टहलता खिड़की में से कोठे के अन्दर रखे जानेवाले माल को देखता रहा। इतने में पिताजी ने पुकारा :

"नेड, मैं तेरे साथ जरा एकान्त में बातें करने का मौका ढूँढ़ रहा था। अब आगे तू क्या करना चाहता है ?"

"मैं तो कुछ भी सोच नहीं पा रहा हूँ। कालेज में जाकर अब पढ़ाई पूरी करने की इच्छा तो नहीं होती। एक तो उम्र अधिक हो गयी है और लड़ाई में जो अनुभव हुए, उनके कारण भी रुचियाँ बदल गयी हैं।"

"मेरा धन्धा तुझे पसन्द होगा ? धन्धा अच्छा है। मैंने ही इसे जमाया है, इसीलिए सुझा रहा हूँ।"

वे ध्यान से मेरी तरफ देखते रहे। अपना जमाया हुआ राज मुझे सौंपने के लिए वे तैयार हो गये थे। पर यह धन्धा मैं कर सकूँगा या नहीं, इतनी योग्यता मुझमें है या नहीं, इस बारे में मुझे शंका थी। यह मैंने उन्हें भी बता दिया। फिर इस समय मेरा मन उचट रहा था। इस कारण कहीं बैठ जाने का निश्चय कर नहीं पा रहा था। किन्तु खुद अपनी स्थापित गद्दी पर बैठाने के लिए तैयार पिता के सामने यह कैसे कहा जा सकता था ? इसलिए मैंने आदरपूर्वक सिर्फ इतना ही कहा : "मुझे इस विषय में विचार करने के लिए कुछ समय चाहिए।"

"जरूर।" उन्होंने कहा—"मैं भी यही चाहता हूँ। मेरी जरा भी यह इच्छा नहीं कि जल्दबाजी में तू कोई निर्णय कर ले। तुझे जितने समय की जरूरत हो, अवश्य ले।"

हफ्तेभर के बाद मैंने प्रयोग के रूप में यह धन्धा करने की इच्छा प्रकट की और कहा : "अगर मेरा मन लग गया, तो इसीमें भिड़ जाऊँगा।"

उसी दिन से इस धन्धे में मुझे तैयार करने में पिताजी कमर कसकर लग गये। मेरी समझ से इसका कारण यही था कि उनका स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा था। फिर भी वे डॉक्टर की सलाह लेने के लिए तैयार नहीं होते थे;

क्योंकि संपूर्ण जीवन में उन्होंने कभी डाक्टर का घर नहीं देखा था। उनके इस हठ से माँ को वड़ा दुःख होता था। वह मुझे कहा करती कि "मैं डाक्टर की सलाह लेने के लिए पिताजी को राजी करूँ।" मैंने यत्न भी किया, किन्तु उन्होंने कहा कि "मुझे क्या हो रहा है, सो मैं अच्छी तरह जानता हूँ और उसका उपाय भी मैं कर लूँगा।" जाड़ा समाप्त होने से पहले उन्होंने विस्तर पकड़ लिया। अंत में हमने डा० होरेस विडल को बुलाया। पिताजी ने हँसते-हँसते उनसे कहा: "मुझे क्या हो रहा है, सो मैं ही आपको वताये देता हूँ।" डाक्टर नया ही था। वल्कि वचपन में मेरे साथ ही पढ़ता था। उसने कहा कि "पिताजी का निदान ही ठीक था और वेदना को कुछ कम करने के अलावा कुछ अधिक नहीं किया जा सकता।" गरमी में उनकी मृत्यु हो गयी।........ जिस प्रकार उन्होंने अपना वन्धा जमाया था और जिस प्रकार वे अंत तक काम में लगे रहे, इसी प्रकार और भी दूसरी तरह से उनके जीवन को देखने पर मुझे लगता है कि मेरे पिताजी एक सच्चे मर्द थे।

\+ \+ \+

मैंने वन्धा जारी रखा। टाम को भी उसमें दिलचस्पी थी। इसलिए स्कूल के काम से जितना समय वचता, उसे वह इसीमें लगाता। मुझे घर पर आये सात आठ महीने हो गये थे। चरिता को मैंने दो पत्र लिखे थे, पर कोई जवाव नहीं आया। किन्तु एक दिन वॉव सेलर्स का एक पत्र आया। वॉब वहीं रह गया था और पुलिस-विभाग में उसने नौकरी कर ली थी। वह दक्षिण लूजोन में गया था और नोलास्को-परिवार से मिला था। मेरे पत्रों का जवाव चरिता क्यों नहीं दे सकी, इसका कारण वताते हुए उसने वॉव से कहा कि उसके छोटे भाई साँचो को कोढ़ हो गया है और लड़ाई के दिनों में सन्देशा पहुँचाने के सिलसिले में मैं जिस मकान में घुस पड़ा था, वहाँ उसे रखा गया है। इसके अलावा चरिता को भय है कि घर के दूसरे लोगों को भी शायद इसकी छूत लग गयी हो। इस चिन्ता के कारण ही वह जवाव नहीं दे सकती।

इस खवर ने मुझे हिला दिया। 'कोढ़' शव्द सुनते ही मेरा खून सूख गया। वेचारा मैकिसमिनो और वेचारी गरीव चरिता! कुछ देर वाद मुझे खयाल हुआ कि मैं भी तो उसी मकान में रहता था। उनके मकान में मैं सोया

हूँ और उनका पकाया भोजन भी मैंने खाया है। एक क्षण के लिए मैं मारे डर के काँप उठा। फिर शांति के साथ सोचने लगा—"मुझे यहाँ आये आठ महीने हो गये और मेरा शरीर बिलकुल अच्छा है। इस प्रकार अपने बारे में तो मैं निर्भय हो गया और केवल साँचों के बारे में ही विचार करने लगा। इतने छोटे बच्चे को यह रोग कैसे हुआ होगा? मेरी मान्यता तो यह थी कि इस तरह का रोग रोगी के साथ शरीर-सम्बन्ध होने से ही लगता है। अंत में मैंने यह सोचकर इस पर विचार करना छोड़ दिया कि यह बात मेरी समझ में आने लायक नहीं है। किन्तु चरिता और उस पर आनेवाले इस संकट का विचार मुझे बराबर आता रहता। कहीं उसे भी यह छूत तो नहीं लग गयी? नहीं तो वह पत्र जरूर भेजती। उस चन्द्रमुखी को ऐसी कोई चीज हो, मुझे तो यह विचार भी असह्य हो गया। मैंने अपना घोड़ा मँगाया और सैर के लिए बाहर निकल पड़ा। रात में बड़ी देर से घर लौटा। टाम चरिता का नाम ले-लेकर मुझे चिढ़ाने लगा। तब मैंने उसे साँचो का समाचार सुनाया। सुनकर वह गंभीर हो गया। उसे बड़ा दुःख हुआ। टाम बड़ा समझदार था। इसके बाद उसने कभी नोलास्को-परिवार का जिक्र तक नहीं किया। मेरे प्रति उसके बरताव में भी एक बारीक फर्क हो गया। मुझे लगता है कि वह मेरी मनोव्यथा समझ गया था।

इस प्रकार मेरा जीवन तो रोज के ढर्रे में चला जा रहा था। दो खेत और कोठे का काम हमारे लिए बहुत था। 'हमारे' शब्द का प्रयोग इसलिए कर रहा हूँ कि मुझे टाम की बड़ी मदद थी। हाईस्कूल की पढ़ाई पूरी कर वह अब कालेज में चला गया था। किन्तु लम्बी छुट्टियों में वह एक अनुभवी आदमी की भाँति काम में भिड़ जाता। वह एक सच्चा जवांमर्द आदमी बन गया था। उसे देखकर मेरी छाती फूल उठती थी।

× × ×

मुझे लौटे अब नौ वर्ष हो गये थे। अभी तक कोई नयी बात पैदा नहीं हुई थी। लेकिन एक क्षण ने मेरे समस्त जीवन को पलट दिया। जीवन एक निश्चित क्रम से चल रहा था। उसमें एकाएक मानो बिजली का प्रवेश हो गया। निश्चय ही इसका कारण एक युवती थी। किसी उत्सव-समारोह में वह

अपने भाई के साथ आयी थी। किन्तु जिस क्षण से मेरी आँखें उस पर पड़ीं मुझे और कुछ सूझता ही न था। ऐसी सुन्दरी मैंने पहले कभी देखी ही नहीं थी। हास्यरंजित आवाज के साथ वह बोलती। ऐसी खुश-मिजाज और आनन्दी स्त्री मैंने कभी नहीं देखी थी। आग्विनॉल्डो को पकड़ने के लिए मैंने जैसी दौड़धूप की थी, ठीक वैसी ही जेन के लिए भी की। वड़ी साहसी और तेज थी वह। फर्क सिर्फ इतना ही था कि आग्विनॉल्डो को मैं कभी गिरफ्तार नहीं कर सका, जव कि जेन एक महीने के अंदर ही मुझसे शादी करने के लिए राजी हो गयी। उसने सिर्फ इतना ही कहा : "किन्तु अभी नहीं, अपने माता-पिता के सन्तोष के लिए मुझे अपने स्कूल की पढ़ाई तो पूरी कर ही देनी चाहिए।"

जेन संगीत का खास अध्ययन कर रही थी। पियानो वजाने में वह निपुण थी। नये-नये रागों की रचना भी कर लेती। उसके पिता ने हमारे खेत के पड़ोस में ही एक वड़ा-सा खेत खरीद लिया था। जेन का खयाल था कि उसे संगीतशाला में भेजकर उसके माता-पिता ने एक वड़ा वोझ उठाया है। इसलिए इस अभ्यास-क्रम को पूरा कर लेना उसका कर्तव्य था।

एक रात उसने एक नयी चीज मेरे सामने वजाकर सुनायी। ऐसी आकर्षक तान मैंने कभी नहीं सुनी थी।

"यह क्या है ? यह तो मैंने कभी नहीं सुना !"— मैंने कहा।

जेन ने हँसते हुए कहा : "कहाँ से सुनते प्रियतम ! आज ही तो मैंने इसकी रचना की है—खास तौर पर आपके लिए।"

यह धुन मैंने उससे वार-वार वजवायी और याद हो जाने के वाद दिनभर उसे सीटी में वजाया करता। यह मोहक तान हमारे लिए प्रेम की गाँठ वन गयी।

यह किस्सा ईस्टर की छुट्टियों का है। इसके वाद वह स्कूल में चली गयी, किन्तु गर्मी की छुट्टी में फिर लौट आयी। गर्मी का यहमौसम मेरे लिए जीवन के ग्रीष्मों में अत्यन्त अधिक-से-अधिक सुखकर रहा।

सितम्वर के प्रारम्भ में जेन और मैं जारिका के एक सम्मेलन में गये। वहाँ से लौटते हुए हम अपने दफ्तर में रुक गये। खिड़की में वैठकर जेन वह

गीत गुनगुना रही थी। इतने में "आग-आग" का शोर सुनाई दिया। हम एकदम खड़े हो गये। मैंने दफ्तर का मुख्य दरवाजा खोल दिया। रात का पहरेदार हमारी ओर दौड़ता हुआ आ रहा था।

"गोदाम की तीसरी मंजिल पर आग लगी है। शायद अस्तबल खतरे में है।"

अस्तबल में रात-पाली के तीन आदमी थे। बूढ़ा बाँश और दो दूसरे। हम वहाँ पहुँचे, इसी बीच बाँश ऊपर के ढाल के रास्ते से नीचे आता दिखाई दिया।

"कहीं आग लग गयी है, मिस्टर लैंगफर्ड! पीछे की खिड़कियों से तो ऐसा दीखता है, मानो सारा शहर जल रहा है।"

दूसरे दो आदमी भी ऊपर से उतर रहे थे। मैंने उन्हें आवाज देकर वहीं रोक दिया और कहा: "तुम लोग वहीं खड़े रहो। बाँश और हम घोड़ों के रस्से काट देते हैं। वे जैसे ही नीचे आयें, तुम उन्हें दूर भगा देना।"

"वह देखिये, वे तो आ ही रहे हैं।"

बाँश और मैं घोड़ों की ओर जाने के लिए दौड़े, किन्तु जेन ने मुझे पकड़ लिया और न जाने के लिए आग्रह करने लगी। स्थिति गम्भीर तो थी ही। बाहर से आग बढ़ती हुई दीख रही थी, फिर भी अभी अस्तबल बचा हुआ था। जेन को मैंने पीछे ढकेल दिया, पर वह मुझसे चिपटी रही और उसने मेरे साथ चलने का हठ पकड़ लिया। इसी क्षण टाम दिखाई पड़ा। मैंने उसे जोर से चिल्लाकर कहा:

"टाम! सुन, मैं घोड़ों को देख लूँगा। तू जेन को संभाल।"

मैं ऊपर पहुँचा। वहाँ से मैंने देखा कि जेन को टाम ने अपने कन्धों पर उठा लिया है और वह छूटने के लिए छटपटा रही है।

"बाँश, पहले पीछेवाले अस्तबल को छोड़। तू कहाँ है?"

"यही कर रहा हूँ सेठ।"—बाँश का काला पंजा एक घोड़े पर पड़ते मैंने सुना। इसी समय एक भूरा घोड़ा छूटा और ढाल की तरफ भागा। मैं एक फावड़ा लेकर बाँश की तरफ दौड़ा।

नीचे से आदमियों की आवाजें आ रही थीं। मदद आ पहुँची थी। वे लोग ऊपर आये। इसी समय गोदाम की छत गिरने की आवाज सुनाई दी।

नीचे से लोग हमें बाहर निकलने के लिए चिल्ला-चिल्लाकर आवाज दे रहे थे। मेरी सवारी की छोटी-सी घोड़ी अन्दर रह गयी थी। दुर्भाग्य से वह बिलकुल आख़िर में थी। मैं वहाँ पहुँचा, तो छत कड़कड़ा रही थी और घोड़ी घबरायी हुई थी। इसलिए उसे पकड़ना बहुत मुश्किल था। उसके पास घास में एक चिनगारी गिरी और वह सुलग गयी। मैंने घोड़ी को घुमाने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वह मुझे आग की ओर ही खींचती रही। मैं घबरा गया, गिर पड़ा और मेरी बाँह आग की लपटों में आ गयी। कन्धे तक वेदना का एक झटका लगा। मैंने घोड़ी को एक चाँटा लगाया, तब वह पीछे हटी। दूसरी तरफ से बूढ़ा बॉश आ गया। उसने उसे रास्ते पर लगाया। दूसरे घोड़े तो कभी से निकल भागे थे। हम नीचे उतरे, तब तक तो पीछे के सारे भाग में आग फैल गयी थी।

जेन तो मानो पागल हो रही थी। टाम ने उसे पकड़ रखा था। उसने मेरी जलती हुई आस्तीन और फिर बाँह भी देखी। उसे बड़ा दुःख हुआ। रुमाल से हाथ बाँध देने का वह मुझसे आग्रह कर रही थी।

"बहुत दर्द कर रहा है न नेड ?"

"मेरा हाथ पाप की तरह दर्द कर रहा है।"

"परन्तु यह हाथ ! पीछे की तरफ तो बहुत ही जल गया है।"

मैंने हाथ घुमाकर देखा। सचमुच वह जल गया था, यों मामूली नहीं। फिर भी वहाँ दर्द नहीं था।

इसी समय मेरा डॉक्टर मित्र होरेस बिडल वहाँ आ पहुँचा। जेन ने उसे नजदीक बुलाया। पलभर में उसने अपना सारा सामान तैयार कर लिया और हाथ की मरहमपट्टी शुरू कर दी। मैंने कहा : "डॉक्टर, पहले इस हाथ का इलाज करो। यहाँ तो मानो शैतान की भट्ठी सुलग रही है।"

"तब इस हाथ में तो दो-दो शैतान की भट्ठियाँ जलती होंगी ?"

"नहीं, नहीं"—"मैं बड़बड़ाया"—"हाथ पर पट्टी चढ़ाओ। दर्द कहाँ हो रहा है, सो तो मैं जानता हूँ न ?"

उसने दोनों जगह मरहमपट्टी कर दी। फिर कुछ समय ठहरकर वह बोला : "देखो नेड, जितनी जल्दी हो सके, दवाखाने चले आओ। फिर मैं वहाँ इसे ठीक से बाँध दूँगा। ये घाव जरा सख़्त ही हैं।"

टाम ने कहा : "भैया, तू जा। नौकरों को बुलाकर मैं घोड़ों की सारी व्यवस्था कर लूँगा।"

जेन के साथ गाड़ी में बैठकर मैं बिडल के दवाखाने में गया। वहाँ उसने पूरी बाँह को फिर से खोलकर देखा और बहुत बारीकी से उपचार किया। घाव होने पर भी मेरी भुजा का एक भाग उसे संज्ञाशून्य दिखाई दिया।

"नेड, यहाँ तुझे कभी कोई गोली वगैरह तो नहीं लगी है ? अन्य कोई चोट या फौजी खच्चर की लात जैसी कोई चीज तो नहीं लगी है ?"

"तेरा भी क्या दिमाग है ! वहाँ ऐसा कोई निशान भी है ?"

"जहाँ तक मेरा दिमाग काम देता है, यहाँ तो कुछ भी नहीं दीखता। फिर भी अकारण कोई भाग इस प्रकार संज्ञाशून्य कैसे हो सकता है ? खैर, इसके कारण तुझे वेदना नहीं होती, यह एक लाभ ही मान और चिन्ता छोड़ दे।

जेन और मैं लौट आया। टाम को भी हमने गाड़ी में बिठा लिया।

"आग तो बुझा दी गयी है नेड और घोड़े भी सब मिल गये हैं।"

"जेन, आज की दुर्घटना में मुझे यदि कुछ हो भी जाता, तो यह नन्हा सारा कारोबार भलीभाँति सँभाल लेता।"

"नहीं जेन, नेड की बात सच न मान लेना।" टाम ने प्यार से कहा। ◆◆◆

चिन्तनीय चकत्ते : ३ :

आग के वाद के महीने काम की गड़वड़ी में वीत गये। मैं सुवह से रात तक लगातार वीमे की रकम वसूल करना, अग्निरोधक (फायर-प्रूफ) मकान के ठीके देना, नयी गाड़ियाँ और ठेले खरीदना आदि कामों में उलझा रहता। नयी खरीद में दो मोटरें भी थीं। यों तो घोड़े हमें पसन्द थे, लेकिन यह तो साफ दीख रहा था कि आनेवाले जमाने में माल पहुँचाने का सावन मोटरें ही होंगी। जव हमने पहले-पहल ये दो ट्रकें खरीदीं, तो सारे देश में इस प्रकार की ट्रकें कुल छह हजार थीं। इसमें झंझट भी कम न थी। वार-वार टूट-फूट होती रहती और मरम्मत करनी पड़ती। कालेज की पढ़ाई पूरी होने के वाद टाम ने सोचा कि किसी मोटर वनाने के कारखाने में ही सीधे पहुँच जायँ और उससे सम्वन्ध रखनेवाला जरूरी ज्ञान प्राप्त कर लें। यह विचार हम सवको पसन्द आया, क्योंकि पूरे परिवार पर कुछ-न-कुछ मोटरों का पागलपन सवार हो ही गया था। तीन महीने वाद टाम कुछ ज्ञान और वहुत-सा उत्साह लेकर लौटा। तीसरी एक और ट्रक खरीदने के लिए वह मेरे पीछे पड़ गया। उसने मुझमें इसके प्रति इतनी दिलचस्पी पैदा कर दी कि मोटर की यन्त्ररचना समझने में मैंने भी काफी समय विताया।

भविष्य सुन्दर नजर आ रहा था। जेन अन्तिम वर्ष में थी। उसके लौटने पर जून में विवाह करने का हमने निश्चय कर लिया था। माँ और मावेल को वह वहुत प्रिय हो गयी थी। मावेल भी किसीसे प्रेम करने लग गयी थी। इसलिए दोनों वहनों को एक दूसरे की वातें सुनने में वड़ा रस मिलता और निरन्तर उनका पत्र-व्यवहार चलता रहता। जेन के स्कूल में जाने से पहले ही हम दोनों के लिए मकान वनाने का काम भी मैंने शुरू कर दिया। हमारे खेत के दक्षिण तरफ नदी और जंगल के पास वह जगह थी। उसका काम देखने के लिए मुझे वहाँ रोज चक्कर लगाना पड़ता। इस प्रकार मुझे मुश्किल से फुरसत मिलती। चुनाई का काम देखने के लिए दिन में मुझे कितनी ही वार खेत से शहर और शहर से खेत के चक्कर लगाने पड़ते।

धीरे-धीरे मेरे घाव भर गये, पर वह संज्ञाशून्य जगह वैसी ही रह गयी थी। डॉ० विडल को निश्चय था कि अवश्य ही मुझे वहाँ कोई चोट लग गयी है और मैं उसे भूल गया हूँ।

वड़े दिनों की छुट्टियों में जेन घर आयी। वे दिन और रातें अनुपम आनंद की थीं। टाम को काम सौंपकर मैं दफ्तर में गोता लगा देता। जाड़े के वावजूद जेन और मैं अपने अधूरे वने मकान का चक्कर लगाते और लगभग हर रात किसी-न-किसी जलसे में जाते। स्कूल खुलने पर वह पुनः लौट गयी। यह मुझे अच्छा नहीं लगा। किसी तरह मन को समझाया कि यह उसका अंतिम वियोग है। केवल पाँच-छह महीने और काटने हैं। उसकी ट्रेन खुली। जव तक गाड़ी दीखती रही, पायदान पर खड़ी-खड़ी वह वरावर रुमाल हिलाती रही।

दफ्तर पहुँचने पर मेज पर वॉव सेलर्स का पत्र पाया। अव वह लगभग हमेशा के लिए फिलीपाइन में वस गया था। पुलिस-विभाग में मेजर हो गया था। उसके पिछले कई वर्ष दक्षिण के टापुओं में, खासकर मिण्डानाओ में मोरोल लोगों के साथ लड़ने में वीते। मोरोल कौम के लोग वड़े कट्टर और लड़ाकू होते हैं। ये मुसलमान हैं। उनकी मान्यता है कि किसी नास्तिक को भाले की नोक पर चढ़ाना स्वर्ग में प्रवेश पाने का निश्चित मार्ग है। नास्तिक का अर्थ है, नापाक ईसाई—फिर वह फिलीपाइन हो या अमेरिकन। मुझे हँसी आयी कि कितनी अजीव है यह दुनिया। हम उन्हें नास्तिक कहते हैं और वे हमें देखकर नाक-भौंह चढ़ाकर न केवल यही कहते हैं कि 'मुर्दो, नास्तिक तो तुम ही हो', वल्कि वर्छी लेकर हमारे पीछे भी पड़ जाते हैं।

इस पत्र में मेरे पुराने मित्रों के वारे में कुछ नहीं लिखा था। किन्तु एक महीने के अन्दर उसका एक और पत्र आया। चरिता के भाई साँचो को क्यूलियन नामक किसी द्वीप में रवाना कर दिया गया था। चीनी समुद्र के तट पर मनीला से कोई दो सौ मील दक्षिण में यह द्वीप है। वहाँ अमेरिकनों ने कोढ़ियों का एक उपनिवेश वसाया है। वॉव ने लिखा था कि वहाँ कितने ही अच्छे, होशियार डॉक्टर हैं और वे इस विलक्षण रोग को मिटाने के वारे में वहुत आशान्वित हैं। चरिता के वारे में भी इस पत्र में कई नयी वातें थीं। शादी कर वह सेवू रहने के लिए चली गयी थी। परन्तु कुछ ही दिनों वाद

विधवा हो गयी। उसे एक बच्चा भी हुआ था, पर वह भी जाता रहा। मैंने तुरन्त वॉब को पत्र लिखा कि मेरी मदद की जरूरत हो, तो मुझे तुरन्त सूचित करें। मैकिसमिनो तथा चरिता को भी मैंने पत्र दिये। उनमें उन बातों का जिक्र नहीं किया, जिन्हें वॉब ने अपने पत्र में लिखा था। सिर्फ अपनी ही कुछ बातें लिखीं और बताया था कि मैं उन सबकी कितनी याद किया करता हूँ।

वसंत ऋतु आ गयी। कुछ ही महीनों में जेन घर—'हमारे घर' वापस आ जायगी। स्नान-घर के फव्वारे के नीचे मैं सीटी पर गीत गाता नहा रहा था। इतने में बाँह पर के उस चकत्ते की याद हो आयी। मैं तो उसे एकदम भूल गया था। मैंने हाथ घुमाकर उसे पुनः देखा।

एक अजीब भाव मेरे मन में आया और बरफ के ठण्डे पानी की तरह वह शरीर की रग-रग में फैल गया। यह क्या? ऊपर कंधे पर भी एक दूसरा चकत्ता! अपना नाखून गड़ाकर मैंने उसकी जाँच की। अजीब बात! पहले की भाँति इसमें भी स्पर्श-ज्ञान नहीं था। फव्वारे के नीचे से निकलकर मैं कपड़ों की आलमारी के पास गया। उसमें से नहनी निकालकर उसकी नोंक उस सफेद चकत्ते पर चुभायी। अब तो शंका ही नहीं रही। वहाँ कुछ भी मालूम नहीं पड़ता था।

जल्दी-जल्दी मैंने कपड़े पहने। माँ से कहा: "भोजन के लिए वह मेरी राह न देखे, शहर में ही खाना खा लूँगा।" मोटर में बैठा और डॉक्टर विण्डल के यहाँ आ पहुँचा। उसकी पत्नी ने दरवाजा खोला। डॉक्टर की स्त्री होने के कारण किसीके बहुत जल्दी आने पर उसे आश्चर्य होने का कोई कारण नहीं था। उसने मुझे बैठक में बैठने के लिए कहा और विण्डल को सूचना दी।

विण्डल के अन्दर आते ही मैंने कहा: "यह तो देख, पहले के जैसा कम्बख्त एक और चकत्ता यहाँ हो गया है।"

उसने दोनों चकत्तों की पुनः जाँच की। 'काप' लगाकर भी देखा। फिर प्रयोगशाला में जाकर एक लम्बी सुई लायी और कहने लगा: "इससे कुछ घाव होगा, पर हमारी समझ में आ जायगा।"

ठीक परीक्षा हो, इस विचार से मैंने अपनी आँखें मूँद लीं।

"कुछ मालूम होता है ?"—उसने पूछा।

"जरा भी नहीं। तेरा क्या खयाल है ?"

"कुछ समझ में नहीं आता नेड ! किन्तु घवड़ाना तो वेवकूफी है। मेरी समझ में नहीं आता तो क्या ? चमड़ी की अनेक वीमारियाँ होती हैं, जो पहचानी नहीं जा सकतीं। इसलिए इनके खास जानकार की सलाह लेने को जरूरत है। डॉ॰ डिक्सन को दिखा। उसे तो तू जानता ही है।"

हमारे शहर में यह नया ही आया था। मैं उसे यों ही कुछ-कुछ जानता था।

"तू कहे तो, मैं उसे फोन कर दूँ।"

मैं कमीज पहन रहा था। मैंने कहा : "होरेस ! आज तक मैं शायद ही कभी वीमार पड़ा होऊँगा। फिलीपाइन में इतने वर्ष रहा। मेरे साथियों को जाने कितनी वीमारियाँ हुईं, पर मैं वचता गया। फिर वहाँ कैसी-कैसी हालतों में मुझे रहना पड़ा ! कभी-कभी ऐसी मुसीवतों में से गुजरना पड़ा कि उनका हाल सुनाने लगूँ, तो तुझे विश्वास भी न होगा। फिर भी वीमारी के तो नाम से भी मैं दूर रहना चाहता हूँ। खैर, डिक्सन को फोन तो कर। अगर उसे समय हो, तो मैं अभी वहाँ जा सकता हूँ।"

इसके वाद आधे घण्टे में डिक्सन ने मेरी जाँच पूरी कर ली। वह भी चक्कर में पड़ गया। वोला : "जैसा कि मैंने कहा है, कोरी वातें वनाने में कोई लाभ नहीं। मुझे सच-सच वता देना चाहिए कि मैं इसका निदान नहीं कर सका हूँ। आज तक मैंने ऐसा केस नहीं देखा। आपके स्थान पर मैं होऊँ, तो किसी वड़े शहर में जाकर अपने से किसी अधिक अच्छे डाक्टर को दिखा दूँ।"

तो ऐसी वात है ! जीवनभर मुझे कभी डाक्टर की जरूरत नहीं पड़ी। आज जव जरूरत मालूम हुई, तो ये कहते हैं कि आपका केस हमारी समझ में नहीं आता। मैं वापस घर आया। दूसरी वार फव्वारे के नीचे वैठा। वाँह को खूव रगड़-रगड़ कर धोया। उसकी चमड़ी लगभग उतर गयी ! फिर उस पर स्पिरिट डाला और एक साफ पट्टी चढ़ाकर दफ्तर में चला गया।

इन दिनों काम तो ढेरों था, फिर भी वार-वार उन चकत्तों का विचार

आता रहता और काम में दिल नहीं लगता था। जले हुए निशान की मुझे चिन्ता नहीं थी। उसे तो मैंने कमाया था। परन्तु ये दो भद्दे चकत्ते कहाँ से आये? जाते क्यों नहीं? निःसन्देह यह कोई नयी चीज है।

डिक्सन से मिलने के लगभग एक महीने वाद मुझे एकाएक एक शंका हुई। संभव है, वह मेरे दिल में पहले से ही छिपी वैठी हो और मैंने उसे स्पष्ट होने देने की हिम्मत न की हो। डिक्सन की सलाह का असर तो मेरे दिल पर हुआ ही था। मुझे लग रहा था कि जेन के लौटने से पहले मुझे सेन्ट लुई या केन्सास जैसे किसी वड़े शहर में जाकर किसी वड़े डाक्टर की सलाह ले लेनी चाहिए। एक रात मैं कुछ पुराने पत्रों को उलट-पुलट रहा था। वॉव के वहुत-से पत्र तो मैंने जला दिये थे—खास तौर पर जिनमें साँचो और चरिता का जिक्र था। इसका मुख्य कारण यह था कि इन मित्रजनों का जिक्र मैंने यों तो कई लोगों के सामने किया था, किन्तु टाम को छोड़कर इनमें से किसीको इनकी विपत्ति का हाल मालूम होने देना नहीं चाहता था। जेन के कितने ही पत्रों में मुझे वॉव का भी एक पत्र मिला। भूल से यह जलाया नहीं जा सका था। उसे हाथ मे लेकर मैं वैठा और उस पर विचार करने लगा। नोलास्को-परिवार, उनका मकान, साँचो, चरिता ये सव मेरी आँखों के सामने खड़े हो गये। इनके साथ-साथ उन चकत्तों का भी भान हो आया।

घर में सभी सो रहे थे। वत्तियाँ गुल कर दी गयी थीं। मैं अंधेरे में ही सीढ़ियों से उतरा और खेतों में घूमने लगा। सव विचित्र मालूम हो रहा था। नौ वर्षों से मैं घर पर हूँ। शरीर से जवान और हट्टा-कट्टा! डाक्टरों को इन चकत्तों के वारे में कोई डर नहीं लग रहा है। विण्डल का खयाल है कि यह किसी पुरानी चोट का परिणाम है। किन्तु नहीं, यह अभिप्राय तो उसने पहले चकत्ते के वारे में दिया था। दुर्घटना? हाँ, एक वार फुटवाल खेलते हुए मुझे कहीं चोट लगी तो थी। किन्तु वह तो दूसरा कन्धा था। एक वार घोड़े पर से भी गिरा था। किन्तु उस समय कुछ चोट लगी थी या नहीं, और यदि लगी भी तो कहाँ, यह कुछ भी याद नहीं। पूर्व की ओर प्रकाश होता हुआ देखकर मुझे होश आया कि मैं रातभर भटकता रहा हूँ। हमारा नया मकान जहाँ वन रहा था, मैं वहाँ पहुँचा। कुछ देर उसे देखता खड़ा रहा। फिर तेजी से घर की

ओर मुड़ा। उन चकत्तों पर मैंने नजर नहीं डाली। लेकिन इससे क्या? नजर डालूं या न डालूं, वे दिमाग से थोड़े ही जा सकते थे।

दफ्तर गया तो हमारा कंट्राक्टर मुझसे मिलने आया था। नये गोदाम के अग्निरोधक (फायर प्रूफ) मकान के दरवाजों में मैंने कुछ हेरफेर सुझाये थे। उनके वारे में उसने मुझसे कुछ वातचीत की। उसके चले जाने पर मैं शून्यमन हो विचार करने वैठ गया। इस रोग के वारे में कहीं से जानकारी मँगायी जा सकती है? गाँव के हर डॉक्टर से पूछते वैठना और 'मुझे कुछ हो गया है' इस तरह की चर्चा सर्वत्र फैलाना ठीक नहीं लगा। हमारे पुस्तकालय में वैद्यकसंवन्धी पुस्तकें जरूर थीं। किन्तु उसके ग्रन्थपाल को—जो मुझे वचपन से जानता था—कैसे कहूं कि "मुझे कुछ हो गया है और इस रोग (चमड़ी के रोग) के सम्बन्ध की कितावें मुझे निकलवा दीजिये!"

टाम एक वीमार घोड़े के वारे में मुझसे कुछ कहने के लिए आया। नयी मोटरों के शौक के कारण इसके घोड़ों के शौक में जरा भी कमी नहीं पड़ी। पशु-डॉक्टरों की अपेक्षा टाम और वूढ़े वॉश के इलाज में मुझे अधिक श्रद्धा थी।

"क्यों, जाड़ा लग रहा है?"—उसने मुझसे पूछा।

"नहीं तो, क्यों?"—फौरन मुझे होश आया कि रोज की भाँति आज मैं कमीज की आस्तीनें चढ़ाकर नहीं वैठा था—"अच्छा, इसीलिए तू पूछ रहा है? उन दरवाजों के वारे में आज हेण्डरसन वहुत जल्दी आ गया था। उसकी वातों में कोट उतारना भूल गया।"

टाम मेरा—जेन का और मेरा—प्रिय गीत सीटी पर वजाता हुआ वाहर निकला। ठगोरे को इस तरह मुझे चिढ़ाने में मजा आता। वह जानता था कि दूसरा कोई हमारा गीत गाता, तो हमें अच्छा नहीं लगता था।

उस रात घर पर लौटते हुए मुझे खयाल आया कि शायद वाइविल में इस विषय में कुछ जानकारी होगी। भोजन के वाद अपने कमरे में जाने पर मैंने उसमें ढूँढना शुरू किया। किन्तु दो घण्टे तक ढूँढने के वाद भी मुझे शंका वढ़ानेवाली कोई चीज दिखाई नहीं दी। फिर वेन हूर की याद आयी। शायद इस पुस्तक में कुछ होगा। सोचा—वहुतकर सवसे ऊपरवाली नीची मंजिल

में वह कहीं पड़ी होगी। एक मोमवत्ती लेकर मैं वहाँ गया। सन्दूकों और आलमारियों में ढूंढ़ते-ढूंढ़ते किताबों से भरे एक ट्रंक में वह पुरानी किताब मुझे मिल गयी। उसे मैं नीचे अपने कमरे में ले आया और जिस प्रसंग की जरूरत थी, वह मैंने देखा। वेन हूर अपनी माँ और वहन को खोज रहा था, परन्तु जव वे मिलीं, तो वे उससे दूर भागने लगीं। उससे कहने लगीं : "नापाक ! नापाक ! हमारे पास मत आ।" मैंने हूर का वह वर्णन पढ़ा और एक लम्बी साँस लेकर किताव नीचे रख दी। इस प्रकार घवराने की कोई जरूरत नहीं, वल्कि मूर्खता है। शान्ति के साथ मैं विस्तर पर लेट गया और इतना सोया कि अगली रात के जागरण की कसर निकाल ली।

दूसरे दिन गाँव की ओर जाते हुए टाम ने मुझसे पूछा : "क्या वात है ? जेन ने कोई खुशखवरी भेजी है ?"

"नहीं तो ! क्यों ?"

आज सवेरे से तू वड़ी-वड़ी आँखें करके घूम रहा है। फिर स्नानघर में तो सभी गाते और सीटियाँ वजाते हैं। किन्तु जव आदमी भोजन करते-करते भी गाने लगता है, तो जरूर कुछ....। माँ ने जव तेरी तरफ देखा, तो उसे लगा कि तुझे जरूर कुछ हो गया है। भैया ! आप लोगों का मकान तैयार हो जाने पर दोनों प्रेमी जीव वहाँ आनंद से रहने चले जायेंगे, तो हम सवको कितना अच्छा लगेगा, इसकी तुझे कल्पना भी नहीं है।"

मैंने हँस दिया और वह वात वहीं छोड़ दी।

इसके वाद एक हफ्ता और वीत गया ! एक दिन छोटे भैया द्वारा स्वीकृत हक पर अमल करता हुआ मैं स्नान-घर में सीटी वजा रहा था कि पैर पर मेरी नजर गयी। यह क्या ? पहले दो की भाँति क्या यह तीसरा चकत्ता है ? मुझे भय तथा क्रोध भी आया। क्रोध इस वात पर कि वगैर किसी कारण के यह क्यों हो रहा है ? जव मैं शांति से सुख के सपने सेने की फिराक में हूँ, तभी ये दुष्ट क्यों मेरे जीवन में वार-वार दिखाई दे रहे हैं ! और भय इसलिए कि ये क्या हैं, इन्हें क्यों कोई समझ नहीं पा रहा है ? अव तो मुझे इनका पूरा-पूरा निदान करवाना ही होगा।

मैं सीधा डिक्सन के अस्पताल में पहुँचा। उसने इस चकत्ते की भी जाँच की।

"डाक्टर साहब ! बहुत दिन हुए, आपने कहा था कि मुझे इस विषय में किसी बड़े डाक्टर की सलाह लेनी चाहिए। बताइये, मुझे कहाँ जाना चाहिए ? मैं आज ही जाना चाहता हूँ।"

"मैं जिस अच्छे-से-अच्छे डाक्टर को जानता हूँ, वह सेंट लुई में रहता है। मैं पढ़ता था, तब मुझे उसके हाथ के नीचे बहुत काम करना पड़ा था। वह कुछ समय वाशिंगटन युनिवर्सिटी में पढ़ाता है। मैं उसे तार करता हूँ, ताकि वह आपसे मिलने के लिए तैयार रहे।"

मैं आफिस गया और वहाँ फोन पर ही माँ से कहा कि "वह मेरे पहनने के कपड़े दफ्तर में भिजवा दे। धंधे के किसी जरूरी काम से कुछ रोज के लिए दूसरे गाँव जा रहा हूँ। इतना समय नहीं कि घर पर आ सकूँ।" बात यह थी कि घर पर जाता, तो विदा होते समय शायद वह मुझे चूम लेती और उसे ऐसा करने देने में मुझे डर लग रहा था। खुशी की बात यह थी कि उस समय टाम हाजिर नहीं था। इसलिए चलने से पहले मैंने एक चिट्ठी लिखकर वहाँ रख दी। उसमें बीमे के बारे में कुछ सूचनाएँ लिखकर उसे बताया था कि हमारे नये मकान के लिए आवश्यक सामग्री के बारे में एक जरूरी समस्या को सुलझाने के लिए मैं बाहर गाँव जा रहा हूँ।

दोपहर के एक बजे पुलमन* की खिड़की से बाहर देखते हुए मैं सोच रहा था कि पता नहीं, अब कब और किस परिस्थिति में घर लौटना होगा। ◆◆◆

* पुलमन—रेल का वह स्वतंत्र डिब्बा, जिसमें सोने की सुविधा होती है। इसका किराया अधिक होता है। अब ऐसे डिब्बे भारत की रेलों में भी होते हैं। पहले-पहल रेल के पुलमन नामक किसी मालिक ने अपनी रेल गाड़ी में ऐसे डिब्बे लगाना शुरू किया, इसलिए उन्हें 'पुलमन' कहा जाता था।

घूरे का कचरा

: ४ :

यद्यपि बीमारी का निश्चित नाम लेने की मुझे हिम्मत नहीं हो रही थी, फिर भी उसका मुझ पर इतना आतंक छा गया था कि जीवन के हर काम में उसका असर होने लग गया। रेल में दूसरों से दूर रहने के लिए मैंने ड्राइंग रूमवाला अर्थात् खानगी डिब्बा पसन्द किया। बाहर अंधेरा हो जाने के बाद मैं बगैर कपड़े उतारे ही कोच पर लेट गया। नींद तो आ ही नहीं सकती थी। गाड़ी सुबह-सुबह सेण्ट लुई पहुँची। मैंने पैदल ही चलना ठीक समझा और खूब चला। अंत में हिम्मत कर डॉक्टर के दवाखाने में जा पहुँचा। सोचा यह था कि ऐसी एक भी बात न कहूँ, जिससे उसके मन में किसी प्रकार की शंका उत्पन्न हो। किन्तु भय इतना छा गया था कि अनजान में और अनिच्छापूर्वक ही कहीं कुछ मुँह से न निकल जाय।

आखिर मैंने मकान में प्रवेश किया। दफ्तर तीसरी मंजिल पर था। कार्यालय मामूली नहीं था। एक दीवानखाने में पाँच-छह स्त्री-पुरुष डॉक्टर से मिलने की प्रतीक्षा में बैठे थे। पास की चाल में अनेक कमरों के दरवाजे दिखाई दे रहे थे। एक पर 'वाटकिन्स' का नाम लिखा था। मुझे उसीसे मिलना था। हाथ में अपना टोप घुमाता हुआ मैं दीवानखाने में खड़ा था। अंत में एक नर्स वहाँ आयी। अपना नाम बताते ही वह बोली : "मेरे आने का पता डॉक्टर को पहले से ही था और समय मिलते ही वे मुझे बुलवा लेंगे।" उसने मुझे बैठने के लिए कहा। लेकिन मुझे इतनी शांति कहाँ, जो बैठता। मैं खिड़की के पास गया और खड़ा-खड़ा शहर को देखने लगा। किन्तु उसमें भी मेरा मन नहीं लग रहा था। मैं अपने विचारों में ही मग्न था—जेन को मुझे यह लिखना चाहिए था या नहीं। मैं रोज उसे पत्र लिखता। आज तो मुझे लिखना ही चाहिए। और माँ! वहाँ से मैं एकाएक चला आया, इसलिए उसे बुरा लग रहा होगा। मुझे उसे भी पत्र देना चाहिए। बीमे के बारे में तो चिन्ता की कोई बात ही नहीं है। टाम सब निपट लेगा।....इतने में नर्स आयी और मुझे अपने साथ ले गयी।

चाल के रास्ते वह मुझे एक कमरे में ले गयी और मेरे नाम का जोर से उच्चारण कर चली गयी। लगभग पचपन वर्ष का एक पुरुष मेरे सामने था। बाल पक गये थे, परन्तु दीखने में तरुण लग रहा था। उसके चेहरे पर विश्वास पैदा करनेवाली और सफल जीवन की झलक थी। मेरी शंकाएँ भाग गयीं। मुझे निश्चय हो गया कि यह पुरुष मेरी बीमारी का सही-सही निदान बता देगा।

"आइये मि० लैंगफर्ड। डॉ० डिक्सन का तार मुझे मिल गया था। वे बहुत अच्छे आदमी हैं। मुझे अफसोस है कि सिर्फ मुझसे मिलने के लिए आपको इतनी दूर आने का कष्ट उठाना पड़ा। किन्तु, किन्तु, अच्छा तो दिखाइये। आपकी कोठी और उसमें लगी आग के बारे में कुछ दिन पूर्व मैंने समाचार-पत्रों में पढ़ा था। सब घोड़ों को आपने बचा लिया, यह बहुत बड़ी बात है। मुझे घोड़े बहुत अच्छे लगते हैं।"

इस बीच मैंने कोट, कमीज उतारी और उसने मेरे चकत्ते देखना शुरू किया।

"बस, यही हैं न ?"

"एक पांव पर भी हैं"—कहकर मैंने पैंट भी उतार लिया। चकत्तों पर उसने तीखी चीजें चुभायीं और बड़ी सतर्कता के साथ पूरे शरीर की जाँच की। मेरे और सारे परिवार के स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ की। फिलीपाइन की अपनी नौकरी के बारे में मैं कुछ कहना नहीं चाहता था। किन्तु वे तो प्रश्न पर प्रश्न पूछते ही गये और यह बात भी मेरे मुँह से उसने कहलवा ली। फिर कपड़े पहन लेने के लिए कहा।

"देखिये भाई, यह तो एकदम नयी चीज मेरे देखने में आयी है। इस तरह के धब्बों के बारे में कुछ स्पष्टीकरण तो दिया जा सकता है, परन्तु वे आपको लागू पड़ते जान नहीं पड़ते। आपके लिए मैं क्या कर सकता हूँ, यह समझ नहीं पा रहा हूँ। इससे भी अधिक दुःख की बात तो यह है कि आपको कहाँ जाने की सलाह दूँ, यह भी नहीं सूझ रहा है।"

मैं तो स्तब्ध रह गया। इतने बड़े डॉक्टर को भी कुछ सूझ नहीं रहा है! परन्तु आदमी है तो सीधा, सच्चा। अपनी असमर्थता पर उसे सचमुच दुःख

हो रहा है। वह अनुभव करता है कि मैं गड्ढे में गिरा हूँ और मुझे मदद की जरूरत है। मैंने उसकी आँखों में देखा कि उससे जो भी सहायता वन पड़ेगी, वह करना चाहता है। इसलिए मैंने अपने मन में सोचा कि यदि उससे कोई सहायता लेनी है, तो मुझे भी उसे सहयोग देना चाहिए।

"डॉक्टर"—मैंने कहा। मेरी आवाज कुछ भारी और विचित्र हो गयी थी—"यह कोढ़ तो नहीं ?"

उसने एक अजीव ढंग से मेरी तरफ देखा। एक मिनट तक वह केवल देखता ही रहा, ऐसा मुझे लगा। उसकी विशाल आँखें मुझे देखती ही रहीं।

"यह आप क्यों पूछ रहे हैं ?"

तव सारी वातें निकल पड़ीं। सांचो और चरिता। उस द्वीप में विताये चार वर्ष। हुक्म के अनुसार जगह-जगह की गयी दौड़-धूप। वहाँ के निवासियों के मकान में उनके साथ निवास। अथवा कूच के वाद थकी हुई हालत में किसी गूजरी में पडाव डाला जाना। किसी छोटी-सी किश्ती पर सिपाहियों और दूसरे प्रवासियों का साथ। रात में एक-दूसरे से सटकर विस्तर लगाना, हफ्तों तक मठों और पुराने स्पैनिश किलों में रहना और वह कोढ़घर, जहाँ मैं भूल से चला गया था—यह सव उसे सुनाया।

"किन्तु यदि वॉव सेलर्स के साथ मेरा पत्र-व्यवहार जारी न रहता, तो मैं इन सव कड़ियों को जोड़ नहीं सकता था।" मैंने गद्‌गद कंठ में कहा : "मुझे वहम होता रहता है कि कहीं वही तो यह नहीं है। कुछ कहते नहीं वनता। कुछ भी सूझ नहीं रहा है। और—और जून में तो मेरी शादी होने जा रही है।"

उसकी नजर पर से मैं समझ गया कि पिछले कितने ही महीनों से मेरे हृदय में जो चिन्ता की आग धधक रही थी, उसे वह पहचान गया। वोला : "वेटा"—कितने ही वर्षों से मुझे किसीने 'वेटा' नहीं कहा था—"वेटा, अपने संपूर्ण जीवन में मैंने केवल एक केस कोढ़ का देखा है। मै कॉलेज में था, तव एक केस आया था। वह कोढ़ ही रहा होगा। नहीं भी रहा होगा। परन्तु अन्त में डॉक्टरों ने उसका निदान तो कोढ़ का ही दिया था। उस समय मैंने उसके सम्बन्ध की पुस्तकें पढ़ी थीं। परन्तु मैं नहीं कह सकता कि

आपका केस कोढ़ का है या नहीं। मुझे नहीं मालूम कि इसकी निश्चित परीक्षा करनेवाला इस संपूर्ण शहर में भी कोई है भी या नहीं।" फिर कुछ देर वह खिड़की से बाहर की तरफ देखता खड़ा रहा। फिर मेरी तरफ मुड़कर बोला :

"ऐसा करो। मुझे पता लगाने के लिए कुछ समय दें। दो घण्टे सब चिन्ताएँ छोड़ जरा बाहर घूम आइये। यदि मुझे कोई योग्य व्यक्ति मिल जायगा, तो फौरन उससे आपको मिलाने की व्यवस्था कर दूँगा।"

मैं दफ्तर से बाहर निकला। नये डॉक्टर को दिखाने पर भी कोई विशेष तथ्य नहीं निकला। हाँ, एक हितचिन्तक मित्र जरूर मिल गया और अपने मन में पैदा हुए शक को मैं प्रकट भी कर सका। महीनों से मुँह पर ताला पड़ा था। उसके खुल जाने पर मन में कितना हलकापन मालूम होने लगा! बाद के दो घण्टे मैंने सड़कों पर घूम-घामकर और डॉक्टर के दवाखाने के पासवाले बगीचे में बैठकर बिता दिये। कितनी विचित्र परिस्थिति में और कैसे काम से मुझे इस शहर में आना पड़ा, इसके विचार मेरे दिमाग में घूमने लगे। बेचारे डॉक्टर! जब बीमार उनसे सलाह लेने आते हैं और उन्हें क्या सलाह दी जाय, यह उन्हें नहीं सूझता होगा, तब उन्हें कितना दुःख होता होगा? इसी आदमी को देखिये। इसके स्त्री-बच्चे भी होंगे ही। फिर भी मानो मैं उसका अपना--घर का--आदमी हूँ, इस तरह उसने मुझे सहारा दिया है।

मैं वापस गया। तब मुझे राह नहीं देखनी पड़ी। नर्स मुझे तुरन्त अन्दर ले गयी। डॉ० वॉटकिन्स उत्साह में और खुश था। हँसते हुए वह बोला : "आपके लिए बिलकुल योग्य आदमी मैंने ढूंढ़ लिया है। उसका नाम मेजर टॉमसन है। वर्षों तक वह फौज में डॉक्टर रहा है और बहुत समय तक फिलीपाइन में भी रहा है। अब पेंशन पा रहा है और शहर में प्रैक्टिस करता है। मेरी उससे जान-पहचान तो नहीं है, पर पूरी तरह पता लगा लिया है कि वह आदमी भला है। वह आपका ठीक निदान कर सकेगा, ऐसी आशा है। वह आपकी राह ही देख रहा होगा। एक टैक्सी लेकर चले जाइये, समय पर पहुँच जायेंगे।"

उसका आभार मानना अथवा फीस देना असंभव था। उसने दृढ़तापूर्वक

कहा : "आभार मानने जैसा तो मैंने कुछ किया नहीं है और फीस तो ले ही नहीं सकता" और हाथ मिलाया। इसके प्रति मुझे हमेशा बड़ी कृतज्ञता महसूस हुई है। मुझे क्या बीमारी है, इसकी आशंका होते हुए भी खतरा उठाकर उसने मुझसे हाथ मिलाया।

× × ×

मेजर टॉमसन ऐसा आदमी था कि दो हजार आदमियों के बीच भी उसे पहचाना जा सकता है। अनुभव द्वारा घड़ा-घड़ाया, वस्तुस्थिति से चिपटनेवाला, कष्ट-सहिष्णु और जिद्दी ! मलेरिया और कॉलरा फैले हुए द्वीपों में जिन्होंने अपने सिपाहियों को सुरक्षित रखा था, उनमें से एक वह था। वह अपने विचारों पर निष्ठुरता के साथ अमल करता। एक-दो आदमियों के जीवन की तो वह परवाह ही नहीं करता। उसका एकमात्र लक्ष्य होता था, रोग पर विजय पाना।

उसीने कहना प्रारम्भ किया : "वॉटकिन्स ने तेरी फौजी नौकरी की वात मुझे वता दी है। अच्छा, तू किस टुकड़ी में था ?"

"शुरू में कोलोराड़ो स्वयंसेवकों में। वाद में वगावत खतम होने तक स्थायी फौजी नौकरी में। मेरा अधिकतर समय पहाड़ी भागों में वीता है।"

"तव तो मैं शर्त वदकर कह सकता हूँ कि आग्विनॉल्डो को जो टुकड़ी पकड़ न सकी थी, उसमें जरूर तू रहा होगा। वह पट्ठा तुम लोगों के लिए तो वहुत चालाक था।"

शर्म और गुस्से से मेरा चेहरा सुर्ख हो गया।

"सुनिये, मेजर डॉ० वॉटकिन्स ने मुझे यहाँ मेरी वीमारी की जाँच के लिए भेजा है। भाड़ में जाय वह आग्विनॉल्डो। मुझे उससे कोई सरोकार नहीं। मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि ये धब्बे किस रोग के हैं ?"

"माफ करना भाई ! जव से मैंने यह दवाखाना खोला है, तव से फिलीपाइन का पहला प्राणी तू ही आया है। चल, तेरी जाँच करूँ और देखूँ कि इसके लिए शाम चाचा किस हद तक जिम्मेदार हैं।"

मेरी आँखें वन्द कर वह मेरे चकत्तों पर आलपिन फेरने लगा।

"फिलीपाइन कुटुम्वों में तुझे रखा गया था न ?"

मैंने फिर सारी कहानी सुनायी—मैकिसमिनो, सांचो, चरिता वगैरह की।

"हाँ, तुझे यह लड़की पसन्द आयी ?"

"जी, मैंने तो एक वार सोचा कि मैं उससे शादी करके वहीं वस जाऊँ।"

"हाँ, हाँ, मुझे भी एक वार ऐसी लड़की मिल गयी थी, सरवान्टिस में। कभी वहाँ गया था ?"

"नहीं।"

"खैर ! अव तेरे इन चकत्तों की चमड़ी के मुझे कुछ नमूने लेने होंगे।"

"आपको जितनों की जरूरत हो, ले लें। मुझे क्या हो गया है, सो एक वार मालूम हो जाना वहुत जरूरी है। यहाँ से वहाँ धक्के खाता हुआ मैं घूमूं और एक भी डॉक्टर ठीक से वता न सके—इससे मैं अव थक गया हूँ।"

हर चकत्ते में से उसने थोड़ी-थोड़ी चमड़ी काट ली, पर मुझे कुछ भी मालूम नहीं हुआ। फिर दोनों नासापुटों में एक-एक फाया रखकर काँच की एक स्लाइड पर उसका दाग लिया।

"तुम्हें थोड़ा रुकना होगा। इन सवकी मैं जरा जाँच कर लूँ।"

ध्यान से मैं उसकी सारी क्रियाएँ देखता रहा। स्लाइड्स पर उसने पहले कोई रंगीन पदार्थ डाला। फिर कुछ मिनट उसे हवा में हिलाकर सुखाया। फिर नल के नीचे रखकर उन्हें धो डाला। फिर उस पर ब्लॉटिंग रखा। फिर एक सँकरे मेज के पास जाकर एक खुर्दवीन के सामने वैठा और एक-एक काँच उसके नीचे रखकर खुर्दवीन को नीचे-ऊँचे कर उसके अन्दर से देखने लगा।

यह सव देखने में मैं तन्मय हो गया। वाहर, शहर की सारी आवाजें गुम हो गयीं। हमारा कमरा मानो छोटा वन गया। मानो केवल दो ही आदमी उसमें रह गये। एक माइक्रोस्कोप पर झुककर वैठा हुआ वह मेजर और दूसरा उसे वैठे-वैठे देखने और उसके निर्णय की वाट जोहने में निमग्न मैं। पहला काँच हटाकर उसने दूसरा काँच रखा।

वहुत वर्ष पहले मैंने एक आदमी का किस्सा पढ़ा था, जो वरसती हुई गोलियों के सामने देखता हुआ खड़ा था। उसकी मुझे याद हो आयी।

एकाएक अपनी कुर्सी पीछे ढकेलकर मेजर खड़ा हो गया और इस तरह वोला, मानो वहुत वड़ी विजय मिल गयी हो।

"जरा भी शक नहीं रहा, रत्तीभर भी नहीं। तू और मैं जितने सत्य हैं, उतना ही सत्य यह हैनसन* जंतु है।"

मेरा सिर चकराने लगा। उत्तेजना से मैं पागल-सा हो रहा था। मुझे लग रहा था कि मैं इस डॉक्टर की जान ले लूं। कितना खुश हो रहा है यह! और सो भी मेरे शरीर में लगे एक नापाक जन्तु पर। उस समय मेरे हाथ में बन्दूक होती, तो शायद मैं उसकी जान ही ले लेता। मैं जाने के लिए उठा। पैर लड़खड़ाने लगे। जैसे-तैसे मुश्किल से दरवाजे तक पहुँच पाया। इतने में वह मेरे पास आकर खड़ा हो गया।

"अरे-अरे, हे भगवन्! जवान, मुझे माफ करना, आ-आ, जरा बैठ। मेरे पास थोड़ी शराब है, वह तुझे देता हूँ। चल, थोड़ी देर एक साथ बैठकर हम लोग बीते दिनों की याद कर लें। यह मत समझ लेना कि मैं तुझे यों ही अधर में छोड़ दूँगा। ईश्वर का स्मरण करके मैं वचन देता हूँ। आ, थोड़ी शराब लेकर हम जरा ताजा हो लें। फिर तफसील के साथ बातें करेंगे।"

मुझ पर इन शब्दों का विशेष असर नहीं हुआ। किन्तु मेरे रोग के स्वरूप को पूरी तरह शत-प्रतिशत जान लेने के बाद भी अपने हाथ से सँभालकर वह मुझे कुर्सी के पास ले गया। इससे मैं गद्गद हो गया। मैंने शराब की प्याली मुँह से लगायी और उसे रख दिया—अधिक के लिए और फिर और भी अधिक के लिए। तभी मैं बोल सका।

"डॉक्टर, क्या अब कोई आशा नहीं? इस रोग का कोई इलाज नहीं है?"

"है, जरूर है। हाल ही में एक नया उपचार निकला है, वह सफल हो जायगा, ऐसी बहुत आशा है।"

---

* कोढ़ के जंतु का डॉक्टरी नाम। इसका पता लगानेवाले डॉक्टर का नाम इसे दिया गया। पुस्तक के अन्त में इस महारोग के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर दिये हैं, उन्हें देखें।

फिर तो वह बोलता ही रहा, बोलता ही रहा। यहाँ तक कि उसका कुछ उत्साह मेरे अन्दर भी आ गया। मेरी कमर जरा सीधी हुई और साँस कुछ धीमी पड़ी। उसने कहा :

"तू इस पर बहुत समय से विचार करता रहा है। किन्तु अब तुझे कुछ अधिक विचार करना होगा। मैं ऐसा प्रबन्ध कर दूँगा, जिससे कुछ दिन हम अधिक नजदीक रह सकें। आगे चलकर मुझे तेरे बारे में स्वास्थ्य-विभाग को रिपोर्ट भी करनी पड़ेगी। जीवन को नये ढंग से मोड़ने के लिए तुझे कुछ समय की जरूरत भी होगी। शहर से दूर, नदी के किनारे एक खाली मकान मेरे ध्यान में है। आज शाम को ही मैं तुझे वहाँ ले जाने की सोचता हूँ। तेरे खाने-पीने की तथा दूसरी चीजें मैं वहाँ पहुँचा दूँगा और जब तक सब ठीक नहीं हो जाता, मैं तुझसे मिलता रहूँगा।"

वह जो कुछ कहे, सब करने के लिए मैंने अपनी स्वीकृति व्यक्त की।

नदी के रास्ते किनारे-किनारे हमारी मोटर चली। कुछ ही समय में शहर पीछे छूट गया। यहाँ-वहाँ कुछ थोड़े-से मकान दीख रहे थे। वे बगैर पुते हुए किसानों के झोंपड़ों जैसे दीखते थे। अब हम नदी की तरफ जाने-वाली एक गली में मुड़े। मोटर रुकी। मैं नीचे उतरा और अबूझ जैसा खड़ा हो गया। एक बगैर पुता हुआ कामचलाऊ मकान हमारे सामने था। उसके आसपास एक नोकदार बाड़ थी। टॉमसन कुछ चीजें उस घर में ले गया। तब जाकर वहाँ से कुछ हटने की मुझे सूझी। वह तो बराबर बोलता ही जा रहा था। उसने कहा : "अब मुझे जाना चाहिए। मैं तेरे साथ रह नहीं सकता, इसके लिए माफ करना। किन्तु मैं बहुत जल्दी वापस आऊँगा।" इतना कह-कर वह अपनी मोटर में सवार हो चला गया।

पता नहीं, कितनी देर तक मैं उसकी तरफ ताकता रहा। एक घण्टे बाद मैंने अपना मुँह फेरकर विशाल मिसिसिपी की तरफ देखा। दूर, दूसरे किनारे पर या शायद बीच के टापू पर खड़े पेड़ दीख रहे थे, परन्तु वे एकदम हरे नहीं थे। मैं ठेठ किनारे के पास पहुँच गया और प्रवाह को देखने लगा। समय बीतता जा रहा था और मैं मूढ़वत् ताकता खड़ा था। फिर प्रवाह के ऊपर की तरफ चलने लगा। झाड़ियों में बैठे पक्षी चौंककर उड़ने लगे। कभी

यहाँ-वहाँ कोई मछली पानी से ऊपर कूदती दिखाई दे जाती। यह वसन्त ऋतु थी।

कुछ घूमकर मैं फिर उसी स्थान पर आ गया। किनारे पर तथा जमीन पर जितनी दूर तक आँखें पहुँच सकती थीं, सारे शहर का जमा किया हुआ कूड़ा-करकट दिखाई देता था। लाखों डिब्बे, पुरानी जालियाँ, कटा हुआ लोहा, सड़ी हुई साग-सब्जी और दूसरे कचरे के ढेर लगे थे। दुर्गन्ध से सिर फटा जा रहा था। कैसे ढेर थे! मेरे पैरों के पास एक टूटी हुई बाबा गाड़ी पड़ी थी। उसके पास एक औंधा लकड़ी का डिब्बा पड़ा था। मैं उस पर बैठ गया। इस प्रकार फिर कुछ समय बीत गया। एकाएक खयाल आया कि अब यही मेरा निवास होगा! घूरे का कचरा! नेड लैंगफर्ड अब घूरे का कचरा बन गया! हे भगवन्!

यह विचार मेरे मन में रह-रहकर आने लगा। सचमुच मैं घूरा बनता जा रहा था। किन्तु अभी यह सब परदे के पीछे चल रहा था। नाटक जैसा लग रहा था। अभी तक मैं दूर से देखनेवाले प्रेक्षक जैसा था। परन्तु अब मुझे उस घूरे की तरफ देखने की जरूरत नहीं रही, क्योंकि मैं जान गया था कि अब मैं खुद उसका एक अंश बन गया हूँ। चन्द्रोदय हो चुका था। उसने मुझे किनारे की तरफ खींच लिया। मैं नदी को देखने लगा। जल किनारे को धो रहा था। हर क्षण किनारे की दीवाल थोड़ी-थोड़ी टूटती जा रही थी और उसकी मिट्टी जल में गिरती जा रही थी। कीचड़, कीचड़! इसी तरह कीचड़ बनता है। मिट्टी घुलकर खाड़ी में चली जाती है और वहाँ फिर टापू के रूप में जमीन बनती है। एक गिरे हुए पेड़ का तना जल पर झुका खड़ा था। मैं उस पर बैठ गया। लकड़ी, डिब्बे, चीथड़े वगैरह चीजें लगातार नदी में खिचती हुई चली आ रही थीं।...समय बीतता जा रहा था। नदी के बीच प्रवाह का वेग बहुत था। यदि कोई तैरकर वहाँ तक पहुँच जाय और फिर कहीं प्रवाह में पड़ जाय, तो प्रवाह और कीचड़ के साथ वह नदी के मुहाने तक समुद्र की खाड़ी में पहुँच सकता था। जरा ढील देने की ही जरूरत थी।...कोई गोल-गोल चीज घिसती हुई मेरे पास आ रही थी। उस पर मेरी आँखें गड़ गयीं। मैं उसे पहचान नहीं सका। प्रवाह ने उसे किनारे की ओर

फेंक दिया था। कुछ दूर तक वह मेरे पैर तक तैरती हुई आयी। वह भौंरे की तरह घूम रही थी, मुझे कुछ घृणा-सी हुई। मैं एक कदम पीछे हट गया। चूहों से मुझे बड़ी चिढ़ थी और यह एक मरा हुआ चूहा ही था। मौत सबका रूप बदल देती है। इसे किसीने जहर देकर मारा है या नदी के भौंरे में गिरकर मर गया? या किसीके फन्दे में आ गया और कचरे के साथ घूरे पर फेंक दिया गया है? या या या''''इस प्रकार विचार चल रहे थे। हवा का जोर बढ़ता जा रहा था। इतने में एक लहर आयी और उस बदबूदार चीज को लेकर चली गयी।

बहुत समय बीत गया। चंद्र सिर पर होकर बाजू के पेड़ों में छिप गया। मैं अभी तक किनारे पर ही बैठा था। नदी चूहे की माँ है। वह पहले वहाँ पहुँचा। नदी उसकी माँ है, मेरी नहीं''''''''मैं वहाँ से उठा होऊँगा। क्योंकि मुझे याद है कि इसके बाद मैंने अपने-आपको घूरे पर एक संदूक पर बैठा पाया। मुझे लगा कि मेरे पैर पर कुछ चढ़ रहा है। चूहा—जिन्दा चूहा। नदी में बहती हुई चूहे की लाश, नहीं—भूखा, जिन्दा घूरे का चूहा था यह। आसपास और भी कितने ही चूहे थे। पैर पटकता, चिल्लाता हुआ मैं कूदकर खड़ा हो गया। वे चूँ-चूँ करते भागने लगे। मैंने देखा कि घूरे पर अपने बिलों में वे घुस रहे हैं। पूर्व की तरफ से थोड़ा-थोड़ा प्रकाश आ रहा था। उसकी मदद से मैं कुटी पर पहुँच गया। दरवाजा खुला था। पहुँचा, तो मुझे पैरों की आहट सुनायी दी। भूखे चूहों का झुण्ड बाहर निकला और मेरे पास से होकर घूरे की ओर भागा। यदि अन्दर कोई रह गया हो, तो उसे भगाने के लिए मैंने दीवालों पर पैर मारे और फिर अन्दर जाकर दरवाजा बन्द कर आग सुलगायी। फिर उस मंद प्रकाश में आसपास देखने लगा। दूर कोने में एक चूहा रह गया था। घूस की जात का, एक दैत्य का-सा बड़ा था वह और मकान के कब्जे के लिए मानो मेरे साथ झगड़ा करना चाहता हो। दरवाजा खोलने के लिए मैं आगे बढ़ा। इतने में तो वह मुझ पर जोर से लपका और पैर में इतने जोर से काट लिया कि पैंट के ऊपर से भी उसके दाँत मेरे पैर में घुस गये। मैं पीछे कूदा और जोर से उसे एक लात मारी। वह सामने की दीवाल से टकराया। उसने जोर से चीं-चीं की और

फिर मुझ पर लपका। तब वहाँ पड़ी एक पुरानी कुर्सी उठाकर उस पर दे मारी। कुर्सी के टुकड़े-टुकड़े हो गये, पर वह फिर हमला करने के लिए झपटा। इस बार ऊँचे कूदकर वह मेरे कोट पर लटक गया। मैंने उसे एक घूँसा लगाया। वह जमीन पर गिर पड़ा। मैंने उसे फिर एक लात जमायी, पर मैं निशाना चूक गया। उसने मुझसे अधिक तेजी दिखायी। अब मैं कुर्सी का पैर उठाने लगा। इतने में बिजली की गति से उसने मेरे पहुँचे को पकड़ लिया और लगा जोर-जोर से काटने। पागल की तरह मैंने उसे पकड़ने की कोशिश की। एकाएक उसकी गर्दन मेरे हाथ में आ गयी। उसे मैंने जोर से दबा दिया। इस पर उसने इतनी जोर से चीं-चीं की कि सुनकर आदमी का खून जम जाय। फिर भी वह लड़ता ही रहा और मुझे नाखून मारता रहा। मेरे पंजे से खून बहने लगा। परन्तु उसे छोड़ते मुझे डर लग रहा था। वह ढीला हो गया। शायद मर गया हो। फिर भी मैं उसे पकड़े ही रहा। फिर हाथ घुमाकर काँच की खिड़की में से उसे जोर से बाहर फेंक दिया।

चर्र से काँच के टुकड़े-टुकड़े हो गये और उसके साथ-साथ मेरे दिल के भी। अकेला ! हाय, अब सदा के लिए अकेला। ओ माँ, ओ माबेल, ओ टॉम, जेन-जेन।····जब से मुझे याद है, अपने जीवन में, मैं पहली बार धाड़ मार-कर रोने लगा। लकड़ी के बेंच पर बैठ गया और आँसू बहाकर अपने हृदय को हलका करने लगा।

◆◆◆

सीने पर या पीठ पर

बाहर कोई जोर से दरवाजा खटखटा रहा था। सूरज निकल आया था। आधी नींद में ही मैंने दरवाजा खोला। मेजर था। मेरे फटे कपड़े और खून से सने हाथों को वह देखता ही रह गया। फिर अन्दर आकर उसने चारों तरफ नजर डाली।

"यह क्या हो गया ?"

"चूहे। एक ने मेरे पैर पर हमला कर दिया।"

उसने मेरे घायल हाथ की तरफ इशारा करते हुए पूछा : "क्या काट भी लिया है ?"

"हाँ, खींचकर फेंकना पड़ा। सारे मकान में बेहद हैं।"

"हाँ, हाँ, इस घूरे के कारण, किन्तु पहले तेरे हाथ ठीक कर लेने दे। जरा ठहर। मोटर से अपनी बैग ले आऊँ।" कहकर वह बाहर गया और अपना सामान ले आया।

"पानी कहाँ है ?"

पिछले दिन दूध के एक डिब्बे में हम पानी भर लाये थे, वह मैंने दिखा दिया। उसने कुछ बरतन ढूँढ़ लिये और उनमें वह पानी डाल लिया।

"इसे उबालना पड़ेगा। परन्तु अरे, इस रोटी को तो देख।"

चूहों के हमले से बचा हुआ एक रोटी का टुकड़ा उसने उठाया और उसे दरवाजे से बाहर फेंक दिया। बाजार से लायी गयी पुड़ियों के कागज खोलकर उसने चूल्हे में ठूँसे। फिर कुरसी के टूटे पैरों की लकड़ियाँ उठाकर उन्हें अपने घुटनों पर रखकर तोड़ा और कागजों पर रख दिया। क्षणभर में आग सुलग गयी। पानी उबलने पर उसने मेरे हाथों का उपचार किया।

"और भी कहीं काटा है ?"

"शायद नहीं, मैंने अपने हाथ से उसे मार डाला। किन्तु हाँ, एक बार वह मेरे पैर पर जरूर चढ़ा था।"

"तब तो देख लेना। अच्छा है।" पैर पर एक छोटी-सी खरोंच जैसी थी। उसे उसने दवा से धो डाला।

"कुछ खाया था?"

"नहीं! लगभग सवेरे तक मैं अन्दर ही नहीं आया था। यहाँ चूहे थे। मैंने दरवाजा बन्द किया, तब एक कैद हो गया।"

"हाँ, जब वे इस तरह कैद हो जाते हैं, तब राक्षस बन जाते हैं। आखिर तूने भोजन कब किया था?"

"याद नहीं।"

"कल मुझसे मिला, उससे पहले?"

"उससे पहले कॉफी ली थी। भोजन की इच्छा नहीं थी।"

"ओह, अच्छा हुआ कि खाना अधिक ले आया। यहाँ तो अधिक नहीं बचा है। तब तक वह बराबर सारी जगह साफ करता ही जा रहा था। कचरा चूल्हे में डालता जा रहा था और उसे जलता हुआ रख रहा था। मैं उसकी मदद करने गया, तो उसने मुझे अलग हटा दिया।

"देख, मैं तेरा रसोइया हूँ। मैं दूसरे की दस्तंदाजी बरदाश्त नहीं करता। हट तो देखें।"

उसने एक पुराने मेज का ऊपर का हिस्सा धो लिया और शायद पिछले दिन का अखबार उस पर फैला दिया। वह जो डिब्बे लाया था, उनमें से एक में बड़ी तश्तरियाँ और दो प्याले थे। घुटने टेककर एक छोटे कपाट में आधा सिर कर बोला:

"कल कुछ और सीधा-सामान (रसोई बनाने की सामग्री) ले आऊँगा।"

"हे भगवन्, हे भगवन्, देख तो सही"—कहकर उसने एक पुरानी काट चढ़ी, मकड़ी के जालों से भरी केटली बाहर निकाली। फिर उसे कपड़े से साफ करता हुआ बोला:

"मालूम होता है, ये जन्तु कॉफी पसन्द नहीं करते। यह तो जैसी की तैसी पड़ी है। मैं कुछ अण्डे, सुअर का मांस और कुछ मिठाई लाया हूँ। अच्छा हुआ न? चूहों ने तो तुझे पूरी तरह लूट खाया है। मैंने तुझे हमारी 'यूटोह लाइट बैटरी' (तेज सैनिक दस्ता) वाली बात सुनायी थी या नहीं? मैं उसमें

था। हमारी सबसे पहली लड़ाई कालूकान में हुई थी। उस समय बगावत शुरू हुए एक सप्ताह भी नहीं हुआ था। वह लड़ाई बहुत जोर की थी भैया।"

'कालूकान' नाम सुनते ही मानो मैं वहीं पहुँच गया। उस समय कानों के पास से जानेवाली गोलियों की सूं-सूं आवाज मानो फिर मेरे कानों में सुनायी देने लगी। फिर वे शब्द भी याद आये : "अरे मूरख, कहाँ जा रहा है? वह तो कोढ़घर है!"

कालूकान का नाम सुनते ही मैं चौंक पड़ा। यह उसने देख लिया। फिर भी वह अपनी बात कहता ही गया। विभिन्न लड़ाइयों का, उष्ण देशों की वर्षा ऋतु में की गयी सेना की कूचों की, फिलीपाइन सुन्दरियों की आदि-आदि। लड़कियों की तरफ भी उसका ध्यान तो जाता ही था। इतने में नाश्ता तैयार हो गया।

"चल बहादुर, आ जा। इसे जल्दी समाप्त कर दे। नहीं तो फिर वे रातवाले मेहमान आ जायेंगे। मैंने भी नाश्ता नहीं किया है। तेरे साथ ही करूँगा।"

हम सब सामग्री खा गये।

"तश्तरियों का क्या करें?" मैंने उससे पूछा : "क्या मैं इन्हें फेंक दूं?"

एक मिनट तो वह कुछ नहीं बोला। फिर धीरे से कहा : "इतनी चिन्ता मत कर। इन सबको उबाल लेंगे, तो काम चल जायगा।"

मुझे तो डॉक्टर का नाम ही याद नहीं रहा। कहा : "कहते हुए बड़ी लज्जा आती है। परन्तु मुझे आपका नाम ही याद नहीं आ रहा है।"

"इसमें कोई आश्चर्य नहीं दोस्त! तेरे दिल को जो आघात पहुँचा है, उसीका यह परिणाम है। मेरा नाम है 'विल' और अल्ल 'टॉमसन'।

अब मुझे याद आया—मेजर टॉमसन-विल। मेरे कण्ठ में कुछ रुकावट-सी आ गयी। "हाँ ठीक, विल।"

"अब रसोई साफ करने का काम तेरे जिम्मे। परन्तु अभी नहीं। मेरे जाने के बाद करते रहना। अभी तो जरा बाहर चलें, धूप में बैठकर कुछ मशविरा कर लें।"

कुरसी के तौर पर हम जिन लकड़ी के डिब्बे पर वैठे थे, उन्हींको उठाकर वाहर ले गये।

"मानेगा नेड ? रोटी के वे टुकड़े मैंने वाहर घूरे पर फेंके थे न, उन्हें वे दुष्ट उड़ाकर ले गये। हमारे यहीं रहते।"

"हे भगवन्, मैं इन घूरों को नहीं सह सकता।"

"घवड़ा नहीं। मैं आज ही दरवाजों और खिड़कियों पर जाली लगवा देता हूँ।"

कुछ देर तक हम चुपचाप वैठे रहे। धूप अच्छी तेज निकल आयी थी। विल ने मुझे एक सिगार दी और माचिस सुलगाकर मेरे सामने की। खुद भी एक सिगार सुलगा ली।

"अपने कुटुम्व के वारे में तू क्या सोच रहा है ?"

"मैं और सोचूँ ? मैं तो यही नहीं जानता कि मेरा क्या होगा। यही नहीं जानता कि अच्छा होने की आशा है या नहीं। कुछ निश्चित मालूम हो जाय, तो सोच रहा हूँ कि अपने भाई टॉम को वुलवा लूँ। अभी तो इतना ही सूझ रहा है। धन्धे में वही मेरा मददगार है। डॉक्–विल, मुझे सही-सही वता देना। गोल-मोल वातें नहीं करना। मुझे किन-किन मुसीवतों का मुकावला करना है, इसकी पूरी-पूरी कल्पना हो जानी चाहिए।"

आधी आँखें मूंद रहा हो, इस तरह उसने विनोदी आँखें वनायीं। मानो वह मुझे यह समझाना चाहता हो कि मैंने अपनी स्थिति को जितनी खराव मान लिया, वैसी वह नहीं है। वह वोला :

"देख नेड़, मैं तुझे कभी झूठ नहीं वताऊँगा। झूठी आशाएँ तेरे दिमाग में नहीं भरूँगा। इस रोग के वारे में मुझे एक रत्तीभर भी ज्ञान नहीं। जन्तु-शास्त्र में रुचि होने के कारण कोढ़ के जन्तु तो मैंने वहुत देखे हैं। जव मैं फिलीपाइन में था, तो सान-लाजारोना के आश्रम में इस विषय का अध्ययन करने मैं गया था। वहाँ कोढ़ी थे, पर मैंने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया। मुझे तो केवल उनके जन्तुओं में ही दिलचस्पी थी। नार्वे में एक डॉक्टर था हैंनसन। लगभग चालीस वर्ष पहले उसने इस जन्तु को पहचाना। यह कैसा होता है, यह हम जान गये हैं। डॉक्टरी भाषा में यह 'एसिड फास्ट' वर्ग का

एक जन्तु है। खुर्दबीन में वह क्षय के जन्तु जैसा ही दीखता है।····आशा के बारे में मैंने तुझे कुछ भी झूठ नहीं कहा है। एक नया उपचार निकला है। फिलीपाइन में इसका प्रयोग चल रहा है। इसका परिणाम क्या निकला है, मैं नहीं जानता। मुझे तो लगता है कि दूसरे रोगों के समान ही यह रोग भी है। पुराने समय में वह असाध्य माना जाता था, परन्तु मुझे निश्चय है कि साधारण केस तो वगैर इलाज के भी अच्छे हो जाने चाहिए। तू अभी सशक्त और हट्टा-कट्टा आदमी है। अगर तेरा सही उपचार हो, तो अच्छे हो जाने की वहुत आशा है। किन्तु मुझे इस विषय में निश्चित कुछ भी जानकारी नहीं है।"

"लोगों के साथ मिलने-जुलने के बारे में आपकी क्या राय है? आप तो डरते नहीं दीखते।"

"ऐसी वात नहीं। मैं सावधानी रखता हूं। किन्तु कोढ़ के बारे में इतना जान गया हूं कि कोढ़ियों के वीच काम करनेवाले डॉक्टरों या दूसरे सेवकों में से शायद ही किसीको कोढ़ हुआ हो। फिर भी अनुभवहीन अनजान डॉक्टरों और साधारण लोगों को उससे डर होना स्वाभाविक है····।

"अव तेरे भाई के वारे में। उसके साथ तथा दूसरे लोगों के साथ दूर से ही अर्थात् वाड़ के वाहर से ही वातचीत करना अधिक अच्छा होगा। तव कोई भय नहीं रहेगा। मेरी वात अलग है। मैं तो तेरा डॉक्टर हूं।"

"अच्छा, मान लीजिये, मैं सोचूं कि जहन्नुम में जाय यह सव, और कहीं भाग जाऊँ तो?"

"देख, इसमें कोई समझदारी की वात नहीं है। दूसरों को तेरी छूत लगे, ऐसा काम तुझे करना ही नहीं चाहिए। फिर ऐसा करके तू पुनः इलाज करवाने का अवसर हमेशा के लिए खो वैठेगा। इसलिए जव तक आगे का मार्ग नहीं सूझता, तव तक यहीं पड़े रहने में समझदारी है। हाँ, तेरे मन में कोई योजना पैदा होती हो, तो उस पर हम जरूर विचार करेंगे, इसका मैं विश्वास दिलाता हूं।"

उसकी वात सही थी, विल की मदद के वगैर मेरा काम चल ही नहीं सकता था। सलाहकार का होना अत्यंत जरूरी है। कल तो मैं इसे जान से ही मार डालना चाहता था।

"विल, मेरी समझ में नहीं आता कि डॉक्टर क्यों इस रोग के बारे में इतने अनजान हैं ?"

विल हँस दिया : "शायद इस शहर में तेरा केस पहला ही है। हम डॉक्टर रोगियों में काम करते-करते ही रोगों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। हमारे देश में कुछ कोढ़ी जरूर हैं, परन्तु उनकी संख्या बहुत कम है। शायद एक हजार से भी कम होगी। दूसरे देशों में यह जितना फैला है, उतना संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में नहीं। मध्ययुग में यह यूरोप में बड़े जोरों पर था। मेरा अपना मत तो यह है कि कोढ़ के विषय में बहुत-सा भय तो अकारण ही होता है। किन्तु जब तक निश्चित रूप से यह नहीं मालूम हो जाता कि यह रोग दूसरे आदमी को किस प्रकार लगता है, तब तक इस डर को दूर नहीं किया जा सकता।"

"क्या फिलीपाइन गये हुए बहुत-से सिपाहियों को हो गया है ?"

"मुझे कुछ भी जानकारी नहीं है।"

"आपने कितने लोगों के बारे में सुना या देखा है ?"

"अकेले तेरे बारे में।"

इस पर मुझे बड़ा गुस्सा आया। मैं बड़बड़ाया : "मेरी ही बलि क्यों ली गयी ? कम-से-कम पचहत्तर हजार मनुष्य फिलीपाइन युद्ध में गये थे। जितना भी संभव था, मैं स्वच्छता के साथ रहा। बहुतों की अपेक्षा मेरा जीवन शुद्ध रहा। पचहत्तर हजार में मैं ही एक अभागा निकला। इसमें कौन-सा न्याय है ? जितने डॉक्टरों से मिला, उनमें से कई ने तो कोढ़ का एक भी रोगी नहीं देखा था। हाँ, वॉटकिन्स ने जरूर एक देखा था। किन्तु केवल एक ही। अगर इसका कोई जानकार नहीं मिला, तो मेरा क्या हाल होगा ? हे भगवन्! अगर कहीं मेरी छूत अनजान में दूसरों को लग गयी होगी तो ? मेरे अपने कुटुम्बीजनों को ही—माँ को, टॉम को, जेन को............।"

कल्पना इतनी भयानक थी कि मेरी वाणी रुक गयी। मैं खड़ा हो गया और एक ओर चल दिया। मेरा सारा शरीर काँपने लगा। थोड़ी देर बाद अपनी जगह पर वापस आ गया।

"माफ करना बिल, यह डर मेरे दिल में अभी-अभी पैदा हुआ।"

"मुझे लगता है कि इस विषय में तुझे चिन्ता नहीं करनी चाहिए।"

थोड़ी देर बाद वह फिर बोला :

"तू एक सिपाही रहा है। मैं भी रहा हूँ। तूने एक लड़ाई में भाग लिया है। मैंने भी किसी लड़ाई में भाग लिया है। हम दोनों किसी ध्येय के लिए लड़े हैं। हमारा यह ध्येय था कि क्यूबा और फिलीपाइन मुक्त होने चाहिए। किन्तु हमारी लड़ाई का स्वरूप बदल गया। अमेरिकी सेना क्यूबा में थी। तब वहाँ पीला बुखार शुरू हो गया। उसने भयंकर बलिदान लिया। एक फौजी डॉक्टर—वॉल्टर रीड और उसके साथियों ने इस रोग के विरुद्ध लड़ाई की घोषणा कर दी। ये सब डॉ० फिनले के अनुयायी थे। उसकी राय थी कि पीला बुखार किसी गंदगी के कारण नहीं, बल्कि एक जाति के मच्छर के काटने से होता है। एक के बाद एक अनेक प्रयोग किये गये। डॉक्टरों पर भी प्रयोग किये गये, पर कोई नतीजा हाथ नहीं लगा। एक रात की बात है। डॉ० लेजार और डॉ० आग्रामॉण्ट इस विषय का अध्ययन करने बैठे थे। इतने में विलियम डीन नामक एक मामूली सिपाही वहाँ आया। उसने प्रयोग के लिए अपना शरीर अर्पण करने की इच्छा प्रकट की। पाँच दिन के अन्दर उसे पीला बुखार आ गया। डीन तो अच्छा हो गया, किन्तु बाद में लेजार को जंतुवाले मच्छरों ने डसा और वह मर गया। अन्त में यह तो निश्चय हो ही गया कि इस बुखार के जन्तु लानेवाले मच्छर कैसे होते हैं। इस जाति की मादा उन जंतुओं का पोषण करती है।....लेकिन नेड, मेरे कहने का मतलब यह है कि फिनले और उसके साथियों का खयाल सही था। इसे एक साधारण सिपाही के वीरताभरे आत्मसमर्पण ने सिद्ध कर दिया। इसीके परिणामस्वरूप अब हम इस पीले बुखार को संसार से मिटा देने के लिए जुट सके हैं। अब हमने मलेरिया और डिपथेरिया के विरुद्ध लड़ना शुरू किया है और चेचक के बारे में भी काफी प्रगति कर ली है। फिर भी यह आरम्भ मात्र है। हमें तो सभी रोगों पर विजय प्राप्त करनी है।"

"कोढ़ भी एक ऐसी ही विचित्र बीमारी है। हजारों वर्षों से यह दुनिया में मौजूद है। मैं नहीं जानता कि आज कितने लाख या करोड़ आदमी इससे पीड़ित हैं। किन्तु वह हर साल बराबर अपने लिए बलिदान लेता ही रहता है।

एक दिन हम लोग इसका भी नामोनिशान मिटा देंगे और शीतला की पंक्ति मे ले आयेंगे।"

"जिस लड़ाई में हम लड़े, उसीमें रीड़, लेजार, कैरोल, आग्रामॉण्ट और वह डीन सिपाही भी थे। उन्होंने एक और लड़ाई में भाग लिया और उसमें विजय भी प्राप्त कर ली। नेड, क्या यह संभव नहीं कि कोढ़ के विरुद्ध लड़ाई में महत्त्वपूर्ण भाग लेने का अवसर तुझे ही मिले? भाई, देख यदि इस लड़ाई में महत्त्वपूर्ण काम करने का कही तेरे भाग्य में लिखा हो, तो तेरे-मेरे जैसों के दस साधारण जीवन की अपेक्षा वह जीवन कितना कीमती कहा जायगा?"

वह मौन हो गया और मेरे उत्तर की प्रतिक्षा करने लगा। मैंने कहा ऽ

"बिल, मैं वीर नहीं और न बनना ही चाहता हूँ। जब मैं उस कोढ़-घर में जाकर टकराया था, तो मारे डर के मेरा खून सूख गया था। लड़ाई में इतने दिन विताये, फिर भी अभी मुझमें गोली खाने की हिम्मत न आ पायी है। मेरे अस्तबल में आग लगी, तो मैं बहुत डर गया था। किन्तु घोड़ों को बचाये बगैर रह नहीं सकता था, इसलिए मुझे वह करना पड़ा। अगर आप न होते, तो मेरे खून में लेशमात्र भी सिपाहीपन नहीं था।"

बिल मेरी ओर देखता रह गया। उसकी धूर्तताभरी आधी-मुंदी आँखें देखकर हँसी आने लगती। थोड़ी देर बाद वह बोला: "भाई, तू कायर है या बहादुर, आज तो तेरे सामने इसके बगैर कोई चारा ही नहीं है। आखिर यह निर्णय तो तुझे ही करना है कि तू इस बीमारी से सीना तानकर लड़ेगा या उसके सामने जमीन पर गिरकर अपने को बलि चढ़ा देगा।"

बड़ी देर तक कोई भी नहीं बोला। मेरे दिमाग में विचारों की उथल-पुथल मच गयी। बार-बार कानों में ये शब्द गूँजते रहे: "तेरे सामने कोई चारा नहीं रह गया है। जवान! यह करके ही तेरा छुटकारा है!"

उसके ये शब्द मैंने अपने मन में बार-बार दोहराये। फिर उसके सामने आँखें उठाकर देखा और कहा: "बिल, मैं समझ गया। मुझे भी लगता है कि अब इसके सिवा मेरे लिए कोई चारा नहीं रह गया। बताइये, आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?"

"यह मैं खुद अभी ठीक से नहीं जानता। किन्तु मुझे तीन बातें सूझती हैं। मेरे चले जाने पर तू उन पर विचार करना। संभव है, ऐसा प्रवन्ध शायद किया जा सकता है कि तुझे कहीं अन्यत्र न जाना पड़े। स्वास्थ्य-विभाग मेरे लिए ऐसी कोई सुविधा कर दे कि तू अपने लिए एक सुविधापूर्ण मकान वनवा ले। किन्तु मेरा खयाल है कि तुझे यहाँ अच्छा नहीं लगेगा। अखवारवालों को यदि कहीं खवर मिल गयी, तो तेरा नाम अखवारों में छपने लग सकता है। फिर मेरे लिए लम्बे समय तक शांति से रहना कठिन हो जायगा।

"दूसरा रास्ता यह है कि तू लुजियाना स्टेट के कारविल नामक कुष्ठालय में चला जा। मेरा खयाल है कि वे तुझे वहाँ रख लेंगे। मैंने उसकी तारीफ सुनी है, आँखों देखी जानकारी तो नहीं है। सुना है कि वहाँ इलाज अच्छी तरह (चिन्तापूर्वक) किया जाता है। फिर भी वहाँ की कठिनाई यह है कि तेरा शरीर अभी मजवूत और हट्टा-कट्टा है। काम करने की इच्छा भी है। हम मान सकते हैं कि तेरा शरीर वहुत समय तक ऐसा ही सुदृढ़ रह सकता है। इसलिए तेरे पास कोई काम होना चाहिए। कारविल में ऐसा काम नहीं मिलेगा।"

"मैं इन चूहों के साथ तो हरगिज नहीं रह सकता। लुजियाना भी नहीं जा सकता। दोनों स्थान मेरे मकान से वहुत नजदीक हैं। यह मैं नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि मेरे घर के लोगों को इसका पता तक न लगे। फिर भी टॉम को तो वताना ही होगा। किन्तु मैं तो कहीं दूर, वहुत दूर जाना चाहता हूँ।"

"तो—तो कूलियन के वारे में तू जानता ही है। फिलीपाइन तुझे पसन्द भी था। कूलियन एक वड़ा टापू है। वहाँ का आश्रम फिलीपाइन के स्वास्थ्य-विभाग के मातहत है। इसका अर्थ यह है कि वहाँ होशियार डॉक्टर हैं। सुनता हूँ कि वहाँ हजारों वीमार हैं। इसलिए वहाँ के डॉक्टर भी अवश्य ही अनुभवी होंगे।"

"किन्तु मान लीजिये, मैं वहाँ जाना चाहता हूँ, तो भी जा कैसे सकता हूँ। एक भी स्टीमर मुझे ले जाने के लिए तैयार नहीं होगा।"

"हाँ, संभव है कि मामूली मुसाफिर स्टीमर ले जाना न भी मंजूर करे। किंतु फौजी स्टीमर ले जा सकता है। और वहुत करके ऐसा प्रवन्ध किया भी जा सकता है। दूसरी तरफ, संभव है, संयुक्तराष्ट्र अमेरिका में इलाज करवाने में

शायद अधिक सफलता मिल सके। मेरा खयाल है कि इतनी दूर जाने से पहले यहीं दूसरों की सलाह लेना ठीक होगा। न्यूयॉर्क में एक डॉक्टर को इस रोग का ज्ञान है। वहाँ रहने के लिए क्या करना होगा, इसके विपय में वही अच्छी सलाह दे सकेगा। यदि तू वहाँ रहना पसन्द कर ले, तो तुझे एकान्तवास तो खूब सहना पड़ेगा, पर कूलियन जाने पर वह बच सकता है।"

"किन्तु वहाँ जाना भी आसान नहीं है। मेरा अनुमान है कि आप मुझे रेलगाड़ी में तो प्रवास करने ही नहीं देंगे।"

"सच है, रेल से नहीं जाना चाहिए।"

"तो हमारे पास एक पुरानी मोटर पड़ी है। हम उसे काम में नहीं लेते, पर वह काम देने लायक तो है ही। टॉम उसे यहाँ ला सकता है।"

"यह सुझाव वहुत अच्छा है। मैं आज ही उसे लिख देता हूँ।"

मैंने उसे टॉम का पता लिखवा दिया। उस दिन वह इतनी वातचीत कर घर लौट गया।

मैं खूव थक गया था। मेरे हाथ वहुत सूज गये थे। इसलिए सड़ सफाई करना मेरे लिए संभव नहीं था, किन्तु मैंने तश्तरियों को उवाल लिया। पिछली रात मैं यों ही वेंच पर पड़ रहा था। आज गद्दी और कम्वल विछाकर विस्तर लगा लिया। थोड़ी देर वाद कुछ आदमी आये और विल के कहे मुताविक जाली लगा गये। उनके जाने पर मैंने दवा ले ली।

....फिर सो गया। सोते-सोते खयाल आया कि अरे, मैंने विल के प्रति आभार तक प्रकट नहीं किये।

◆◆◆

न्यूयॉर्क की तैयारी : ६ :

नाश्ते से फारिग हो लेने पर कल विल ने सफाई का जो काम शुरू कर दिया था, उसे मैंने आगे वढ़ाया। जमाने का कूड़ा-करकट वहाँ जमा हो गया था। झाड़ू, व्रश और सावुन लेकर दो घण्टे तक मेहनत करने के वाद जितना वन पड़ा, वह जगह साफ की। जगह सूखने तक सिगार फूँकता यों ही वाहर वैठा। जव विल आया, तो मैंने उसे अन्दर जाकर जगह पर अपनी नजर डाल देने को कहा। सव देखकर वह खुश हो गया।

"कहना होगा कि अव वापस दुनिया में आ गया। तेरे भाई को कल पत्र भेज दिया था और आज सुवह उसका तार भी आ गया। वह परसों यहाँ आ रहा है।"

"आपने उसे क्या लिखा था?"

"इतना ही कि 'नेड वीमार है और उसे लम्वी विश्रान्ति की जरूरत है।' परन्तु नेड, वह तुझसे मिलने के लिए आये, इससे पहले मैं उसे सव वातें वता देना चाहता हूँ।"

"यही तो मैं भी चाहता था।" मैंने कहा: "विल, अभी तक मैंने आपका आभार तक नहीं माना। कल रात को सोने लगा, तव मुझे यह खयाल आया। मुझे सहारा देने में आपकी क्या भावना है, यह तो मैं नहीं जानता। फिर भी इतनी कृतज्ञता अनुभव कर रहा हूँ कि कह नहीं सकता।"

"अव पागल मत वन। मुझे तू अच्छा लगता है।"

"दो दिन पहले तो मैंने आपका खून करने का विचार किया था।"

"हाँ, मैं जान गया था। पर इसमें तेरा दोप नहीं। उस दिन मेरे अपने वरताव में ही कुछ दोप था। चल, अव वाहर गाड़ी के पास। मैं कितनी ही छोटी-छोटी चीजें लाया हूँ।"

वह वाड़ के वाहर मोटर के पास गया। मैं वाड़ की इसी तरफ रहा और वाड़ के ऊपर से उसके पास से एक-एक गठरी लेने लगा। कितावों,

मासिकों और अखवारों के गट्ठर थे। फिर वह एक चौकोना वंडल अन्दर लाया और उसे उसने मेज पर रख दिया।

"इसे खोल। मेरा खयाल है, तू इसे पसन्द करेगा।" ऊपर से लपेटे हुए कागज को मैंने फाड़ फेंका। अन्दर एक छोटा-सा फोनोग्राफ और एक दर्जन रेकार्ड थे।

"यह तो खूव की विल! किन्तु आपको मेरे लिए इस तरह पैसे खर्च नहीं करने चाहिए। आप जो कर रहे हैं, वही कितना अधिक है।"

"धत्, मुझे वहुत कम खर्च करना पड़ा है। मेरा एक मित्र यह धन्धा करता है और लगभग मुफ्त में ही वह मुझे ऐसी चीजें देता है। चूहों का क्या हाल है? जालियों से कुछ तो लाभ हुआ होगा न!....क्या, एक भी नहीं आया? वाह, मुझे इतनी आशा नहीं थी।"

विल लगभग एक घण्टा रुका। सारा समय उसकी जवान इस प्रकार चलती ही रही। अन्त में उसने कहा: "मुझे एक ऑपरेशन करना है। अव कल मिलूँगा। साथ में खाने की चीज़ें भी लेता आऊँगा।"

विल के जाते ही मैंने अख़वारों का वण्डल खोला। मेरे वारे में उसमें कोई समाचार नहीं था। मासिकों पर भी नजर डाल ली। फिर फोनो शुरू किया और रेकार्ड सुनता रहा। शाम को लगभग चार वजे ख़याल आया कि खाना तो रह ही गया। भूख तो वहुत नहीं थी, फिर भी कुछ वना लिया।

× × ×

दो दिन वाद टॉम आया। वाड़ में से मुख्य सड़क दिखाई देती थी। मैंने देखा कि विल की गाड़ी के पीछे हमारी पुरानी वस आ रही है। विल की गाड़ी आगे वढ़ गयी, पर टॉम गली में मुड़ गया। वह नजदीक आया, तो मैं देख-कर चौंक उठा। वह वीमार दिखा, पूनी की तरह सफेद हो गया था। आँखें निस्तेज और गहरी धँस गयी थीं।

वह गाड़ी से उतरा और वाड़ के पास आया। हम एक-दूसरे की ओर टकटकी लगाये देखते रह गये। उसकी आवाज कमजोर और भारी हो गयी थी।

"नेड, यह तो हद हो गयी। हमें चिन्ता तो थी ही। किन्तु अब—यह तो भयंकर चीज है।"

मुझे उसे हिम्मत बँधानी चाहिए। बिल के वे शब्द मेरे कानों में बराबर गूँज रहे थे—"भाई, तेरे लिए इसके सिवा कोई चारा नहीं है।"....

"बिल—मेजर टॉमसन—कहाँ हैं? वे कहाँ गये?"

"उन्हें कोई काम था। उन्होंने तुझे कहलाया है कि वे जरा देर से आयेंगे।"

"घर पर क्या हाल है?"

"दफ्तर में तो सब ठीक है। माँ की तबीयत गड़बड़ है। मैं कुछ पत्र लाया हूँ।" अपनी जेब से उसने एक पैकेट निकाला। जेन के तीन पत्र थे।

"मैं जरा पढ़ लेता हूँ।"

"हाँ, मैं भी यही कहनेवाला था।"

मैंने पत्र पढ़े। तब तक टॉम बाड़ के बाहर टहलता रहा। इन तीन दिनों में मैंने जेन के बारे में बार-बार सोचा था। क्या अब भाग्य में यही लिखा है कि मैं जेन से कभी विवाह न कर सकूँगा? उसे देख भी न सकूँगा? अच्छा, मान लीजिये कि एक बार यह रोग चला जाता है। किन्तु कौन कह सकता है कि वह फिर कभी नहीं होगा। यह कल्पना एक अंधे कुएँ के समान थी। यह एक इतनी बड़ी खाई थी, जिसे कभी पार नहीं किया जा सकता था।

जेन के पत्रों ने दिल के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। सभी पत्रों में सुख के सपने थे। हम, हमारा मकान और जून मास और शादी की प्रतीक्षा के। मैंने टॉम को बुलाया। मुझे लगा कि वह रो रहा है।

"टॉम, देख, वह लकड़ी का डिब्बा ले आ और उस पर बैठ जा।" गाड़ी में से वह बहुत-सी सिगारें ले आया। उनमें से एक उसने ले ली और शेष मुझे दे दीं। बाड़ की दोनों तरफ दोनों बैठ गये और धुआँ निकालते हुए बातें करने लगे।

"नेड, तू जानता है कि मुझसे जो कुछ बन पड़ेगा, वह सब मैं करूँगा। डॉ० टॉमसन न्यूयॉर्क जाने के बारे में कुछ कह रहे थे।"

"हाँ, वहाँ एक डॉक्टर है। शायद वह मेरा इलाज कर सकेगा। वहाँ मोटर से जाना मैंने इसलिए तय किया कि इसमें अधिक सुविधा है। अगर न्यूयॉर्कवाला डॉक्टर कुछ न कर सका, तो मैंने वापस फिलीपाइन जाने का निश्चय किया है।"

"किन्तु टॉमसन कहते हैं कि तू शायद अच्छा हो जायगा।"

"देख टॉम, इस तरह अपने दिल को धोखे में रखने से कोई लाभ नहीं। महीनों तक मैं यही करता रहा। इस बीमारी का नाम मन में भी नहीं आने दिया। मानो ऐसा करने से वह दूर हो जानेवाली थी। किन्तु यह कोढ़ है···इस तरह घबड़ाता क्या है?—मुझे कोढ़ हो गया है, यह स्वीकार करना ही पड़ेगा।"

अपने दोनों हाथों से मुँह ढँककर कुछ देर वह स्तब्ध बैठा रहा। बच्चा ही था! मैं उसके दिल को यह आघात पहुँचाना नहीं चाहता था। किन्तु किसी-न-किसी-की मदद तो मुझे लेनी ही थी और ऐसा मनुष्य सिवा उसके और कोई था भी नहीं। अन्त में उसने मेरी तरफ देखा। मुझे एक शिकार का प्रसंग याद हो आया। हमारे कुत्ते एक छोटे हिरन के पीछे पड़ गये और उसे लगभग दे पटका। उस हिरन की आँखें जैसी हो रही थीं, वैसी ही आँखें इस समय टॉम की हो गयी थीं। फिर कल जिस प्रकार टॉम ने मुझे शोक करने के लिए अवसर ही नहीं मिलने दिया और वह बोलता ही रहा, इसी प्रकार मैंने भी किया। लगातार मैं बोलता ही रहा :

"किन्तु मैं न्यूयॉर्क जा रहा हूँ और संभव है, कोई चमत्कार हो जाय। तीन दिन और तीन रात मैंने इस पर विचार किया है। इसमें मुझे तेरी मदद की जरूरत होगी टॉम!"

"परन्तु घर पर जाकर मैं सबसे क्या कहूँ? जेन से क्या कहूँ?"

"कह देना कि मैं मर गया।"

"मर गया! नेड, मुझसे यह नहीं होगा! माँ के सामने मेरी जबान से ये शब्द निकल ही नहीं सकते, क्योंकि यह बात सच नहीं है। जेन से भी नहीं कह सकूँगा। तू जिन्दा बैठा है और मैं जेन से जाकर कहूँ कि तू मर गया! यह असंभव है।"—वह अधिक नहीं बोल सका।

"किन्तु टॉम ! अब यही एक मार्ग रह गया है। मैं जो बात कह रहा हूँ, वही सच है। मैं सचमुच मर गया हूँ, यही अब जेन को समझ लेना चाहिए। उसका, माँ का और तेरा डर मुझे हमेशा बना रहेगा।"

अब असली खतरा उसकी समझ में आया। "राम-राम ! क्या तू यह कहना चाहता है कि......हमें...हममें से किसीको भी...यह छूत..........।"

"निश्चय रूप से तो कौन कह सकता है, पर मुझे भय तो रहेगा ही। बिल कहता है कि किसीको छूत लग गयी होगी, ऐसा अभी तो नहीं मालूम होता। परन्तु तेरे सिवा और किसीको यह बात भी......जेन के मन में यदि कोई ऐसी शंका भी उठे कि शायद उसे......मैं तो इस कल्पना को भी बरदाश्त नहीं कर सकता।......सच है टॉम, मैं तुझ पर बहुत बड़ा बोझ डाल रहा हूँ।"

"नेड, मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा है। सच तो यह है कि मेरे मन में भी ये विचार उठते थे। सांचो और चरिता का किस्सा तूने मुझे सुनाया ही था। उसी समय मेरे मन में यह शंका बैठ गयी थी और मैं उसे निकाल देने का यत्न करता रहा। फिर भी वह बार-बार आया ही करती थी। जब तू एकाएक घर से चला गया, तब मेरे मन में बड़े जोर का डर लगा।"...... यों कहकर वह जोर-जोर से हिचकियाँ दे-देकर रोने लगा। मैंने उसे रो लेने दिया। मेरे मन में एक अजीब साहसभरी कल्पना आयी।

"इधर देख टॉम, मेरे काम को मैं बिलकुल आसान कर दूँगा। किसी जगह गहरे पानी में मैं गाड़ी को छोड़ दूँगा और उसके अन्दर मैं ही था, इस प्रकार की सूचना देनेवाला कोई चिह्न भी रख दूँगा। मैंने आत्महत्या कर ली, इस प्रकार के समाचार अखबारों में छप जायँगे। अर्थात् जब तक अखबारों में इस आशय के कोई समाचार नहीं छप जाते, तब तक तुझे यह कहने की जरूरत नहीं कि मैं मर गया। अब तो समझ गया न ?"

"नेड, तू सचमुच तो ऐसा नहीं करनेवाला है ? कह दे कि तू आत्महत्या नहीं करेगा !"

"नहीं—मैं नहीं समझता कि मैं ऐसी कोई बात करनेवाला हूँ। बल्कि मुझे तो लगभग निश्चय है कि मैं आत्महत्या कदापि नहीं करूँगा। यहाँ

आने पर पहली रात को ही मैंने यह निश्चय कर लिया था और उसे पक्का ही समझना चाहिए। उस समय मैं आत्महत्या अवश्य करनेवाला था।....मैं तुझे वचन देता हूँ कि निकट भविष्य में तो मैं ऐसा नहीं करूँगा....तू कुछ पैसे लाया है ?"

"हाँ, डॉक्टर टॉमसन ने कहा कि मैं उन्हींको पैसे सौंप दूँ। तदनुसार मैंने उनको पाँच सौ डॉलर दे दिये हैं। शाम को भोजन करके वे तुरन्त यहाँ आयेंगे और नेड, मैं भी खाने के लिए कुछ चीजें लाया हूँ। गाड़ी में रखी हैं। अभी लाता हूँ।"

मेरी पसन्दगी की कितनी ही चीजें वह लाया था। रखने के लिए कार्ड-बोर्ड (गत्ते) की तश्तरियाँ थीं। शराब की दो बोतलें भी। खाने के लिए दो काँटे और दो प्याले लाना भी वह नहीं भूला। हमने खाया, पीया और दुःख भूलकर आशान्वित हो गये। धन्धे और खेती की बातें कीं। फिर मैंने कहा : "टॉम, मैं अपना नाम बदलने का विचार कर रहा हूँ। अब से मेरा नाम 'नेड फर्ग्यूसन' होगा।... और मुझे बहुत अधिक पत्र नहीं लिखना। इससे दोनों के मन पर बुरा असर होगा। जब तक मेरा दूसरा पत्र तुझे न मिले, तब तक तू बिल के नाम से ही चिट्ठियाँ भेजते रहना और उसीके साथ मेरे नाम का पत्र भी रख दिया करना। अब केवल एक ही बात कहने की रह गयी है।"

बिल की गाड़ी गली में मुड़ रही थी। इसलिए मैंने जल्दी की।

"देख, यह गाड़ी यहीं किसी नजदीक के गैरेज में छोड़ देना। उन लोगों से कह देना कि मेरा भाई गाड़ी लेने आयेगा। फर्ग्यूसन नाम बताना। गाड़ी का पता बताने तू खुद यहाँ मत आना। किसी आदमी के साथ चिट्ठी भेज देना। अब तेरे पास जितने पैसे हों, उसमें से यहाँ जितने दे सकता हो, दे दे।"

बिल मोटर से उतर रहा था। इतने में उसने सौ डॉलर का एक नोट मेरे हाथ पर रखा।

"उसे देना मुझे अच्छा नहीं लगा। किन्तु क्या करता ?"

"नहीं, नहीं। बिल तो बैंक की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय है। मैंने तो किसी आकस्मिक जरूरत के खयाल से.......।"

विल आज भी कुछ सामान लाया था ।—"टाइपराइटर । मैंने समझा कि तेरे पास कुछ पत्र अवश्य आये होंगे ।"—मैंने एक लकड़ी के डिब्बे पर टाइपराइटर रखा ।

"हाँ टॉम, अब मैं जेन को लिख सकता हूँ । तू उस तरफ से इसमें कागज लगा दे ।" मुझे पट्टे निकाल देने पड़े। परन्तु काम चल गया । जेन को मैंने एक छोटी-सी चिट्ठी लिख दी कि मेरी तबीयत अच्छी नहीं है । हाथों पर विषैले घाव हो गये हैं । इसलिए अधिक लिख नहीं सकता । उपचार के लिए न्यूयॉर्क जा रहा हूँ । मुझे उसकी कितनी याद आ रही है और उसके बगैर कितना सूना-सूना लग रहा है, यह भी लिखा । बात अक्षरशः सच भी थी ।

टॉम को विदा किया । उसे मैंने सिर से पैर तक देखा । मेरा भाई अब पूरा-पूरा जवाँमर्द हो गया था । हम दोनों ऊँचे-पूरे थे । वह मर्द को शोभा देने लायक, पर कमर में कुछ पतला और इकहरे बदन का था । मुझे उस पर गर्व हुआ । वह कुछ कहना चाहता था, परन्तु अक्षर साफ-साफ निकल नहीं रहे थे ।

"कोई चिन्ता नहीं ।"—मैंने कहा—"जो कहना हो, रात में विल से कह देना ।"

इससे उसे शांति मिली । वह मुड़ा, गाड़ी को हैण्डल मारा और रवाना हो गया । मैं उसे देखते हुए खड़ा रहा ।

× × ×

जैसे ही विल आया, वह झोपड़े में चला गया । अब वह बाहर आया और उसने अपनी आदत के अनुसार बोलना शुरू कर दिया । जब उसने देखा कि मैं उसकी बात की तरफ ध्यान दे सकता हूँ, तब उसने बहुत बारीकी के साथ सूचनाएँ देना शुरू कर दिया :

"तश्तरियाँ, बिस्तर और दूसरी चीजें भी जो तू गाड़ी में ले जा सके, उन्हें ले जा । वहाँ पहुँचते ही सीधे टॉड के पास चले जाना । मैंने टॉड को चार सौ डॉलर भेज दिये हैं और सौ तेरे लिए रख छोड़े हैं । यह ले । पैसे या किसी भी चीज को तू छूए, तब दस्ताने पहन लिया कर । आजकल गरमी के दिन हैं । इसलिए रात में गाड़ी में या बाहर सोना चाहिए । तुझे मुँह धोने

के लिए पानी की जरूरत होगी, इसलिए पानी का कनस्तर रख ले। रास्ते में झरने या पंप मिले, तो ताजा पानी भर लिया करना। कहीं तेज वहाववाला झरना मिले, तो उसमें नहा भी सकता है।"

"विल, मान लीजिये कि मैं कहीं भाग जाऊँ तो ? आपको धोखा मालूम होगा ?"

विल ने जरा हँस दिया। "धोखा ? भलेमानुस, जव तेरे कान खुजलाने लगें, तव याद रखना कि यह विल और स्वास्थ्य-विभाग के अधिकारी उन्हें खींचकर ठीक कर देंगे।"

हमारी वातें आगे वढ़ीं।

"विल, मैंने अपना नाम वदल दिया है। अव मैं 'नेड फर्ग्यूसन' वन गया हूँ। डॉ० टाड को पत्र लिखें, तव उन्हें यह वता दें।"

"जरूर, यह विचार अच्छा है। तेरा भाई कहाँ गया ?"

"मैंने उसे वापस घर भेज दिया है।"

उसने मेरे हाथ देखे, उनकी मरहम-पट्टी की। और जव वह लौटने लगा, तो टॉम को विदा करते समय जिस प्रकार वुरा लगा था, वैसा ही अव भी लगा।

"मैं कल फिर मिलूँगा।"

"जरूर कल मिलना !"—मैंने कहा।

टॉम का पत्र सुवह मिला। एक छोटा लड़का लाया था और वाड़ के ऊपर से अन्दर डाल गया। गाड़ी दोपहर वारह वजे तैयार मिल जायगी। मुख्य रास्ते से दो-एक मील पर वह छोड़ दी गयी थी। मैं वहाँ तक गया और उसे झोपड़े पर ले आया। उसमें सामान रखा। एक चिड़िया भी वहाँ नहीं आयी। गाड़ी को हैण्डल मारा और मैं रवाना हुआ।

◆◆◆

एकान्तवास

न्यूयॉर्क पहुँचते-पहुँचते कई दिन लग गये। परन्तु अन्त में कुशलपूर्वक जा पहुँचा। टॉड के ऑफिस के सामने स्टैण्ड पर मोटर खड़ी कर मैं अन्दर गया। मेरी शकल देखने लायक थी। नर्स मुझे फर्ग्यूसन नाम से पहचानती थी। प्रयोगशाला जैसे एक कमरे में वह मुझे ले गयी। पाँच मिनट के बाद वहाँ एक आदमी आया।

बिल की अपेक्षा और हमारे दक्षिण-पश्चिम अमेरिका के डॉक्टरों की अपेक्षा यह एकदम विलक्षण था। कटी हुई मूँछें और छोटी-सी बकरे जैसी दाढ़ी के कारण किसी डॉक्टर की अपेक्षा यह प्रोफेसर जैसा अधिक लगता था। पूरा सेवा-भावी था।

"आप स्नान तो करना चाहेंगे ?"—उसने तुरन्त पूछा : "उधर दाहिने हाथ के दरवाजे के अन्दर से होकर चले जाइये।"

स्नान ! यह तो मुझे ऐसा लगा, जैसे किसीने कोई निधि दे दी हो।

"मैं अपने धुले कपड़े ले आऊँ ?"

उसने सिर के संकेत से ही "हाँ" कहा। मैं मोटर तक दौड़कर गया और अपना बैग ले आया। नल फव्वारेवाला था। रास्ते में केवल शरीर पोंछ सका था। इसलिए यह बड़ा लाभ मालूम हुआ। अपने गन्दे कपड़े मैंने थैले में रखे। डॉक्टर ने बहुत ध्यान से मेरे सम्पूर्ण शरीर की जाँच की। पीठ देखने के बाद वह एक जगह जरा अधिक देर तक रुका।

"अब कपड़े पहन लीजिये। फिर हम बातचीत करेंगे।"....

बातचीत उत्साहजनक नहीं थी। उसे ऐसा लगा कि एक नया चकत्ता और बन रहा है। उसने राय दी कि मुझे कम-से-कम छह महीने यहाँ रहना चाहिए और क्या लाभ होता है, देखना चाहिए।

"रोग बढ़ रहा है, यह तो प्रकट है। रहेंगे ?"

मैंने "हाँ" कहा।

"टॉमसन ने भी मुझे यही कहा था और आपके रहने के लिए सारी व्यवस्था करने को कहा है। इसके अनुसार ग्रीनिच गाँव में मैंने नेड फर्ग्यूसन के नाम से एक छोटा-सा मकान किराये पर ले रखा है। यह मकान बिलकुल एक तरफ है। आपको अपने सब काम खुद कर लेने होंगे। भोजन, बर्तन, पानी, मकान की सफाई, कपड़े धोना आदि सब। एक मोदी से मैंने तय कर लिया है। वह खाने की सारी सामग्री आपके दरवाजे पर रख जाया करेगा। इसमें कोई फेरफार करना हो, तो मुझे फोन करें। नर्स उसकी व्यवस्था कर देगी। हाँ, फोन वहाँ लगा दिया गया है। अर्थात् यह खानगी फोन है। बिगड़ जाये, तो मुझे सूचना करें। पैसों के लेन-देन में केवल सिक्कों का ही उपयोग करें और किसीको देने से पहले उन्हें स्पिरिट से धो लिया करें। यह करते समय दस्ताने पहन लिया करें। बाहर जायें, तब भी हमेशा दस्ताने पहनकर ही जायें। यह आपका स्थान। और इस पैकेट में कुछ दवा-गोलियाँ (कैपस्यूल्स) हैं। यह 'चाल मोगरा' है। रोज दो गोलियाँ लें। चक्कर आने लगें और बरदाश्त न हो, तो बन्द कर दें। हर शनिवार को शाम पाँच बजे यहाँ आ जाया करें, ऐसा मैं चाहता हूँ। उस समय यहाँ कोई मरीज नहीं होगा।"

एक बोतल में उसने मुझे एक गहरे रंग की दवा और दे दी।

"आपको अपनी शक्ति बनाये रखना चाहिए। यह बड़ी महत्त्व की वस्तु है। शराब पीते हैं?"

"जी, परन्तु अधिक नहीं।"

"यह अच्छा है। किसी भी बात की अति से आपको हानि होगी। हाँ, और किसीसे सम्पर्क भी न रखें।"

कैसा भावनाशून्य आदमी! नर्स अन्दर आयी। मेरा खयाल है कि उसने घण्टी का बटन दबाया होगा। उसने मुझे चाबियों का एक गुच्छा दिया। जब मैं जाने को खड़ा हुआ, तब उसने एकाएक कहा :

"मुझे आशा है कि यह स्थान आपको अच्छा लगेगा। अनेक बार चुनाव के लिए गुंजाइश ही नहीं होती। यदि सम्भव होता, तो मैं आज ही आपके साथ चलता। किन्तु एक घण्टे बाद आपको फोन करूँगा।"

× × ×

स्थान को ढूँढ़ने में कुछ कठिनाई हुई। किन्तु जब वह मिल गया, तो उसे देखकर खुश हो गया। लगभग हडसन नदी के किनारे पर ही है। किसी समय वहाँ गाड़ियाँ बनानेवाले लोहार का कारखाना था। मोटरें बढ़ जाने के कारण उसे वह बन्द कर देना पड़ा। इस मकान में वही रहता था। मकान की चौड़ाई दस फुट से भी कम थी। कारखाने की दीवालों के ऊपर ही वह खड़ा था। पुरानी ऐरनें और कुछ पहिये भी अभी तक वहाँ पड़े थे। रहने का प्रबन्ध ऊपर था। नीचे रसोईघर, एक कमरा और इन दोनों के बीच कुछ जगह थी। जीना यहीं था। ऊपर एक कमरा और स्नान-घर था, नीचे के खण्ड का बाहर का दरवाजा एक अहाते में खुलता था। उसके अधिकांश भाग में पक्की फर्श लगी थी। कुछ भाग में ईंट की बनी कुछ क्यारियाँ और एक शहतूत का पेड़ भी था। खिड़कियाँ सब एक ही तरफ (पूर्व में) थीं। पड़ोसवाला मकान भी एक बन्द पड़ा कारखाना ही था। वह नीचा था। इस कारण सुबह की धूप मुझे मिलती रहती। जगह साफ थी। मेरा खाने-पीने का सामान सीढ़ियों पर ही रखा था। जाते ही एक बार में पूरे मकान में घूम आया। मकान और अन्य सामान काम चलाने लायक थे। फिर खाने का सामान अन्दर लिया। टाइपराइटर, ग्रामोफोन और कुछ कपड़े मोटर से निकाले। डॉक्टर के यहाँ जो गन्दे कपड़े उतारे थे, वे मोटर में ही रहने दिये। टॉम जितने पत्र लाया था, उनमें से जेन के तीन पत्र निकाल लिये और शेष उसी थैले में रख दिये। इतने में डॉ० टॉड का फोन आया। "स्थान पूरी तरह पसन्द है" कहकर मैंने उनका आभार माना।

× × ×

अब 'दुर्घटना' की तैयारी करनी थी। सम्पूर्ण मॅनहॅटन और ब्रूकलिन (न्यूयॉर्क के नदी किनारेवाले मुहल्ले) घूम आया। शहर मेरे अन्दाज से बहुत अधिक बड़ा था। जहाँ जाता, वहाँ मनुष्य मिलते। इस कारण 'दुर्घटना' का अभिनय करना आसान नहीं था।

शुद्ध दूध की एक दूकान से मैंने एक बोतल दूध ले लिया। दो-एक सैण्ड-विचेस भी एक दूकान से खरीदे। नाश्ता किया। कुछ ताजगी आयी। तब घूमने के लिए निकल पड़ा। अन्त में एक एकान्त स्थान मिल गया। हारलेम के

पास पूर्व में नदी पर। वहाँ एक छोटा-सा घाट भी था। वहाँ जानेवाली गली में अधिक रहदारी नहीं थी। जगह देख मैं अपने स्थान पर लौट आया।

रात के दो वजे फिर निकला। आसपास कोई नहीं था। रास्ते, गली और 'डक' सभी सुनसान थे। घाट पर गाड़ी ले गया। इञ्जिन चालू रखा। फिर ब्रेक हटा लिये और गाड़ी को थोड़ी गति देकर वाहर कूद पड़ा। गाड़ी सीधी पानी में चली गयी और उलट गयी। एक आदमी मेरी दिशा में दौड़ता आ रहा था। किन्तु मैं उसे चकमा देकर शान्ति के साथ अपने घर पर आ गया, किसीने मुझे नहीं देखा।

सवेरे वाहर जाकर एक अखवार खरीदा। दस्ताने पहनकर जेव से सेंट निकालने में काफी असुविधा मालूम हुई। चौदहवें पृष्ठ पर मेरी मृत्यु के समाचार थे। पुलिस को मेरी गाड़ी, थैला और घर का पता वतानेवाले पत्र मिल गये थे। शरीर का पता नहीं लगा। गोदी की पुलिस नदी में जाल डालकर मेरी लाश को खोज रही थीं। किन्तु उस दिन वड़े जोर का ज्वार आया था। इस कारण लोग अनुमान लगा रहे थे कि मेरी लाश समुद्र में वहकर चली गयी होगी। मेरी 'लाश' के विचार-मात्र से मेरे मन में जाने कैसा हो रहा था।

× × ×

न्यूयॉर्क में मैं लगभग एक वर्प रहा। टॉड से जितना भी कुछ वन सकता था, उन्होंने किया। जैसे-जैसे समय वीतता गया, वह मुझे अच्छे भी लगने लगे। दूसरे कोढ़ियों का भी वे उपचार करते थे या नहीं, यह मैं नहीं जान पाया। इतना ही नहीं, वल्कि इस पूरे वर्प में अखवारों के सिवा न तो दूसरे आदमियों से मेरा कोई संपर्क हुआ और न कोई घटना ही हुई। मेरे आसपास लगभग पचास लाख मनुष्य रहते थे। किन्तु मैं स्वयं तो अकेला ही था। जमीन के नीचे सुरंगों में होकर जानेवाली सड़कें मेरे लिए रहस्य ही वनी रहीं। ट्राम अथवा रेलों में तो मैं प्रवास कर ही नहीं सकता था। वेस वॉल देखने का मुझे वड़ा शौक था। इसलिए हर हफ्ते मैं पोलो के मैदान पर जाता और दूर, एक तरफ अपने साथवाले अखवार फैलाकर उन पर वैठता। मकान से वहाँ तक पैदल ही जाता-आता। उस वर्ष वहुत-से मैच हुए थे। सात से भी अधिक

मील जाना और इतना ही वापस लौटना पड़ता था। किन्तु इसका पूरा मुआवजा मुझे मिल जाता।

रात को जब नींद न आती, तो बगीचों में अथवा मुझे छोड़कर दूसरे तमाम लोगों को प्रसन्न करनेवाले प्रकाश में मुख्य सड़कों पर घूमता रहता। सुन्दर वस्त्र पहनकर स्त्रियाँ और पुरुष इधर से उधर जाते और हँसते रहते। ....मुझे लगता कि हँसना तो मैं उस वर्ष भूल ही गया था।

एक दिन मुझे समाचार मिला कि मेट्रोपॉलिटन थियेटर में प्रसिद्ध गायक फारूसो का जलसा है। मुझे लगा कि मैं बहुत पहले चला जाऊँ, तो टिकट खरीदने की भीड़ में किसीको छूत लगने का भय न रहेगा। मैं पहुँचा। परन्तु लोग तो पीछे आते ही गये। अन्त में अपने पीछे के आदमियों का धक्का मुझे लगा। मैं तुरन्त कतार से बाहर निकल आया। वे लोग मेरी तरफ देखते ही रह गये।

"ए—! किसकी हजामत करने के लिए बाहर निकल गया? अभी-अभी खिड़की खुल रही है।"

उस रात मैं ऑपेरा हाउस के पास भी गया। देर तो हो ही गयी थी। परन्तु रास्ते पर दस-बारह आदमियों का झुण्ड खड़ा था। पुलिस का सिपाही भी देख रहा था। मैं सोच ही रहा था कि क्या बात है? इतने में एक अद्भुत मधुर आवाज सुनायी दी। गरमी के दिन थे, इसलिए हवादान खुले थे। वह कर्णमधुर आवाज उसीमें से आ रही थी। अन्त में मैंने फारूसो को सुन ही लिया।

दूसरे दिन डॉ० टॉड का फोन आया कि मैं उनसे जाकर मिल लूँ।

उन्होंने कहा: "मि० फर्ग्यूसन, आपके स्वास्थ्य में मुझे कोई सुधार नहीं दिखाई देता। यह आपसे कहते हुए मुझे कितना दुःख होता है, मैं बता नहीं सकता।"

अगर मुझे इस बात की पहले से ही जानकारी न होती, तो मुझे इससे बड़ा आघात होता। किन्तु मैं निर्णय कर चुका था। इस बड़े शहर का एकांत सहना, शहर में रहते हुए भी नहीं जैसे रहना, अब मेरे लिए असंभव हो गया।

"आप डॉक्टर विल को सूचना कर सकेंगे कि मैं कूलियन जाना चाहता हूँ?"

उन्होंने स्वीकार किया। मैं पुनः अपने एकान्त निवास पर लौट आया। विल ने बराबर अपने वचन को पूरा किया। सान फ्रान्सिसको से एक फौजी जहाज शीघ्र ही निकलनेवाला था। उन्होंने मुझसे पुछवाया कि क्या मैं तब तक वहाँ पहुँच सकूँगा? मैंने फौरन स्वीकार कर लिया और टॉम को नीचे लिखे अनुसार एक पत्र लिख दिया :

"प्रिय टॉम,

अब मेरी आशा का अन्त आ गया है। इस मिथ्याभास को अब आगे जारी रखना निरी मूर्खता होगी। मैं केवल मूर्ख आग्रह के कारण ही अब तक मानता रहा कि 'अच्छा हो जाऊँगा या मुझे अच्छा हो ही जाना है।' परन्तु मैं आज तक यह कभी नहीं देख पाया हूँ कि मैं सुधर रहा हूँ या सुधर सकूँगा।

लगभग एक वर्ष से इसी प्रकार चल रहा है। परन्तु हर क्षण, जाग्रत अवस्था के युग की तरह प्रतीत होनेवाले हर क्षण मैं अपने को यह मनवाने का प्रयत्न करता रहा कि 'नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। तू, माँ, जेन, होरेस विण्डल अथवा विल टॉमसन जिस प्रकार नीरोग हैं, उसी प्रकार मैं भी हूँ।' यहाँ जितने दिन, जितनी रातें, हफ्ते, पक्ष और महीने इस शहर के जिन-जिन रास्तों और सड़कों पर घूमा हूँ, उसका एक-एक पत्थर इस बात का साक्षी है कि मैंने इसी थोथी और कभी विश्वास न करने लायक भावना का जप किया है। किन्तु अब मैं थक गया हूँ।

भाई टॉम, यह रोग गया नहीं। हमें स्वीकार करना भले ही अच्छा न लगे, परन्तु जो होना था, वह होकर रहा। मैं रक्तपित्ती-कोढ़ी हूँ। ऐसा होने पर भी मैं सोचता रहा कि 'मैं अच्छा हो जाऊँगा और आगे-पीछे वापस घर पर लौट आऊँगा। माँ से, मावेल से और तुझसे मिलूँगा। यही नहीं, जेन से भी फिर मिलूँगा और वह मुझसे पूछे बगैर नहीं रहेगी कि इतने दिन मैं कहाँ रहा और क्यों चला गया। फिर अपना अधूरा मकान पूरा कर हम उसमें सुख से रहने लगेंगे'—शेखचिल्ली की तरह इस तरह के झूठे सपने मैं पिछले वर्षभर देखता रहा।

परन्तु टॉम, अब यह कुछ नहीं होगा। मुझे अपने बारे में अब कोई आशा नहीं रही। तू ऐसा न समझ बैठना कि मैं पीठ दिखा रहा हूँ या कुछ

उलटा-सीधा कर डालूंगा। यह तो हरगिज नहीं करूँगा। दो दिन पहले तेरा लम्बा पत्र मिल गया था। मैं आत्महत्या कर डालूंगा, ऐसा जरा भी नहीं सोचना। कम-से-कम आज तो मैं यह कह सकता हूँ। किन्तु तू तो वचन माँग रहा है। यह अनावश्यक है। क्या यह कभी कहा जा सकता है कि इसके सिवा अब कोई मार्ग ही नहीं है, ऐसा विचार कभी आयेगा ही नहीं? यह कहना कठिन है कि अपने विचारों पर मैं अवश्य ही और हमेशा काबू रख सकूँगा। हाँ, इतनी श्रद्धा अवश्य है कि अब तक मैंने वह नहीं किया। इस-लिए आगे भी नहीं करूँगा। क्योंकि मिसिसिपी के तट पर घण्टों तक मैं इस विचार से लड़ता रहा हूँ। इस वर्ष भी कई बार मैंने अपने-आपको उससे आसानी से बचा लिया है।

आखिर एक बार बॅटरी पार्क से कोनी द्वीप जानेवाले जहाज पर मैं सवार हो गया। मैंने सोचा था कि सागर तक का प्रवास और संगीत तथा आमोद-प्रमोद दुःख भुलाने में मदद करेंगे। किन्तु इन्होंने तो उलटे इस चिंतन को अधिक तीव्र बना दिया। भीड़ से अलग रहने का मैंने एक घण्टे तक प्रयत्न किया। परिणामस्वरूप मेरी हलचलों की तरफ लोगों का ध्यान जाने लगा और वे मेरी ओर शक की नजर से देखने लगे। मैं चक्कर में पड़ गया। अंत में नीचेवाली डेक के ठेठ पीछेवाले कोने में मैं घुस गया। वहाँ मैं अकेला था। केवल एक चौकीदार उधर फेरा लगा दिया करता। मुझे लगा कि उसे शक हो गया होगा अथवा कुछ मुसाफिरों ने उसे मुझ पर नजर रखने के लिए कह दिया होगा। टॉम, उस दिन मैं आत्महत्या करने ही वाला था। उस रोज कुछ ही फुट पर वे फेनिल लहरें थीं, जो जहाज के वेग के कारण जोर से जल उछालतीं और मुझे शान्ति और निश्चिन्तता का आश्वासन दे रही थीं। किन्तु भैया, पहले की भाँति इस बार भी तेरे ही इन शब्दों ने मुझे बचाया कि 'देखना, पीठ नहीं दिखाना।'

इसलिए भैया, मत सोचना कि मैंने पीठ दिखा दी है। मैं वचन तो नहीं दे सकता। किन्तु ऐसा करने के लिए सचमुच मैं अपनी पूरी शक्ति के साथ यत्न करता रहा हूँ।

उसी रात मैं किनारे पर उतरा। मैं किसी चीज में भाग नहीं ले सकता

था। कोई भी खेल-तमाशा देखने जाना हो, तो वहाँ भीड़ तो रहती ही है। कई वार मैंने कहीं अन्दर जाने का यत्न किया, पर हर वार भीड़ के कारण मनुष्यों की कतार में से अलग हो जाना पड़ा है। मेरी रग-रग में जीवन से विरक्ति हो गयी है। मैं वापस जहाज पर पहुँचा। उसकी डेक दीपों से सजायी गयी थी। उन्हें देखते ही मेरे पैर ढीले हो गये। मन को सन्ताप हो रहा था, फिर यहाँ एक घण्टा विताना भारी हो गया। मैं वापस लौटा और अँधेरे में होकर टहलने लगा। फिर जहाँ कम दीये थे, वहाँ रास्ता लाँघकर शहर तक चलकर आया। जाने कितने मील चला, पूरी रात चलता ही रहा। सोचता रहा और दुःख करता रहा। अकेलापन कितना सूना होता है, इसकी तू कल्पना भी नहीं कर सकता। लाखों आदमियों के वीच घूमना-फिरना, रहना, खाना-पीना, देखना-भालना और फिर भी एक भी आदमी से छूने की हिम्मत न करना—कहीं परिचय अधिक न वढ़ जाय, इस भय से किसीसे वात करने की हिम्मत न करना—यह सव टालना—दूर-दूर-दूर रहना..........!

अव तो यह सव मैं एक दिन भी नहीं सह सकता। अव मैं ऐसी जगह जाना चाहता हूँ, जहाँ मेरे जैसे ही हजारों हों। ऐसी जगह, जहाँ अगर कोई मिल जाय, तो उससे वातचीत करने में संकोच न हो। जहाँ किसीके साथ टकराते ही कुत्ते के समान डरकर भागना न पड़े।

कभी-कभी मेरे मन में एक ऐसा पागलपन सवार होता कि एक वार यूनियन स्क्वेअर (चौक) में ब्रॉडवे की किसी नाट्यशाला में देर से घुस आऊँ और वहाँ हास्य-विनोद तथा आमोद-प्रमोद में मग्न हजारों निश्चिन्त आदमियों के वीच एकाएक जाकर खड़ा हो जाऊँ और जोर-जोर से चिल्लाकर कहूँ कि 'लोगो, देखो, देखो! हर आदमी इधर मेरी तरफ देखे। मेरा नाम नेड लैंगो-फर्ड है। आपके ही समान मैं भी एक मनुष्य हूँ और मेरे अन्दर भी वे ही भावनाएँ भरी हुई हैं। मेरी भी एक प्रेमिका है। वह मुझसे शादी करनेवाली थी। किन्तु अव मैं एक कोढ़ी हो गया हूँ।—रक्त-पित्ती का रोगी।' यह सुनते ही उनके अन्दर कैसी खलवली मचेगी, वे कैसे सन्न रह जायँगे? किस तरह वे भय से अभिभूत हो जायेंगे, उन्हें कैसी मूढ़ कँपकँपी छूटेगी और मेरे स्पर्श से वचने के लिए वहाँ से भाग निकलने की वहाँ कैसी भगदड़ मचेगी

और इसमें वे किस प्रकार एक-दूसरे को धक्के देंगे, आपस में लड़ेंगे, इसका काल्पनिक चित्र अपनी आँखों के सामने खड़ा कर मैं कितनी ही वार बहुत हँसा हूँ।

फिर भी टॉम, ऐसा क्यों होता है? वे केवल कोढ़ के शब्द से इतने क्यों डर जाते हैं? आज भी अगर तू मुझे देखे, तो तुझे ऐसा नहीं लगेगा कि मैं रोगी हूँ। तुझे कोई फर्क नहीं दिखाई देगा! नजर पड़ने लायक किसी भाग पर एक भी चकत्ता नहीं है। फर्क सिर्फ इतना ही है कि एक-एक चकत्ता बढ़ता जाता है। डॉक्टर कहते हैं कि कभी-कभी यह रोग बड़ी तेजी से बढ़ता है, पर अक्सर इसकी प्रगति बहुत मन्द होती है। बात यही है कि इसके जन्तु अभी भी शरीर में हैं और एक वर्ष तक औषधि सेवन करने पर भी वेग में नहीं हैं। किन्तु ऐसी स्थिति में अधिक समय तक रहना मनुष्य की शक्ति से बाहर की बात है।

दूसरों की रक्षा की दृष्टि से मैंने सदा बचकर रहने का यत्न किया है। फिर भी कभी-कभी भूल भी हो गयी है। डॉक्टरों के यहाँ जाता, तब कई वार लिफ्ट का उपयोग करता। एक वार नर्स भी मेरे साथ गयी थी। उस दिन डॉ० टॉड ने मुझसे कहा कि मुझे जीने का ही उपयोग करना चाहिए। तब से मैंने लिफ्ट के बदले चढ़ने-उतरने में जीने का ही उपयोग किया है।

एक रात की बात है! वॉशिंगटन स्क्वेअर में मैं एक बेंच पर बैठा था। बहुत बार वहाँ किसी उजालेवाली जगह में जाकर बैठता हूँ और वहाँ से शहर के रास्ते तक पहुँचनेवाली दीपों की कतार को देखता हूँ। बड़ा रमणीय दृश्य है। खासकर जब बरसात हो जाती है, तब भीगी हुई पक्की फर्श पर विक्टोरिया सिगराम और कभी-कभी मोटरों की बत्तियों के हिलते हुए प्रति-बिम्बों की कतार बहुरूपी केलाडाइस्कोप* जैसी मनोहर दिखती।

---

*यह एक खिलौना होता है, जिसके अन्दर काँच के तीन स्लाइडनुमा टुकड़े इस प्रकार रखे होते हैं, जिनसे अन्दर एक त्रिकोणाकृतिवाली नलिका बन जाती है। इसके आसपास कागज की एक गोल नली बना दी जाती है। त्रिकोणाकृति नलिका के एक सिरे पर काँच की दो गोल तवके रहती हैं,

उस रात वहाँ बैठे-बैठे मुझें करीब घण्टाभर हो गया। ईस्ट रिवर की तरफ के मकानों पर पूर्ण चन्द्र चमक रहा था। मेरी बेंच के दूसरे सिरे पर एक जवान स्त्री आकर बैठ गयी। उसके कपड़े भद्दे थे और उसके पतले मुँह को पाउडर के लेप ने कुरूप बना दिया था। थोड़ी देर बाद वह मेरे नजदीक खिसक आयी और उसने नमस्कार 'गुड ईवनिंग' किया। मैंने भी किया। कुछ देर तो वह कुछ न बोली। शायद उसने सोचा होगा कि मैं बोलूंगा। बाद में वही बोली : 'बड़ी रमणीय रात है, नहीं ?'

मैंने कहा : 'हाँ, सचमुच।'

'नजदीक ही कहीं रहते हैं ?'

'बहुत दूर तो नहीं, हडसन नदी की ओर।'

'साथ में और कौन रहते हैं ?'

'कोई नहीं।'

'अरे, अकेले कैसे अच्छा लगता होगा ? मुझे साथ ले चलें, तो कैसा ?'

बड़ी देर तक मैंने उसे ध्यान से देखा। दिखने में तो उसमें कुछ नहीं था। किन्तु वह जिन्दा थी—जीती-जागती। मेरे साथ बोली तो।

बहुत समय से मेरे साथ कोई बोला तक नहीं था। फिर यह एक स्त्री थी—देखने में सुन्दर नहीं, फिर भी स्त्री तो थी। यदि मेरे साथ रहे, तो घर में एक स्त्री तो हो जाय। शायद मेरे साथ हँसे, मैं एक स्त्री की हँसी तो सुन सकूँ।

मेरी आनाकानी से वह चिढ़ गयी। 'क्या हो गया ? मेरा डर लगता है ?' यह सवाल मुझे विचित्र लगा ! मुझे डर लग रहा है ?

जिनके अन्दर चूड़ियों के विविध रंगों के छोटे-छोटे टुकड़े रख दिये जाते हैं। दूसरे सिरे पर काँच की गोल तब तक रखकर उसे बन्द कर दिया जाता है। इसके अन्दर से और नलिका को गोल-गोल घुमाकर देखने से चित्र-विचित्र रंगोंवाली भूमिति की असंख्य आकृतियाँ बनती जाती हैं। यह खिलौना आजकल शहरों में आम तौर पर मिलता है।

पुलिस का एक सिपाही टहलता हुआ वहाँ से गुजरा। वह चुप हो गयी। उसके चले जाने पर फिर वोली : 'अजीव आदमी मालूम होते हैं।'

'हूँ तो सही।'

'कोई हर्ज नहीं जवान। हर मनुष्य में कुछ-न-कुछ विशेषता होती ही है। मेरी वात का क्या सोच रहे हो ?'

पुलिस के फेरे ने उसे फिर सावधान कर दिया। इस समय मुझे टॉड की वह आज्ञा याद आ गयी कि मुझे सवसे दूर रहना चाहिए। इसलिए मैंने कहा : 'नहीं, यह मुझसे नहीं होगा।'

'क्या कहा ? नहीं होगा। क्यों ? मुझमें क्या खामी है ? तेरे लायक नहीं हूँ ? और तू कहाँ वड़ा सुन्दर है वता ! नहीं होगा, तो जा जहन्नुम में।' यों कहकर वह तेज कदम भरती हुई चली गयी।

हे भगवन् ! वह मेरे लायक नहीं। वह आवारा औरत भी मुझे स्वर्ग की अप्सरा जैसी लगी। वह मेरी तरह एकदम अकेली नहीं थी। उसकी किस्मत में मेरे समान एकान्तवास नहीं लिखा था। उससे कोई दूर नहीं भागता था। किसीने भी उसे दूर रहने की आज्ञा नहीं दे रखी थी।

उस रात जव मैं उस सूने मकान में लौटा, तव मेरे अन्दर वैसी ही निराशा छा गयी थी, जैसी उस पहली रात में छायी थी, जव मैंने चूहे को मारा था।

टॉम, एक और भी वात तुझे वता देना चाहता हूँ। आज तक जेन को मैंने अपनी विचार-सृष्टि में पकड़ रखा था। यह सव होने पर भी मैंने यह नहीं मान लिया था कि वह मुझे न मिल सकेगी। किन्तु अव तो इस मोह को छोड़ना ही पड़ेगा। मेरे जीवन के इस खँडहर से कुछ भी वचाया नहीं जा सकेगा। मेरा नाम भी नहीं। तू जेन की चिन्ता करना। मुझे निश्चय है कि तू उसका इतना खयाल जरूर रखेगा कि उसे किसी प्रकार की तकलीफ न होने पाये।

इस पत्र का उत्तर तू लिखेगा, शायद उससे पहले ही मैं रवाना हो चुका हूँगा। मनीला जानेवाले जहाज पर विल व्यवस्था कर रहा हूँ। इसलिए तू मुझे कूलियन के पते पर ही पत्र लिखना। यहाँ मेरा पूर्व-जीवन समाप्त होता है। कल मैं नये जीवन में प्रवेश करूँगा।

उस संसार के विषय में मैं कुछ भी नहीं जानता। वहाँ पहुँचने के बाद लिखूँगा। इस बीच ऐसा मत समझ बैठना कि मैंने कुछ कर डाला है। मैंने केवल उतना ही किया है, जो अनिवार्य था। मैं अपने जीवन को खो चुका हूँ। उसे फिर प्राप्त करने के लिए मेरा यह प्रयास है।

सप्रेम

नेड"

पत्र पूरा करते ही मैं रवाना होने के लिए तैयार हो गया। टॉड की आज्ञा के अनुसार घर के सारे साज-सामान के टुकड़े-टुकड़े कर चूल्हे में जला दिया। सारे मकान को जन्तुनाशक दवा से धो डाला। केवल मेरी सन्दूक, टाइपराइटर और ग्रामोफोन रह गये थे। इन्हें जहाज पर पहुँचा देने की जिम्मेवारी टॉड ने अपने ऊपर ले ली थी।

दरवाजे पर ताला लगाकर मैं चल दिया।

◆◆◆

स्टीमर पर

: ८ :

ग्यारहवाँ रास्ता मैं पूरा पार कर गया। यह रास्ता मौत के रास्ते के नाम से विख्यात है, क्योंकि वह रेल की पटरियों से छाया है। मौका देखकर मैं एक माल के डिब्बे में घुस गया।

न्यूयॉर्क से सान फ्रान्सिसको—अमेरिका के पूर्वी किनारे से पश्चिम के किनारे पर! तीन हजार मील! इस लम्बी सफर का असर मुझ पर भूत-प्रेत जैसा था। रात में देर से गाड़ी किसी छोटे-से स्टेशन पर पहुँचती। पीछे चलनेवाली ट्रेन के गार्ड की नजर से अपने-आपको बचाता। जाड़े से बचने के लिए कोयले के किसी खाली डिब्बे के कोने में सिकुड़कर पड़ा रहता। किसानों के पास से खाना खरीदता और पैसे देते समय संशय का पात्र बनता। यही मेरी नित्य की चर्या थी। गाड़ी के डंडे को पकड़कर लटकते हुए कई बार मेरे मन में संघर्ष छिड़ता कि जाड़े से हाथ ठिठुर रहे हैं। इस तरह लटकने के बजाय क्यों न इसे छोड़ दूँ और जीवन के साथ-साथ इस दुर्गति का भी अन्त कर दूँ? कई बार दोस्ती के इरादे से आनेवाले आवारा लोगों से बचना पड़ता।

आखिर तक यह डर तो बना ही रहा कि कहीं जहाज छूट न जाय। यह सब उस हालत में, जब कि मेरी जेब में इतने पैसे थे कि तेज-से-तेज गाड़ी के ऊँचे-से-ऊँचे दर्जे का टिकट खरीदकर आराम से जा सकता था। किन्तु यह कैसे हो सकता है? दिल में यह भय था न कि मेरी छूत दूसरे किसीको न लग जाय? इस प्रकार सफर करने में कम-से-कम इस पाप का बोझ तो दिल पर नहीं रहा।

जहाज छूटने के दिन ही मैं सान फ्रान्सिसको पहुँच गया। सीधा 'डेक' पर चला गया। जहाज पर चढ़ने की सीढ़ी के सामने एक सिपाही ने मुझे रोका।

"अबे उचक्के, कहाँ जा रहा है?"

जहाज की ओर इशारा करते हुए मैंने कहा : "मुझे इसमें जाना है।"

"अच्छा !"

"सच कहता हूँ। मेरी राह देखी जा रही होगी।"

"क्या कहने ! इस उचक्के की वहाँ राह देखी जाती होगी। चल हट। अबे भिखमंगे ! यह तो फौजी जहाज है।"

"मैं जानता हूँ कि यह फौजी जहाज है। मैं भी किसी समय सिपाही रहा हूँ।"

"रहा होगा। आज तो नहीं !"

मैं कुछ झुंझलाया। मैं कैसा हूँ, इसे कोई जान भी ले, तो अब मुझे उसकी परवाह नहीं थी। मैंने कहा : "मैं कोढ़ी हूँ।"

"तू तो गधा है।"

मैं बिगड़ा : "डॉ० सिडनी से बोल कि नेड फर्ग्यूसन आये हैं।"

जहाज के डॉक्टर का नाम मैं जानता हूँ, यह मालूम होते ही वह आश्चर्य से मेरी ओर देखने लगा। सोचने लगा कि मेरी बात माननी चाहिए या नहीं। अन्त में कुछ कदम ऊपर जा सीढ़ी के उस सिरे पर खड़े गार्ड को पुकारकर कहा : "डॉ० सिडनी को तो जरा बुलाइये।"

एक मिनट भी नहीं बीता कि डॉक्टर का तमगा लगा एक अधिकारी आया : "कौन फर्ग्यूसन ?"

"जी, हाँ।"

"ऊपर आ जाइये।"

मैं ऊपर जाने लगा। तब वह सिपाही क्रूस बनाकर ईसा, मेरी और जोसेफ के नाम बड़बड़ाता सुना गया।*

---

* दुःख, दोष और अपशकुन को दूर करने के लिए इस प्रकार दो अँगुलियों से क्रूस का निशान बनाकर ईसा, मेरी और जोसेफ का नाम-स्मरण करने का संस्कार रोमन कैथोलिक संप्रदाय के लोगों में है, जिस प्रकार कि हम 'राम-राम' आदि कहा करते हैं।

"अच्छा हुआ, आप ठीक समय पर आ पहुँचे। मुझे जरा चिन्ता होने लगी थी। चलिये, आपकी जगह दिखा दूँ।"

उसने मुझे मेरी कैबिन दिखा दी। दूसरी कैबिनों से वह एकदम अलग थी। कैबिन छोटी थी, पर सुविधाएँ सब थीं। उसका नल, पाखाना स्वतन्त्र था। वहाँ टॉम और बिल के पत्र और पार्सल पड़े हुए थे। इन्हें मैंने वैसे ही पड़े रहने दिया और कपड़ों की पेटी खोली। मेरे बाल तो जंगल बन गये थे। मैं जानता था कि इस जंगल को साफ करते-करते मेरी आफत आनेवाली है। न्यूयॉर्क में मैं ही अपना नाई था। परन्तु सफर में मैंने दाढ़ी बनाना छोड़ रखा था। इसलिए स्टीमर पर पहुँचते ही सबसे पहले यही काम करने लगा।

भोंपू बजा। डेक पर कूच करनेवाले आदमियों के पैरों की आवाज और बैण्ड सुनाई दिया। मेरे हाथ से कैंची गिर गयी। पंद्रह वर्ष पहले मैं इसी सफर पर गया था। तब मैं डेक पर था। उस समय हमारे 'चीन' जहाज पर एक हजार से अधिक आदमी थे। आज भी इस जहाज पर एक हजार और मेरे सहित एक हजार एक आदमी हैं। सैनिकों के पैरों की आवाज जब तक कानों में आती रही, मेरे हाथ इतने स्थिर नहीं हो पाये कि मैं बाल काट लेता। किन्तु उनके बन्द हो जाने पर मेरा काम अच्छी तरह चलने लगा। वह पूरा हुआ और इधर इंजिन के चलने की आवाज आयी। मैं जल्दी से एक छोटी खिड़की के पास पहुँचा और उसे खोला। सान फ्रान्सिसको का किनारा दूर हटता जा रहा था। वह अद्भुत बंदरगाह गया। गोल्डन गेट से हम बाहर होने लगे। लग रहा था कि मेरी जन्मभूमि का यह अंतिम दर्शन था।

कैबिन का दरवाजा बजा। डॉ० सिडनी था। वह एक ठिगना, मोटा, चमकीली चाँदवाला, बोलती आँखोंवाला, खुशमिजाज आदमी था। चालीस के ऊपर पहुँच गया था। उसकी टीप-टाप सर्वथा निर्दोष थी। मुझे देख वह हँस पड़ा।

"गजब किया यार! आदमी के चेहरे में इतना भारी अंतर होता मैंने कभी नहीं देखा। खुद ही बाल काटने पडे! खासी कुशलता हासिल कर ली है।"

"आपकी कृपा है। परन्तु डॉक्टर, एक विनती आप सुनेंगे? मुझे केवल 'नेड' कहिये।"

"वाह, यह तो मुझे अच्छा लगेगा। अच्छा नेड, अब मैं आपको आपकी दिनचर्या समझा दूँ। आपका भोजन आपके दरवाजे पर पहुँच जाया करेगा। अपने बर्तन आपको खुद ही साफ कर लेने होंगे। टंकी में खूब गरम पानी रहता है। आप अकेले पड़ जायँगे, यही डर है। क्योंकि आपसे मिलने-जुलनेवाला अकेला मैं ही तो रहूँगा। हाँ, कप्तान भी चाहते तो हैं कि दरवाजे में खड़े रहकर घड़ीभर आपसे बातें कर लिया करें।"

"वे आयें, तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा।"

डॉ० सिडनी की मुलाकातों के बावजूद मेरा दिन काटे नहीं कटता था। मेरे पत्र और पार्सल उसमें जरूर मदद करते रहते। फोनो और टाइपराइटर अच्छी हालत में पहुँचे देख मुझे आनन्द हुआ। बिल ने मुझे लिखा था कि एक फिलीपाइन डॉक्टर डॉ० राबिनो के साथ उसका अच्छा परिचय था और मेरे बारे में उसे उसने लिख भी दिया है। टॉम ने नये रेकार्ड भेज दिये थे। एक छोटा-सा पत्र भी था। इस बेचारे को केवल मुझे ही नहीं, किसीको भी पत्र लिखना एक मुसीबत-सा लगता। माँ का स्वास्थ्य ठीक हो गया था। माबेल की शादी हो गयी। उसका पति शायद हमारे धंधे में शामिल हो जाय। जेन क्लीवलैंड के एक विद्यालय में शिक्षिका हो गयी थी।

बहुत दिनों बाद कप्तान मिलने के लिए आया। उसके बर्ताव में केवल शिष्टाचार था। मैंने सफेद कपड़े पहने थे। मेरी स्वच्छता और व्यवस्थितता देख उसे खुशी हुई। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी कोढ़ी से उसने इतनी आशा नहीं रखी थी।

उसी दिन ग्रामोफोन सुनते-सुनते मुझे एकाएक बेचैनी लगने लगी। आज तक मुझे कभी ऐसा अनुभव नहीं हुआ था। चक्कर और जलन हो रही थी। दिमाग घूम-सा रहा था। किसी तरह कपड़े उतारकर देखा, तो पाया कि जाँघ-वाले चकत्ते पर सूजन आ गयी है। हाथ के चकत्ते भी लाल हो रहे थे। यह नयी चीज क्या है, यह सोचता हुआ मैं बिस्तर पर लेट गया। डॉ० सिडनी भी पहचान न सके। उन्होंने कहा: "रास्ते में आपको बहुत तकलीफ हुई। ऐसी सफर में कोई कमजोर आदमी तो दो दिन में ढेर हो जाता। अब जरा आराम कीजिये, तो सब ठीक हो जायगा।"

वह कुछ दवा दे गया। दवा से मुझे आराम मालूम हुआ। इतना सोया, इतना सोया कि कुछ ही दिनों में पहले जैसा हो गया। महीनों बाद पता चला कि तीव्र रक्तपित्ती का वह पहला हमला (लेपर रिएक्शन) था। इस रोग में जो अनेक यातनाएँ सहनी पड़ती हैं, उनमें से यह एक थी।

आराम के समय मैं रेकार्डों का आनन्द लेता। एक रेकार्ड का नाम मुझे अपरिचित लगा। किन्तु कुछ ही सुनने के बाद मैं उसे पहचान गया। यह तो हमारा—मेरा और जेन का प्रिय गीत था। इसमें कुछ फर्क कर दिया गया था। एक छोटी-सी कड़ी नयी थी। जेन ने उसे जोड़ दिया होगा। गीत के सुर सुनते ही मैं पुरानी दुनिया में पहुँच गया। ऐसा लगने लगा, मानो मैं उसके साथ घूम रहा हूँ। उसके साथ सवार होकर कहीं जा रहा हूँ। उसकी भूरी आँखों की मोहक चमक और सिर की लटक मेरी आँखों के सामने खड़ी हो गयी। उसके साथ अपने नये मकान की योजना की मैं चर्चा करने लगा। इतने में गीत पूरा हो गया और ग्रामोफोन की सूई रेकार्ड पर खरखराने लगी। मैंने तुरन्त उसे बन्द कर दिया और रेकार्ड को हाथ में लेकर बैठा। इतने में दरवाजा खुला।

"क्या हाल है नेड? क्या फिर बीमार हो गये? आपका चेहरा तो एकदम सफेद पड़ रहा है, मानो कोई भूत बैठा हो।"

"यों ही।" मैंने कमजोर आवाज में कहा।

डॉ० सिडनी समझदार आदमी थे। कुछ नहीं बोले।

होनोलूलू पहुँचने में एक हफ्ता लग गया। वहाँ कुछ लोग उतरनेवाले थे। अपनी कैबिन के अन्दर से मैं बन्दरगाह और आसपास के टापुओं को देख सकता था। स्टीमर एक दिन वहाँ रुका। मनीला जानेवाले मुसाफिरों को शहर देख आने की छुट्टी मिल गयी थी। उन्हें जाते-आते मैं देख सका।

अब भी तीन हफ्ते चलना था। युगों के समान लग रहे थे। पिंजड़े में बन्द जानवर की तरह मैं अपने कमरे में ही टहला करता और फिर दोनों हथेलियों के बीच सिर थामकर घण्टों सोचता रहता। स्वभावतः शोकमग्न और त्रस्त-सा हो जाता। ऐसे समय प्रायः डॉ० सिडनी आ पहुँचते और दिनभर सोचे हुए मजाक सुनाकर मेरे शोक और चिन्ताओं को भगा देते।

× × ×

स्टीमर ने मनीला के वन्दरगाह में प्रवेश किया, तो मेरा कैविन भीतर की तरफ था। यह मुझे अच्छा नहीं लगा। कोरे जिडोर के किले और समुद्र को मैं देख सकता, तो कितना अच्छा होता। इस तरफ से तो केवल टापू का टेढ़ा-मेढ़ा किनारा और घनी झाड़ियाँ ही दीख सकती थीं। स्टीमर दाहिनी ओर घाट से सट गयी। फौजी वैण्ड शुरू हो गया और कूच की पदध्वनि सुनाई देने लगी। मैं उतरने की राह देखने लगा।

यह समय काटना अत्यन्त कठिन हो गया। घण्टे पर घण्टे वीतते गये। दोपहर के वारह वजे से शाम तक मुझे उस गरमी में वैठे रहना पड़ा। चौदह वर्ष पहले जव मैं पहली वार यहाँ उतरा था, उसकी याद फिर ताजा हो गयी। तव मैं आशा से भरा हुआ एक नौजवान था और संसार को सभ्य वनाने के लिए अपना हिस्सा अदा करने को आतुर था। एक दूसरी लड़ाई लड़ने के लिए आज मैं फिर यहाँ आया हूँ, किन्तु आज मेरे लिए ढोल और भेरी नहीं वज रहे हैं और जिस शत्रु के साथ मुझे लड़ना है, उसे मैं अपनी आँखों से कभी देख भी न सकूँगा।

शाम को वड़ी देर से डॉ० सिडनी आये। वे कहने लगे कि वे काम में इतने मशगूल हो गये कि समय कैसे वीत गया, इसका उन्हें भान ही नहीं रहा। उन्होंने वताया कि मुझे वुलाने के लिए स्वास्थ्य-विभाग का एक अधिकारी आयेगा और वह पहले से ही सारी व्यवस्था वता देगा। उन्हें अधिक जानकारी नहीं थी। उन्होंने कहा : "आपके लिए मैंने भोजन की व्यवस्था कर दी है। देरी इतनी हो गयी है कि उतरने के वाद वाहर तो भोजन हो ही नहीं सकेगा। वे लौटकर आयें, तव तक मुझे भोजन कर लेना चाहिए।"

भूख तो नहीं थी। किन्तु भोजन के वहाने एक काम तो मिल गया। डॉ० सिडनी एक फिलीपाइन को अपने साथ लेकर लौटे। तव लगभग अन्धेरा हो गया था।

शिष्टाचार के अनुसार सिडनी ने परस्पर परिचय कराया : "मि० फर्ग्यूसन, ये हैं मेजर टॉमसन के मित्र डॉ० राविनो। आपको जहाँ जाना है, वहाँ के मुख्य डॉक्टर आप ही हैं।"

डॉ० राविनो ने अत्यन्त आदर के साथ नमस्कार किया। वे एक ठिगने, पतले

आदमी थे। आये स्पैनिश (ऐंग्लो-इण्डियन की भाँति) होंगे, ऐसा मुझे लगा। वे केवल विनयशील ही नहीं, पीछे रहनेवाले शर्मीले आदमी थे।

"मुझे दुःख है मि० फर्ग्यूसन, कि जिस देश में एक समय आप अपने देश की सेवा के निमित्त आये थे, वहीं आज आपको विपत्तिग्रस्त होकर आना पड़ा है। किन्तु निश्चय मानिये कि हमसे जितना बनेगा, हम आपके लिए करेंगे।"

मैंने उनका आभार माना। उन्होंने मुझसे कहा कि रात में काम में आने लायक केवल जरूरी सामान ही मैं अपने साथ लूं। दूसरा सामान पीछे से आता रहेगा। हम रवाना हुए। एक बरामदे से होकर इन दो डॉक्टरों के पीछे-पीछे मैं चलने लगा। खुले में आने के बाद गोदाम की दीवाल, नीचे उतरने के लिए पटियेदार सीढ़ी और स्टीमर की रेलिंग का कुछ भाग, बस इतनी ही चीजें मुझे नजर आ रही थीं। रेलिंग से सटकर कोई छह खलासी खड़े थे। उन्होंने पीछे देखा और चौंके। लम्बी साँस लेकर एक कह रहा था: "हे भगवन्, यह वही कोढ़ी है।" सुनते ही रेलिंग को छोड़कर सब भागे। डॉ० राबिनो ने मेरा हाथ पकड़कर एक तरफ घुमा दिया और कहा: "इस समुद्र की याद है? चाँदनी में कितना सुन्दर दीखता है?"

उनका हेतु तो यह था कि मैं उन खलासियों के भय और घृणाभरे चेहरे देख न सकूं। पर इसमें वे सफल न हो सके। उन्हें जरा देर हो गयी और मुझे जिस चीज को देखना नहीं चाहिए था, वह दीख गयी।

डॉ० सिडनी भी जल्दी में बोले: "एक बार मैं भी कूलियन आना चाहता हूँ नेड! इसलिए अन्तिम नमस्कार नहीं कर रहा हूँ। मैं बिल को पत्र लिख दूंगा।"

"मैं भी आपकी राह देखूंगा। आपने मेरे लिए बड़ा कष्ट किया। आपका अत्यन्त आभारी हूँ।"

फिर भी घाट पर से जाते हुए मुझे लगा कि क्या सचमुच हम पुनः मिल सकेंगे?

◆◆◆

वालसाथी

डॉ० राविनो ने एक एक्का तैयार रखा था। इस छोटी टट्टू-गाड़ी से मैं परिचित था। उस बूढ़े की मुझे याद हो आयी। डॉक्टर ने मुझे खुद अलग हटकर इस तरह वैठाया, मानो मैं कोई मरीज नहीं, वल्कि एक निमन्त्रित मेहमान था।

"सान-लाज़ारो अस्पताल !"—उसने एक्केवाले से कहा।

यह कोढ़ीघर वही तो नहीं, जिसमें मैं एक वार वगावत के दिनों चला गया था। दो-चार सवाल पूछने पर मुझे निश्चय हो गया कि यह वही था। गाड़ीवान अपने छोटे से टट्टू को चावुक से वरावर पीटता जा रहा था। और टट्टू अपनी धीमी चाल से ही चला जा रहा था। मेरी आँखों पर यदि कोई पट्टी वाँध देता, तो भी मैं पहचान लेता कि मैं मनीला आ गया हूँ। छोटे-छोटे टापों की यह आवाज और कहीं मेरे सुनने में नहीं आयी। इन गरीव जानवरों को अपने पैरों में सारी जान उँडेल देनी पड़ती है।

अव एकदम अँधेरा हो गया था। किन्तु चारों तरफ नया शहर खड़ा हो रहा है, इसके चिह्न दिखाई दे रहे थे। किले के चारों ओर घूमनेवाली खाई और उसके कोने कहीं नजर नहीं आते थे। जहाँ पहले केवल घूरे, दुर्गन्ध और खाई-गड्ढे थे, वहाँ अव वगीचे तैयार हो रहे थे। मिट्टी वगैरह डालकर समुद्र को भी पीछे हटाकर नयी जमीन तैयार की जा रही थी। पुरानी दीवालों और किनारे के वीच वत्तियों से जगमगाता हुआ एक विशाल होटल खड़ा हो गया था। पासिग नदी के मुहाने के सामनेवाले किनारे पर नये मकानों और इमारतों की लम्वी कतार खड़ी हो रही थी। सुन्दर पुराने स्पैनिश पुल को हम पार कर गये, तो अतीत की पुरानी दुनिया में हमारा प्रवेश हुआ। यह पुराना मनीला था। इन १४ वर्षों में इसमें कोई खास फर्क नहीं हुआ।

यहाँ वहुत शांति थी।........जहाज पर मुझे वहुत देर तक रुकना पड़ा, इसका कारण डॉ० राविनो ने अव वताया : "हमने सोच-समझकर ऐसा

किया था। फर्ग्यूसन, वात यह थी कि आज वहुत वीमार आये थे और भरती करने से पहले उन सवकी जांच कर लेना जरूरी था। पहले उनकी जांच हुई हो या न हुई हो, हम तो सवकी जाँच कर ही लेते हैं। क्योंकि वाहर जो डॉक्टर काम करते हैं, उनमें से वहुत कम को इस रोग का अनुभव होता है।....इसलिए आपको यदि जल्दी उतार लिया गया होता, तो इस गड़वड़ी में आपका कहीं ठिकाना नहीं लगता। अव शांति से सव हो जायगा।"

"मतलव यह कि आप आज रात में ही मेरी जाँच करनेवाले हैं ?"

"आपकी वात जुदा है। मेजर टॉमसन ने आपकी स्लाइड्स हमारे पास भेज दी हैं।"

मैंने जाना कि विल ने इन सव चीजों को इतने दिन तक सँभालकर रखा था। कितनी चिन्ता ! और उसने इन सवमें से एक शब्द भी नहीं कहा।

"मेजर टॉमसन इन टापुओं में थे, तो कुछ समय वे हमारे साथ काम करते रहे। वे एक होशियार जन्तु-शास्त्री हैं। इसलिए आपकी जंतु-परीक्षा करने की अव जरूरत नहीं होगी। किन्तु यदि आपको आपत्ति न हो, तो केवल जाब्ते की पूर्ति करने के लिए आपकी थोड़ी जाँच कर लूँगा। केवल हमारी खानापूरी के लिए ही।"

"आपको आपत्ति न हो तो !" वह और मैं भी जानता था कि नियमानुसार मुझे 'हाँ' कहना ही चाहिए। किन्तु वह फिली पाइन कैसा, जो तीनों काल, सर्वदा, विवेक (नम्रता) नहीं वताये।

"जरूर, आपको जो उचित मालूम हो, वह अवश्य करें।"—मैंने धीरे से कहा।

"सान-लाजारो में इस समय आपको वहुत भीड़ मालूम होगी। वात यह है कि आसपास के तमाम टापुओं के मरीजों को पहले हम यहाँ एकत्र करते हैं। फिर थोड़े-थोड़े अन्तर से सरकार हमारे लिए एक-एक जहाज भेजती है। उसमें हम कुछ मरीजों को कूलियन रवाना कर देते हैं। इस कठिनाई के कारण हम आपको जितनी सुविधा देना चाहते थे, वह नहीं दे सकेंगे। मैं आशा करता हूँ कि आप हमारी कठिनाई समझ सकेंगे। फिर भी हमसे जितना वनेगा, उतना तो आपके लिए करेंगे ही, इसका विश्वास रखिये।"

"विश्वास होने के कारण ही तो मैंने यहाँ आने की इच्छा की। किन्तु देखिये, मुझे सबके समान ही समझें और रखें। मैं कोई विशेष सुविधा अथवा मेहरबानी नहीं चाहता।"

लगा कि इससे वह खुश हो गया। बात बदलते हुए उसने कहा :

"आप विद्वान् हैं। इस कारण आपको यहाँ—सान-लाजारो में—ऐसी बहुत सी बातें दीखेंगी, जिनमें आपको दिलचस्पी होगी। तीन सौ से अधिक वर्ष से यह 'संसार का विश्राम-स्थान' बना हुआ है।"

"संसार का विश्राम!" डॉक्टर तो कवि मालूम होता है!····पुराने स्पेनिश मकानों पर चाँद चमक रहा था। उसके रजत प्रकाश में शहर रहस्यमय बन गया था। गाड़ी की घनी छाया में उसकी कहानी का और बाहर वायु का प्रवाह धारा की तरह बह रहा था। मैं भूल गया कि यहाँ मैं क्यों आया? कहाँ जा रहा हूँ, इसका भी भान नहीं रहा। डॉक्टर की आवाज में मानो एक संगीत था और टट्टू की टापें उसमें ताल देती जाती थीं। डॉक्टर ने कहा :

"जिस वर्ष ड्रेक, सर फ्रान्सिस ड्रेक[1] ने संसार की यात्रा की, वह था ईसवी सन् १५७७। उसी वर्ष सेण्ट फ्रान्सिस[2] के संघ के कुछ आदमी यहाँ आये। वे जहाँ रहते थे, उस मठ में रोज भिखारी आते और दीवाल के बाहर घण्टों अन्न-सत्र खुलने की तथा उनके अन्नदाता पाला[3] फ्रा युवक क्लेमेन्टी

---

१. ईसवी सन् १५४०–९६। रानी एलिजाबेथ (इंग्लैण्ड) का एक बड़ा साहसी नौका सरदार। लूटमार तथा प्रदेशों की खोज के लिए उसने संसार का बहुत प्रवास किया।

२. रोमन कैथोलिक पंथ का एक महान् साधु (ई० सन् ११८२–१२२६)। उसने अपरिग्रही संन्यासियों के एक संघ की स्थापना की, जो अभी तक चल रहा है।

३. साधुत्व की पूर्ण दीक्षा तो नहीं ली, फिर भी ब्रह्मचर्य तथा असंग्रह का व्रत रखते हुए मठ में रहनेवाले पुरुष। अंग्रेजी में इन्हें Lay Brother कहते हैं। स्वामीनारायण-संप्रदाय में पाला अथवा धोलिया (श्वेतवस्त्रधारी) होते हैं, वैसे।

की राह देखते खड़े रहते । क्लेमेन्टी अन्न-सत्र के व्यवस्थापक थे। इसने देखा कि भिखारियों में कोढ़ियों की संख्या वहुत अधिक है । किसी आध्यात्मिक वृत्ति के कारण या अन्य किसी कारण—ठीक-ठीक तो कौन कह सकता है—उसने अपने ऊपर के अधिकारी से प्रार्थना की कि इन अभागे रोगियों के लिए एक आसरा वनवा देने की उसे अनुमति हो। इस पर विचार करते-करते कुछ समय वाद उस अधिकारी ने क्लेमेन्टी को अनुमति दे दी और कहा कि मठ के सामने की जमीन उसे इस काम के लिए दी जा सकती है। वह जमीन क्या थी, पासिग नदी के किनारे एक दलदलवाला गड्ढा ही था। किन्तु इससे फ्रा युवक क्लेमेन्टी ने हिम्मत न हारी । इस वीमारी के रोगियों में से उसने कितने ही मजवूत आदमियों को एकत्र किया और उन सवने नदी में से वालू और मिट्टी लाकर उससे इस दलदल को भर दिया। कुछ समय में जमीन सख्त हो गयी । फिर वहाँ नीपाताड़ और वाँस के कुछ मकान खड़े कर दिये गये । ईसा ने लाजारस नाम के एक रोगी को अच्छा कर दिया था । उसकी स्मृति में उन्होंने इस स्थान का नाम 'सान-लाजारो' रख दिया ।

"कुछ समय वाद फ्रा युवक क्लेमेन्टी तो मर गया, परन्तु उनका संकल्प वहाँ अमर हो गया। असली सान-लाजारो तो एक वार आग से जल गया, किन्तु किले के वाहर वह फिर खड़ा कर दिया गया । फिर एक वार चीनी दरियाई लुटेरों के हमलों के भय से डरकर युद्ध-नीति के रूप में उसे जान-वूझकर नष्ट कर दिया गया। परन्तु स्पेन के राजा ने इसमें दिलचस्पी ली और उसकी खानगी मदद से इस स्थान पर पत्थर का एक वहुत वड़ा पक्का मकान खड़ा हो गया । उसके अन्दर सैकड़ों वीमार रह सकते थे। सौ से अधिक वर्ष तक यह अस्पताल जोरों से चलता रहा । फिर अंग्रेजों के भय से स्पेन की सरकार को फिर इसे गिरा देना पड़ा। ई० सन् १७८४ में राजा की आज्ञा से सान-लाजारो फिर वनवाया गया । इसके वाद यद्यपि आग और महामारी के इस पर अनेक आक्रमण हुए, फिर भी यह आज तक टिका हुआ है * ।

---

* पिछले महायुद्ध में यह शायद फिर नष्ट हो गया होगा ।

सत्रहवीं सदी के प्रारम्भ में जापान में सामन्तशाही का जोर बहुत बढ़ गया था। उस समय बहुत से ईसाइयों को देशनिकाले की सजा दी गयी। जापान के राज्यकर्ताओं ने स्पेन के ईसाई-धर्म-प्रतिपालक बादशाह के पास प्रस्ताव भेजा कि वह १३४ ईसाई जापानियों को फिलीपाइन भेजना चाहते हैं। स्पेन के बादशाह ने इसे स्वीकार कर लिया और इनका स्वागत किया। उनके यहाँ आने के बाद कुछ ही महीनों में चार को छोड़कर शेष सबको सान-लाजारो के महारोगी-रुग्णालय में मरीजों के रूप में रख देना पड़ा।"

पत्थर की दीवाल के चौड़े फाटक के अन्दर हमारा एक्का मुड़ा। तीन सौ वर्ष से अधिक के इतिहासवाले इस 'संसार के विश्राम-सदन' का अब मैं भी एक अंश बनने जा रहा था। टट्टू रुका और हम नीचे उतरे। डॉ० राबिनो के पीछे मैं चला। एक गली में से होकर हम उसके दफ्तर में पहुँचे।

'मि० फर्ग्यूसन, अफसोस है कि हमारे अमेरिकन डाइरेक्टर डॉ० केन्ट अस्पतालों की देखभाल करने दौरे पर गये हैं। अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं ही आपकी जाँच कर लूँ।····आपके चकत्ते कहाँ-कहाँ हैं ?"

मैंने स्थान बता दिये।

"अपनी कमीज जरा उतारेंगे ?"

आँखें बन्द करवाकर किसी तीखी चीज से उसने मेरे सारे शरीर की जाँच की। फिर एक पंख लेकर उसी प्रकार उसे सारे शरीर पर घुमाया और बोला :

"मुझे दुःख है, आपके बारे में पहले का निदान ही सही है। किन्तु निराश होने की जरूरत नहीं। हमने एक नया उपचार शुरू किया है। शायद उससे आपको लाभ हो। हाँ, कुछ समय जरूर लग सकता है। परन्तु कुछ वर्ष पहले तो इतनी भी आशा नहीं थी। जरा मेहरबानी करें, तो आपका रजिस्टर भर लूँ।"

इसमें कुछ समय बीत गया। कुटुम्ब, गाँव वगैरह का नाम बताते समय मैं कुछ असमंजस में पड़ गया। अन्त में मैंने उसे सही-सही बात बताते हुए कहा : "मैंने बनावटी नाम धारण कर रखा है। मेरे परिवार में मेरे एक भाई को छोड़कर सबका खयाल है कि मैं मर गया हूँ।"

उसने कहा : "मैं समझा। चलिये, अब आपको आपके सोने की जगह दिखा दूँ।"

एक लम्बे सँकरे कमरे में हम घुसे। दोनों दीवालों से सटकर लकड़ी की छोटी-छोटी खाटें पड़ी थीं। सब भरी हुई थीं। मेरे ललाट पर ठंढा पसीना आने लगा और सिर से पैर तक एक तीव्र चमक व्याप गयी। दो-तीन आदमी अपने विस्तरों में कुछ हिले, पर कोई कुछ वोला नहीं। मेरी खटिया दरवाजे के पास ही थी। केवल इसी खटिया पर मच्छरदानी लगी देखी। डॉ० राविनो से मैंने कहा : "यह ठीक नहीं। आपको मेरे लिए किसी प्रकार का पक्षपात नहीं करना चाहिए। कृपया मच्छरदानी हटवा दीजिये।"

"परन्तु इसके वगैर आपका काम नहीं चलेगा।" डॉक्टर ने कहा : "हमारे लोगों को तो मच्छड़ों की आदत हो गयी है। आजकल वहुत अधिक मलेरिया तो नहीं है। फिर भी मच्छर आपको काटे वगैर न रहेंगे और उससे आपको नींद न आ सकेगी। इससे किसीको गलतफहमी या ईर्ष्या नहीं होगी।"

मैंने आभार प्रकट किया और मच्छरदानी के अन्दर घुसा। घण्टों वड़ी खिड़की से वाहर देखता पड़ा रहा। कमरे में गाढ़ी नींद में सोनेवालों की साँसों की आवाज सुनाई दे रही थी। दो-तीन आदमी कराह रहे थे और करवटें वदल रहे थे। उसके कारण मेरी नींद में किसी प्रकार कोई खलल नहीं पड़ा। मुझे तो यही विचार वेचैन कर रहा था कि मुझे यहाँ आना ही क्यों पड़ा? मैं नेड लैंगफर्ड, एक कोढ़ी! एक पूरे कमरेभर कोढ़ियों के वीच सो रहा हूँ! मैंने मरने का नाटक किया, तव सचमुच क्यों नहीं मर गया? परन्तु मरना हो, तो अव भी मरा जा सकता है। वहुत से अवसर आयेंगे। समुद्र तो है ही!

कोई हिचकियाँ भर रहा था। वच्चे जैसी आवाज थी। कोहनी टेक-कर जरा ऊँचा सिर कर मैंने देखा। पड़ोस की खटिया पर एक छोटी-सी आकृति नजर आयी। थोड़ी देर में यह वन्द हो जायगा, इस आशा से मैं फिर लेट गया। किन्तु वह तो जारी ही रहा। धीरे-धीरे, परन्तु लगातार।

मैं यह वरदाश्त न कर सका। मैं उठा और विस्तर छोड़कर वहाँ गया। वह एक वच्चा था। हाथों में सिर को दवाकर हिचकियों को दवाने का

वह प्रयत्न कर रहा था। उसे डर न लगे, इस प्रकार अपना हाथ उसकी पीठ पर रखकर मैं उसकी खटिया पर बैठ गया। उसका शरीर कुछ सिकुड़ा। मैं उसके कन्धे को थपथपाने लगा। धीरे-धीरे उसकी हिचकियाँ थमीं। मेरी ओर देखने के लिए उसने करवट बदली। चाँदनी साफ थी। मैं उसे अच्छी तरह देख सका। वह एक खूबसूरत बच्चा था। मुझे उससे प्यार होने लगा।

"तेरा नाम क्या है, बेटा ?"—मैंने पूछा।

"मुझे टॉमस कहते हैं साहब,—टॉमस आग्विलार।"

"तेरी उम्र क्या है, टॉमस ?"

"लगभग दस, नौ तो कभी से पूरे हो गये हैं, साहब।"

"तेरा मकान कहाँ है ?"

"बहुत दूर, पचास किलोमीटर[1] से भी अधिक। हमारा केरेबाव[2] यहाँ तक नहीं आ सकता।"

"तू यहाँ कब आया ?"

"साहब, आज ही डॉक्टर मुझे घर से ले आये।"

धीमी पड़ती हिचकियों के बीच उसने ये सारी बातें सुनायीं। वह घर से पहली बार बिछुड़ा था। उसके माँ-बाप जीवित थे। दो बड़े भाई तथा एक छोटी-सी बहन भी थी। माँ तथा बहन का वियोग इसे बहुत अखर रहा था।

उजाला होने तक मैं वहीं बैठा रहा। वह मेरे पास खिसक आया और मेरे कन्धे का सहारा लेकर गाढ़ी नींद सो गया। ◆◆◆

---

१. लगभग ३१ मील। आठ किलोमीटर=लगभग पाँच मील।

२. सांबर (रेनडियर) अथवा रोज के जैसा जानवर होगा, जो बैल की भाँति खेती और सवारी के काम में लिया जाता है।

कूलियन के मार्ग पर : १० :

सुबह-सुबह मुझे भी कुछ नींद लग गयी। मैं जागा, तो पूरा उजाला हो चुका था। आँखें खुलीं, तो देखा कि एक आदमी मेरी तरफ टकटकी लगाये देख रहा है। मैं दीवाल के सहारे बैठा था और वह लड़का अभी तक मेरा सहारा लिये ही सो रहा था। मैं जागा, तो उस आदमी की दृष्टि निर्मल मुस्कराहट में बदल गयी।

"नमस्कार साहब ! आप ही मि० फर्ग्यूसन हैं ?"

"नमस्कार भाई, आपको तो मेरी जानकारी है।"

"जी, साहब। डॉ० राबिनो ने हमें बताया था कि आप देर से पहुँचेंगे। पासो, ओ पासो !"—पासवाली खटिया पर सोये हुए जागनेवाले एक आदमी को पुकारकर उसने कहा : "पासो, ये हैं मि० फर्ग्यूसन !....मेरा नाम मेन्यु-अल है।"—बोलते-बोलते वह बिस्तर से उठा और हाथ लम्बा करता हुआ मेरे पास आया। एक वर्ष से मैंने किसीके साथ हाथ नहीं मिलाया था। इसलिए पहले-पहल मुझे जरा संकोच हुआ। फिर खयाल आया कि मुझसे हाथ मिलाने में इसे कोई हानि नहीं होगी। इसलिए आनंद हुआ और मैंने हाथ मिलाया। सन्तोष का एक भाव मेरे मन में दौड़ गया।

तुरन्त सारे खण्ड में हलचल शुरू हो गयी। एक के बाद एक सब भाई उठ बैठे। ऐसा नहीं प्रतीत हो रहा था कि यहाँ कोई गम्भीर केस होगा। पास के सभी लोगों ने मेरे बिस्तर के पास आकर मेरा स्वागत किया।

"सफर कुशलपूर्वक तो हुई मि० फर्ग्यूसन ?"

"इस छोकरे ने आपको तंग किया मालूम होता है। यह बहुत बुरा हुआ।"

"नहीं-नहीं"—मैंने जल्दी में कहा : "हम दोनों जाग ही रहे थे। इसलिए हमने पहचान कर ली। फिर यहीं बैठे-बैठे मुझे नींद लग गयी।"

परन्तु तब तक तो टॉमस की नींद खुल गयी और उसने मेरी बात को काट दिया।

"माफ कीजिये, मेहरवान साहव। मैंने सचमुच आपको वड़ा कष्ट दिया। आपने मुझ पर वहुत प्यार किया। मैं रो रहा था, तो मेरे पास आये और वातें कीं। मुझे कुछ ढाढ़स वँधा। फिर मैं आपका सहारा लेकर सो गया। मैं आपका वड़ा आभारी हूँ साहव।"

यह कहकर टॉमस अपने विस्तर से उठा। नींद की खुमारीभरी उसकी वड़ी-वड़ी आँखों में इतनी कृतज्ञता थी कि मैं तो चकित हो गया। मैंने जो किया, वह तो कुछ नहीं था। किन्तु फिलीपाइन लोग इतने प्रेमी और कृतज्ञ होते हैं कि इस बच्चे को थोड़ी देर के लिए पिता की तरह अपने पास मैंने ले लिया, वस, इतने भर से उनके दिलों को मैंने जीत लिया और उनसे मित्रता हो गयी। 'मैं सो नहीं रहा था' मेरे इस स्पष्टीकरण को उन सवने हँसी में उड़ा दिया।

"सचमुच यह आपने वड़ी मेहरवानी की साहव"—मेन्युअल ने कहा: "हम सव आपके सामने शरमिन्दा हैं कि जो काम हमें करना चाहिए था, वह आप पर डाल दिया।"

हमारे वीच का परदा हट गया। रक्तपित्ती के रोगियों से पहले-पहल कैसे मिलूँगा, इसका मुझे वड़ा डर लग रहा था। वह निकल गया। अव हम पराये नहीं रहे। एक-दूसरे के सगे वन गये। भोजनशाला में जाते हुए मैंने देखा कि हमारे खण्ड के सव लोग मेरे ही आसपास एकत्र हो जाते। इसका मुझ पर यह असर पड़ा कि वहुत वढ़ी हुई वीमारीवाले मरीजों को वे मेरी आँखों से शायद वचाना चाहते थे। यहाँ कुछ ऐसे मरीज भी थे, जो वहुत कुरूप हो गये थे। नाश्ते की मुझे इच्छा नहीं थी। नाश्ते में फल, चावल और कोरी—उवली हुई मछलियाँ थीं।

"आप अण्डे पसन्द करते हैं?" पूछकर पुनः उन्होंने अपना सद्भाव प्रकट किया। मैंने कहा कि "मैंने फिलीपाइन का खाना खाया है और मुझे वह अच्छा लगता है। जो सवके लिए वना है, वही मैं भी खाऊँगा।"

मरीज कुछ गड़वड़ी में हैं, ऐसा लगा। इसका खुलासा करते हुए मेन्युअल ने कहा: "कूलियन जानेवाला जहाज जल्दी आनेवाला है, ऐसे समाचार आये हैं। मैं खुद कूलियन जाना चाहता हूँ। वह अच्छा टापू है। वहाँ वहुत-से काम

किये जा सकते हैं। फिर भी यहाँ के बहुत-से आदमी वहाँ जाना पसन्द नहीं करते। उन्हें भय है कि वापस घर लौटेंगे या नहीं।"

मुझे भी घर और माँ का मधुर चेहरा याद आ गया। कुछ बेचैन भी हुआ। किन्तु ज्यों-त्यों कर किसी तरह बोला : "मैं तो वहाँ इसी घड़ी पहुँच जाऊँ, तो खुश हो जाऊँ।"

× × ×

तीसरे दिन नाश्ते के समय हमें–हर आदमी को—एक-एक पुर्जा मिला, जिसमें लिखा था कि वह जायगा या रहेगा। स्टीमर आ गया था और दूसरे ही दिन निकलनेवाला था। कोई दो सौ आदमी जानेवाले थे। उनमें मेरा भी नाम था।

मरीजों के रिश्तेदारों को समाचार भेज दिये गये थे। दोपहर तक तो अस्पताल के अहाते के बाहर मिलनेवालों का मेला लग गया। मैं इस भीड़ को देख नहीं सका। माता-पिता, पति-पत्नी घण्टों तक बावलों की तरह बातें करते रहे। जो थोड़ा-सा समय रह गया था, उसमें सारे जीवनभर की बातें ठूँस देने का प्रयत्न कर रहे थे। रात हो गयी और विदा होने का समय आ पहुँचा। उस समय जो करुणाजनक रोना-पीटना शुरू हुआ, उससे मेरे कान के परदे फट गये। जब वह समाप्त हुआ, तब कहीं शान्ति हुई। उस रोज मुझे रातभर नींद नहीं आयी।

किन्तु अभी सब पूरा नहीं हुआ था। दूसरे दिन जब हम स्टीमर पर सवार हुए, तो घाट पर आदमी अँटते नहीं थे। वे डेक पर खड़े अपने रिश्तेदार रोगियों को पुकार रहे थे। कितने ही मरीज तो मूर्छित हो गये। एक बुढ़िया एकदम अपंग और बहुत बदशकल हो गयी थी। उसे कुछ लोग ऊपर चढ़ाने का प्रयास कर रहे थे। वह घाट पर ही बैठ गयी। एक बच्ची, जो शायद उसकी लड़की थी, नीरोग मनुष्यों की भीड़ में से उसकी मदद के लिए दौड़ आयी। पुलिस ने उसे ऐसा करने से नरमाई से रोका। इतने में एक मरीज सीढ़ी से नीचे उतरा और बुढ़िया को दोनों हाथों में उठाकर ऊपर ले गया।

जब रस्से खींच लिये गये और स्टीमर चलने लगा, तो घाट तथा डेक पर हाहाकार मच गया। बहुत-से अत्यन्त शोक-विह्वल हो गये। घाट पर कई

आदमी तो इतने विव्हल हो गये कि पुलिस यदि उन्हें वलपूर्वक न रोक लेती, तो समुद्र में कूदकर हमारे पीछे आने का प्रयत्न करते। ऐसा करने से उन्हें रोकने में डॉक्टरों और नर्सों पर वहुत वीत रही थी। स्टीमर मानो पागलखाना वन गया था।

मेरी वगल में टॉमस काँप रहा था। वह रोया तो नहीं, पर उसका दिल भरा हुआ था। वह अपने-आपको वड़ी कठिनाई से रोक रहा था। आखिर वच्चा ही तो था! उसने वड़े यत्नपूर्वक मुझे समझाया कि "उसके भी प्रियजन आते, किन्तु आ नहीं सकते थे। वे वड़ी दूर रहते हैं। उनका केरेवाव इतनी दूर नहीं आ सकता।" कहते-कहते वह मेरे मुँह की ओर देखता जा रहा था कि उसकी वातों पर मैं विश्वास कर रहा हूँ या नहीं। और कहीं मैं यह तो नहीं समझ गया हूँ कि उसके प्रियजनों के दिलों में उसके प्रति कोई प्रेम नहीं है। मैंने उसे विश्वास दिला दिया कि मैं उसकी वात समझ गया हूँ।

× × ×

कूलियन मनीला के दक्षिण में पूरे दो सौ मील भी नहीं होगा। इसलिए प्रियजनों के वियोग को तो मैं समझ सकता था। किन्तु मेरी समझ में यह वात नहीं आ रही थी कि ये लोग इतने विव्हल क्यों हो रहे हैं? वे वहुत दूर तो नहीं जा रहे थे। वाद में मुझे पता लगा कि इस तरफ जहाज वहुत कम जाते-आते हैं। फिर जो जाते हैं, वे हर छोटे-वड़े वन्दरगाह पर रुकते-रुकते जाते हैं, जिसके कारण वहाँ पहुँचने में वड़ी देर हो जाती है। टिकट के दाम तो अधिक नहीं लगते, पर इतने भी इन्हें वहुत भारी—अपनी शक्ति से वाहर—हो जाते हैं। इन सव कारणों को देखते हुए लगा कि उनका डर सही था। क्योंकि वे फिर कव मिल सकेंगे, इसका कोई ठिकाना नहीं था।

वीच में हम कहीं भी नहीं रुके। हमारा स्टीमर चौवीस घंटे में कूलियन पहुँचनेवाला था। इतने समय में ही लोग मुझसे कहते: "अव मैं कभी घर नहीं जा सकूँगा। कभी घर के लोगों से न मिल सकूँगा।" कई लोगों को यह डर हो रहा था कि वहाँ पहुँचने पर पता नहीं उनका क्या होगा! कूलियन को कोढ़िस्तान वनाने को अभी पूरे दस वर्ष नहीं हुए थे। इसकी स्थापना के पहले

जिनकी हालत वहुत अधिक खराव हो जाती, ऐसे पाँच-सात सौ रोगियों को अपने-अपने गाँवों के पासवाले अस्पतालों में ही रख दिया जाता था। नये रोगी अपने घरों पर ही रहते थे। पिछड़े प्रान्तों में रोगी-अरोगी को अलग-अलग रखने की कोई व्यवस्था नहीं थी। जव कूलियन की स्थापना हुई और फिलीपाइन के स्वास्थ्य-विभाग ने इन रोगियों का वहाँ जाकर वसना अनिवार्य कर दिया, तो लोगों में वड़ी खलवली मच गयी। भयंकर अफवाहें फैलने लगीं कि वहाँ तो रोगियों पर वड़ा जुल्म होता है और उनके साथ वहुत वुरा वरताव किया जाता है। हम गये, तव तक वहाँ की स्थिति के वारे में लोगों को सही-सही जानकारी मिलने लगी थी। फिर भी उनके दिलों में वहुत भय छाया हुआ था।

लोग कहते हैं और मैं भी मानता हूँ कि ऐसे सुन्दर प्रदेश संसार में वहुत कम हैं। फिलीपाइन द्वीप-समूह के वड़े टापुओं के दक्षिण में सैकड़ों मील तक चित्र-विचित्र आकारोंवाले हजारों छोटे-छोटे प्रवाल के टापू सुन्दर भूरे रंग के समुद्र में हरी चादर ओढ़े फैले हैं। इनके किनारों की जमीन दलदल-वाली और जड़ी-वूटियों से भरी है, जो ऊपर जाकर नारियल के घने वनों से ढँक गयी है। आगे चलकर और भी घने, ऊँचे-ऊँचे जंगलों का रूप उसने धारण कर लिया है।

टॉमस और मैं डेक पर यह सव देखते हुए वैठे थे। इस छोटे जहाज पर कैविनें वहुत थीं। सारे मरीज डेक पर आ गये थे। नीचे की डेक सँकरी और पानी के अधिक नजदीक थी। ऊपरवाली डेक वहुत वड़ी और गरम थी। धूप से वचाव करने के लिए उस पर एक फटा-पुराना टाट तान दिया गया था। हम इसी डेक पर खाते, सोते और जव जगह मिलती, टहल भी लेते।

स्टीमर के खाड़ी के वाहर आने के वाद एक लम्वा अमेरिकन डॉक्टर मेरे पास आया। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि फिलीपाइन टापुओं के स्वास्थ्य-विभाग का यही मुख्य अधिकारी है। अपने पद का कोई भी रोव वगैर दिखाये उसने मुझे अपना नाम 'जेम्स मार्शल' वताया और मुझसे वात-चीत करने लगा। उम्र चालीस से कुछ ऊपर होगी, पर एक खिलाड़ी की-सी फुर्ती उसके शरीर में थी। उसने 'पाम-वीच' के कोट-पतलून और धूप का

टोप पहना था। जीवन मानो एक नाचने-कूदने का खेल हो, इस तरह उसकी चंचल आँखें नाचती रहतीं। जरा-जरा सी वात पर चेहरे पर हँसी फूट पड़ती। अपने काम की धुन में उससे वढ़कर आदमी मैंने नहीं देखा था। इन टापुओं में आये इसे यह आठवाँ वर्ष था। वह हमारे पास वैठ गया और डेक पर सफर कर रहे मरीजों पर नजर डालकर वोला :

"जव भी संभव होता है, इस स्टीमर पर जाने का मैं आग्रह रखता हूँ। यह हमारा नया मोर्चा है। आप तो जानते हैं कि इस प्रकार हमने यहाँ से कितने ही रोगों को नष्ट कर दिया है। कॉलरा और शीतला लगभग समाप्त हो गये हैं। किन्तु इस महारोग ने हमें वड़ा परेशान किया है। अमेरिकन लोग आये, तो यहाँ गाँवों की गलियों में सैकड़ों, हजारों की संख्या में कोढ़ी घूमते रहे। इनके अलावा चार सौ तो केवल अस्पतालों और आश्रमों में ही थे। कूलियन जाने के लिए राजी करने में वड़ी कठिनाई होती है, किन्तु हमें आशा है कि वहाँ उन्हें कोढ़ से मुक्त किया जा सकता है।"

"कोढ़ से मुक्त ?" मैंने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ, मि० फर्ग्यूसन कोढ़ से एकदम मुक्त।"

मेरी कमर मानो सीधी होने लगी। वे इतने विश्वास के साथ वोल रहे थे कि मुझे लगा कि तव तो मुझे भी आशा है। वे चले गये, पर मैंने आशा की कि वे फिर मिलेंगे। यह तो निश्चित है कि इनमें हिम्मत दिलाने की एक खास कला थी। मरीजों के स्टीमरों के साथ वे स्वयं आते। शायद ही कोई मानता हो कि स्वास्थ्य-विभाग के मुख्य अधिकारी के लिए यह भी कोई जरूरी वात है। फिर भी ऐसा करके वे कितना वड़ा खतरा उठा रहे थे ?........ इस पहेली का हल मुझे नहीं सूझ रहा था।

वालूटाणा पहुँचने से पूर्व स्टीमर काले वाइट के जलडमरूमध्य से गुजरा। यह डमरूमध्य मिण्डोरो और लुवाङ्ग टापुओं के वीच है। समुद्र में तूफान था। ज्यों-ज्यों स्टीमर झोंके खाने लगा, मुसाफिर कठघरे के पास इकट्ठा होने लगे। नालियों में से कै की दुर्गन्ध आने लगी। इस कारण स्थिति पहले से अधिक खराव होने लगी।

डॉ० मार्शल फिर आये और मुसकराते हुए वोले : "आइये, हम लोग कम

भीड़-भाड़वाली जगह ढूँढ़ें। यह तो रोजमर्रा का हाल है। नीचे की डेक पर ठेठ अगले सिरे के पास चलें, तो कैसा?"

मैंने टॉमस की तरफ एक नजर डाली। वह एक कोने में गठरी बनकर नींद ले रहा था। नजदीक के जीने से हम नीचे उतरे और फिर बीच के तथा सिरे पर के डेकों के बीच के कठघरे तक आगे गये। इस कठघरे से आगे जाना मरीजों के लिए मना था। इसलिए मैं वहीं रुक गया। किन्तु डॉक्टर ने कठघरे पर लगा आड़ा डण्डा ऊँचा कर दिया।

"मेरे साथ चले आइये, हम उस रोशनदान के पास बैठेंगे। साधारणतः मैं कप्तान के साथ ही भोजन करता हूँ। किन्तु कभी-कभी मैं अपना भोजन यहीं मँगवा लेता हूँ। थोड़ी देर में वह आ जायगा।"

रोशनदान पर डाले टाट के एक कोने पर जाकर मैं बैठ गया। उसने भी मेरे पास अपना आसन लगा लिया। मुझसे अलग बैठने की उसने जरा भी चिन्ता नहीं की।

बायीं तरफ इशारा करते हुए उसने कहा : "वह टापू देख रहे हैं न? इसका नाम मिण्डोरो है। बड़े टापुओं में से यह एक है। यह लगभग कूलियन तक दक्षिण में चला गया है। उसके अन्दर का बहुत-सा हिस्सा अभी तक अज्ञात ही है। उसके अन्दर बीच में तामाराऊ नामक गाय जैसा एक जंगली प्राणी रहता है। संसार में अन्यत्र कहीं भी वह देखने में नहीं आया। उसका शिकार होता है और इसके लिए दूर-दूर से शिकारी आते हैं। यह जानवर बड़ा खूँखार और भयंकर होता है। बगैर किसी छेड़खानी के भी हमला कर देता है। इसका शिकार करना अत्यन्त कठिन है। बहुत कम लोग उसमें सफल हो पाते हैं। कभी-कभी तो लोग इसमें अपनी जान से भी हाथ धो बैठते हैं।"

इस तरह एक के बाद एक बातें होती रहीं। मैं सुनने में मगन हो गया। अपने काम के सिलसिले में उन्होंने इन टापुओं में एक सिरे से दूसरे सिरे तक कितनी ही बार सैर की है। मैंने तो इन फिलीपाइन टापुओं को प्रकृति का खजाना कहा है। इमारती लकड़ी, खनिज पदार्थ, सन, चावल, नारियल और मछली के व्यापार के लिए यहाँ काफी क्षेत्र है। डॉक्टर को फिलीपाइन की जनता से प्रेम था और इस राष्ट्र के भविष्य में उसे

बड़ी-बड़ी आशाएँ थीं। एक लड़का हमारे लिए तश्तरियों में खाना ले आया। सारा अमेरिकन खाना था। अधिकांश पैकबन्द डिब्बों का। कितने ही दिनों से इधर का ही खाना मिलता रहा। आज देश के भोजन का स्वाद मिला, सो अच्छा लगा। मुझे यहाँ का खाना अच्छा तो लगता है, पर केवल वही मिलता है, तो सन्तोष नहीं होता।

अपने जीवन की कई बातें मैंने इससे कहीं। अब हम फिर खुले समुद्र में आ गये थे। इसलिए जहाज का हिलना बन्द हो गया। लहरें जहाज पर टकराती हैं, ऐसी आवाज आ रही थी। पिछली कितनी ही रातों में मुझे ऐसा लगता रहा, मानो समुद्र मुझे अपनी गोद में लेने के लिए आग्रहभरा निमन्त्रण दे रहा हो। किन्तु आज समुद्र शांत था और उसमें डॉक्टर के आशाप्रेरक उत्साह ने मुझमें जीवन के विषय में फिर श्रद्धा जगा दी। इससे समुद्र के निमन्त्रण का प्रभाव चला गया और हृदय में फिर से हिम्मत आ गयी। उसने कहा : "हमारी दृष्टि में सबसे अधिक महत्त्व की वस्तु मरीज का स्थिर और सतत सहयोग है। उसके बगैर उसे अच्छा नहीं किया जा सकता।"

मेरा सहयोग तो उसे अवश्य ही मिलता रहेगा, इसका विश्वास मैंने उसे बगैर बोले ही दिला दिया। फिर उसने दूसरे बीमारों की बात छेड़ी। तब मैंने उसे टॉमस की बात संक्षेप में कही। जो लड़का भोजन लाया था, उसीको बुलाकर मार्शल ने टॉमस को खोज लाने को कहा। थोड़ी देर में सामने की कैबिन के सामने टॉमस का शर्मीला चेहरा दिखा। हमारा इशारा पाकर वह हमारे पास आकर बैठ गया।

धीरे-धीरे खूब अन्धेरा छा गया। तारे इतने नजदीक उतरे दिखाई दिये, मानो बन्दूक मारकर उन्हें छेदा जा सकता हो। हम तीनों टाट पर पैर फैलाकर लेट गये और सोने का प्रयत्न किया। डॉक्टर को तो तुरन्त नींद आ गयी। टॉमस और मैं कितने ही घण्टे जागते रहे। अन्त में टॉमस भी नींद की गोद में पहुँच गया, पर मुझे नींद नहीं आयी। बगैर नींद की यह दूसरी रात थी, फिर भी मेरे शरीर में ढीलापन नहीं आया था। इससे मुझे लगा कि अभी तक तो मेरा शरीर दृढ़ और मजबूत है। संभव है, अच्छा हो जाऊँ। ···जहाज के ऊँचे खम्भे का सिरा इधर से उधर हिल रहा था। मुझे लगा कि ऊपर के बड़े उजले

तारे में वह कहीं छेद तो नहीं कर देगा। ...फिर मेरे मन में मार्शल के विषय में विचार उठने लगे। मुझे लगा कि इसके जैसा आदमी संसार में कितना नाम कमाता ! किन्तु वह सब छोड़-छाड़कर यहाँ आ गया है। ...इस प्रकार विचार आते रहे और मैं पड़ा रहा। नींद तो आयी नहीं। किन्तु इस वर्ष पहली बार लगा कि चिन्ता का बोझ कुछ कम हुआ। मेरे भविष्य जीवन का पासा पड़ चुका था।

पौ फटते ही डॉक्टर जागा। उसे कितने ही आदमियों से मिलना था। इसलिए उसने कहा कि वह नाश्ते से पहले लौट आयेगा और हम वहीं उसकी राह देखते रहें। लौटा तो जल का एक पात्र और एक कटोरा भी साथ में लेता आया।

वह बोला : "नल पर बड़ी भीड़ है। हाथ-मुँह यहीं धो लेना ठीक होगा।" वह खुद तो निपटकर ही आया था। टॉमस ने और मैंने इस पानी का उप-योग कर लिया। जहाज की दाहिनी ओर जमीन दिखती थी। और उसीके ठीक सामने बादलों से कुछ ढँका हरा-भरा एक अन्तरीप नजर आ रहा था।

वह कहने लगा : "आपकी दाहिनी तरफ के टापू का नाम बुसवांगा है और वह अंतरीप कोरन टापू का उत्तरी सिरा है। यह लगभग कूलियन तक फैला हुआ और एक अज्ञात प्रदेश-सा है। इसका बहुत-सा भाग दुर्गम है। इन टापुओं के बीचवाले सँकरे समुद्र में से इस समय हम गुजर रहे हैं। देखिये, अब हम पश्चिम को मुड़े। इसके बाद हमें कोरन की तरफ मुड़ना पड़ेगा। कोरन की शक्ल दक्षिण अमेरिका के समान (सिरे पर सँकरा) है। उसके बाद कूलियन दीखने लगेगा।"

हम लोग कठघरे के सहारे खड़े हो गये। जहाज किनारे के नजदीक ही था। बहुत ऊँची-ऊँची-जहाज के मस्तूल से भी अधिक ऊँची-चट्टानें समुद्र की सतह से ऊपर ऊँचा सिर किये खड़ी थीं। इन टापुओं के बीच समुद्र में जोर का प्रवाह था और वह इन चट्टानों से इस तरह टकराता कि सारी सतह फेनीली हो रही थी। अब तो कूलियन का पूरा का पूरा बन्दरगाह दीखने लगा। क्षणभर के लिए मैं भूल ही गया कि यह तो मेरा कालापानी है। मेरी आँखें स्थिर हो गयीं। मीलों तक फैला हुआ इतना सुन्दर बन्दर मैंने कभी नहीं

देखा। यह लगभग सभी तरफ से जमीन से घिरा था। सामने कूलियन का अस्पष्ट किनारा फैला था। बायीं तरफ कोरन दूर-दूर तक चला गया था। उत्तर और पश्चिम की तरफ—ठेठ कूलियन तक बुसवांगा था। चीनी समुद्र और कूलियन के बीच सैकड़ों छोटे-छोटे टापू बिखरे पड़े थे, मानो कूलियन के बन्दर के आसपास एक टूटी-फूटी दीवाल खड़ी हो। इन हरे-भरे टापुओं से शोभित प्रवाल की चट्टानों पर हिलोरें मारता वह समुद्र पन्ने की कंधियों के बीच जड़े नीलमणि के समान चमक रहा था। बन्दरगाह कितना विशाल था! इतना बड़ा कि सारे संसार के जंगी जहाज उसमें आराम से लंगर डाल सकें।

"अब मुझे बीमारों के पास पहुँच जाना चाहिए। टापू के नजदीक हम आ गये हैं। इस समय उनके बीच रहना अच्छा होता है। कूलियन के बारे में अजीब-अजीब अफवाहें फैली हैं। हम इन्हें रोकने का बहुत यत्न करते हैं। फिर भी लोग उनके प्रभाव से अपने को मुक्त नहीं कर पाते। कई मारे डर के पागल हो जाते हैं और समुद्र में कूदकर डूब मरने का यत्न करते हैं। आप चाहें, तो यहीं रुकें।"

वह चला गया। डेक पर खड़े होकर हमने देखा कि एक गोल टेकरी जल के ऊपर सिर ऊँचा किये खड़ी है। उस पर एक फुट भी समान जमीन नहीं दिखती थी। उसके पूरब के सिरे पर मुझे एक ऊँचा लटकता कगार दिखाई दिया। उसके शिखर पर प्रकाश था। ऐसा लगता था, मानो वह किसी पुराने किले की दीवालों के ऊपर से आ रहा हो। दीवालों के अन्दर पत्थर का एक मंदिर भी था, जिसका शिखर दीवालों के ऊपर ऊँचा दिखाई देता था। जब हम नजदीक पहुँचे, तो मालूम पड़ा कि वहाँ किला या मन्दिर वगैरह कुछ नहीं थे। वह तो टेकरी ही थी। उस पर विशाल सीढ़ियों के आकार से समतल जमीन बनी थी और उस पर टेकरी की तरफ पीठ कर ताड़ से छाये हुए सैकड़ों मकान बने थे। बीच-बीच में पत्थर या चूने के बड़े मकान भी बने हुए थे। ये शायद अस्पताल या दफ्तर वगैरह होंगे।

बन्दरगाह के प्रवेश-द्वार से हमने देखा कि समुद्र की सतह पर जहाँ-तहाँ काले पदार्थ तैर रहे हैं। नजदीक पहुँचने पर मालूम हुआ कि ये छोटी-छोटी किश्तियाँ, मछुए और बाँस के टेढ़े-मेढ़े खपाचों के बने बेड़े (Rafts) थे। इन बेड़ों

पर दो-दो, तीन-तीन आदमी बैठकर डाँड मारते जा रहे थे। दूर से तो ऐसा लगता, मानो ये लोग पानी पर ही बैठे हैं। हर किश्ती पर कुछ-न-कुछ रंग-विरंगी सजावट थी। ये लकड़ी के आसपास लपेटे हुए फिलीपाइन या अमेरिका के झण्डे थे। किनारे पर एक विशाल ऊँचे खम्भे पर भी मुझे एक-दो झण्डे दिखाई दिये। ऊपर का झण्डा मेरे देश का था।

इंजिन का घण्टा बजा। गति आधी और बाद में और भी धीमी हो गयी। फिर हम किश्तियों के घेरे में घुसे। यह तो हमारे स्वागत के लिए आया हुआ कोढ़िस्तान का काफला है। ज्यों ही लंगर गिरा, काफिले में हलचल पैदा हो गयी। धीरे-धीरे कोई पचास गज दूर किनारे की तरफ हम सरकने लगे। धीरे से किसीने मेरे हाथ को छूआ। मैंने नीचे देखा। टॉमस को तो मैं भूल ही गया था। ऐसा भाव मैंने किसी बच्चे की आँखों में नहीं देखा था। इसकी गहरी आँखें किनारे पर लगी थीं। उनमें घबराहट थी। अकेलेपन की चिन्ता और भय था। मैंने उसके हाथ को दबाया। उसने तुरन्त विस्मयभरी नजर से ऊपर देखा।

इस कोमल हाथ के स्पर्श से मुझे प्रसन्नता हुई। मुझे लगा कि मैं भी यहाँ एकदम अकेला नहीं हूँ। दो तो हैं ही। ◆◆◆

नये घर में

: ११ :

लंगर डालते ही एक समान पेंदेवाली उथली नाव मोटर-लांच की मदद से हमारे जहाज के पास लायी गयी। उसे जहाज से बांध दिया गया और उस पर पटिया-सीढ़ी उतार दी गयी। हम बालाला के सामने थे। बालाला कोढ़िस्तान की उस बस्ती का नाम है, जहाँ डॉक्टरों, नर्सों तथा जो कोढ़ी नहीं है, ऐसे अविकारी-वर्ग के लोगों के रहने के लिए अलग मकानात बने हैं। हर नाव रोगी, मुसाफिरों को लेकर पुराने किले के पीछे होकर कोढ़ी-वास के पासवाले घाट पर छोड़ आती। स्टीमर के लिए गहरे समुद्र को छोड़ लंगर डालने के लए और कोई सुरक्षित स्थान नहीं था। मुसाफिर अपना-अपना सामान लेकर उतरने लगे। तब मार्शल ने मेरे पास आकर कहा : "आपके स्थान पर मैं होऊँ, तो सबसे आखिरी किश्ती में जाना पसन्द करूँ। उसमें ऐसी भीड़ नहीं होगी। मैं उसीमें जानेवाला हूँ। इसलिए हम साथ-साथ ही चलें। टॉमस को भी अपने साथ ही रखें।"

इतना कहकर वे पुनः चले गये। बीमारों की मदद करने तथा उन्हें हिम्मत देनेवाली उनकी आवाज को उस शोर में मैं अलग पहचान सकता था।

पहले दल के सीढ़ियों पर आते ही पानी पर तैरती हुई किश्तियों में खड़े लोगों ने हाथ हिलाकर और आवाज लगाकर उनका स्वागत किया। स्पष्ट ही हममें से कितनों के ही परिचित इस टापू में थे। छोटी-बड़ी किश्तियाँ नाव के पास आने लगीं और कितने ही लोग तो उसमें चढ़ने का भी प्रयत्न करने लगे। परस्पर मिलने के लिए वे अधीर हो उठे थे। नाव के चलते ही स्वागत करने के लिए आयी तमाम किश्तियाँ संरक्षक दल की भाँति उसके पीछे-पीछे हो लीं। पूर्व तरफ के ऊँचे कगार पर मैंने जो प्रकाश-सा देखा था, अब मैंने देखा कि वह रास्तों-सड़कों पर लगी बत्तियों के समान ही एक बत्ती थी। वह नाव इसी ओर गयी और उस अन्तरीप के पास

मुड़कर उसके पीछे अदृश्य हो गयी। इस प्रकार एक-एक नाव बीमारों को लेकर जाने लगी। डॉ० मार्शल पुनः मेरे पास आये।

"इसके बाद अब आखिरी नाव जायगी।"

"बहुत से मुसाफिर यहाँ के निवासियों को जानते दिखते हैं। यह कैसी बात है?"—मैंने आश्चर्य से पूछा।

"सच है। महारोग के बारे में हमें अब तक जितनी जानकारी मिली है, उसे ध्यान में रखते हुए यह कोई नयी बात नहीं है। जहाँ-जहाँ भी यह कुष्ठ-रोग है, ऐसा लगता है, मानो वहाँ इसका घर है। ऐसा क्यों होता है, यह अभी हम समझ नहीं पाये हैं। संभव है, एक बार जहाँ इसके पैर जम जाते हैं, वहीं इसकी छूत फैलने की संभावना रहती है। किन्तु यह किसी खास स्थान को ही क्यों पसन्द करता है, यह रहस्य अभी किसीकी समझ में नहीं आया। इस टापू में कितने ही प्रान्त ऐसे हैं, जहाँ यह रोग खूब फैला है। लेकिन उसके पड़ोसवाले प्रान्त में यह नहीं है। दो पड़ोसी मुहल्लों में भी ऐसा ही पाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में केवल चार राज्यों में इसका स्थायी उपद्रव है और वहाँ भी इन राज्यों में कुछ निश्चित क्षेत्रों में ही वह फैला है। मैं जावा के एक ऐसे जिले को जानता हूँ, जहाँ इस रोग का परिमाण बहुत है। किन्तु उसके पड़ोस का जिला लगभग मुक्त है। प्युअरटो-रिका में कोढ़ियों की अधिकतर आबादी कुछ कस्बों में ही है। इनमें भी एक कस्बे में तो मुख्यतः यह उसकी केवल दो गलियों में ही है। इस पर से आप जान सकते हैं कि हर स्टीमर में जो लोग यहाँ आते हैं, उनकी जान-पहचान के कोई-न-कोई यहाँ होंगे ही। यह स्वाभाविक ही है और ऐसा होना अच्छा है। कारण इससे नये आनेवालों को यहाँ रहना अधिक सह्य हो जाता है और पुरानों को घर के समाचार मिलते रहते हैं।"

वह मेरे साथ इस प्रकार बातें कर रहा था, मानो मैं कोई रोग से अच्छी तरह घिरा हुआ बीमार नहीं, बल्कि उससे मिलने के लिए आया हुआ कोई डॉक्टर होऊँ। व्यक्तिगत रूप से उसने मुझे अलग नहीं रखा। हममें से किसीको भी अलग नहीं रखा। किसी प्रकार का जुदापन नहीं दिखाया। इस आदमी के हाथ में लाखों आदमियों के जीवन की बागडोर थी। फिर भी

इतना कामवाला आदमी समस्त मनुष्यों की एक ही जाति मानता था। अपने रोगियों को भी वह एक ही मानव-जाति का अंग मानता था। प्रत्येक मनुष्य मानो उसका निजी मित्र था। इस प्रकार सबके प्रति उसका सजीव समभाव था। उसने जो कहा कि "ऐसा होना अच्छा ही है", इस पर मेरी भी श्रद्धा हो गयी।

नाव किनारे-किनारे जा रही थी। वगल में ताड़ के झोपड़े खड़े थे। डॉक्टर ने वताया कि ये वीमारों के झोपड़े हैं। नारियल के पेड़ों और अमराई के वीच से एक टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता जा रहा था। इसके एक तरफ सीधा पहाड़ खड़ा था। डॉक्टर ने कहा कि "इस पहाड़ पर वहुत ऊँचाई पर एक दूसरा रास्ता भी जाता है।" वह दीखता नहीं था, पर दोनों रास्तों पर खड़े मकान उसने दिखाये। ऊँची नोक के सामने से मुड़कर हम एक छोटे-से बंदर के फाटक में पहुँचे। उसके मध्य दाहिनी तरफ पानी के वीच एक घाट था। वहाँ वहुत से आदमियों की भीड़ थी। स्पष्ट ही हमारे इस आखिरी दल की ही वे सब राह देख रहे थे।

"इन टापुओं में आप रह चुके हैं। इसलिए आपको पता है ही कि यहाँ की जनता कितना आतिथ्य-सत्कार करती है। इसलिए हम उतरेंगे, तो स्वागत-समारंभ तो होगा ही।"—डॉक्टर ने कहा।

मुझे यह कुछ विचित्र-सा मालूम हुआ। एक देशनिकालेवालों का स्वागत दूसरे देशनिकाला पाये हुए लोग करेंगे? इसमें आनन्द मनाने जैसी क्या वात है, मैं समझ नहीं पाया। किन्तु कूलियन के लोगों का हेतु कुछ और ही ज्ञात होता था। लकड़ी के घाट के पास हमारी नाव पहुँचते ही वर्दी पहने लोग सामने आये और वे भीड़ को एक तरफ करने लगे। हम मुसाफिर वायीं तरफ कतार वाँध खड़े हो गये।

"ये पुलिस के आदमी भी रोगी ही हैं।"—मार्शल ने कहा—"वात यह है कि नये वीमारों को कुछ दिन हम 'सूतक-घर' (क्वारंटीन) में रखते हैं।"

"कोढ़ के कारण?"—मैंने पूछा।

"नहीं-नहीं, छूत के दूसरे रोगों के भय से। आप शायद नहीं जानते कि कोढ़ जल्दी जान नहीं लेता। लगभग हर केस में मृत्यु का कारण कोई दूसरा ही रोग होता है। कोढ़ी को दूसरे किसी रोग की छूत भी लग सकती है।

अगर उसे दूसरी कोई बीमारी न हो, तो वह अपनी पूरी उम्र जी सकता है। खास तौर पर ऐसी जगह पर, जहाँ उनकी पूरी सँभाल होती हो।"

किश्तियों की भीड़ में से किसी तरह रास्ता बनाते हुए नाविक नाव को घाट के बिलकुल पास ले आये और उसे घाट के साथ बाँध दिया।

डॉ० मार्शल के लिए राह करने के लिए नाव पर खड़े बीमार जरा एक तरफ हट गये। किन्तु उन्होंने बीमारों को आगे बढ़ने के लिए इशारा किया। सारे बीमार नीचे उतर गये। फिर उन्होंने मुझे और टॉमस को नीचे उतरने का इशारा किया और सबके बाद खुद घाट पर कदम रखा। ठीक इसी क्षण एक फिडिल बैण्ड ने एक सुन्दर राग छेड़ दिया। हम सबके पीछे थे। सो धीरे-धीरे कतार में शामिल हो गये। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि हमारे स्वागत के लिए एक स्वागत-मण्डल आया था। सबसे आगे कोढ़िस्तान का स्वास्थ्य-मण्डल था। उसके आगे मुख्य डॉक्टर (एक अमेरिकन) था। उसके पीछे कितने ही फिलीपाइन के डॉक्टर (सभी अस्पताल की वर्दी—सफेद लबादे पहने), उनके पीछे नर्सें और उनके बाद दूसरे कितने ही आदमी थे—जिनको मैं पहचान न सका। इनमें स्वच्छ शुभ्र लबादा पहने एक रोमन कैथोलिक पादरी भी था। नर्सें दो प्रकार की थीं—एक तो सेन्ट पॉल द चार-ट्रीज (सेन्ट पॉल चारट्रीजवाले) भगिनी-संघ की पोशाक में और दूसरी फिली-पाइन के स्वास्थ्य-विभाग की सरकारी पोशाक में। उन्होंने पहले डॉ० मार्शल का स्वागत किया। फिर ये सब बीमारों की लम्बी कतार के सामने से गुजरे और प्रत्येक बीमार के साथ सबने कुछ न कुछ बात की। प्रत्येक डॉक्टर को प्रत्येक रोगी का स्वागत करते देख मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मुख्य डॉक्टर—डॉ० विन्टन—ऊँचे-पूरे कद का आदमी था। खुले सिर, सफेद लबादा पहनकर वह आया था। कई मिनट तक वह मेरे साथ बातें करता खड़ा रहा।

"आप तो हृष्ट-पुष्ट दीखते हैं। यहाँ का जीवन एक कसौटी तो है ही। किन्तु यहाँ जो कुछ देखें, उससे हिम्मत न छोड़ बैठें। मुझे कहीं आपको मृतक-घर में न रखना पड़े। जहाँ तक होगा, दोपहर के पहले मैं आपसे मिलूँगा। आपके रहने के लिए मेरे मन में एक योजना है। वह भी मैं आपको दिखाऊँगा। अभी तो मुझे इन सबकी जाँच कर लेनी है। इसलिए अभी क्षमा करेंगे।"

मैंने आभार के दो शब्द कहे। वह जितना उत्साही था, उतना ही चपल भी। उसकी गहरी आँखें दूसरे के हृदय तक पहुँच जातीं। एकदम जवान! उम्र में मुझसे भी छोटा। एक नौजवान के लिए यह कितना कठिन काम था!

इसके बाद पादरी भी थोड़ी देर मेरे सामने रुके। "मेरा नाम मोरेल्लो हैं, मि० फर्ग्यूसन। आपको भी यहाँ आना पड़ा, यह देखकर दुःख होता है। किन्तु हम आशा करते हैं कि आपको यहाँ कुछ तो सुख होगा ही।"

मुझे खयाल हुआ कि कैथोलिक होने कारण वे सांचो के बारे में तो कुछ अवश्य जानते होंगे।

"सांचो नोलास्को नाम के कोई भाई यहाँ हैं?"—मैंने पूछा।

"हाँ-हाँ। वह तो अस्पताल में हैं। आप उन्हें कैसे जानते हैं?"

"मैं फौज में था, तब उसके परिवार के साथ मेरा परिचय हो गया था। आप उसके पास मेरा एक संदेश भेज सकेंगे?"

"जरूर बेटा।"

"फादर! उससे कहें कि सार्जेन्ट नेड यहाँ आये हैं और अवकाश मिलते ही आपसे मिलने आयेंगे।"

इसके बाद कुछ भाषण हुए और संगीत द्वारा हमारा खूब मनोरंजन किया गया। कम-से-कम यह असर तो उन्होंने हम पर अवश्य ही डाल दिया कि उन सबको हमारे आने से आनंद हुआ। कूलियन के बारे में तरह-तरह की अफवाहें फैलानेवालों पर मैंने एक नजर डाली। वे असमंजस में पड़े-से दीखे। शायद उन्हें लग रहा था कि यह भी कोई चाल है। जिस प्रकार बलिदान के बकरे को खिला-पिलाकर मोटा करते हैं, वैसी ही यह भी कोई बात है।

सारी विधि पूरी हो जाने पर हमें एक बड़े मकान पर ले जाया गया। यह सूतक-घर था। इसके बीचोबीच एक लम्बी दीवाल बनी थी। एक भाग पुरुषों और दूसरा स्त्रियों के लिए सुरक्षित था। सन की खाटें एक कतार में बिछी थीं और नहाने-धोने के कुछ बरतन। सर्वसाधारण चौके से केले के पत्तों में तरतीब से लपेटा भोजन आया। टॉमस ने और मैंने अपना-अपना भाग लिया और पास के एक टीले पर चले गये। पपीते के एक झुण्ड में बैठकर हमने वन-भोजन का आनन्द उठाया। हम खा ही रहे थे कि किसीने ऊपर से पूछा:

"क्या हो रहा है ? काफी होगा न ?"

मैंने ऊपर देखा। मुख्य डॉ० विन्टन ! वह सरकता हुआ नीचे हमारे पास आ पहुँचा। उसने सफेद लवादा उतार दिया था और अब खुले गलेवाली कमीज और पीले रंग का ब्रीचेसनुमा पाजामा और बूट पहन रखे थे।

"क्षमा कीजिये, जल्दी नहीं आ सका। इतने सारे आदमियों को लेकर जब स्टीमर आता है, तो काम बहुत बढ़ जाता है। मुझे आपके साथ आपके रहने के स्थान के बारे में बातचीत करनी थी। बात यह है कि यहाँ तो हमेशा भीड़ बनी रहती है और हर आदमी का प्रबन्ध कहाँ करें, यह सवाल ही रहता है। हमने कुछ मामूली-सी धर्मशालाएँ अवश्य बनायी हैं, पर बहुत सारे बीमार तो अपने मकान खुद ही बना लेते हैं। एक ही परिवार के हों, तब तो कहना ही क्या। नहीं तो चार-छह बीमार मिलकर एक सुन्दर मकान बनवा लेते हैं। संस्था उनको इसके लिए आवश्यक सामग्री तथा औजार भी दे देती है और परिश्रम वे खुद कर लेते हैं। एक स्टीमर आया कि दो सौ नये मकानों का प्रबन्ध करना पड़ता है। इस पर से आप अनुमान कर सकते हैं कि इसमें कितनी परेशानी उठानी पड़ती होगी।

"अब रहा आपका सवाल ! यहाँ एक अमेरिकन रहता था। उसके बारे में मैं आपसे किसी दिन कहूँगा। कुछ दिन पहले वह क्षय से मर गया। मरते समय वह मुझसे कह गया कि उसका मकान मैं किसी अमेरिकन को ही दूँ। चूँकि यह मकान उसने अपने निजी खर्च से बनाया था, इसलिए मैंने उसकी बात मान ली। उसकी मृत्यु के बाद से यह मकान खाली पड़ा है। अगर आपको पसन्द हो, तो यह मकान आप अपना ही समझें। वह अच्छी जगह पर है और फिलीपाइन के अन्य मकानों की अपेक्षा दूसरे प्रकार का है। वह आपका स्वतन्त्र निवास होगा।"

"किन्तु दूसरों का क्या होगा ?"—मैंने पूछा—"मुझे तो यहीं रहना है। विशेष सहूलियतें लेकर मैं दूसरों की ईर्ष्या का पात्र नहीं बनना चाहता।"

"इस विषय में डरने जैसी कोई बात नहीं। सब जानते हैं कि यह मकान अमेरिकनों के लिए है। उलटे आप उसमें न रहेंगे, तो लोगों को आश्चर्य होगा। अगर आप अकेले ही उसमें रहें, तो ईर्ष्या के बजाय आप पर उन्हें

दया आयेगी। फिलीपाइन लोग समूह-प्रिय होते हैं। अकेला रहना उन्हें अच्छा नहीं लगता। वे ईर्ष्यालु नहीं हैं। सब जानते हैं कि यह मकान विलकिनसन ने बनाया है और उसके देश से कोई आये, तो उसके लिए वह इसे छोड़ गया है।"

"यह तो लक्ष्मीजी प्रसन्न हो गयीं जैसी बात हुई।"

वह हँसा। "ऊँ हूँ....यह तो नहीं कहा जा सकता। यह मकान गिरने जैसा हो रहा है। मरने से पहले उसे कई महीने अस्पताल में ही रहना पड़ा। मैं तो कहता हूँ कि चलिये, अभी हम जाकर उसे देख आयें। आपको पसन्द आ जाय, तो ठीक है और न जँचा, तो फिर दूसरा कोई प्रबन्ध करेंगे। किन्तु दूसरी व्यवस्था होने तक भी आपका वहीं रहना उचित होगा।"

इस बीच टॉमस जरा दूर चला गया था। फिलीपाइन बड़े संकोच-शील होते हैं। उसे लगा कि उसे हमारी बातचीत के समय वहाँ नहीं रहना चाहिए। डॉ० विन्टन ने उसे सम्बुद्ध करते हुए कहा : "टामस, तू जरा यहीं रह। हम अभी आते हैं।"

टामस जरा सिमटकर सोने की तैयारी कर रहा था। हम वहीं से टेकरी पर सीधे चढ़ने लगे। चढ़ाई इतनी मुश्किल थी कि कितनी ही जगह पर हमें झुककर हाथ टेककर बन्दर की तरह चलना पड़ा। मैं फौरन विन्टन की इस आदत को जान गया। नजदीक का रास्ता मिल जाय, तो दूर का रास्ता क्यों लिया जाय! इसीलिए उसने अपनी पोशाक इस आदत के लायक ही रखी थी। कुछ ही चलने पर हमें एक रास्ता मिल गया। उसने बताया कि यह रास्ता अस्पताल और दफ्तरों पर जानेवाले रास्ते में मिल जाता है। हम बायें मुड़े। वहाँ से टेकरियों में जानेवाली बहुत-सी पगडंडियाँ मैंने देखीं। विन्टन ने कहा : "यहाँ सब पगडंडियाँ ही हैं, सड़कें नहीं हैं। ये पगडंडियाँ टापू के अन्दर के हिस्से में जाती हैं। किन्तु वहाँ अभी किसीका प्रवेश नहीं हुआ है।"

हम धीरे-धीरे मौज से चले। नारियल तथा केले के झुण्ड और जसवन्ती पूरे बहार में थे। ये दोनों तरफ से छाया दे रहे थे। बीच-बीच में साफ जगह मिलती। उसमें ताड़ के तथा बाँस के मकान बने थे। यहाँ के मकान जमीन से बहुत ऊपर—खम्भों पर बने होते हैं। मतलब यह कि इनमें नीचे की मंजिल

होती ही नहीं। रहने लायक केवल ऊपर की मंजिल ही होती है। वहाँ निसैनी या जीने से पहुँचा जाता है। नीचे मुर्गों तथा कुत्तों के रहने की जगह होती है। हमें बहुत कम आदमी सामने से मिले। जो मिलते, वे हँसकर 'नमस्कार डॉक्टर' कहते और मेरी तरफ भी विनयपूर्वक सिर नँवाकर चले जाते। एक आदमी एक पेड़ के नीचे बैठा बड़े यत्नपूर्वक एक मुर्गे को युद्ध-कला सिखा रहा था। कई छोटी-छोटी दूकानें भी मिलीं। यही वहाँ का व्यापार था। इन दूकानों में मिठाई, सिगरेट, चिरुट, बीड़ी और सस्ते जेवर बिकते। इन जेवरों को यहाँ 'टिएण्डा' कहते हैं। सब दूकानों के टट्टे बन्द थे।

"यह लोगों की सेवा का समय है"—विन्टन ने कहा—"मैं दिन में सोता नहीं। कोढ़ी-वास में ऐसी दूकानें बहुत हैं। इससे कोई बहुत कमाई तो नहीं होती, पर बीमारों को कुछ न कुछ काम मिल जाता है और इस प्रकार समय कट जाता है। यहाँ की सबसे बड़ी समस्या यही है कि समय कैसे कटे? इस विषय में चीनी लोग सबसे अधिक उद्योगशील होते हैं। वे तो छठी में ही उद्योग का स्वाद पा लेते हैं।"

मैंने पूछा : "बीमार काम कर सकते हैं?"

"बहुत बड़ा भाग तो काम करने लायक होता है। हाँ, वे जबरदस्ती करने से नहीं करेंगे।"

न्यूयॉर्क में मैंने इसी तरह एक वर्ष काटा था। उसकी मुझे याद आ गयी। अपने रोज के काम से तो मैं कुछ ही घण्टों में फारिग हो जाता। इसके बाद घूमने, पढ़ने, बेसबॉल देखने आदि में लगे रहने पर भी समय काटे नहीं कटता था। मैंने कहा : "मुझे तो जितना भी काम मिल जाय, मैं करना चाहता हूँ। मेरे शरीर में शक्ति भी है।"

"अगर आप काम के भूखे हैं, तो वह आपको यहाँ मनमाना मिल जायगा, इसका मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ। किन्तु काम खोजना होगा खुद आप ही को। भोजन की चिट्ठी के साथ-साथ यहाँ काम की चिट्ठी देने का रिवाज नहीं है। क्या कोई काम नहीं है, ऐसा पूछा जरूर जा सकता है। यह कल्पना अच्छी है। लीजिये, आपका स्थान आ गया। इसे पूरी तरह से देख लें।"

वाँस की किमचियों का अहाता। वे भी टूटी हुईं। इसके अन्दर मकान! टूटा हुआ! लकड़ी के दरवाजे को उसने धक्का देकर खोला। झाड़ियों में मकान पूरी तरह छिप गया था। हमने उन्हें काट-काटकर रास्ता वनाया। रास्ते से लगभग पचास फुट अन्दर मकान था।

"पहले से आदमियों को भेजकर मकान को जरा साफ नहीं करवा लिया—इतनी भूल हो गयी। किन्तु क्या वताऊँ? आपको अजीव-सा लगेगा। मैं यहाँ के काम को पहुँच नहीं पाता।"

"उलटे मुझे तो यही आश्चर्य होता है कि आप मेरे लिए इतना समय कैसे दे सकते हैं। मैंने सुना है कि आपके मातहत यहाँ ढाई हजार आदमी हैं। यह संख्या तो वीमारों की है। इनके अलावा नीरोग मनुष्य।"

"हाँ, इतने तो हैं ही और आप जो नये पंछी आये हैं, उन्हें जोड़कर सत्ताईस सौ हो गये।"

मैं जान गया कि उसने वात उड़ा दी है। इसलिए मुझे वहुत अच्छा लगा। मुझे वह पसन्द आ गया।

ओटले की सीढ़ियों के पास हम आ पहुँचे। वह चढ़ने लगा। दूसरी सीढ़ी पर पैर रखते ही वह टूट गयी और वह वुरी तरह गिर पड़ा। मैं जाकर उसे सँभालता हूँ, तव तक तो वह उठकर खड़ा हो गया।

"कहीं चोट तो नहीं लगी?"—मैंने पूछा।

"हाँ-हाँ, मेरे स्वाभिमान को गहरी चोट पहुँची है। मैं यहाँ का मुख्य डॉक्टर, मैं आपको जगह दिखाने के लिए आऊँ और यह मकान मुझे धोखा देकर गिरा दे! यह खँडहर अगर आप लेंगे, तो यह आपको खूव काम दे देगा फिर····। मैं आपको मि० नेड कहूँ, तो कैसा रहे?"

"वह तो मुझे वहुत अच्छा लगे।"

मैंने समुद्र की चौपाटी देखी और मेरे मुँह में पानी आया। भले ही सारा मकान खँडहर जैसा वन गया हो, परन्तु मैं तो इसीको पसन्द करूँगा। मकान के पीछेवाली जमीन ठेठ समुद्र तक थी। यह जमीन मकान के साथ-साथ न भी हो, तो भी डॉ० विन्टन से कहकर अगर मैं उसकी माँग करूँ, तो वह मुझे मिल सकती थी। पहला आदमी वीमारी के कारण इतनी सव झंझट

नहीं कर सकता था। मकान अच्छा, बाँस-ताड़ का बना, ४० फुट लम्बा और २० फुट चौड़ा चौरस था। रास्ते की तरफ पूरी चौड़ाईवाला भाग बैठने-उठने और भोजनवाला खण्ड था। उसे बरामदा भी कहा जा सकता था। क्योंकि सामने के भाग पर गुँथी हुई नीपा की जाफरी के टट्टे गिराये हुए थे, जो बाहर की तरफ ऊपर से खुलते थे। इनके नीचे बाँस का सहारा लगा दिया जाता, तब यह कमरा खुले चबूतरे जैसा बन जाता। इसके पीछे दो छोटे-छोटे सोने के कमरे थे, जिनके बीच एक हाल था। यह हाल लम्बा, दूसरे हाल में मिल जाता था, जो सोने के कमरों और रसोईघर और एक अन्य छोटे कमरे के बीच पड़ता था, जो शायद कोठार रहा हो। मकान में स्नान-घर नहीं था। मैंने डॉक्टर से पूछा कि विलकिनसन कहाँ नहाते थे, तो उन्होंने खाड़ी की तरफ उँगली दिखाई।

अन्दर लोहे के दो पलंग और सामान रखने के कुछ घोड़े (स्टैण्ड), मेज, कुरसी और बेंच थे। रसोईघर में तेल का एक जंग लगा हुआ स्टोव और वैसे ही कटोरे, भगोने तथा टूटे-फूटे, तड़के चीनी के कुछ बरतनों का एक ढेर भी पड़ा था।

"यहाँ की हालत मेरी कल्पना में अधिक खराब है। किसी चीज की देखभाल नहीं होती, तो कुछ ही दिनों में क्या हालत हो जाती है, देखिये।"

"यह सब हम आसानी से ठीक कर लेंगे।"

"तब तो बहुत अच्छा। अगर आपको यह स्थान इतना अधिक पसन्द है, तब तो आप अपना संसर्ग-प्रतिबन्धक-काल (क्वारंटीन) यहीं बितायें। जब तक इसकी अवधि पूरी न हो, तब तक आपको इसके अन्दर अर्थात् इस जमीन की हद में ही रहना चाहिए। किश्ती में आपका जो सामान है, वह सब मैं यहीं भिजवाये देता हूँ। इसके अलावा कुछ नये गद्दे, चद्दरें और रसोई का सामान भी भिजवा दूँगा।"

"मतलब, मैं इसी क्षण से यहाँ रहूँ, यही न ?"—मैंने पूछा। सूतक-घर पर जाने का विचार मुझे पसन्द नहीं था।

"अवश्य"—डॉक्टर ने कहा—"अब एक दूसरी बात उस लड़के के बारे में। डॉ० मार्शल कहते हैं कि उससे आपको प्रेम है। तो उसे भी आप अपने

पास ही क्यों न वुलवा लें? वह आपका घर का काम-काज कर दिया करेगा। आपके पास पैसे हों, तो आप उसे कुछ वेतन दे दें। मुझे लगता है कि यदि आप चाहें, तो वह यहाँ रहना स्वीकार कर लेगा।"

मुझे तो लगा कि मानो वह अभी मेरा हाथ दवा रहा हो। हम एक से दो हो जायँगे।

"इससे मुझे इतना आनंद होगा कि मैं व्यक्त नहीं कर सकता। टॉमस वहुत अच्छा लड़का है। इस वच्चे से मुझे वहुत प्रेम हो गया है।"

"तो इसका भी मामला निपटा। मैं उसे यहाँ भिजवा देता हूँ।"

वह चला गया। अपने नये घर में मैं अकेला रह गया। फिर एक वार पूरे मकान में सर्वत्र घूम लिया। चौपाटी पर गया, वहाँ से लौटा। तव तक टॉमस आ पहुँचा था और मेरी राह देख रहा था।

"जी, वड़े साहव—डॉ० विन्टन कहते हैं कि मुझे आपके साथ रहना है। क्या सचमुच ऐसी वात है?"

"हाँ"—मैंने कहा—"देख टॉमस, यह मकान हमें मिला तो है, किन्तु है यह वहुत वुरी हालत में। एं, कहाँ जा रहा है? सँभलकर चलना। डॉ० विन्टन खाने का सामान भेज रहे हैं। तव तक हम उस सीढी को ठीक कर लें, जिससे सामान अन्दर ले जाने में तकलीफ न हो। किन्तु तव तक तू यह तो देख ले कि पीने का पानी हमें कहाँ से लाना होगा?"

उसने एक टीन की डोलची ढूँढ़ निकाली। वहुत जल्दी ही हमारा सामान भी आ पहुँचा। यों दिनभर के लिए हमारे पास काफी काम हो गया। रात तक हमने सव व्यवस्था कर ली। एक तो पिछली तीन रात मैं सो ही नहीं सका था और आज खूव मेहनत हो गयी थी। इस कारण मैं एकदम थक गया था। हम दोनों ने मिलकर भोजन तैयार किया। किन्तु वह मेरे साथ बैठकर भोजन करने से इनकार करने लगा। उसने मेरी थाली एक छोटे-से स्टूल पर रख दी और खुद रसोईघर में जाकर खाने लगा।

मैं वीड़ी फूँकता वैठा। चारों तरफ उष्ण प्रदेश की रात की ठण्ढक छा रही थी। चौपाटी के शान्त जल में तारों के प्रतिविम्व दीख रहे थे। गरमी वहुत कम—जरूरत के लायक ही थी। मुझे जँभाइयाँ आने लगीं। मैं उठा, पलंग पर लेटा और नींद की गोद में पहुँच गया।

◆◆◆

विषाद के गर्त में : १२ :

एकाएक मुर्गे की इतनी जोरदार बाँग सुनाई दी, जैसी मैंने कभी नहीं सुनी थी। आँखें खोलकर देखा, तो खिड़की से अँधेरे के बजाय धुँधला-सा कुछ प्रकाश दिखने लगा था। बहुत वर्ष पहले इन टापुओं में मैं रहा था और प्रभात की सूचना देनेवाली इस तरह की बाँग से मैं कुछ परिचित तो था। किन्तु आज जैसी बाँग तो मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी। यहाँ का हर बीमार कम-से-कम एक लड़ाकू मुर्गा तो जरूर पालता है। मुर्गों में एक अजीब समझौता होता है। सुबह वे सब एक साथ बोलते हैं। इस प्रकार उस दिन सुबह मेरी नींद टूट गयी। किन्तु हफ्तों बाद पूरे आठ घण्टे के निद्रानंद का लाभ मैं उठा चुका था। इसलिए टॉमस की रात कैसी कटी, यह देखने के लिए मैं पलंग से उठा। उसका कमरा खाली पाया।

"टॉमस, टॉमस"—मुर्गे से भी अधिक जोर से मैंने आवाज लगायी।

"जी साहब, मैं यहाँ रसोईघर में हूँ।" उसकी आवाज कमजोर और कुछ घबरायी हुई-सी प्रतीत हुई। मैं तेजी से उसके पास पहुँचा। उस पुराने स्टोव के पास घुटने टेककर वह कुछ कर रहा था।

"साहब, मुझे बड़ा दुःख है, मैं क्षमा चाहता हूँ। यह स्टोव किसी प्रकार सुलग नहीं रहा है। मैंने कितनी सारी सलाइयाँ खराब कर डालीं।"

मैं एक कुरसी पर बैठ गया और पेट पकड़कर हँसने लगा। टॉमस मेरे पास है और सुरक्षित है—कुछ यह बेफिक्री भी इस आनंद का कारण थी।

"देख टॉमस, वह 'बर्नर' में लम्बी डण्डी दीखती है न, उसे दाहिनी ओर घुमा। उसकी बत्ती नीचे चली गयी है, और कुछ नहीं। अब बत्ती के पास दियासलाई जला। देखा?"

लड़का खड़ा हो गया और मेरी तरफ खिन्न वदन से देखने लगा।

"मैं एकदम गँवार हूँ साहब। लगता है कि आप बहुत जल्दी मुझे छोड़ देंगे।"

"नहीं, ऐसा मत सोच टॉमस। जानता नहीं, मैं और तू 'पाल' (Pal= मित्र) हैं। क्या तुम जानते हो कि 'पाल' किसे कहते हैं ?"

"जी साहव, वही न, जिसे गाड़ी में जोतते हैं ? मैं जानता हूँ, 'पाल' कहते हैं वाल्टी को, जिसमें कि पानी भरकर लाते हैं।"

"टामस ! हम उसे 'पेल' (वाल्टी) कहते हैं। 'पॉल' से मेरा मतलव है मित्र, साथी, दोस्त, जो हमारे साथ घूमे, कठिनाई में मदद करे, हमारी गुप्त वातें भी जानता हो और जिस पर हमारा खूब प्रेम हो । मानो हमारे घर का ही कोई मनुष्य हो।"

उसका चेहरा खिल उठा।

"आपका मतलव है, साहव, कि हम ऐसे होंगे ?"

"अरे होंगे क्या ? हो ही गये । हम तो सान-लाजारो में ही दोस्त वन गये। वड़े साहव ने कहा है कि जव तक तेरी इच्छा हो, तू यहीं मेरे साथ रह सकता है। इसमें जरा भी सन्देह नहीं टॉमस कि तू जैसे वता रहा है, वैसे ही हम वहुत वड़े दोस्त होंगे।"

"आप वड़े प्रेमी हैं साहव !"—उसकी आवाज भारी हो गयी । किन्तु वह धैर्यवान् वालक था। वाक्य को अधूरा छोड़ नहीं सकता था—"आप वहुत सज्जन हैं और मैं आपका वहुत आभारी हूँ।" उसकी वड़ी-वड़ी आँखें भर आयीं। "मैं—मैं साहव, पानी लाना तो भूल ही गया।" कहकर वह एक डिव्वा उठाकर भाग निकला।

अनजान वच्चा वेचारा ! माँ और छोटी वहन के वियोग में सूख रहा था। उनका स्थान तो मैं कहाँ से ले सकता हूँ। किन्तु उसका मित्र वनने की मेरी तैयारी का उसने वड़ी उत्सुकता से स्वागत किया। पानी लेकर वह लौटा, तव मैंने उसे वताया कि अमेरिकन नाश्ता किस प्रकार तैयार किया जाता है। न्यूयॉर्क में मैं जो एक वर्ष रहा, उन दिनों एक अच्छा रसोइया वन गया। लेकिन दूसरे को सिखाने का अवसर नहीं मिला। इस कारण मैं उसे सारी वातें अच्छी तरह समझा नहीं सका। अपने सामने सव करवा लेने के लिए मैं रुका नहीं। एक कटोरी में जल लेकर मैं दाढ़ी वनाने के लिए चला गया।

सामने की मंजिल में उसने एक स्टूल रखा और उस पर मेरा खाना लाकर रख दिया। एक वड़ी तश्तरी में फल—पीले जर्द आम, पपीते और

हरी छाल के केले। वह ये सब चीजें कहाँ से लाया, यह सब पूछने के झंझट में मैं नहीं पड़ा। कुछ तो जरूर हमारे पेड़-पौदों के ही होंगे। दूसरे शायद कौन जाने....फिर कुछ अण्डे लाया। वह लौटकर रसोई में गया, तब मैंने एक अण्डा उठाया। वह लाल और शीशे के समान सख्त हो गया था। उस दिन टॉमस ने अप्रतिम नाश्ता तैयार किया। एक आवारा कुत्ता वहाँ आ पहुँचा। उसे ताककर मैंने वह अण्डा दे मारा। गरीब कें कें कें कें करता भाग गया और अण्डा झाड़ियों में लुढ़ककर छिप गया। अब मैंने दूसरा अण्डा खाने के लिए उठाया। किन्तु मेरे दाँतों का वह नाम पूछने लगा, तो मैंने उसे अपनी जेब में डाल लिया। टॉमस लौटकर आया तो उसने देखा, दोनों अण्डे गायब हैं। उसे तो छिलके तक नहीं दिखे। वह खुश हो गया, हँस दिया और कॉफी रखकर चला गया।

"आपको अण्डे पसन्द आ गये साहब? तब तो मैं किसी दिन एक होशियार रसोइया बन जाने की आशा कर सकता हूँ।"

सुनकर मुझे इतनी जोर की हँसी आ गयी कि मुँह में ली हुई कॉफी गले के नीचे भी न उतार सका और बड़े जोर की उच्छू आ गयी। कॉफी में पॉउडर बहुत रह गयी थी। टॉमस आतुरतापूर्वक देखता रहा।

"यह सब ठीक है न साहब?"

उच्छू लेते-लेते मैंने कहा : "नहीं-नहीं, है तो ठीक टॉमस। किन्तु मैं कॉफी जरा दूसरे प्रकार की पसन्द करता हूँ। एकदम छनी हुई कॉफी मैं पसन्द करता हूँ। चल, मैं तुझे बताऊँ।" फिर बची हुई कॉफी में ठण्डा पानी मिला दिया और उसके कण नीचे बैठ गये, तब मैं उसे पी सका।

इसके बाद दस बजे तक हम सीढ़ी को ठीक करने में जुटे रहे। इतने में झाड़ियों में से होकर डॉ० मार्शल आ पहुँचे।

"हैलो! आपने तो काम शुरू भी कर दिया। मुझे मालूम हुआ कि आपको यह स्थान पसन्द आ गया।"

मेरी जबान खुलने के लिए इतना-सा निमित्त काफी था और मैं लगा उन्हें अपनी सारी योजना जोर-जोर से बताने : "यहाँ ऐसा करूँगा, वहाँ यह बनाऊँगा।" वे भी दिलचस्पी दिखाने लगे।

"मनीला में आप जो-चाहें, सब मिल सकता है। अगर कोई कठिनाई हो, तो डॉ० विन्टन से कहिये कि वे मुझे लिखें। मैं वह चीज भिजवा देने का प्रबन्ध कर दूँगा। मैं जब अगली बार आऊँगा, तब तक तो दिखता है कि आप इसकी सारी शक्ल ही बदल देंगे। यह सब देखने की मुझे बड़ी उत्सुकता है।"

टॉमस की भाषा में कहूँ, तो उन्होंने मेरे साथ बहुत प्रेम प्रकट किया। वे चले गये और मैं अफसोस के साथ उन्हें देखता ही रह गया। उनकी सीधी खड़ी पीठ, विशाल कन्धे और रास्ते की मोड़ पर मुड़ते हुए मुझे खड़ा देखकर सलाम करने के लिए ऊपर उठायी हुई बलवान् भुजाएँ—ये सब सिद्ध कर रही थीं कि वे कितने प्राणवान् पुरुष हैं।

शाम के समय एक और मिलनेवाले आ पहुँचे—डॉ० विन्टन। आते समय मकान के पीछे से एक कुरसी भी वे खींचते हुए ले आये।

"वाह, खूब प्रगति कर ली। अच्छा काम हो गया। हाँ, भूलें नहीं, इसलिए पहले से बता देता हूँ कि मैं जो यह कुरसी ले आया, वह यहाँ का रिवाज है। आपने देखा होगा कि मिलनेवाले आपके पास आ तो सकते हैं, परन्तु हम छूत के खतरे को कम-से-कम कर देना चाहते हैं। इसलिए मिलने आनेवालों को आप कुछ भी खाने-पीने को न दें। वे अगर कुछ खाना चाहें, तो अपने साथ ले आयें। पीछे जो छोटी-सी झोपड़ी है, उसके अन्दर से मैं यह कुरसी ले आया हूँ। आपने यह झोपड़ी देख ली ?"

"जाली के अन्दर से मैंने तथा टॉमस ने वहाँ नजर डाली तो थी। दरवाजा बन्द था, इसलिए हम अन्दर नहीं गये।"

"उस झोपड़ी के अन्दर की सभी चीजें हमारी दी हुई हैं। जब कोई मिलने आये, तो अपने बैठने के लिए वहाँ से एक कुरसी लेता आये और लौटते समय उसे वापस वहाँ रख दे। मैं खुद इस नियम का पालन करता हूँ। दूसरे डॉक्टर भी पालते हैं। मतलब यही कि बीमार कभी इन कुरसियों को नहीं छूते। अगर इन चीजों को बदलना या मरम्मत करवाना हो, तो मुझे सूचना कर देनी चाहिए।

"अब दूसरी बात। नेड, आपके भोजन के बारे में मैं विचार कर रहा था। संस्थान भोजन की चिट्ठियाँ देता है। किन्तु केवल यहाँ के देशी भोजन से आपका काम न चलेगा। आपको इसकी आदत नहीं है। फिर अपना स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए कम-से-कम कुछ समय तो आपको अमेरिकन भोजन लेना ही उचित होगा। मैं नहीं जानता कि आपकी आर्थिक स्थिति कैसी है। फिर भी आपकी जरूरतें बहुत अधिक नहीं हैं। बहुत खर्च नहीं होगा। टॉमस को तो संस्था की तरफ से उसका भोजन मिलेगा ही। क्या मैं पूछ सकता हूँ—आपको कोई पेन्शन मिलती है?"

"नहीं, मैंने कभी माँगी ही नहीं। इसकी जरूरत नहीं मालूम हुई। हाँ, ...टॉमस को कुछ हो जाय....अर्जी दे देना अच्छा है। किन्तु मैंने यहाँ झूठा नाम रख लिया है। इस कठिनाई को कैसे दूर किया जाय, यह मैं नहीं जानता।"

"उँह! यह तो हम देख लेंगे। कुछ भी प्रकट करने की जरूरत नहीं होगी। आपके सम्बन्ध में हमारे पास जो 'नोट' हैं, वे काफी हैं। मुझे लगता है कि आपको प्रतिमास पचहत्तर डालर अर्थात् यहाँ के डेढ़ सौ पेसो मिल सकेंगे। यह रकम अपना मकान ठीक करने, सजाने, टॉमस को वेतन देने और अपना अन्य खर्च चलाने के लिए काफी होगी।"

"डॉ० विन्टन, आपको मेरे लिए बहुत तकलीफ उठानी पड़ रही है। किन्तु पेंशन यदि मिल सके, तो उसकी जरूरत तो होगी ही। अभी तो मेरा भाई खर्च के लिए भेज रहा है। लेकिन मैं यह बन्द करना चाहता हूँ। अभी मेरे पास कोई पाँच-सात सौ डॉलर होंगे। ये चलेंगे, तब तक आशा है, पेन्शन मंजूर हो जायगी।"

"तब तो इस अर्जी के काम को मैं कर लूँगा। अच्छा। इस कोढ़िस्तान के चलन के बारे में आपको कुछ पता है? नहीं तो बताये देता हूँ। यहाँ हमारे अपने सिक्के चलते हैं। आपकी अमेरिकन चलन को यहाँ के सिक्कों में बदल लेना होगा। हमारे सब चलन धातुओं के सिक्कों में ही हैं। नोटों में बिलकुल नहीं। संस्थान के दफ्तर में विनिमय का कार्यालय भी है। कोई भी आपको वह बता देगा। अब खाने-पीने की चीजों के बारे में सोचें। अपनी जरूरतें आप मुझे बता दें।"

हम दोनों ने मिलकर एक लम्बी सूची बनायी। जहाज उसी दिन लौट रहा था। उसके साथ ही ऑर्डर भेजा जा सके, इसलिए वे यह कहकर तुरन्त रवाना हो गये : "जब तक आपका सामान नहीं पहुँच जाता, तब तक अपने पास से मैं आपको कुछ भिजवा देता हूँ। हाँ, एक बात मैं भूल ही गया था। फादर मोरेल्लो ने कहलाया है कि सूतक का समय पूरा होते ही वे आपसे मिलने को आनेवाले हैं।"

मैंने उनके प्रति आभार प्रकट किया और वे चल दिये। इन डॉक्टरों की चाल कितनी तेज होती है ?—और ऐसी धूप में !

दूसरे दिन सवेरे उन्होंने कुछ औजार मेरे पास भेज दिये। इसलिए अब हम कमर कसकर काम में जुट गये। दरवाजों और खिड़कियों को ठीक कर लिया। साज-सामान की मरम्मत की, मकान साफ किया, रास्ते बनाये। इस प्रकार कई दिनों तक हम लगातार इसीमें लगे रहे। मेरे साथ जो बहुत-सा सामान आया था, उसमें टॉम ने कई किताबें भेज दी थीं। मैं अभी इन्हें पढ़ न सका था। काम करते-करते थक जाता, तब बीड़ी सुलगाकर चबूतरे पर बैठ जाता और किताबें पढ़ने का यत्न करता अथवा 'फोनो' सुनता रहता। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि किताबों में अब मुझे वैसा रस नहीं रहा। 'सिस्टर केरी' नामक एक उपन्यास मैं पढ़ रहा था। यह किताब अमेरिका में हर आदमी की जबान पर थी। किन्तु मुझे न तो केरी में और न इस उपन्यास के दूसरे पात्रों में रत्तीभर रस आया। किसीकी आवाज मेरे कानों पर आयी। मैंने किताब एक तरफ रख दी। फादर मोरेल्लो फाटक खोलकर अन्दर आ गये और साफ किये हुए मार्ग पर खड़े हो गये।

"नमस्ते, क्या आ सकता हूँ भाई ?"

"अवश्य"—मैंने प्रेमपूर्वक कहा—"आपकी राह मैं कब से देख रहा हूँ।"

वे मकान के पीछे गये और एक कुरसी ले आये। चबूतरे पर उसे रखा और टोप उतारकर बैठे। खूब गरमी थी, किन्तु मैं तो उनके सामने एक लोटाभर जल भी नहीं रख सकता था।

"मैं यहाँ का मुखिया हूँ"—उन्होंने हँसते-हँसते कहा—"विलकिनसन हमारे पन्थ का अनुयायी था। आपका यह स्थान इस टापू में ठण्डी-से-ठण्डी

जगह पर है।"—फिर आसपास नजर दौड़ाकर बोले—"वाह, आपने तो इसे खूब अच्छा बना लिया है। ऐसा लगता है, मानो बिलकुल नया बनाया है।"

"अभी तो प्रारम्भ ही किया है, फादर। बहुत करना बाकी है।"

उन्होंने मेरी तरफ कुतूहलपूर्वक देखा और फिर बोले: "आपकी इस प्रकृति के लिए मुझे भगवान् के आशीर्वाद माँगने चाहिए। कम-से-कम आपका टॉमस तो जरूर खुश होगा।"

इतनी देर से मैं टॉमस को भूल गया था। इस पर मुझे अपने पर गुस्सा आ गया।

"फादर, टॉमस ने तो यहाँ केरेवाव की तरह मेहनत की है।" अमेरिका में 'बीवर की भाँति मेहनत करना' एक मुहावरा है। उसके स्थान पर मैंने यहाँ के परिश्रमी प्राणी केरेवाव का नाम कह दिया। इस पर वे खूब हँसे।

"फादर, आपको टॉमस से जरूर मिलने की इच्छा होगी। मैं उसे बुला देता हूँ। और जब आप भगवान् के आशीर्वाद माँगेंगे, तब मैं भी हाजिर रहना चाहता हूँ।"

"आप कष्ट न करें। मैं ही उसे खोजकर ले आता हूँ। भिन्न संप्रदाय के होने पर भी आप इस छोटी-सी प्रार्थना में शरीक होना चाहते हैं, यह आपकी उदारता है।"

अपनी कुरसी उठाकर वे चल दिये। थोड़ी देर में टॉमस बड़ी-बड़ी खिली हुई आँखों से मुझे बुलाने आ पहुँचा। हम समुद्र-तट पर गये। वहाँ फादर मोरेल्लो ने प्रार्थना की और भगवान् से आशीर्वाद माँगे: "सागर कभी अपनी मर्यादा छोड़कर हमें कष्ट न दे, पृथ्वी सदा फल-फूल देती रहे और हमारा घर तथा उसमें रहनेवाले सुख-शान्ति से रहें।" प्रार्थना बड़ी उदात्त तथा व्यापक थी। इस कारण टॉमस तथा मुझ पर उसका बड़ा प्रभाव पड़ा। हमने धन्यता का अनुभव किया। फिर फादर और हम वापस अपने मकान पर लौट आये। उनके बोलने का ढंग अब दूसरा ही था।

"कल आपको मेरे साथ अस्पताल पर चलना है, सांचो से मिलने के लिए। डॉ० क्विन्टन ने कहा है कि मुलाकातों के समय से पहले हो आयेंगे, तो अच्छा रहेगा। नहीं तो भीड़ हो जायगी।"

"अवश्य, मैं उससे मिलने के लिए बहुत उत्सुक हूँ। अब वह कैसा है ?"

"मुझे कहते हुए दुःख होता है कि वह एक बहुत आगे बढ़ा हुआ केस है। देखिये न, उसे क्षय भी है। शायद इसी कारण इसका केस इतनी जल्दी बिगड़ गया होगा। रोग से झगड़ने की शक्ति अब उसके शरीर में नहीं रही। मुझे भय है कि इस भेंट से आपको सुख नहीं होगा। उसका खयाल है कि उसीकी छूत आपको लगी है।"

"किन्तु यह तो बेकार का शक है। फादर, इन टापुओं में हम कितनी ही जगहों पर गये और रहे। उसीके मकान पर मुझे छूत लगी हो, ऐसा मान लेने का कोई कारण नहीं। इस बारे में सांचो के साथ बातचीत कर उसका शक दूर करना ही होगा।"—मुझे एक बात और आपसे पूछनी थी। "फादर, सांचो की एक बहन थी—चरिता—।"

"हाँ बेटा, उसे भी रक्तपित्ती हो गयी है। उसकी पहली प्रसूति में यह रोग बढ़ गया। ऐसा अक्सर होता है।"

"नहीं-नहीं। चरिता को यह नहीं हो सकता। नहीं, ऐसा न कहिये। वह····वह कहाँ है ? अगर उसे भी कोढ़ है, तो वह यहाँ क्यों नहीं आयी ?"

"वह एक देहात के आश्रम में पढ़ाती थी। इसलिए वहाँ के लोगों ने उसे सेबू के महारोगी आरोग्य-भवन में भेज दिया है।"

"उसकी हालत भी क्या सांचो के जैसी है ?"

"ना बेटा। सांचो में और उसमें किसी तरह की समता नहीं है। बहुत दुःखी मत होइये। उसकी तुलना में चरिता की स्थिति अच्छी है। अधिक नहीं बिगड़ी, यही ईश्वर की कृपा मानिये।"

मुझे कुछ हँसी आ गयी। किन्तु इस हँसी में आनंद नहीं, दुःख था।

"अधिक नहीं बिगड़ी ? वह कोढ़ी हो गयी, फिर भी आप कहते हैं अधिक बिगड़ना बाकी रह गया है ! कैसी प्यारी, सुकुमार भली लड़की है यह ! कहाँ गया था आपका भगवान्, जो यह भी न जान सका कि वह कितनी भली लड़की है ?"

"भगवान् की लीला हम नहीं जान सकते बेटा—"

"भगवान् की लीला !"—मैं बड़बड़ाया—"यह कैसा भगवान् है, जो सांचो तथा चरिता जैसे बच्चों से भी विमुख हो जाता है ? ऐसे भगवान् के बारे में मुझसे कुछ न कहिये ।"

वे चुपचाप शांत बैठे रहे। स्वयं मुझे भी लज्जा आ गयी और मैं भी चुप हो गया। वे कुछ नहीं बोले। अंत में मैंने ही धीरे से कहा :

"मैं शरमिन्दा हूं। आप तो मेरे मेहमान हैं।"

वे हँसे। पर यह हँसी फीकी थी। उसमें ग्लानिभर थी, फिर भी उसमें धीरज था।

"मैं केवल आपका मेहमान नहीं हूँ। बल्कि अभी मैंने अपने भगवान् से आपके घर पर आपके लिए आशीर्वाद माँगा है। वे आशीर्वाद अभी कायम हैं। नाराज होकर मैं यहाँ से चला नहीं गया हूँ। मैंने इसे अपना अपमान जैसा भी नहीं माना है। कभी-कभी दिलजले की जबान ऐसी ही निकलती है।"

मैं यह सह नहीं सका। उठकर खिड़की की तरफ चला गया और अपने वीरान बगीचे की ओर देखता रहा। बड़ी देर तक वे बैठे रहे। कब चले गये, इसका भी मुझे पता नहीं चला। किन्तु उनका हाथ मेरे कन्धे पर पड़ा, तब मैंने जाना।

"बेटा, किसी समय तुम्हारी कठिन परीक्षा होनेवाली है। मुझे लगा कि हम कल वहाँ जायँ, इससे पहले सारी परिस्थिति की कल्पना आपको दे दूँ, तो ठीक होगा। अच्छा, नमस्कार।"

मैं चौके में चला गया और टाँड से शराब की बोतल निकाली। यहाँ का नियम जो भी हो, मैंने तो सोचा कि आज मुझे पीना ही पड़ेगा। बोतल लेकर मैं बाहर आया। टॉमस भोजन के लिए थाली परोसकर ले आया। किन्तु मैं उसके साथ बातचीत न कर सका। उसने बोतल देखी और वह समझ गया। वह चुपचाप चला गया। बाहर से किसीकी आवाज आयी। वह मुझे बुला रहा था। मैं जवाब देने के लिए खड़ा हुआ और फिर मुझे हँसी आ गयी। वह तो जेको था। यह एक प्रकार का नेवले जैसा प्राणी था, जो यहाँ मकानों में घूमता रहता है।

शाम के समय नियमानुसार कुत्ते भूँकने लगे। उनकी आवाज सुनकर वाहर के—जंगली कुत्ते भी भूँक-भूँककर कान फाड़ने लगे। ये पहाड़ों में और खोहों में रहते और कब्रस्तान के पास शिकार की तलाश में आते हैं। मैंने वोतल उठाकर मुँह से लगायी। इस दुःख से छूटने का मैं कोई आसान मार्ग ढूँढ़ना चाहता था। नींद आने से पहले मुझे काफी नशा आ चुका था। ♦♦♦

सांचो से भेट   : १३ :

दूसरे दिन सवेरे मुझे तरोताजा देख टॉमस खुश हो गया। मैं पादरी की राह देखता चबूतरे पर बैठा। पेड़ों के बीच से उनका सफेद लबादा देखते ही मैं उठकर उनके पास पहुँच गया।

इस समय—मध्याह्न से पहले—सड़क पर काफी चहल-पहल रहती है। बात-चीत करने की तबीयत न होने से मैं आँखें चुराने लगा। जो-जो भी सामने मिलता, हमारे प्रति सद्भाव दिखाता। कोई गुड मॉनिंग कहते, तो कोई संकोचपूर्वक केवल सिर नवाकर मुस्करा देते। कई तरह के लोग थे। इधर अनन्नास के रेशे का एक कपड़ा बनता है। उसे 'पाई' कहते हैं। यहाँ के लोग इस पाई की सफेद कमीज और सूती पाजामे पहनते हैं। वे कमीज को पाजामे के अन्दर दबाते नहीं। कुछ रंगीन कमीजें भी पहने थे। बहुत से लोग रबर के तल्ले के जूते पहनते हैं, कई घास की चप्पलें, तो कितने ही लोग नंगे पैर भी घूमते हैं। स्त्रियाँ पाई की रंग-बिरंगी आकर्षक पोशाकें पहनती हैं। उनके ब्लाउजों में कलप लगा होता है। इसलिए उनकी बाँहें फतिंगों के पंखों की तरह दीखती हैं। कानों मे तरह-तरह के चमकते इयरिंग और गले में कंठियाँ होती हैं, जिनमें नीचे क्रूस लटकता है। वे चूड़ियाँ और अँगूठियाँ भी पहनती हैं। पैरों में अधिकांश भड़कीले लाल या आसमानी रंग की चप्पलें होती हैं, जिनमें उँगलियों पर चाँदी की या गिलट की घूघरियाँ या रंगीन काँच की मणियाँ लगी होती हैं। बच्चे भी सभी उम्र के दिखाई पड़ते थे। इतने नन्हें-नन्हें बच्चों को कोढ़ग्रस्त देखकर मेरा मन खिन्न हो उठा।

एक टेढ़े-मेढ़े रास्ते से होकर हम बायीं ओर मुड़े। थोड़ी देर चलने पर एक टेकरी पर पहुँचे। वहाँ से आसपास का दृश्य देखने के लिए मैं जरा रुक गया। हमारे ठीक नीचे एक बड़ा चौक बाजार था। उसकी दोनों ओर पत्थर के मकानों की कतारें बनी थीं।

"प्लाजा लिवरटाड" (आजाद चौक)–फादर मोरेल्लो वोले–"ये पत्थर के मकान यहाँ के शुरू-शुरू के निवास-गृह हैं। यद्यपि अव यहाँ आवादी का वहुत थोड़ा हिस्सा रहता है, फिर भी इनमें खूव भीड़ वनी रहती है।"

चौक मनुष्यों से ठसाठस भरा हुआ था। निवास-गृहों के पास खास तौर पर अविक भीड़ थी। पोछे की छोटी-छोटी झोपड़ियों में लगातार मनुष्यों की रहदारी चलती रही। फादर ने वताया कि इन झोपड़ों में खाना वनता है। हम आगे वढ़े। अव सीवा उतार आया। दाहिने हाथ की ओर एक वहुत वड़ा मकान था। हम उसे छोड़ आगे वढ़े। फिर एक वड़ा मकान आया। यह अस्पताल का आम रसोईघर था। रास्ते के मोड़ पर वायें हाथ पर एक सुन्दर दुमंजिला मकान खड़ा था। इसकी वनावट स्पेनिश ढंग की थी। इसके सामने पूरा लम्वा खम्भोंवाला एक चवूतरा था।

"यही कॉलोनी हॉल (कोढ़िस्तान का दफ्तर) है"—पादरी ने समझाते हुए वताया—"डाक घर और वस्तु-भण्डार भी यहीं है। कुछ को भोजन यहीं वाँटा जाता है। ऊपर की मंजिल में अदालत लगती है। किसी दिन देख आइये। अभियुक्त यहाँ के वीमारों में से ही किसीको अपना वकील नियुक्त कर देते हैं। मुख्याधिकारी मजिस्ट्रेट वनकर फैसला सुनाता है।"

अव हम एक चौड़े रास्ते पर आ गये। यही शायद मुख्य रास्ता था। वायीं ओर वह नीरोगी आदमियों के मुहल्ले में जाता था और दाहिनी ओर रोमन कैथोलिक चर्च और दीपस्तंभ के पास मोड़ खाकर नीचे जाता था और नाव में से हमें जो रास्ता दिखाई दिया था, उसीमें जाकर मिल जाता था।

मैंने अपने सामने देखा, लकड़ी का एक लंवा जीना है। उसमें सैकड़ों सीढ़ियाँ होंगी। वे पेड़ और करौंदों की झाड़ियों के वीच थीं। दो सड़कों को जोड़नेवाले तीन छोटे मार्गों में से एक यह था। मेहनती पुरुप और स्त्रियाँ इन रास्तों पर चढ़-उतर रहे थे। वहुत से तो वोझ उठा रहे थे। पुरुप तो वाँस के डण्डे के दोनों सिरों पर वोझ लटकाकर उसे अपने कन्वों पर रख-कर ले जाते और स्त्रियाँ गठरी वनाकर उसे अपने सिर पर रख लेतीं।

धूप तेज होती जा रही थी। सीढ़ियों का मार्ग पेड़ों के लगभग वीच से होकर जा रहा था। इसलिए वह शीतल और आकर्पक लग रहा था। वहुत से

आदमी, जिन्हें मैंने पहले कभी नहीं देखा था, यहाँ मेरा स्वागत कर रहे थे (बेशक पादरी के कारण से ही)। संभव है कि पादरी के कारण इस स्वागत में कुछ वृद्धि हुई हो। परन्तु चूँकि लोग मेरी तरफ देखकर करते थे, इसलिए वह मेरे प्रति था, इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं। उन्हें हँसते देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा था। आज सुबह ही मुझे लग रहा था कि अब इस जीवन में हर्ष मनाने लायक कुछ भी नहीं रहा। मैंने कुछ देर रुककर एक लम्बी साँस छोड़ी। पेड़ों की पंक्ति में कुछ अन्तर आ गया। इसमें से भव्य बन्दर का दृश्य बहुत दूर तक दिखाई पड़ रहा था।

चौमासे की जोरदार हवा के कारण उसका भूरा जल क्षुब्ध हो गया था। लहरें छोटी-छोटी चट्टानों से टकराकर फेनिल हो रही थीं। सामने दूर वान-वांग की रेखा और पूर्व की ओर रमणीय कोरन की चट्टानें दीख रही थीं।

हम कुछ आगे बढ़े। यहाँ हमें कुछ स्त्रियाँ कपड़े धोती हुई मिलीं। फिलीपाइन स्वच्छता-प्रिय हैं। पति को, बच्चों को और खुद को भी सदा स्वच्छ वस्त्रों से सजे रखने के लिए इन्हें दिन में अपना बहुत सा समय धोबी-काम में देना पड़ता है। इसके लिए भी वे अपने छोटे-छोटे झुण्ड बनाकर इस तरह निकलती हैं, मानो कोई उत्सव मनाने जा रही हों। पत्थर की शिलाओं पर सामने कपड़े रखकर वे पलथी लगाकर बैठती हैं और अपनी वजनदार छोटी और सुन्दर मुँगरी से इस तरह कपड़ों को धीरे-धीरे पीटती हैं, मानो किसी सुमधुर गीत पर ताल दे रही हों। आगे चलकर हम एक सँकरे रास्ते पर आ गये। एक लम्बा एकमंजला मकान आया।

"यही सर्वसाधारण अस्पताल है"—पादरी ने कहा।

मेरे घुटने ढीले पड़ गये। इसके खुले दरवाजे के अन्दर से एक खराब बू आ रही थी, जिससे मेरा सिर भिन्नाने लगा। रक्तपित्ती कितना कहर ढाती है, यह आज मैं अपनी आँखों से देखने जा रहा था। यहाँ अत्यवस्था को पहुँचे रोगियों को ही रखा जाता है। इससे स्पष्ट है कि अब तक मैंने जिन रोगियों को देखा, वे इस अत्यवस्था को पहुँचे हुए नहीं कहे जा सकते थे। दरवाजे से प्रवेश करते ही हम एक लम्बे कमरे से गुजरे और वहाँ से एक दूसरे हिस्से में गये। यह भी एक लम्बा सँकरा कमरा ही था—लगभग सान-लाजारो के

वार्ड जैसा ही। दोनों तरफ मछलियों की आकृति की काँच की खिड़कियाँ थीं। समुद्र की ओर की खिड़कियों में से पेड़ों के बीच से समुद्र का दृश्य दिखता रहता।

मैं पादरी के पीछे-पीछे चल रहा था। अपनी आँखें मैंने उनके श्वेत लबादे पर जोर से गाड़ दी थीं। एक लोहे के पलंग के सामने जाकर हम रुक गये, तब तक मैंने अपनी आँखें वहाँ से नहीं हटायीं और न यह देखा कि आजू-बाजू, आसपास क्या है। खटिया पर पड़े इस शरीर-पिंड पर गले तक चादर पड़ी हुई थी।

"वह लगभग अन्धा हो गया है।"—पादरी के ये शब्द मैं मन में रटता आ रहा था, मानो ऐसा करने से मेरी भी आँखें वह देखने से इनकार कर देतीं, जो प्रत्यक्ष दीख रहा था।

अपनी भयंकर-से-भयंकर कल्पना में भी मैंने ऐसे कष्टदायक दृश्य की कल्पना नहीं की थी। सड़ते हुए मांस का यह पिण्ड—यह तो सांचो नहीं हो सकता। जिस सांचो को मैंने देखा था, वह तो एक खूबसूरत लड़का था। वह रोज पाडे पर बैठकर उसे नहलाने के लिए बाँध पर ले जाता था। अपने पिता के मुर्गों को वह लड़ने की कला सिखाता और दूसरे बच्चों के साथ आनन्दपूर्वक खेलता।

वह जरा भी हिला नहीं। पड़ा ही रहा। मैं देख रहा था। उसकी पलकों और भौंहों के केश गिर गये थे। उसकी पेशानी पर चमकते हुए लाल-लाल चकत्ते थे। उनमें से कुछ तो खुले घावों जैसे थे और सड़ने लगे थे। उसकी नाक की हड्डी बैठ गयी और नीचे चली गयी थी। नथुने चौड़े हो गये थे और उनमें छोटी-छोटी गाँठें पड़ गयी थीं, जो बुरी तरह सूज रही थीं। इन घावों के समान छिद्रों में से वह इतनी जोर से साँस ले रहा था कि हमें सुनाई दे रहा था। नथुनों के समान उसके होंठ भी सूज गये थे। उसके मुँह पर लकवे का असर शुरू हो गया था, इस कारण वह एक लम्बा अण्डा-सा हो रहा था, जिसमें कोई हलचल नहीं थी।

पादरी मेरी तरफ देखकर उससे बोले: "सांचो, बेटा, मैं एक भाई को तुझसे मिलने के लिए लाया हूँ।"

सांचो का पिण्ड हिला। आँखें खुलीं और मेरी तरफ मुड़ीं। वह कुछ बोला, पर मैं समझ नहीं पाया। उसकी आवाज क्षीण हो गयी थी और उसमें एक भयानक घरघराहट थी। मानो यह आवाज किसी गड्ढे से निकल रही थी। एक प्रेत मुझसे बातें कर रहा था। मैंने पादरी की तरफ देखा।

"कौन, सार्जण्ट हैं ? आ गये ?"

मुझे बात करनी हो, तो जल्दी कर लेनी चाहिए।

"हाँ सांचो, मैं जितनी जल्दी संभव था, आया हूँ। अभी तक मैं सूतक में था भाई।"

उसने सिर हिलाया। मैं बोलता रहा। इसके वगैर चारा ही नहीं था। मैंने उसे कहा कि उसे ऐसा शक हो गया है कि मुझे उसकी छूत लगी है। मैंने उसे विश्वास दिलाया कि यह शक मिथ्या है। ऐसा हो ही नहीं सकता। यह बात मैंने दो-तीन बार दोहरायी।

वह बोलने का प्रयत्न कर रहा था। उसे सुनने के लिए मैं जरा रुका। उसने मेरा आभार मानने और हँसने का यत्न किया। किन्तु यह दृश्य तो सबसे अधिक भयंकर था। उसके शरीर में एकदम कुछ परिवर्तन होने लगा। वह अकड़ने लगा। मुझे लगा कि वह रो रहा है और कुछ इस तरह भी गुनगुना रहा था कि चरिता को तो उसीकी छूत लगी है।

पादरी ने मेरा हाथ पकड़ा और कहा : "अब चलो।"

हम हटे, तो तुरन्त एक नर्स उसकी खाट के पास आयी और वह उसे आश्वासन देने लगी। बीच-बीच में सांचो की दयाजनक आवाज और निराधार तथा निराशा के भावों को प्रकट करनेवाले उद्‌गार उसके मुँह से निकल रहे थे :

"चरिता—चरिता—चरिता—"

मेरी आँखों से आँसुओं की धाराएँ वह चलीं। यह अच्छा ही हुआ। क्योंकि इसके कारण आसपास की खाटों पर पड़े हुए मानव-पिण्डों को मेरी आँखें न देख सकीं। फिर भी जो दीख गया, वह कम नहीं था। दरवाजे के सामने की खाट पर एक आदमी बैठा था। उसके हाथ नहीं थे। ठूँठों के सिरों पर चिथड़े बँधे थे। एक पैर खुला था। उस पर अभी पट्टा बँधनेवाला था। सारा शरीर

सड़ते हुए मांस का ढेर था। उसके पास एक आकृति सफेद वस्त्र पहने हुए घुटनों के वल वैठी थी। हमें देखकर वह खड़ी हो गयी। वह एक स्त्री थी! सिस्टर विक्टरी! मुख्य सेविका! हमें देखकर वे मधुरतापूर्वक हँसीं। उनका चेहरा एक साध्वी का-सा था।

"नमस्कार फादर···नमस्कार मि० फर्ग्यूसन।"

यह उस सड़ते हुए पैर की मरहमपट्टी करेगी। पादरी को छोड़कर मैं तेज चाल से एक झाड़ी की ओट में चला गया। वहाँ मुझे एक जोर की कै हुई।

मैं किस तरह वापस आया, सो याद नहीं पड़ता। किन्तु पहुँच गया, इतनी वात तो पक्की है। क्योंकि उसके वाद का मुझे भान है कि मैं अपने चवूतरे पर शराव की वोतल लेकर अकेला वैठा था। मैंने शराव ली और फिर एक उलटी हुई। फिर शराव ली। थोड़ी देर वाद समुद्र की तरफ देखा। वह मुझे फिर वुला रहा था। फिर अच्छी तरह पीकर उस तरफ लड़खड़ाती चाल से जाने लगा, पर जा नहीं सका और एक कुर्सी में जा फँसा। टॉमस मेरे पास खड़ा होकर लगातार मुझे पुकारता रहा।

"आप वीमार हैं साहव! आपको कव से पुकार रहा हूँ। मुझे वड़ा डर लग रहा है। मैं आपको पुकार रहा हूँ। कितनी देर से पुकार रहा हूँ, पर आप तो जवाव भी नहीं दे रहे हैं। मुझे वड़ा डर लग रहा है कि कहीं आप मर न जायँ। अगर ऐसा हुआ, तो मैं भी मर जाऊँगा। मैंने माँ को छोड़ा, वाप को छोड़ा, अपने भाइयों से दूर आ गया। अपनी छोटी वहन को भी खोया। अव तो आप ही मेरे सव कुछ हैं। और कहीं आप भी मर गये, तो मुझे भी मरा समझिये।"

आखिरी प्याले का नशा उतरा। अव मुझे सुनने-समझने का होश आया। एकाएक मुझे वड़ी आत्मग्लानि हुई। ऐसा लगा, मानो मेजर टॉमसन की आवाज मेरे कानों में आयी: "तुझे इतना करना ही होगा जवान!" मैंने समुद्र को मूर्खतापूर्ण एक घूँसा दिखाया और कहा: "अभी नहीं, अभी देर है। चरिता-उसकी मदद मैं कर सकता हूँ। साँचो—उसने अन्तिम क्षण तक निभाया। टॉमस (जो इस समय मेरे पास घुटनों के वल वैठा था) अपनी डरी हुई आँखों से मेरी तरफ देख रहा था। मैंने अपना हाथ वढ़ाकर उसे ऊपर उठाया।

"छोटे भैया, अगर तेरे जितना भी मैं अच्छा आदमी न होऊँ, तो मेरा सत्यानाश हो। सचमुच ऐसा ही हो।"

कुछ दिन बाद मुझे समाचार मिला कि सांचो उसी रात मृत्यु की गोद में चला गया।

◆◆◆

भूरा आरकिड* : १४ :

जब मेरा नशा पूरी तरह उतर गया, तब मैंने पहली बार जीवन के बारे में गंभीरतापूर्वक विचार किया। मुझे अपने जीवन का कोई नक्शा बना लेना चाहिए, कोई ध्येय निश्चित कर लेना चाहिए, नहीं तो यह शराबखोरी मेरा सत्यानाश कर देगी। इस प्रकार मैं अपने जीवन का अन्त करना जरा भी नहीं चाहता था। मैं बहुत बेचैन था। चित्त में बड़ा असंतोष छा रहा था। इस अवस्था में मैं दूसरे दिन सवेरे का सारा समय आँगन में टहलता रहा। रोग के विषय में मेरी घबराहट चली गयी। जो चीजें मैंने देखी थीं, उसे अवश्यंभावी मानकर मन को समझा लिया। किन्तु अभी तो मेरा शरीर मजबूत है। इस-लिए अपने मन को काम में लगाये रखने के लिए मुझे कुछ तो व्यवसाय करना ही चाहिए।

किन्तु ऐसे स्थान में क्या किया जा सकता है? खाना, कपड़ा, दवा सब तैयार मिलते हैं। फिर काम क्यों करें और करें भी क्या?

× × ×

मनीला का स्टीमर आया था। हमारी कोई डाक आयी हो, तो उसे लेने के लिए टॉमस संस्थान के दफ्तर में गया था। वह लौटा, तो मैं चौपाटी पर था। इसके साथ एक अपरिचित व्यक्ति प्रोटेस्टण्ट पंथ के धर्मोपदेशक मि० हडसन थे। वे हाल में ही आये थे और कुछ दिन रहकर वापस मनीला लौटनेवाले थे। कुछ चिन्तित-से दिखे। उन्होंने मुझ पर बारीकी से दृष्टि डाली। मुझे सन्देह

---

* आम आदि कितने ही बड़े वृक्षों के तनों में फूल जैसा, रंग-विरंगा, दर्श-नीय और कन्ददार एक गुच्छा लगता है। इसे ही अंग्रेजी में आरकिड (Orchid) कहते हैं। हिन्दी में इसे 'बाँदा' या 'बंझा' कहते हैं और इसका संस्कृत नाम है 'वृक्षादनी'। लेकिन यह वनस्पति का ही एक प्रकार है। यूरोप में इसे अलग से और विविध रूपों में उगाया जाता है।

हुआ कि सांचो की भेंट का मुझ पर जो परिणाम हुआ, उसके बारे में फादर मोरेल्लो ने उनसे कुछ चर्चा की होगी।

"आपसे मिलकर मुझे बड़ी खुशी हुई।"—मैंने कहा।

कई घण्टे हम साथ-साथ बैठे। वे अमेरिका के कान्सास राज्य के निवासी थे, इसलिए हमारे अन्दर तुरन्त पडोसी प्रेम जाग उठा।

"अच्छा, मान लीजिये कि कल हम एक मोटरबोट में सैर के लिए चलें और इन आसपास के टापुओं में एक चक्कर लगा दें, तो कैसा रहेगा?"—उन्होंने पूछा।

"वाह, क्या कहने? बड़ा अच्छा रहेगा।"—मैंने कहा।

"तब तो बात पक्की हुई। कल भोजनोपरान्त तुरन्त दोपहर में घाट पर आ जाइये।"

× × ×

मैं पहुँचा। वे मेरी राह ही देख रहे थे। बालाला से वे एक किश्ती लाये थे। खाड़ी से निकलकर कूलियन के किनारे-किनारे हम चले। हमारे सामने छोटे-छोटे टापुओं का एक झुण्ड था, उसे पार कर हम खुले चीनी समुद्र में जा पहुँचे। टापुओं के किनारों पर कदाचित् कहीं नीपा का बना एकआध झोपड़ा दीख जाता। ये सारे टापू कोढ़िस्तान के ही भाग हैं। कुछ लोग यहाँ अलग रहते हैं। हफ्ते में एक बार दवा या खाने की चीजें लेने के लिए संस्थान में चले जाते हैं। बांसों के बहुत-से टट्टर भी जाते-आते नजर आते हैं। उनके मकानों के पास मछली पकड़ने के छोटे-छोटे फन्दे होते हैं।

लौटते हुए कोरन की विलक्षण शोभा ने मुझे मुग्ध कर दिया। सारी लम्बाई में उसकी ऊँची और खड़ी कगारें पानी से अंदर तक पोली हो गयी थीं। समुद्र और वायु का प्रवाह उसकी चट्टानों पर लगातार काम करता ही रहता था, जिससे उनकी सूरत बदलती जाती थी। बड़े-बड़े महावृक्षों ने अपनी सुदृढ़ जड़ों से उनकी मिट्टी को पकड़ लिया था। घिसती चट्टानों और जंगलों की घटा का यह क्रम इस टापू में रमणीय परिवर्तन करता जा रहा था। एक से एक मनो-मुग्धकारी दृश्य उपस्थित करता रहता था। सूर्य-चन्द्र का एक-एक दृष्टिकोण, उस पर से गुजरनेवाले वायु का एक-एक झोंका और गर्जना पर्वत के टेढ़े-मेढ़े रूप की शोभा बढ़ा रहे थे।

"वहाँ चलना चाहते हैं ?"—हडसन ने पूछा।

"जा सकते हैं ?"—मैंने पूछा—"लगता तो बहुत अच्छा है। परन्तु कहीं चढ़ने की जगह नहीं दिखाई देती।"

"ऐसी एक जगह मैंने देखी है, जहाँ चढ़ना बहुत मुश्किल नहीं होगा।"—हडसन ने कहा।

कुछ देर तक हमारी किश्ती किनारे चलती रही। पर्वत की चट्टानें पानी से ऊपर निकलकर सैकड़ों फुट तक ऊपर दीवाल की तरह चली गयी थीं। उनमें तो कहीं पाँव रखने की भी जगह मुझे नहीं दिखी।

"यह आ पहुँचे।"

वह एक सँकरा खिड़की जैसा, गहरा रास्ता था। किन्तु इतना चौड़ा जरूर था कि हमारी किश्ती अन्दर चली जाय। पर्वत की ऊँची दीवालों के बीच से होकर हम करीब पचास गज अन्दर गये। तब एक छोटी-सी खाड़ी मिली। जिस राह से होकर हम अन्दर गये थे, उसे छोड़ वह चारों तरफ से ऊँची-ऊँची दीवालों से घिरी थी।

इस आश्चर्य को देखकर मेरा चेहरा खिल उठा। हडसन ने इन्जन बन्द कर दिया और किश्ती पूर्वसंचित गति से आगे बढ़ी। वे मेरा चेहरा देखने लगे और मेरा भाव समझकर हँस पड़े। बोले : "कहिये, इस सौंदर्य की कल्पना भी हो सकती है ?"

मैंने कहा : "सच है। मैं कल्पना नहीं कर सकता था कि कोई स्थान इतना सुन्दर हो सकता है।"

हमारे मस्तक पर आकाश जितना स्वच्छ और भूरा था, नीचे का जल भी उतना ही स्वच्छ और काँच जैसा पारदर्शक था। तह में सफेद, काले और लाल प्रवालों का एक जंगल ही फैला था। उनकी शाखाओं में काली, सुनहरी, भूरी और लाल मछलियाँ घूमते हुए इन्द्रधनुष के समान निरन्तर क्रीड़ा करती रहीं।

चट्टानों में जड़ें गडाये एक विशाल वृक्ष वहाँ खड़ा था। उसकी शाखाएँ समुद्र पर झुक रही थीं। हम अपनी किश्ती उसके ठीक नीचे ले गये।

"वहाँ देखिये"—हडसन ने कहा।

उनकी बतायी जगह ढूंढ़ने में मुझे कुछ क्षण लग गये। पेड़ की एक ऊपर-वाली शाखा पर एक बड़ा सफेद बंझा (आरकिड) लग रहा था।

"यह पृथ्वी नहीं है।"—मैंने कहा—"स्वर्ग ऐसा ही होता है, ऐसा आपको कहना चाहिए गुरुजी।"

"अभी तो और भी दिखलाऊँगा।"

किश्ती किनारे से दस फुट दूर थी। चट्टान के कारण अब उसे आगे नहीं ले जा सकते थे।

"जल में चल सकते हैं ?"—उन्होंने पूछा।

"जरूर"—मैंने कहा।

"तो जूते निकालकर हाथ में ले लीजिये। यहाँ के पत्थर चाकू की तरह तीखे हैं। बगैर जूते के इन पर नहीं चल सकेंगे।"

किश्ती के छोटे लंगर को नीचे उतारकर वे जल में उतरे। मैं भी उनके पीछे-पीछे हो लिया। किनारे पर पहुँचे। किनारा क्या, सच पूछें तो वह उथले समुद्र का तल ही था। यहाँ की चढ़ाई जरा आसान थी, फिर भी परिश्रम तो होता ही था। वे मुझे टेकरियाँ चढ़ाते हुए ठेठ ऊपर ले गये। बीच-बीच में कुछ समान जमीन भी मिल जाती।

हडसन ने सावधान करते हुए कहा : "यहाँ सँभल-सँभलकर कदम रखें। कई बार समुद्र की धोने की क्रिया नीचे से चलती है। इसलिए जगह-जगह जमीन बहुत पोली है। शरीर का पूरा वजन डालने से पहले जमीन को परख लिया करें। अगर जमीन टूटी, तो ठिकाना नहीं कि आप कहाँ पहुँच जायें। सुनते हैं, एक अमेरिकन फौजी जहाज के कुछ आदमी कोरन टापू पर उतरे थे। वे सब एकाएक गायब हो गये। उनका क्या हुआ, आज तक पता न चला। यह बात अखबारों में छपी थी। एक आदमी भी मुझे मिला था, जो कहता था कि वह भी उस जहाज में था और यह बात सही है। लेकिन जो हो, किन्तु आप सँभल-सँभलकर कदम रखें। अगर वे लोग गायब हो गये हों, तो उन्हें ऐसा ही कुछ हुआ होगा।"

उसने मुझसे कहा कि मुझे चट्टानों को पकड़कर ही चलना चाहिए। पंद्रह-बीस मिनट चलने के बाद मैंने कमर सीधी कर जरा ऊपर जमीन पर नजर

डाली। वहाँ क्या देखा ? मानो आकाश का एक विशाल भूरा टुकड़ा टूटकर नीचे गिर गया और कोरन के जंगलों में जुड़ गया है। हडसन खुश होकर हँस रहा था।

"मैं आपको जो चीज दिखाना चाहता था, वह यही है। है न अद्‌भुत ? और इतनी ऊँचाई पर। यह एक सरोवर है। अभी तक कोई इसका पता नहीं लगा सका कि यह कितना गहरा है। इस टापू पर ऐसे तीन सरोवर हैं।"

उसके किनारे हम पहुँचे। एक विशाल वर्तुलाकार शिला पर बैठकर कोरन के कैलास शिखर पर कैद जल के इस आश्चर्यजनक भण्डार को हम देखने लगे। इस अगाध नीले जल-राशि की गंभीरता में एक प्रकार की भयानकता थी। इस पथरीली निर्जन भूमि पर चारों ओर दृष्टि फेरते हुए मुझे एक प्रकार की कँपकँपी छूटी।

हम किश्ती पर जाने के लिए लौटे। आधे रास्ते में एकदम मैं खड़ा हो गया। कगार के किनारे पर खड़े एक बड़े वृक्ष की समुद्र पर झुकी हुई शाखा पर मेरी दृष्टि गयी।

"क्या बात है ?"—हडसन ने पूछा।

"एक भूरा 'आरकिड'। इतना छोटा मैंने कभी नहीं देखा था। मुझे तो उसे लाना ही पड़ेगा।"—मैं उस ओर उँगली से इशारा करता हुआ बोला।

"इस लालच को छोड़ दो। वृक्ष बहुत पुराना है। कहीं डाली टूट गयी, तो आपकी हड्डियाँ ढूँढ़ने पर भी न मिलेंगी।"

"नहीं, मैं उसे जरूर लूँगा।"

मैं पेड़ पर चढ़ा और उस कोमल आरकिड तक किसी तरह पहुँच गया। उसकी कोमलता और सौंदर्य देखकर मैं मुग्ध हो गया।....नीचे उतरकर मैंने उसे हडसन के हाथ में रख दिया। उसने उसे लेकर खूब गौर से घुमा-फिराकर देखा।

"मुझे लगता है कि यह एक एकदम नयी जाति है। मैंने भी वनस्पति-शास्त्र का थोड़ा-बहुत अध्ययन किया है, पर इस तरह का आरकिड कभी नहीं देखा। मैं इसे मनीला ले जाऊँ ? संभवतः इस जाति का नाम मैं आपके ही नाम पर रखूँ।"

पहाड़ के इन कगारों के नीचे दूर जहाँ हमारी किश्ती पड़ी थी, मैंने अपनी दृष्टि डाली। हृदय की गहराई में कोई चीज मुझे बेचैन-सी कर रही थी। रमणीयता ! जहाँ देखिये, वहाँ चारों ओर रमणीयता और सौंदर्य फैला हुआ था। कूलियन में पुंजीभूत दुःख की पृष्ठभूमि पर यह अद्भुत रमणीयता कितनी उभरी मालूम होती है।

समुद्र द्वारा पर्वत के धोने की जो प्रक्रिया निरन्तर चल रही है, यह सौंदर्य उसीमें से निर्माण हुआ है। धुले हुए विविध भागों पर भिन्न-भिन्न कोणों से सूरज की किरणें गिरकर और प्रतिबिम्बित होकर रंगों का यह रास दिखा रही थीं।

खँडहर बने मठों, मंदिरों और महलों के रमणीय दृश्य मेरे मन की आँखों के सामने खड़े हो गये। वहाँ भी विनाश में सौंदर्य छिपा होता है। वही नियम मनुष्य को क्यों नहीं लागू होता ?. खण्डित मनुष्यों के अंदर से सौंदर्य क्यों नहीं प्रकट हो सकता ? केवल कुरूपता ही क्यों प्रकट हो ? मेरे मन में चल रहे इस विचार-मन्थन का उत्तर मुझे मिल गया।

मैं सिद्ध करने लायक कामों की तलाश करूँगा और जीवन को शून्य बनाने का प्रयास करनेवाले इस कालचक्र की गति को निरर्थक साबित कर दूँगा। मैं सौंदर्य का निर्माण करूँगा। अपने इस भूरे आरकिड जैसा एक रमणीय उद्यान मैं खड़ा कर दूँगा।

इस नवीन संकल्प से उत्साहित हो मैं कूलियन पहुँचा। अब तक मेरा संकल्प केवल इतना ही था कि मैं अपने मकान को स्वच्छ और सुविधायुक्त करूँगा और जमीन को साफ कर लूँगा। अब मैं अपने मन में ऐसे चित्र खड़े करने लगा कि इसे भविष्य में कितना सुन्दर बनाया जा सकता है। मैं किनारे पर चला गया और वहाँ बैठ अपनी कल्पित योजनाओं के नक्शे बनाने में जुट गया। चौपाटी की ओर नारियल की एक सुन्दर कतार इस प्रकार खड़ी करूँगा कि उसके सीधे पतले तनों के बीच से समुद्र और कूलियन से दूर के टापुओं को देखा जा सके। सूर्य के प्रखर ताप और वायु की गरम लपटों से पहरेदार की भाँति खड़े हो वह मेरी रक्षा करेगी। झाड़ियाँ काटने का प्रारंभ तो हम कर ही चुके थे। अब इन्हें एकदम उखाड़ फेंकेंगे। अपने नक्शे

में मैंने वगीचे के ठीक वीच एक गुलमोहर का पेड़ खड़ा करने के लिए चिह्न वनाया। उसे ऐसी जगह पर लगाऊँगा कि सवेरे उठते ही मेरी आँखें छाते के समान उसकी लाल चोटी पर ही पहुँचें। मकान और समुद्र के वीच आम के दो पेड़ थे। मैंने इन्हें वैसे ही रहने देने का तय किया। वाड़ को मैंने इस तरह वेलों से ढँक देने का निश्चय किया कि वहाँ लाल और पीली जवाकुसुम की केवल झाड़ी ही दिखाई दे। चौक के एक कोने में तेज सुगन्धवाली और पुराने हाथीदाँत के समान स्निग्ध श्वेत फूलोंवाली चमेली की वेलें लगाऊँगा। फिर टॉमस और मैं टेकरी के पीछे के जंगलों में घूमकर यहाँ उगाये जाने योग्य आरकिड के गुच्छ पुष्प ढूँढ़कर ले आयेंगे और उन्हें टोकरियों में लगाकर पोर्च में लटका देंगे। इनमें मुख्य भाग में मेरा भूरा गुच्छ पुष्प होगा। पोर्च के किनारों पर जीवन की प्यासी वे अमरवेलें झुला दूँगा, जिन्हें जमीन के आधार की जरूरत नहीं होती और जो केवल वायु से अपना पोषण खींचती पेड़ों से लिपटी रहती हैं। नाजुक होने पर भी उनमें वड़ा जीवट होता है, इसीलिए उन्हें अधिक आधार की जरूरत नहीं होगी। कुछ तारों से उन्हें वाँधकर रखा जा सकेगा। उसकी गहरी हरी पत्तियाँ मुझे ठंढक का अनुभव कराती रहेंगी।

टापू के भीतरी भागों के जंगलों में अवश्य ही ताड़ की अनेक जातियाँ होंगी। हम दोनों टोकरियाँ लेकर जायेंगे और वहाँ से इनके छोटे-छोटे पौदे उखाड़ लायेंगे और उन्हें सोने के कमरों की खिड़कियों के सामने लगा देंगे। ग्रीष्म की गरम रातों में उसकी हरी-हरी डालियाँ डोलेंगी और उनके वीच से गुजरने-वाली हवा ऐसी ध्वनि करेगी, मानो सूखी प्यासी जमीन पर वर्षा की वूँदें गिर रही हों। मकान के वाहर की ओर दीवालों और चवूतरों पर विपुल और भड़कीले लाल-भूरे फूलोंवाली भवन-वल्लरियाँ चढ़ा दूँगा। काँसे के रंग के फूलों-वाली वह वेल भी लगाऊँगा, जिसे 'सिंगापुरी' कहा जाता है। इस वगीचे में मैं लाल-लाल पँखुड़ियोंवाले फूलदार 'पॉइण्टसेटिया' भी लगाऊँगा, जो पूरा पाँच फुट उँचा होगा और सारे वगीचे को जगमगा देगा।

मकान का मुँह भी पलट दूँगा, अर्थात् रास्ते की तरफ जो भाग है, वह पिछवाड़ा वन जायगा। चमेली की वाड़वाला यह मैदान हमारी साग-सब्जी-वाली वगीची वन जायगा।

यहाँ तक मैं पहुँचा, तब तक टॉमस मेरे लिए व्यालू लेकर आ पहुँचा। शाम कैसे हो गयी, मुझे पता ही न चला।

"देख टॉमस, इस मकान को सुन्दर सजीला बनाने के लिए हमें क्या-क्या करना है, सब जरा बैठकर सुन ले।"

वह खड़ा रहा और प्रत्येक पेड़, पौदे और झाड़ी का मैं उत्साह के साथ जो वर्णन करता जा रहा था, उसे सुनने लगा। मैं बोलता ही चला गया। एकाएक उसने अपने शरीर का भार एक पैर पर से दूसरे पैर पर डाला, तब मैंने उसके चेहरे को देखा। वह चिन्तातुर दिखा। मैं रुक गया और पूछा :

"क्यों, क्या बात है ?"

"जी साहब, मुझे लगता है कि सेम की तरकारी तो जलकर राख हो गयी होगी।" उसके बालमुख पर विषाद था। मुझे हँसी आ गयी। "सेम की तरकारी जल गयी ?" मेरे पिताजी ने जैसा संसार रचा था, वैसा संसार जब मैं यहाँ रचने जा रहा हूँ, तो इसकी सेम की तरकारी जलने लगती है। परन्तु टॉमस की भी तो अपनी एक दुनिया थी न ? और इस दुनिया में सेम की तरकारी का भी स्थान था।

"अरे भलेमानुस ! मैं जब से यह बकवास कर रहा हूँ, सेम तभी से क्या चूल्हे पर ही थी ?"

"जी, उससे भी पहले से।"

"तो जा-जा, पहले उसे सँभाल।" उसने जाकर देखा। सेम का सारा पानी जल गया था, परन्तु सब्जी अभी जलने नहीं लगी थी। तब वह बहुत खुश हुआ।....मैं पुनः अपने खेल, काम और कल्पनाओं में डूब गया। अभी तो ये तीनों साथ-साथ चल रहे थे।

मकान का मुँह फेर देने के बाद बैठने-उठने की मंजिल चौपाटी की ओर बन जायगी। मकान और चौपाटी के बीच दूब का एक लम्बा मैदान आ जायगा। मतलब यह कि इस स्थान की सूरत ही बदल जायगी। बहुत देर तक मैं इन विचारों में ही डूबा रहा। इस तरफ का छोटा परदा हटाया और वहाँ एक नया परदा लगाया—अर्थात् केवल कागज पर और कल्पना में ही। मुझे एक कल्पना और सूझी कि खिड़कियों के नीचेवाली दीवाल और नीची कर

दी जाय। इससे खिड़कियों को यदि ऊपर चढ़ा दिया जाय और दीवालें हट जायँ, तो कमरे की तीन वाजुएँ लगभग पूरी तरह से खुली हो जायँगी। मैंने यह भी सोचा कि मकान के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक एक लम्वा हॉल वना लिया जाय। उससे सटा एक सोने का कमरा होगा। मुख्य मकान के ठीक नीचे टॉमस का कमरा होगा। उसे एक स्वतंत्र कमरा मिल जायगा। वहाँ उसका अपना राज होगा। इस कल्पनामात्र से वह खुश हो गया। झाड़-बुहारकर साफ की हुई जमीन के समान साफ दिखनेवाली फर्श उसकी फिलीपाइन रुचि को अधिक अच्छी लगेगी। ऊपर की मंजिल की अपेक्षा वहाँ अधिक ठंढक रहेगी। कपड़े धोने के लिए एक धोविन रख लेंगे। इससे कोठार के छोटे कमरे को छोड़कर शेप सारा भाग उसीके अधीन रहेगा। उसे वह अपनी इच्छा के अनुसार सजायेगी।

सोने के कमरे से सटा एक स्नान-घर वनाने की कल्पना भी मैंने चित्रित की थी। यह केवल शेखचिल्लीपन मालूम पड़ता था। फिर भी मैंने उसे वनाये रखा। हॉल से जरा आगे और सोने के कमरे के पीछे रसोईघर को जोड़नेवाला दरवाजा भी मैंने वना दिया।

यह सव पूरा हुआ, तव तक काफी रात हो गयी थी। साथ-साथ मेरी उमंगें भी खूव वढ़ गयी थीं। अपने मकान को मैं ऐसा वना दूँगा, जिससे वह संपूर्ण टापू को निखरा देगा।

दूसरे दिन सुवह से ही हमने अपना काम शुरू कर दिया था। टॉमस को यह कल्पना कुछ नहीं जँची कि सारी जमीन पर घास उगायी जाय और पेड़-पौदों तथा वेलों की इस तरह भीड़ कर दी जाय। वह सच्चा फिलीपाइन था। वह चाहता था कि मकान के आसपास की जगह एकदम साफ-सुथरी और हमेशा मैदान की तरह खुली होनी चाहिए। फिर भी अपनी शक्तिभर मदद करने के लिए वह खुशी से तैयार रहता।

हमने सफाई का काम शुरू कर दिया। कूड़ा-करकट वेहद था। इस कारण हमारा काम धीरे-धीरे चल रहा था। जमीन वहुत अच्छी किस्म की नहीं थी। मैंने उसे अच्छी उपजाऊ वनाने का निश्चय कर लिया था।

डॉ० विन्टन की तरफ से एक चिट्ठी आयी। काम वहुत आ जाने के कारण वे आ नहीं सके थे। फिर भी शीघ्र ही आयेंगे, आदि लिखा हुआ था। उन्हें

आने में एक सप्ताह लग गया। तब तक आँगन में खड़ी सारी घास, झाड़ियाँ वगैरह हमने उखाड़ डालीं। जमीन साफ-सुथरी हो गयी थी। अब मकान के अन्दर खड़े-खड़े समुद्र और चौपाटी भी देख सकते थे।

"यह तो खूब कर डाला नेड!"—उन्होंने देखकर कहा—"आप दिनभर काम में लगे रहते हैं न?"

मैंने उन्हें अपनी योजनाएँ सुना दीं, पर इतने से उन्हें सन्तोष नहीं हुआ। वे तफसीलों में उतरे, नकशा देखने लगे। लगभग एक भक्त की आतुरता से मैं उनकी ओर देखता रह गया। यह सब पूरा करना मेरे लिए जरूरी था और उसमें उनकी मदद की आवश्यकता थी। सब देखने के बाद वे बोले :

"यह तो एक जबरदस्त चीज है भाई! आपकी यह वाड़ी इस टापू के अन्दर सबको दिखाने लायक चीज बन जायगी। फिर इसमें ऐसी एक भी बात नहीं, जो न बन सकती हो। आप जब इसे पूरी कर लेंगे, तो मुझे लालच होगा कि हम अपने मकानों की अदला-बदली कर लें।"

स्नानघर के विषय में उन्हें पूछते हुए मुझे कुछ संकोच हुआ। मुझे निश्चय था कि यहाँ वह एक असंभव वस्तु है। फिर भी हिम्मत करके मैंने पूछ ही लिया :

"आसपास कहीं जल मिल सकता है? इस मकान में हम स्नानघर भी बना सकें, ऐसी कुछ व्यवस्था हो सकती है?"

"जरूर, इसमें शक ही क्या है? आपका नकशा देखा, तभी मेरी नजर उस पर भी गयी। पानी तो यहीं नजदीक है, क्या यह अभी आपको पता ही नहीं है? इस रास्ते पर आगे कुछ ऊँचाई पर एक बड़ा झरना है। आपके लिए टॉमस शायद वहीं से पानी लाता होगा। इस झरने को ऊपर से थोड़ा मोड़कर उसमें से आप नल ले सकते हैं। नीचे से लेना उतना सुरक्षित न होगा, क्योंकि वहाँ धोबिनों ने धोबी-घाट बना रखा है। आइये, हम देख ही लें।"

झरना मिल गया। वह एक टंकी-सी थी। जैसा कि डॉ० विन्टन ने कहा था, उसके नीचे की तरफ धोबिनें कपड़े धो रही थीं।

"देखा, यहाँ काफी पानी है। किन्तु आपके लॉन (दूब के मैदान) की जरूर कुछ चिन्ता हो रही है। उसकी दूब सूख जायगी और फिर उगेगी ही

नहीं। फिर भी आप इस झरने को नीचे से दूसरी वार रोककर इसके पानी को मोड़कर वहाँ ले जा सकते हैं। स्रोत काफी वड़ा है। धोवी-घाट के लिए भी पानी मिल सकता है और आपके वगीचे के लिए भी।

रॉविन्सन क्रूसो* की मैं होड़ कर रहा हूँ, इस प्रकार किसीको शंका आने का कोई कारण नहीं था। सच पूछिये तो दूसरों को ही मुझसे ईर्ष्या हो सकती थी। क्योंकि मुझे खूब सहयोग मिल सकता था। फिर भी नवीन जीवन गढ़ने में मैं दूसरे क्रूसो के उत्साह से भिड़ गया और टॉमस मानो मेरा फ्रायडे वन गया। हम खूब परिश्रम करते। कभी-कभी नागा भी हो जाता। हमने घर के परदे उतारना शुरू किया, तो देखा कि उनके स्टैण्ड लगभग टूट गये हैं। दीमक ने उन्हें अन्दर से एकदम खोखला कर दिया था। इस टापू में दीमक का उपद्रव वहुत है। वह हर चीज को खा जाती है। मोटी-से-मोटी इमारती लकड़ियों को खाकर वह मधुमक्खियों की भाँति अन्दर से खोखली और कागज की तरह पतली वना देती है। खुशी की वात थी कि वह नीपा को नहीं खाती। इसलिए हमारा छप्पर सुरक्षित था।

नारियल तथा ताड़ की पत्तियों को गूँथना हमने सीख लिया। टॉमस को यह कला कुछ-कुछ अवगत थी। इसके अलावा हमने कुछ ऐसे स्त्री-पुरुषों को वुलाया, जो इसके जानकार थे और हमें सिखाने के लिए राजी थे। उन्हें मजदूरी लेने के लिए राजी करना आसान नहीं था। किन्तु जव उन्हें निश्चय हो गया कि मैं मजदूरी दे सकता हूँ, तव वह लेना उन्होंने स्वीकार किया।

× × ×

इस प्रकार अव दिन वीतने लगे। उनमें कोई नवीनता नहीं रही। सप्ताह गिनते-गिनते महीने वीतने लगे। अभ्यस्त समय-पत्रक के अनुसार हमारा जीवन-प्रवाह वह रहा था। मनीला से मेरे लिए नियमित रूप से सामान आता

---

* डेनियल डीफो द्वारा लिखित एक उपन्यास का नायक। समुद्र में जहाज डूव जाने के कारण वह एक निर्जन टापू में जा फँसा था। वहाँ उसने अकेले हाथों अपने एकाकी वन-जीवन को मंगलमय वना लिया था। आगे चलकर उसे वहीं एक आदिवासी लड़का मिल गया, जिसका नाम उसने 'फ्रायडे' रखा था। वह भी उसका मददगार वन गया।

रहता । विन्टन ने टॉमस के बारे में जो भविष्यवाणी की थी, वह सही सिद्ध हुई । यह लड़का बहुत अच्छा निकला । आसपास की स्त्रियों से और मेरी मदद से वह अच्छा खाना पकाने लगा । मैं खास तौर पर अमेरिकन पदार्थ बनाने में उसकी मदद करता । मेरी मदद से वह केवल भोजन बनाना ही नहीं सीखा, बल्कि अब नित्य नयी चीजें बनाकर खिलाने और चकित करने लगा । धीरे-धीरे हमारा भोजन अमेरिकन और फिलीपाइन का मिश्रण बन गया । कपड़े धोने के लिए मैंने एक धोबिन रख ली थी । अर्थात् डॉ० विन्टन मुझे पेन्शन दे सके, इसी कारण यह सब हो सका । घर पर टॉम को मैंने लिख दिया कि अब मुझे वहाँ से खर्च भेजने की जरूरत नहीं है । (हमारे पत्र टापू से रवाना करने से पहले जन्तुनाशक द्रव्यों द्वारा शुद्ध कर लिये जाते थे ।) फिर भी बड़े दिनों (दिसम्बर) के अवसर पर टॉम ने दो सौ डालर भेज ही दिये । इससे मैंने कुछ सजावट का और स्नान-घर का सामान मँगवा लिया । रसोई-घर में एक मोरी और स्नान-घर में एक फव्वारा नल लगवा लिया । साथ ही हमने एक सेप्टिक टंकी भी खुद ही बना ली । नहाने के लिए हमें कभी पानी गरम नहीं करना पड़ता । यह काम यहाँ कुदरती गरमी ही कर देती ।

बगीचे का काम धीरे-धीरे चल रहा था । फिर भी एक वर्ष में हमने काफी उन्नति कर ली । कई दिन तक टॉमस और मैं हाथों में बालटियाँ लेकर पड़ोस के जंगलों में जाते और वहाँ से छोटे-छोटे पेड़ और पौदे उठाकर लाते । जमीन खोदकर बालटियों में भरकर दो-दो बालटियों की कावड़ बनाते और उसे कन्धों पर उठाकर लाते । काम की गति धीमी थी । फिर भी मेरा सारा समय काम में ही लगा रहता । मनीला से मैंने रासायनिक खाद और हमारे जलवायु में उगने लायक घास के बीज मँगवाये । पोर्च से लेकर नारियलों की छाया तक एक सुन्दर हरा-भरा कालीन तैयार हो रहा था । पेड़ अभी अच्छे बड़े नहीं थे । इसलिए उनकी छायाएँ छोटी थीं । परन्तु सब पौदे जोरदार थे, उन्होंने जड़ें पकड़ ली थीं । जवाकुसुम भी लग गयी थी और पोर्च के दोनों ओर उसकी बेलें चढ़ने लगी थीं । मेरा गुलमोहर भी बढ़ने लगा । माँ के प्रेम से मैं उसकी परवरिश कर रहा था । और अमरबेल तो इतनी बढ़ी कि सवेरे जब मैं पोर्च में नाश्ता करने के लिए बैठता, तब वह तेज धूप से मुझे बचाने लगी ।

आम के उन दो कद्दावर पेड़ों के नीचेवाली और आसपास की तमाम झाड़ी हमने साफ कर डाली। इससे समुद्र का दृश्य बहुत सुन्दर दिखने लगा। ऐसा लगता, मानो इन दो पेड़ों के तनों की चौकट में कोई तस्वीर लग रही है। ये वृक्ष मेरे घर की खास शोभा थे। इनकी छाया में हमने कुछ कुरसियाँ रख दीं और उन्हें सफेद रोगन से रंग दिया। इतना हो जाने पर डॉ० विन्टन ने एक आदमी को भेजकर उन पर दवा छिड़कवा दी और उन्हें छूत से मुक्त कर दिया। नीरोगी मिलनेवालों के लिए इसी प्रकार की कुछ कुरसियाँ अलग रखवा दीं। वे उन्हीं पर बैठते। मैं अथवा टॉमस कभी इनको नहीं छूते। और दूसरे रोगियों से भी कह देते कि वे इन कुरसियों को न छूएँ।

चौपाटी पर भी मैंने कुछ बेंच रख दिये। भोजन करने के बाद रात में मैं वहाँ बैठकर तारों को देखा करता। कोरन के शिखरों के पीछे से ऊपर आनेवाले चन्द्र को देखते बैठना मुझे बड़ा अच्छा लगता। पिघली चाँदी की भाँति इन टेकड़ियों पर चाँदनी फैल जाती। मैं एक नयी दुनिया में रहने लगा। लगभग आदिकाल के मनुष्य के समान मैं प्रकृति की गोद में सीखने लगा। जो रात में नहीं दिखता, उसे दिन में देखता और जो दिन में नहीं दीख पड़ता, उसे रात में देखकर अपने ज्ञान की वृद्धि करता रहता। इस प्रकार एक के बाद एक महीने बीतने लगे। ♦♦♦

कूलियन आये दो वर्ष हो गये, तब एक दिन टॉम की तरफ से माँ की मृत्यु के समाचार मिले। वह कभी सशक्त तो थी ही नहीं। फिर भी अंतिम वर्षों में वह और भी क्षीण हो गयी। बहुत वृद्ध तो नहीं कही जा सकती थी। साठ के करीब पहुँची होगी। उस बगैर घर की मैं कल्पना नहीं कर सकता था।....

इसके अतिरिक्त टॉम ने लिखा कि "मैं तेरे पास वे भूरी तश्तरियाँ भेज रहा हूँ, जो तुझे अच्छी लगती थीं और जिन्हें माँ ने तेरे लिए बहुत सँभालकर रखा था।

ये तश्तरियाँ मुझे खींचकर भूतकाल की सृष्टि में ले गयीं। माँ को वे उसके विवाह में भेंट में मिली थीं। इनकी स्मृति मेरे दिमाग में सदा ताजी रहती। क्योंकि इन्हें हमारे माता-पिता के विवाह के दिन या किसीकी वर्ष-ग्रन्थि पर ही हम निकालते। वे अमेरिकन चीनी-मिट्टी की थीं। उनके सिरे भूरे और किनारे सुनहले थे। बीच में लाल और गुलाबी रंगों के फूल बने हुए थे। इनसे अधिक प्रिय चीज टॉम मुझे नहीं भेज सकता था। हाँ, इस लम्बे प्रवास में सही-सलामत आ जायें, तो काफी है।

मैं फिर पत्र पढ़ने लगा। धन्धे में बड़ी मन्दी आ गयी थी। किन्तु जैसा कि सुन रहे थे, यदि कहीं यूरोप में लड़ाई छिड़ जाय, तो अमेरिका में चारों तरफ तेजी आने की संभावना है, ऐसी चारों ओर अफवाहें थीं। पत्र के अंत में लिखे वाक्यों ने मुझे चिंता में डाल दिया : "लोगों का अनुमान है कि इस लड़ाई से हमारा देश अलग नहीं रह सकेगा। ठीक है, अगर ऐसा हुआ, तो मैं उसमें शरीक हो जाऊँगा।"

इससे मेरे चित्त को बड़ा आघात लगा। परिवार की चिन्ता हो आयी। क्रान्ति से लेकर आज तक हर लड़ाई में हमारे परिवार ने एक-एक आदमी का बलिदान दिया है। मैं कोई शान्तिवादी तो नहीं था। फिर भी मेरे मन में

यह इच्छा जागी कि टॉम बाहर रहे, तो अच्छा। लड़ाई···मुझे अपने चकत्ते याद आ गये। मेरे कोढ़ का कारण लड़ाई ही तो है। हाँ, इतनी बात जरूर है कि यूरोप में टॉम को इसका डर नहीं है।

मैं आया उसी हफ्ते से मेरे उपचार नियमित रूप से शुरू हो गये थे। विन्टन ने मुझे समझा दिया था कि रोगियों के जत्थे बना दिये जाते हैं और हर जत्था हफ्ते में एक बार दवाखाने में जाँच के लिए जाता है। पुरुषों और स्त्रियों के दवाखाने अलग-अलग थे। स्वास्थ्य-विभाग के अधिकारी ने एक नयी चिकित्सा-पद्धति शुरू की थी। किन्तु उससे इलाज करवाना अनिवार्य नहीं था। यह पद्धति थी चालमोगरा (Hydno-carpus या तुवरक) के तेल के इन्जेक्शन की। मुँह द्वारा यह दवा लेने से चक्कर, कै वगैरह आते हैं। इन्जेक्शन से यह नहीं होता। परन्तु बीमार इन्जेक्शन के नाम से ही डरते थे। इसलिए उन्हें पुरानी पद्धति से इलाज करवाने की छूट थी। मैंने नयी पद्धति को पसन्द किया था।

मैं पहली बार दवाखाने में गया, तब की बात है। वह एक छोटा-सा लकड़ी का मकान था। जब मैं पहुँचा, तो दरवाजे में तथा अन्दर मनुष्यों की बड़ी भीड़ थी। हर बीमार को अपनी बारी की राह देखनी पड़ती। इस बीच हम एक-दूसरे के साथ परिचय कर लेते। कोढ़िस्तान और उसके निवासियों की बात से प्रारंभ होता। फिर दूसरी बातें आतीं। अमेरिका की बातों में सबको रस आता। किन्तु वे बड़े विनय के साथ पूछते और जब कभी मुझे बोलने की इच्छा होती, तो मेरी बातें बहुत ध्यानपूर्वक सुनते।

हमारा उपचार डॉ० क्रिसोल्गो करते। यह डॉ० विन्टन के एक सहायक थे। इनके साथ एक प्रशिक्षण प्राप्त नर्स भी मदद के लिए रहती। उस छोटे-से कमरे की दीवालों से सटी लकड़ी की कुछ कुर्सियाँ और लकड़ी की दो मेजें भी रखी थीं। एक मेज के सामने एक नर्स बैठती। उसके पास बीमारों के कार्ड रहते, जिनमें उनके नाम और बीमारी का विवरण लिखा रहता था। जब मैं पहुँचा, तो मेरा कार्ड निकालकर तैयार रखा था। डॉक्टर तथा नर्स ने भी मेरा नाम लेकर प्रसन्नवदन से मुझे बुलाया। दवा के पानी से हाथ धोते हुए डॉ० क्रिसोल्गो ने मुझे अपनी वर्तमान स्थिति के बारे में बहुत से सवाल पूछे।

"मैंने सुना है मि० फर्ग्यूसन कि आप अपना मकान और जमीन सुधारने में भिड़े हैं। किसी दिन मैं भी देखने के लिए आऊँगा। डॉ० विन्टन उसकी बड़ी तारीफ कर रहे थे।"

इसके बाद कूलियन आने से पहले मैंने जो-जो इलाज करवाया था, उसकी विस्तृत जानकारी पूछी और उसे नोट कर लिया।

"हर मंगल को इस समय आना आपको अनुकूल होगा मि० फर्ग्यूसन ?"—नर्स ने पूछा।

मेरी अनुकूलता ! मुझे दूसरा काम ही क्या था ? सामनेवाले आदमी की सुविधा-असुविधा का इतना अधिक ध्यान रखनेवाले लोग मेरे कहीं देखने में नहीं आये। काम करनेवालों (स्टाफ) की तुलना में बीमारों की संख्या बहुत अधिक थी। फिर भी वे मुझसे पूछ रहे थे कि मुझे कौन-सा दिन और समय अनुकूल होगा।

मैंने कहा : "पूरी तरह से अनुकूल होगा।"

डॉ० क्रिसोल्गो ने कहा : "ये इन्जेक्शन हम मांस में (इन्ट्रा-मस्क्यूलर) लगाते हैं। किन्तु दुःख की बात तो यह है कि कितने ही रोगी किसी प्रकार का उपचार नहीं लेते। अभी तक हमने इसे अनिवार्य नहीं किया है। किन्तु मि० फर्ग्यूसन, आप तो एक समझदार पुरुष हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप इन्हें चिन्तापूर्वक चालू रखेंगे। यह सच है कि अभी यह उपचार बिलकुल नया है। इसलिए इसके परिणाम के विषय में निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन हम सबको उससे बड़ी आशा है।"

मैंने वचन दिया कि मैं नियमपूर्वक आया करूँगा।

मुझ पर इन्जेक्शन की प्रारंभिक प्रतिक्रिया (रिएक्शन) अधिक नहीं हुई। सूई चुभाना तो किसे अच्छा लगता है ? किन्तु लगाने के बाद कोई अधिक दर्द नहीं हुआ। कई लोगों को इन्जेक्शन के बाद बड़ी गरमी होती है और चक्कर भी आते हैं, लेकिन सौभाग्य से मुझे यह कुछ नहीं हुआ। परन्तु जब मैं जाता, तब इस बात की बारीकी से जाँच करता कि दूसरों पर इसका परिणाम क्या हो रहा है। दूसरे बीमारों में भी यह कुतूहल मैंने पाया। सूई लगवाते समय चेहरे पर प्रकट होनेवाले भावों को देख मैं कल्पना करने लगता कि उनके दिलों में

क्या-क्या हो रहा होगा। उपचार के विपय में वे क्या सोच रहे होंगे, वगैरह सोचता। जो दुःख आ पड़ा है, उसे सहना ही है—ऐसा वे सोच रहे हैं या उन्हें अच्छा हो जाने की आशा भी है ? कुछ समय ये सुइयाँ लगवा लें, फिर अच्छे होकर घर पर जायँगे और वापस सवसे मिल सकेंगे, ऐसे कुछ सपने इनके दिलों में होंगे ?

हमारा काम ज्यों-ज्यों पूरा होने को आया, त्यों-त्यों टॉमस ने और मैंने अपने श्रम का समय कम करना शुरू कर दिया। वाइविल में सृष्टि की उत्पत्ति-वाला एक पर्व है। उसके पहले अध्याय के रहस्य का अव मुझे अनुभव होने लगा। भगवान् सृष्टि की रचना करते गये और जैसे-जैसे रचना अच्छी होती गयी, भगवान् सन्तोप अनुभव करने लगे। मैं कह सकता हूँ कि मेरी भी यही स्थिति थी।""यह स्थान जितना मेरा था, उतना ही टॉमस का भी था—यह वात उसके दिल में अंकित करने में मुझे कुछ प्रयास करना पड़ा। किन्तु अन्त में वह भी यह मानने लगा। वाद में तो उसे अपने इस घर से वड़ी ममता हो गयी और वह अपने मित्रों को वुलाकर उन्हें अभिमानपूर्वक यह सव दिखाने लगा।

कूलियन के दो वर्ष वाद टॉमस का शरीर तेजी से वढ़ने लगा। यद्यपि परीक्षणों में तो यही प्रकट होता रहता था कि उसके शरीर में कोढ़ की छूत के चिह्न हैं, किन्तु रोग के वढ़ने के कोई चिह्न नजर नहीं आते थे। केवल उसके चेहरे पर एक चकत्ता था, जो मुश्किल से दीख पड़ता था। दो चकत्ते पीठ पर थे। इन चकत्तों और परीक्षणों की रिपोर्टों को छोड़ दें, तो वह एक तन्दुरुस्त खूवसूरत लड़का था। परिश्रम उसके लिए लाभदायक था। अव वगैर मेरी मदद के वह घर का सारा काम-काज खुद कर लेता था।

× × ×

गरमी का मौसम समाप्त हो रहा था। एक दिन मैं पोर्च में वैठकर जँभाइयाँ ले रहा था। टॉमस डाक लाने गया था। मैं उसके लौटने की राह देख रहा था। टापुओं के वीच घूमनेवाले स्टीमर का भोंपू अभी सुनाई पड़ा था। वगीचे का दरवाजा खुलने की आवाज आयी। मैं समझा कि टॉमस आ गया और मैंने उत्सुकता से ऊपर देखा। किन्तु वह टॉमस नहीं था। एक ऊँचा, दाढ़ीवाला अपरिचित आदमी दीखा। अमेरिकन जान पड़ता था, सीढ़ियों के पास तक आकर खड़ा हो गया और मेरी तरफ देखने लगा।

"मुझे नहीं पहचाना न ?" मुझे आवाज तो परिचित-सी लगी। अभी मैं नाम याद कर ही रहा था कि इतने में उसीने कहा :

"मैं वॉव—वॉव सेलर्स हूँ।"

"वॉव सेलर्स ! हे भगवन्, तू यहाँ कैसे ?—यहाँ कूलियन में। कहीं बीमार के रूप में तो नहीं भेजा गया है न ?"

"नहीं भाई, मैं तो तुझसे मिलने आया हूँ।"

"वॉव, यह तो तूने 'भयंकर' अच्छा किया। आ-आ। वह देख, उस आम के पेड़ के नीचे मिलनेवालों के लिए कुछ कुरसियाँ रखी हैं। उनमें से एक ले आ।"

"मुझे कोई डर नहीं है। मुझे तो तुझसे ईर्ष्या होती है।"

मैं चौंका। वॉव खूब बढ़ गया था। मुझसे भी अधिक वह मोटा हो गया था। ऊँचा और भारी-भरकम ! मेरा वजन भी कम नहीं था। उस समय पूरा १८५ पौण्ड। वह दीखता तो तन्दुरुस्त था, पर उसके कपड़े मैले-कुचैले थे।

"तुझे मुझसे ईर्ष्या हो रही है। तुझे मालूम नहीं कि मैं कोढ़ी हूँ ?"

"जानता हूँ। लेकिन मैं भी एक प्रकार का कोढ़ी ही हूँ। मैं एक ऐसा आदमी हूँ, जिसका न कोई स्वदेश है, न स्वजन। ऐसा लगता है न कि मैं पागल की तरह बोल रहा हूँ ? अच्छा, समझ ले कि पागल ही हूँ या पागल बनने की तैयारी में हूँ। बात यह है कि मैंने शादी कर ली है और बाल-बच्चे-वाला बन गया हूँ। पुलिस की नौकरी में था, तो एक लड़की के संपर्क में आ गया। अर्थात् वह यहीं की, फिलीपाइन्स की थी। सुन्दर थी। उससे प्रेम हो गया। हमारी शादी भी हो गयी। मेरी पत्नी एक अच्छी, समझदार औरत है। मेरी नौकरी की अवधि पूरी हो जाने के बाद मैंने इलोयलों में एक होटल का धन्धा शुरू किया। किन्तु वह ठीक नहीं चला। मेरी पत्नी के रिश्तेदार प्रतिष्ठित फिलीपीन हैं, पर उन्होंने मेरा त्याग कर रखा है। कमाई की कोई सूरत नजर नहीं आती। हमारे पाँच बच्चे हैं। मैं अपनी पत्नी को चाहता हूँ और मानता हूँ कि वह भी मुझे अभी तक मानती है। किन्तु तू जानता है कि फिलीपाइन्स के लोग कितने कुटुम्बवत्सल होते हैं। हमारी दुर्दशा से उसका दिल टुकड़े-टुकड़े

हो रहा है। उसकी हिम्मत टूटने लगी है। मुझे लगता है कि मैं उसे छोड़कर यदि अपने देश चला जाऊँ, तो शायद उसकी हालत सुधर जाय। किन्तु ये बच्चे भी तो हैं। वे मेरे भी तो हैं। इन सब बातों का विचार करता हूँ, तो दिमाग चक्कर खाने लगता है।"

बॉब तीन दिन रुका। विन्टन ने बालाला में उसके रहने का प्रबंध कर दिया। रोज सवेरे जल्दी वह ताजा होकर आता। एक थैले में अपने खाने की चीजें ले आता और हम बीते दिनों की बातें करते रहते।

पहले दिन का बॉब मेरा पुराना बॉब न था। वह बिलकुल हताश मालूम पड़ रहा था। उसके मुँह पर चिन्ता और आँखों में दुःख झलकता रहा।

"नेड, जब पहले-पहल तुझे सच्ची बात का पता चला, तो तूने उसे कैसे सहन किया ?"

"बिल टॉमसन और मेरे भाई ने मुझे आत्महत्या से बचाया। उन्होंने मुझमें आशा और विश्वास रखा। उन्हें मैं कैसे धोखा दे सकता हूँ ?"

मैंने उसे बिल के शब्द कहे : "उसने कहा था कि अब कोई चारा नहीं, गोली खानी ही है, तो पीठ पर क्यों, सीधे सीने पर क्यों न खायें ?"

"तेरे अन्दर इतनी हिम्मत है नेड ?"

"वह तो तुझमें भी है।"—उसकी आँखों में तेज आया। "क्या तुझे सचमुच ऐसा लगता है नेड ?"

दिनभर फिर उसने यह बात नहीं निकाली। उसके बाद वह बहुत कम बोला। दूसरे दिन तो वह बिलकुल बदला हुआ आदमी मालूम पड़ा। उसके कदमों में फुर्ती आ गयी।

"नेड, मैं नये सिरे से जीवन का प्रारम्भ करूँगा। वेंगुएट प्रदेश में एक छोटी-सी सोने की खान है। संभवतः मैं उसमें दाखिल हो जाऊँ। बाद में अपने परिवार को भी वहाँ बुलवा सकूँ। वह एक सुन्दर प्रदेश है। मेरी पत्नी को भी वहाँ अच्छा लगेगा—खास कर जब मैं वहाँ कुछ कमाने लगूँगा।"

"बॉब, प्रारंभ में तुझे कुछ पूँजी की जरूरत तो होगी ही। मुझे थोड़ी मदद करने दे। मुझे कुछ आय है और उसकी जरूरत मुझे नहीं होती।"

"तेरे पैसे मैं ले नहीं सकता।"

"क्यों नहीं ? इससे मुझे कितना सन्तोष होगा !"

"यदि ऐसा ही तेरा खयाल हो, तब तो दूसरी बात है ! मुझे बहुत कम रकम की जरूरत होगी और जितनी भी जल्दी संभव होगा, मैं लौटा दूंगा। आज तूने मुझे बचा लिया है।"

"पागल कहीं का ! कैसी बात करता है ?"

दूसरे दिन वह चला गया। एक नीरोग आदमी दो सौ मील से मेरी—एक कोढ़ी की—सलाह लेने आता है ! यह विचार मात्र मेरे मनोबल के लिए बड़ा पुष्टिदायक बन गया। ◆◆◆

अनिवार्य बेकारी   : १६ :

वॉव के चले जाने पर और वरसात शुरू होने से पहले एक दिन डॉ० विन्टन मुझसे मिलने आये। हम वाहर लॉन पर घूमने लगे।

तीखे पत्थरों और कांटेदार झाड़ियों को निकालकर टॉमस ने और मैंने अपने उपभोग के लिए एक 'स्वीमिंग वीच' (समुद्र तटवर्ती तैरने योग्य एक घिरा हुआ सुरक्षित स्थान) वनाया था। परन्तु वह हमेशा सुरक्षित नहीं होता था। कभी-कभी उसमें शार्क मछलियाँ घुस जातीं। उन्हें रोकने के लिए उसके अंदर हमने एक फन्दे जैसी चीज वहाँ लगा रखी थी। किन्तु ज्वार में वह प्रायः वह जाती और हमें फिर नयी लगानी पड़ती। जिस दिन का जिक्र ऊपर आया है, गरमी वहुत थी। अतः टॉमस तैरने चला गया था। मुझे दूर से उसका सिर पानी के ऊपर नाचता दीख रहा था। चौपाटी पर हवा की हलकी-सी लहर भी नहीं थी। किनारे पर जल स्थिर और निर्मल था। वेलों में वैठे कीड़े (झींगुर) अत्यन्त कर्कश ध्वनि कर रहे थे। हमारे कानों के पर्दे मानो फटे जा रहे थे। यह ध्वनि उत्तरोत्तर अधिकाधिक कर्कश होती जाती थी। वीच में एकाएक वन्द हो जाती, तो वह नीरवता भी उतनी ही असह्य हो जाती। कभी-कभी गिरगिट की आवाज उस शान्ति का भंग कर देती और वाद में झींगुरों का वैण्ड फिर शुरू हो जाता।

संस्था के नियमों का आदर करते हुए भी अतिथि-मण्डप में अतिथियों के स्वागत के लिए कुछ हल्के पेयों का प्रवन्ध मैंने कर रखा था। हाँ, मेहमानों को वोतलें अपने हाथ से खोलनी पड़तीं और पीने के लिए प्याले उन्हें अपने साथ लाने पड़ते। विन्टन ने तानसान का प्याला हाथ में लेते हुए कहा : "ये झींगुर वड़े दुष्ट हैं।"

"है तो ऐसी ही वात।"—मैंने कहा—"किन्तु इनसे भी अधिक कष्टदायक एक दूसरी ही वात है और वह है, यह निठल्लापन। आप जानते हैं कि मैं आया, तव से मेरा रोग अगर वढ़ा नहीं, तो घटा भी नहीं है।"

"बात सही है। पर आशा न छोड़ें। हमारी श्रद्धा है कि ये इंजेक्शन अद्‌भुत काम करनेवाले हैं।"

"किन्तु विन्टन, इसके लिए आदमी कितना धीरज धरे! यही तो दुःख बढ़ाने-वाली चीज है। मैं कब से यह खेल खेल रहा हूँ। मेरे मकान का काम पूरा हो चुका। अब मेरे पास कोई काम नहीं बचा है। इस निठल्लेपन से मैं तंग आ गया हूँ। अगर मुझे निठल्ला बैठकर क्षण-क्षण होनेवाले अपने शरीर के क्षय का ही दिनभर ध्यान करते रहना है, तो भाई! यह मुझसे नहीं होगा।"

मैं रुक गया। महीनों से जो विचार मुझे परेशान कर रहा था, उसे आज मैं व्यक्त कर रहा था। मेरी वाणी में जो गांभीर्य और जोश आ गया, उस पर खुद मुझे ही आश्चर्य हो रहा था।

"मैं समझ रहा हूँ। किन्तु ऐसे स्थान पर सबको काम देना आसान नहीं है।"

"लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए। लोगों को काम तो देना ही चाहिए।"

"माना। पर यह हो कैसे? एक तो लोगों के घरों में घुस-घुसकर आप बलपूर्वक उनके माता-पिता या बच्चों को कोढ़ी होने के कारण पकड़-पकड़-कर यहाँ लायें और फिर यहाँ उन पर जबरदस्ती कर उनसे काम लें। यह कैसे हो सकता है? फिर इनमें से कई तो काम करने लायक होते भी नहीं।"

"आप जबरदस्ती न करें। इसके लिए तो मैं भी नहीं कहूँगा। किन्तु डॉक्टर की हैसियत से अपनी राय तो बताइये कि लोगों को—अर्थात् बीमारों को उचित मात्रा में काम करने से लाभ होगा या नहीं?"

"इसका जवाब आप स्वयं जानते हैं, नेड! अगर बीमार को अपना काम करने में सुख होता हो, तो उसे लाभ ही होगा। हाँ, उसे अपनी शक्ति से अधिक काम नहीं करना चाहिए। बस, यही ध्यान रखने की बात है।"

"अच्छा, तो देखिये, यहाँ साढ़े तीन हजार से भी अधिक आदमी हैं। इनमें से अधिकांश वापस अपने घर नहीं जायँगे। इसलिए उन्हें यहीं जीवनो-पयोगी कुछ काम मिल जाना चाहिए न?"

"कुछ लोगों को तो काम दे दिये गये हैं। उदाहरणार्थ, वस्तु-भण्डार में। कुछ लोगों को शिक्षण का काम सौंप दिया है। फिर भी आपका कहना सही है। हमारे पास काम की कोई व्यवस्थित योजना नहीं है।"

"यह मेरा घर देखिये विन्टन ! शुरू से आखिर तक मैंने यहाँ कई आदमियों से काम लिया है। मैं उनसे बातें करता। हर आदमी काम का भूखा दिखा। कम-से-कम मुझे तो हर आदमी ऐसा ही कहता था। यह ठीक है कि मेरे यहाँ कोई नियमित धन्धे जैसा काम नहीं था। फिर उसमें भी उन्हें प्राप्ति बहुत कम होती थी।"

"यही बात है। ऐसा काम तो कभी-कभी ही मिल सकता है। किन्तु वर्ष के प्रारम्भ से अन्त तक आप उन्हें क्या काम दे सकते हैं? एक भी हो, तो बताइये।"

"अच्छा लीजिये, बताऊँ? आपने मछलियों का ठीका एक बाहर की कम्पनी को दे रखा है। किन्तु मछलियाँ तो यहीं हैं। आपके मरीजों में से बहुत से कहार हैं। यही धन्धा करते थे। जो नहीं हैं, वे सीख सकते हैं। उन्हींको क्यों न मौका दिया जाय?"

"सबसे पहली बात तो यह है कि यह बिलकुल असंभव है। चार हजार आदमियों के लिए रोज कितनी मछलियों की जरूरत होती है, इसकी आपको कल्पना भी नहीं है। मरीजों के पास इसके साधन भी नहीं हैं। हों भी, तो उनके भरोसे नहीं बैठा जा सकता। उनसे यह हो नहीं सकता।"

"यह सच है कि बहुत से ऐसे हैं, जिन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। जब लोगों को आप मुफ्त में खाना-कपड़ा देते हैं, तो यह स्वाभाविक है कि वे दिनभर धूप में ही निठल्ले बैठे रहना पसन्द करें। यह केवल यहीं की बात नहीं है। सभी जगह ऐसा ही है। किन्तु जैसा कि मैंने आपसे कहा, ऐसे भी बहुत से लोग यहाँ हैं, जो काम करना चाहते हैं। काम माँगते हैं। हाँ, उसे सफलतापूर्वक करना हो, तो योजनापूर्वक किया जाना चाहिए। किन्तु यह व्यवस्था की जा सकती है। यदि योजना आकर्षक हो, तो आज जो लोग केवल भटकते रहते हैं, वे भी दूसरे प्रकार से विचार करने लगेंगे। मैं मानता हूँ कि यदि आप कहें कि कल से ही चार हजार आदमियों के लिए मछलियाँ ले आइये, तो यह उनसे नहीं होगा। किन्तु इसका कुछ हिस्सा वे जरूर दे सकते हैं। आज तो आप लोगों को पकड़-पकड़कर लाते हैं और उन्हें जबरदस्ती निठल्ले रहने की सजा देते हैं। इतने पर भी इस कोढ़िस्तान में कुछ रमणीयता और सुन्दरता

जैसी चीज है, तो उसका श्रेय उन्हींको है। भगवान् जानता है कि आज तो ऐसा करने के लिए उन्हें प्रेरणा देनेवाली कोई बात ही नहीं है। उनकी दूकानों का श्रेय उन्हींको है। स्त्रियाँ मुँगरी पीट-पीटकर अपने और अपने घर के आदमियों के कपड़ों को दूध के समान स्वच्छ रखती हैं, इसका श्रेय भी उन्हींको है। उनके लिए बाहर के बाजार तो बन्द ही हैं। किन्तु अन्दर के काम भी दूसरों को—नीरोग आदमियों को—सौंपकर अन्दर के बाजार भी आप उनके लिए बन्द कर देते हैं। मुझे तो यह बिलकुल अनुचित लगता है।"

यह बात उन्हें चुभ गयी। हाथ में रखी अपनी चिलम का मुँह घुमाते हुए उन्होंने कहा : "तो आप चाहते क्या हैं, यह बताइये।"

"अमुक मात्रा में ताजी मछलियाँ मुहैया करने का ठीका मैं चाहता हूँ। बाहरवालों को आपने जो भाव दे रखा हो, वही भाव हमें भी दीजिये। मैं आदमी जुटा लूँगा, क्योंकि मैं जानता हूँ कि कितने ही आदमी काम के लिए उत्सुक हैं।"

"यह करेंगे, तो रूढ़िगत मान्यताओं से विरोध पैदा हो जायगा। बहुत से लोग मानते हैं कि कोढ़ियों से काम नहीं लेना चाहिए। फिर यह प्रमाणपत्र देने की जिम्मेवारी मुझ पर आनेवाली है कि ऐसे बीमार कौन-कौन हैं, जो काम करें, तो उनको नुकसान नहीं होगा।"

मुझे इस पर हँसी आ गयी। "फादर मोरेल्लो और मि० हडसन मेरे विचारों से सहमत हैं। मेरे यहाँ मजदूर काम करते थे, तब मैंने उनसे चर्चा की थी। इस मछलियों के काम के बारे में नहीं, साधारण रूप से परिश्रम करने के बारे में।"

"की होगी! मान लीजिये कि मैं आपको ठीका देता हूँ और आप किन्हीं बीमारों को काम देते हैं। अब यदि उन पर रोग का तीव्र आक्रमण होता है, तो मैं तो कठिनाई में फँस जाऊँगा न! हम अमेरिकनों को इस टापू में हर कदम सँभलकर रखना पड़ता है। इन द्वीपों में ढेरों ऐसे राजनैतिक नेता हैं, जो इस स्थान से सौ मील के घेरे के अन्दर कदम रखना भी पसन्द नहीं करेंगे। किन्तु क्या करना चाहिए, यह खूब जानते हैं। फिर इसमें काम करनेवाले आप हैं। वेतन लेकर मैनेजर की हैसियत से आप काम करेंगे, तो

लोग आपको अपने भाइयों का शोषण करनेवाला चालाक अमेरिकन कहेंगे। यह प्रयोग करना मुझे पसन्द तो है। लेकिन करना कैसे चाहिए, यह समझ नहीं पा रहा हूँ।"

"पैसेवाली वात तो आसान है। मुझे पेंशन और मकान तो मिल ही गये हैं। मेरा खर्च अधिक नहीं है। मुझे कुछ भी न दीजिये। इतने से आलोचकों के मुँह वन्द हो जायँगे। फिर हम कम्पनी ऐसी वनायें, जिसका पूरा लाभ मजदूरों को ही मिलता रहे। जो दूसरों को मिलेगा, वही मुझको भी मिलता रहेगा। मेरे लिए महत्त्व की वस्तु कमाई नहीं है।"

डॉ० विन्टन विचार करने लगे। हवा के झोंके शुरू हुए और नारियल की पत्तियाँ हिलने लगीं। झींगुरों का तीव्र वैण्ड भी शान्त हो गया।

"यह वरसात जल्दी आने के चिह्न हैं।" यों कहकर डॉक्टर उठे। चिलम को वायें हाथ की हथेली की एड़ी पर जरा ठोंककर उसकी राख निकाली और दरवाजे की ओर जाने के लिए रवाना हुए। वहाँ खड़े होकर मेरी तरफ देखकर वोले :

"आपकी मछली कंपनीवाली वात पर मैं अवश्य विचार करूँगा नेड! नमस्कार!"

सड़क तक पहुँचने तक मैं उन्हें देखता ही रहा। निरी डॉक्टरी की चालों में से उन्हें पकड़कर वाहर खींचने में आखिर मैं कामयाव हो सका। अव वे शुद्ध मानव-दृष्टिविन्दु से इस प्रश्न पर विचार करने लगे। ◆◆◆

मुर्गों की लड़ाई

: १७ :

रेवरेण्ड हडसन कई हफ्तों से आये थे और पाँचवीं जुलाई को सेवू से नये बीमारों को लेकर जो स्टीमर आनेवाला था, उसके लौटते समय वे वापस मनीला जानेवाले थे। इसके कई दिन पहले मुझसे विदा माँगने वे आ पहुँचे।

मकान के उस कोने पर टॉमस पलथी मारकर बैठा था। उसके हाथ में एक बड़ा-सा लाल मुर्गा था। वह उसके पंखों को प्यार से थपथपा और सहला रहा था। माँ की तरह उसका लाड़ कर रहा था। मि० हडसन कुतूहलपूर्वक उसे देखने लगे।

"कितना अच्छा मुर्गा है रे टॉमस यह ! कहाँ से पाया ?"

"मि० फर्ग्यूसन ने मुझे यह दिया है साहब, मेरी बरसगाँठ की भेंट के रूप में। वे मुझ पर हमेशा मेहरबानी करते रहते हैं।"

मैं कुछ शरमा गया। टॉमस ने ही मेरी इतनी सेवा की है कि जिसका बदला नहीं चुकाया जा सकता। किन्तु जब कभी उसका जन्म-दिन आता, तब वह उदास हो जाता। इस बार एक पड़ोसी से यह सुन्दर मुर्गा मैंने खरीदा और वह अपना दुःख भूल जाय, इसलिए उसे दे दिया। इससे उसका यह दिन सुधर गया। उसके जगने से पहले ही—दिन निकलने से भी पहले—मैंने एक लम्बी रस्सी से यह मुर्गा उसके कमरे में जाकर बाँध दिया था। उसकी गुस्साभरी आवाज से टॉमस जाग पड़ा। जब उसे मालूम हुआ कि वह तो उसीके लिए है, तब मुझे लगता है कि उस दिन के लिए तो वह अपने घर—माँ और बेबी—को भी भूल गया। कोई भी मुर्गा इससे बड़ी करामात कर सकता है ? उसके बाद से टॉमस का फुरसत का हर मिनट उससे खेलने-खिलाने, सिखाने और देखते रहने में बीतने लगा।

"इसे लड़ायेगा ?" हडसन ने पूछा।

"अजी साहब, मेरा दिल इतना कठोर कहाँ है कि मैं इसे लड़ने नहीं दूँ। युनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका के स्वाधीनता-दिवस के दिन वह इस संस्थान के अखाड़े में उतरेगा।"

यहाँ स्वाधीनता-दिवस को लोग बहुत मानते थे।

"अर्थात् चौथी जुलाई न टॉमस ? तुम फिलीपाइन के लोग भी यह दिन रिझाल दिन के समान ही मानते हो, इसका क्या कारण है टॉमस ?"

"अजी साहब, इसका कारण तो यह है कि साम चाचा बहुत बड़े और बलवान् पुरुष हैं। मि० रिझाल और फिलीपाइन राष्ट्र की भाँति ये भी हमें स्वतंत्र देखने के लिए उत्सुक थे। बहुत बड़े-बड़े जहाज लेकर उन्होंने फिलीपाइन पर चढ़ाई कर दी और स्पेन के जहाजों को डुबा दिया। वे फिलीपाइनों से कहते हैं कि 'अब हम तुम्हें स्वतंत्र होना सिखायेंगे। हम तुम्हें अंग्रेजी भाषा सिखायेंगे और अमेरिका के शानदार नागरिक होना सिखायेंगे। इससे तुम लोग धीरे-धीरे स्वतंत्र होना सीख जाओगे।' चौथी जुलाई को अमेरिकन लोग खूब धूमधाम करते हैं। तोपें दागी जाती हैं और बोस्टन की चाय-पार्टी* मनाते हैं। संभव है, फिलीपाइन लोग भी कुछ समय बाद चाय-पार्टी करेंगे और सुखी होंगे। इसीलिए हम फिलीपाइन लोग भी चौथी जुलाई के दिन इतनी धूमधाम करते हैं।"

"अच्छा टॉमस, तेरी और तेरे मुर्गे की विजय हो।"

"आपकी दुआ साहब, अब तो यह जरूर जीतेगा।"

हडसन मेरी ओर मुड़े : "मैं सोचता हूँ नेड, कि क्या इसकी बातों में ही हमें सारी समस्याओं का हल नहीं मिल जाता ? फिलीपाइनों के साथ के अपने सारे व्यवहारों में हमें भूलना नहीं चाहिए कि सभी देशों को अपनी 'चाय-पार्टी' करने की इच्छा होती है। स्वाधीनता की भूख गहरी और सर्वव्यापक है। हमें इन लोगों के साथ धीरज और समभाव के साथ बर्ताव करना चाहिए। किसी दिन इन्हें स्वतंत्रता मिलेगी ही। हमारा इन्हें वचन है कि ये तैयार होंगे, उसी

---

* अमेरिका पर पहले इंग्लैंड का प्रभुत्व था। अपनी स्वतंत्रता के युद्ध के प्रारंभ में अमेरिकनों ने इंग्लैंड से आयी चाय की पेटियाँ अमेरिका की जमीन पर नहीं उतरने दीं। बंदरगाह में ही समुद्र में डुबो दीं। उसका यह उल्लेख है। परन्तु टॉमस को यह बात ठीक से याद नहीं है। उसका खयाल है कि यह कोई 'चाय-पार्टी' जैसा उत्सव था।

दिन हम इन्हें स्वतन्त्रता देंगे। अब यह देखना हमारा काम है कि कहीं ऐसा न हो कि ये उस दिन तैयार न पाये जायँ। यदि हम सहानुभूति का वरताव न करेंगे, तो यह नहीं हो सकेगा। उदाहरण के तौर पर मेरी ही वात लीजिये। एक पादरी की हैसियत से मुझे लगता है कि जो आदमी यहाँ धर्मगुरु वनकर आयें, उन्हें जिनकी यहाँ सेवा करनी है, उनके प्रति मताग्रही वनकर काम न करना चाहिए। उनके प्रति समभाव रखना सीखना चाहिए। व्यक्तिगत रूप से मुझे यह मुर्गों की लड़ाई पसन्द नहीं है। किन्तु इस कारण मेरे अन्दर इतनी जड़ता नहीं होनी चाहिए कि मैं टॉमस के दिल की भावनाएँ न समझ पाऊँ, जिन्हें यहाँ सैकड़ों वर्षों से, पुश्त-दर-पुश्त के संस्कारों से ये लोग पोषण देते आये हैं। इसने जो सुन्दर भाव प्रकट किये हैं, अगर उन्हें मैं समझ न सकूँ, तो मैं मूर्ख सिद्ध होऊँ।"

मुझे हडसन के प्रति आदर हुआ। वे वड़े समझदार पुरुष थे।

× × ×

दूसरी तारीख से ही कोढ़िस्तान के मुहल्लों में अमेरिकन और फिलीपाइन झण्डे खड़े कर दिये गये। लाल, सफेद तथा भूरे तोरण लगा दिये गये। विन्टन ने मुझे कार्यालय में वुलाया था। दफ्तर के रास्ते पर लोगों ने एक अमेरिकन होने के नाते सर्वत्र मेरा जयजयकार किया।

"नमस्कार मि० फर्ग्यूसन, आप चौथी जुलाई की हमारी तैयारियाँ देख रहे हैं न ?"

"कैसे हैं मि० फर्ग्यूसन ? स्वातंत्र्य-दिन तो आ गया। आपका ध्वज-स्तंभ तैयार हो गया ?"

"अभी नहीं हुआ, पर चौथी तक हो जायगा।" आम और चौपाटी के वीच में एक स्तम्भ तैयार कर रहा था।

विन्टन के ऑफिस के वाहरवाले कमरे में मैं वीमारों के साथ वातचीत कर रहा था। साथ ही किसीको कोई शक न हो, इस प्रकार यह भी भाँपता जाता था कि इनमें से कितने आदमी काम करने लायक हैं। कितने तो प्रत्यक्ष ही काम करने लायक नहीं थे। उदाहरणार्थ, कितनों ही की उँगलियाँ टेढ़ी हो गयी थीं और कितनों ही के हाथों तथा पैरों में पट्टे वँधे थे। किन्तु कितने ऐसे

भी थे, जो मजबूत और सशक्त थे। रंग और राष्ट्र का अहंकार मेरे मन से निकल गया था। ठिगने फिलीपाइन अब मुझे गैर नहीं लगते थे। मेरी चमड़ी का रंग भी अब लगभग उन्हीं जैसा हो गया था। धूप के कारण नहीं, अपने-आप उसका रंग ऐसा हो गया था, जो कभी बदला नहीं जा सकता था।

अंत में विन्टन को मुझसे बातें करने की फुरसत मिली। मैं उनके कमरे में गया, तो वे एक कागज के पुर्जे पर से कुछ नोट पढ़ रहे थे। "नयी खबरें हैं नेड, आपके लिए। तरह-तरह की खबरें हैं। अगली बोट में सांचो की बहन बीमारों के साथ आ रही है।"

"उँह, आ रही होगी। अब तक मैंने इस प्रकार के समाचार चार-छह बार सुने थे। किन्तु हर बार किसी-न-किसी कारण से वह नहीं आ सकी थी।"

"पर भले आदमी, इस बार तो वह सचमुच आ रही है। कोई विलक्षण महिला प्रतीत होती हैं। नृत्य भी सिखाती हैं और खेल वगैरह का भी प्रबन्ध करती हैं। मालूम होता है कि इनके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। पर परिवार है संस्कारशील। इनकी माँ स्पेनिश थीं। शायद आपको तो इसके बारे में अधिक जानकारी हो।"

"हाँ, मैं इस परिवार को जानता हूँ और बॉब सेलर्स के मार्फत इसके अधिक परिचय में भी आया हूँ।"

"अब दूसरे समाचार। स्वास्थ्य-विभाग के मुख्याधिकारी डॉ० मार्शल भी इस स्टीमर पर आ रहे हैं। उन्होंने अपने पद का त्यागपत्र दे दिया है। वे इसी महीने फिलीपाइन से विदा हो जायँगे। यह उनकी आखिरी भेंट है। उन्होंने बताया है कि अन्तिम बार आकर जितने बीमारों से मिल सकें, मिल लेना चाहते हैं। वे आपसे भी मिलना चाहते हैं। मनीला जाने से पहले वे केवल कुछ ही घण्टे यहाँ दे सकेंगे।

"और—हमारा एक गुमाश्ता मनीला गया था। वह आपके लिए कोई खास चीज लानेवाला है। आपके भाई की तरफ से एक सन्देश।"

मुझे जोर से आशंका हुई, "टॉम—उसे कुछ हुआ तो नहीं? उसे—उसे भी कहीं कोढ़ तो नहीं हो गया!"

"नहीं-नहीं नेड, क्षमा कीजिये। मैंने आपको डरा दिया। उन्होंने आपके लिए कोई खास भेट भेजी है।"

कितनी शांति मिली!

"और भी कुछ समाचार हैं। आज तो समाचार पर समाचार हैं। मैं आपकी योजना को आजमाना चाहता हूँ। बल्कि उसका प्रयोग करके देखने का आपको अवसर देना चाहता हूँ। हम आपकी इतनी मदद कर सकते हैं। हम आपसे मछलियाँ खरीद लेंगे। आप जानते हैं कि अभी तो हम टीके से बँधे हुए हैं। किन्तु यहाँ की आबादी बढ़ती ही जा रही है, इसलिए हमें आपकी मछलियों की जरूरत रहेगी ही। अगर आप पकड़ सकें और ताजी मछलियाँ देने का वचन दे सकें, तो हम कुछ वजन निश्चित कर लेंगे। इतना याद रखिये कि बिना नागा उतनी मछलियाँ हमें मिलती ही रहेंगी, इसका विश्वास आपको हमें दिलाना होगा। अब इसके बारे में पक्की योजना बना लीजिये और फिर मुझसे मिलिये। उसके बाद हमारे बीच जो इकरारनामा होगा, उसकी शर्तों की चर्चा करेंगे।"

× × ×

इस नयी और मनोहारी कल्पना में मग्न दिमाग को लेकर मैं वहाँ से लौटा। स्वातंत्र्य-चौक (प्लाजा लिवरटाड) में उत्सव की चहल-पहल थी। उसकी लम्बी पत्थर की सीढ़ियाँ चढ़कर मैं भीड़ को देखने लगा। मैं जैसे आदमी चाहता था, वैसे कहीं हैं क्या, यह मैं इस भीड़ में ढूँढ़ना चाहता था। चौक में हमेशा जैसी ही मनुष्यों की भीड़ थी। किन्तु मुझे जैसे आदमियों की जरूरत थी, वैसे कोई नहीं दीखे। उत्सव और उसमें लड़नेवाले मुर्गों के बारे में बातें सुनता हुआ लगभग एक घण्टा मैं वहाँ घूमा।

"मैंने सुना है कि टॉमस के पास एक अच्छा मुर्गा है।"

"हमने उसका नाम क्या रखा है, आप जानते हैं? 'मिस्ट्री बर्ड' (रहस्यमय पंछी)।"

"आप उस पर बहुत से पेसों* की बाजी लगायेंगे न मि० फर्ग्यूसन?"

---

* फिलीपाइन का सिक्का। कीमत—आधा डॉलर अर्थात् २॥) के करीब।

सब हँसने लगे। एक लड़के ने कहा : "बेचारा पेड्रो गोमेज ! इसका मुर्गा पाँच बार बाजी जीता है। किन्तु अब मुझे लगता है कि स्वातंत्र्य-दिवस के बाद उसे उसका शोरबा बनाना पड़ेगा।"

उसके पास बैठा हुआ एक आदमी बोला : "इस बात पर कितने पेसों की बाजी बदता है बोल ?" मैंने उसकी तरफ देखा।

"पाँच पेसो जूलियन, तू चाहे तो।"

सब हँसने लगे। अंत में जूलियन ने अपनी जेब टटोलकर बाजी कबूल कर दी।

टॉमस के मुर्गे पर बहुत से लोगों ने बाजी लगायी थी। अभी तक वह किसी लड़ाई में उतरा नहीं था। परन्तु उसकी सूरत-शकल ही ऐसी थी कि उसे देखकर बाजी लगानेवालों को उत्साह हो आता था। फिलीपाइन्स बड़े जुआरी होते हैं। गरमागरम चर्चाएँ चल पड़ीं। इसी बीच जोजी क्रूज वहाँ आ पहुँचा। उसे लेकर मैं भीड़ में से निकल गया और अपनी महान् योजना उसे समझाने लगा। जोजी मेरे नजदीक ही रहता था और मेरा मकान बाँधने में उसने बड़ी मदद दी थी।

"आप यह कहना चाहते हैं मि० फर्ग्यूसन कि हम यहाँ बारहों महीने कमाई कर सकेंगे ?" उसने अश्रद्धा से पूछा।

"हाँ जोजी ! मेरा मतलब यही है। किन्तु यह भी हो सकता है कि यह चले ही नहीं।"

"कमाने के लिए जो धन्धा करना पड़े, उसके लिए मैं तैयार हूँ।"—उसने धीरे से कहा : "मैं जानता हूँ कि मैं रोगी हूँ, पर बहुत अधिक तो नहीं हूँ। मैं मानता हूँ कि इस तरह निठल्ला रहना सशक्त मनुष्य के लिए बहुत ही बुरी बात है। शरीर में शक्ति है, तब तक तो मैं अपनी मेहनत के बल पर ही रहना चाहता हूँ। यहाँ आने से पहले मैंने कभी-कभी किश्तियाँ बनाने के काम में मदद की है। फिर भी यह दावा नहीं कर सकता कि मछली पकड़ने का यह काम कर सकता हूँ। अगर आप मुझे यह काम देंगे, तो मैं शक्तिभर पूरा प्रयत्न करूँगा।"

"बहुत अच्छा ! कल मेरे यहाँ आ जाइये। यदि संभव हो, तो मैन्युअल जानीला को भी लेते आयें। और भी कुछ लोगों को मैं कहला रहा हूँ। किन्तु इस विषय में हम कल बातचीत करेंगे।"

सान-लाजारो में पहली रात टॉमस को मैंने हिम्मत दिलायी, तब जिस पहले फिलीपाइन के साथ मेरी जान-पहचान हुई, वही यह मैन्युअल जानीला था। यह हमारे आने के बाद कूलियन आया था, फिर भी अब तो इसे यहाँ आये कई महीने हो गये थे।

दूसरे दिन आनेवालों में जोजी सबसे पहला आदमी था। इसमें उत्साह उमड़ा पड़ रहा था : "आज का दिन बड़े महत्त्व का है मि० फर्ग्यूसन ! मुझे काम की बड़ी जरूरत है।"

मैन्युअल में भी ऐसी ही उमंग और उत्साह था। "कल स्वाधीनता-दिवस है। यह बड़ा शुभ शकुन है। हम भी यहाँ अपनी स्वाधीनता (स्वावलंबन) की क्यों न शुरुआत कर दें ?"

फ्रेडरिको आरांग मेरे यहाँ कोई पराया आदमी नहीं था। लगभग दो वर्ष से वह टॉमस को पढ़ाने आ रहा था और उसका आना मुझे हमेशा प्रिय लगता। तीन वर्ष पहले इसकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया था। वह एक वकील और सान-टॉमस युनिवर्सिटी का स्नातक था। यह विद्यापीठ सन् १६११ में स्थापित हुआ था। अर्थात् संयुक्त राज्यों के सबसे पुराने विद्यापीठों में से यह एक था। वह कानून की परीक्षा की तैयारी कर ही रहा था कि उसके शरीर पर चकत्ते दीख पड़े। वैसे ही इसे पहले सान-लाजारो और बाद में कूलियन भेज दिया गया।

मेरा इससे पहले-पहल परिचय हुआ, तो वह महारोगी सेवा मण्डल का अध्यक्ष था। यह बीमारों का चुना हुआ एक प्रतिनिधि मण्डल था। सार्वजनिक कामों में वह अधिकारियों के साथ मशविरा करता और व्यक्तिगत अधिकारों तथा जिम्मेदारियों का कई बार नियमन करता रहता। इतना कमनसीब आदमी मैंने कभी नहीं देखा था। शिक्षा प्राप्त करने में वर्षों बिताने के बाद हाथ में आया हुआ उसका धन्धा उससे छीन लिया गया। जिन दिनों यह आया था, इसका नाम 'मौनी बाबा' पड़ गया था। नीचा सिर कर बगैर किसी भी तरफ

नजर उठाये यह चलता। कदाचित् ही किसीसे वात करता। अपने झोपड़े में अकेला ही रहता। यह झोपड़ा उसीके लिए वनाया गया था। अपना भोजन भी वह खुद वना लेता। लोगों से मुझे मालूम हुआ कि उसकी पत्नी और दो वच्चे थे और उन पर उसका अत्यंत प्रेम था। उनसे इसका एकाएक वियोग हो गया। जव मैंने उससे टॉमस को पढ़ाने की वात छेड़ी, तो उसे उसने तुरन्त स्वीकार कर लिया। इसकी एक-एक पाई वह अपने घर भेजता था।

मेरी आग्रहभरी विनती स्वीकार कर वह भी आज आया था। वह आया तो था उदासीन भाव से, पर कुछ ही क्षणों में उसकी वह उदासीनता भाग गयी। वात यह थी कि उसके अन्दर रचना-शक्ति काफी थी। पहली ही वैठक में उसने मेरी सीधी-सादी छोटी-सी योजना को ठोक-पीटकर सुन्दर वढ़िया वना दिया। उस पर से हर आदमी जान गया कि उसे क्या काम करना होगा और उसमें परस्पर के प्रति हमारे सम्वन्व क्या होंगे? यह पिछली वात पहले से अधिक महत्त्वपूर्ण थी।

आरांग द्वारा किये गये विवेचन से लोग धंधे का स्वरूप अच्छी तरह समझ गये और प्रसन्नता के साथ उसमें शरीक हो गये। उसने मुझे विश्वास दिलाया कि इसके लिए आवश्यक आदमी वह प्राप्त कर देगा। मुझे यहाँ रहते दो वर्ष हो गये थे। किन्तु लोगों को अपने हित के वारे में इतना उत्साह दिखाते हुए मैंने आज ही देखा। उत्सव और त्योहार जरूर मनाये जाते थे, पर वह उत्साह देश या महापुरुषों के लिए होता था। किन्तु यह उत्साह एकदम नये प्रकार का—कोढ़ियों के लिए था। यहाँ कुछ पुरुषार्थ करने की संभावना अपने और स्वजनों के लिए कमाई करने का अवसर था। टॉमस ने सवको रोटी तथा नारियल के ठण्ढे जल का जलपान कराया। काम समाप्त होने पर जव लोग लौटने लगे, तो उनके दिलों में योजना के वारे में नयी-नयी उमंगें थीं। आरांग का सिर नीचा नहीं, ऊँचा था। मैन्युअल तो रास्तेभर गीत ही गुनगुनाता जा रहा था।

उनके चले जाने के वाद मैंने सारी योजना लिखकर तैयार कर ली। उसे पास करवाने के लिए आरांग और उसके वाद विन्टन के पास भेजूँ, इससे पहले उसे मैं टाइप करने लगा। उसी रात मुझे डेंग्यू वुखार आ गया, इस कारण सारा काम रुक गया। चौथी जुलाई का उत्सव मैंने खो दिया। यह डेंग्यू वड़ा

खराब बुखार होता है। १०४° तक पारा चढ़ गया। सिर, आँखें, संधियाँ और स्नायु फटे जा रहे थे। विन्टन ने आकर जाँच की और योजना बनाने का काम छोड़कर पूरा आराम लेने की आज्ञा दी।

"अमेरिका में मैंने नीग्रों के मुँह से 'हड्डीतोड़ बुखार' की बात सुनी थी। किन्तु इसमें कैसी तकलीफ होती है, इसका मुझे पता नहीं था।"—"मैं बड़बड़ाया।

"यह तो एक-दो दिन में चला जायगा। अगर शरीर पर कोई फुन्सी वगैरह उठें, तो घबड़ायें नहीं। इस बुखार में यह होता ही है।"

मेरा उत्साह भंग करने के लिए यह काफी था। मेरे प्रति स्वामिनिष्ठा और मुर्गों की लड़ाई का मोह, दोनों के बीच टॉमस के मन में झगड़ा चल रहा था। मैंने उसे जाने के लिए समझाया और कहा कि "मुझे मिस्ट्री की जीत में दिलचस्पी है।" शर्त बदने के लिए मैंने उसे पाँच पेसो और दे दिये। इसके बाद मैं तो बुखार के नशे में पड़ा रहा। मैंने सपने में देखा कि कई जंगली लोग मेरे शरीर में काँटे चुभो रहे हैं। ठीक इसी समय टॉमस की आवाज मेरे कानों में पड़ी।

"मि० फर्ग्यूसन! मि० फर्ग्यूसन! अजी साहब, हम जीत गये। हम जीत गये।"

मुर्गे को बगल में दबाये मारे खुशी के पागल टॉमस अन्दर आया। "कोदिस्तान के सबसे बड़े लड़ाकू को इसने आज हरा दिया है। बहुत से लोगों ने पैसे खोये। हम एक भी नहीं हारे हैं। ये लीजिये साहब आपके पैसे। मैंने तो आज बहुत से कमाये हैं।"

मैं उठ बैठा। इस शोर से मेरा सिर फटा जा रहा था। फिर भी काँटों की—भले ही वे सपने के काँटे हों—उनकी चुभान की अपेक्षा इसमें कुछ राहत-सी मालूम हुई।

"इतनी शर्तें बदने के लिए तू पेसो कहाँ से लाया रे टॉमस?"

"ओ हो। आप मुझे जो पेसो देते हैं, वे सब मैंने बचाकर रखे थे, साहब। ये सब मैंने शर्तों में लगा दिये। क्योंकि लड़नेवाले मुर्गे की मुझे बड़ी अच्छी पहचान है। मुझे निश्चय था कि हम जरूर जीतेंगे।"

"और अब इतने सारे पेसों का तू क्या करेगा ?"

"इस बारे में मुझे आपसे कुछ बातचीत करनी है साहब। किन्तु आप तो बीमार हैं। मैं आपको बहुत तकलीफ दे रहा हूँ।"

"मैं खुद बात करना चाहता हूँ। तू अपनी बात कह।"

"मेरी बड़ी इच्छा है साहब कि आप राज्य के मुख्य अधिकारी से कहें कि वे मुझ पर कृपा करें और मेरी तरफ से तीस पेसो मेरी माँ के पास भेज दें और उसे लिख दें कि मुलाकात के दिन वह मुझसे मिलने के लिए आ जाय। मुझे मालूम है कि अगर उसके पास नये कपड़े न होंगे, तो मिलने आने को उसका मन नहीं करेगा। यह रकम मनीला आने और नये कपड़े खरीदने के लिए काफी होगी। पाँच पेसो मैं अपने पास ही रख लूँगा। क्योंकि 'रिझाल' के दिन मुर्गों की बहुत बड़ी लड़ाई होगी। आज की लड़ाई में डॉ० क्रिसोल्गो के साथ एक मेहमान आया था। उसने कहा कि उसके पास एक अच्छा लड़ाकू मुर्गा है। उसे रिझाल के दिन लायेगा। किन्तु हम उस दिन भी जरूर जीतेंगे और उसके लिए ये पाँच पेसो मैं रख लेना चाहता हूँ।"

"टॉमस, यह तो तूने एक नंबर की बात कही। तेरी माँ आये, तो उसे यहाँ जरूर लाना, भूलना नहीं। मैं उससे मिलना चाहता हूँ। याद रख।"

मेरा आभार मानते हुए उसकी आँखों में आँसू छलक आये। वह कमरे से बाहर चला गया। जब वह बाहर गया, तो मैंने उसकी सूरत देखी। मुर्गे को उसने एकदम अपने गाल से लगा लिया था और वह बड़बड़ाता सुना गया कि "मैं तेरा भी बहुत आभारी हूँ।"

◆◆◆

चरिता आयी ! : १८ :

मरीजों को लेकर सरकारी जहाज ५ तारीख को पहुँचा। मैं उसके स्वागत के लिए न जा सका। फादर मोरेल्लो मुझसे मिलने आये और उन्होंने चरिता को सारी वातें वता देने और उसे छुट्टी मिलते ही यहाँ ले आने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। टाम की तरफ से कुछ चीजें भेंट में आनेवाली थीं, इस वात को तो मैं अपने वुखार में भूल ही गया था। इनमें एक वहुत ऊँचे दरजे की राइफल थी। इसे देखकर मुझे वहुत खुशी हुई। टापू में हथियारवन्दी का कानून था। अतः इस विषय में जो कार्रवाइयाँ करनी थीं, उन सवकी पूर्ति कर गुमाश्ता मुझे राइफल दे गया था। किसी छोटे वच्चे को हवा की वन्दूक मिलने पर भी शायद मेरे जितनी खुशी नहीं होगी।

डॉ० मार्शल आये, तो पलंग पर वैठा-वैठा मैं अपनी वन्दूक से खेल रहा था। मिलन की खुशी का आवेग कम होने पर उसने कहा : "अच्छा हथियार है। इससे टामाराउ का भी शिकार किया जा सकता है।"

मेरा दिल उछलने लगा : "सचमुच ? एकआध जानवर का शिकार करने का मौका मिल जाय, तो वड़ा अच्छा हो। केवल एक ही वार।"

यूरोप में लगभग एक वर्ष से चल रहे महायुद्ध के वारे में हमारे वीच चर्चा छिड़ी। उसे यह संभव नहीं मालूम पड़ता था कि उसमें अमेरिका शरीक होगा। प्रेसिडेण्ट विल्सन ने तटस्थ रहने की नीति अंगीकार की थी।

चलते-चलते उसने कहा : "चालमोगरा के उपचार की एक सुधरी पद्धति से उपचार अव शुरू कर दिया गया है। अव हम दूसरी वार मिलेंगे, तो आप नीरोग होकर घर पर पहुँच चुके होंगे।"

मुझे आशा वँधी—केवल एक क्षण के लिए। क्योंकि ज्यों ही वे आँखों से ओझल हुए, मैं वापस अपने मुकाम पर लौट गया। मैं जानता था कि दूसरों को लाभ हो रहा है। देखता भी था। किन्तु मुझे कोई लाभ नहीं हो रहा था। हाँ, यह हो सकता है कि इस उपचार के कारण उसकी वृद्धि रुक गयी हो। क्योंकि मैं आया था, तव से मेरी हालत विगड़ी तो हरगिज ही नहीं थी।

उसके जाने के बाद मैं मार्शल, विन्टन और कई दूसरे लोगों के बारे में विचार करता रहा। मुझ पर सबसे अधिक परिणाम हुआ था इनके मित्रभाव का। यह भाव केवल मेरे प्रति ही नहीं, सभी रोगियों के प्रति था। उन्होंने और उनके साथियों ने सचमुच इस रोग से युद्ध शुरू कर दिया था और इसमें उन्हें सफलता भी मिलती जा रही थी। कॉलरा, शीतला, मलेरिया जैसे महान् शत्रुओं के साथ उन्होंने इसी प्रकार युद्ध किया और उन्हें रोक दिया तथा काफी कम भी कर दिया था। फिलीपाइन टापुओं में सन् १९०५ में मृत्यु-संख्या भयानक थी यानी प्रति हजार २७·५ तक पहुँच गयी थी। वह १९१३ में १८·८ तक आ गयी। यह कितनी महान् सफलता है, इसे बहुत कम अमेरिकन समझ सकेंगे।

× × ×

स्टीमर लौट गया। उसके दस दिन बाद मैं थोड़ा-थोड़ा चलने लगा। पादरी और मि० हडसन कई बार मिल गये। चरिता मेरी चिन्ता किया करती। फादर मोरेल्लो उसके पास मेरे समाचार पहुँचा दिया करते थे। वह एक वसति-गृह में रहती थी और बहुत स्वस्थ मालूम पड़ती थी, ऐसा उन्होंने कहा।

"अब तो मैं अच्छा हो गया हूँ, फादर! अब चरिता को चाय पर बुलायें, तो कोई हर्ज तो नहीं है न?"

"मुझे लगता है कि उससे मिलने पर आपको जो आनंद होगा, उससे आपका स्वास्थ्य और भी जल्दी अच्छा हो जायगा। नेड! मैं आपका निमन्त्रण उसके पास पहुँचा दूँगा। कल तीसरे पहर का समय रखेंगे।"

तीन वर्ष से भी अधिक के बाद मेरी यह पहली पार्टी थी। मुझे इतना आनंद हो रहा था कि दूसरे दिन सुबह रोज की अपेक्षा कहीं पहले से मैंने टॉमस को परेशान करना शुरू कर दिया। फिर तो हमने इतना काम किया कि पूछिये नहीं! आज की चायपार्टी खूब शानदार होनी चाहिए। हम दोनों अब अच्छे पाकशास्त्री बन गये थे। किन्तु मुझे और भी लालच हुई। मैं मीठी (चासनीदार) केक बनाने लगा। प्रयोग था। दोपहर तक तो हम दोनों काफी थक गये। रसोई-घर में सारी चीजें अस्त-व्यस्त पड़ी थीं। तीन-तीन

प्रयोग किये, पर सब असफल। एक भी ऐसा नहीं बन सका कि उसे मुँह में भी रखा जा सके। मेहमान का नाम मैंने टॉमस को नहीं बताया था। मुझे लगा कि यदि बता दूँगा, तो वह भी जोश में आ जायगा और उसकी कार्यशक्ति घट जायगी। भट्ठी से अंतिम जले हुए घान को निकालते हुए खिन्नता में वह बोला :

"मुझे लगता है साहब कि आपसे मिलने कोई बहुत बड़े आदमी आ रहे हैं। शायद गवर्नर-जनरल स्वयं आ रहे हैं। इसीलिए तो आप इतना घुटाला नहीं कर रहे हैं!" यह नम्र उलहना सुनकर मुझे निश्चय हो गया कि अब उसके धैर्य की हद हो गयी। इससे मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। मेरी भी यही दशा हो रही थी।

"नहीं टॉमस, गवर्नर-जनरल तो नहीं, पर एक महिला हैं। मेरी बहुत पुरानी मित्र हैं। अब ये पैसे ले जा और बाजार में जो अच्छी-से-अच्छी केक मिलें, वह ले आ। देख, अच्छी लाना, रसदार मीठी। कितनी होनी चाहिए, सो तो तू जानता ही है।"

"जी साहब, बाई साहब उसे बहुत पसन्द करेंगी। यही अधिक अच्छा होगा।" कहकर वह छू हो गया।

उस दिन शाम के पाँच बजे मेरे दरवाजे के अन्दर एक मूर्ति ने प्रवेश किया। मैंने कभी कल्पना नहीं की थी कि सुन्दरता की वह ऐसी प्रतिमा होगी। पादरी भी साथ थे, पर मैं तो उन्हें देख भी नहीं पाया। पुरानी चरिता एक सुन्दर बालिका थी। मैं नोलेस्को परिवार के साथ रहता था, तब वह कोई सोलह वर्ष की रही होगी। कद कुछ छोटा, शर्मीली और थोड़ी धूर्त ! अंग्रेजी पढ़ाते हुए मैंने देखा कि वह बड़ी ही बुद्धिमती थी। आज तेरह वर्ष बाद देखा कि वह काफी ऊँची हो गयी है, शरीर-यष्टि कोमल थी और उसके सुन्दर व्यक्तित्व में पूरी संस्कारिता प्रकट हो रही थी। वह एक सुन्दर खानदानी महिला दीख पड़ी। उसकी चमड़ी का रंग पुराने हाथीदाँत का-सा, अत्यंत नाजुक तथा सुहावना था। उसकी माँ शुद्ध स्पेनिश थी। उसके शरीर पर रोग का कहीं नामोनिशान नहीं था। शीशम के समान उसके काले केश इस प्रकार सँवारे हुए थे कि उसकी पेशानी खुली दीख सके। उसकी पोशाक उत्कृष्ट

गुलाबी रंग की मशरू की थी, जिस पर जरी का काम किया हुआ था। महीन सिलवटदार आस्तीनों के ऊपर उसके कन्धों पर एक सुन्दर ओढ़नी पड़ी थी। लहँगा लम्बा था। वह जमीन पर घिसने न पाये, इसलिए एक हाथ से उसने उसे सँभालकर आकर्षक ढंग से ऊपर सँभाल रखा था।

पहले धक्के के बाद मैं कुछ अनमना-सा हो गया और सोचने लगा कि मेरी टाई तो ठीक है न? किन्तु विचार करने के लिए समय कहाँ! उसके साथ आये फादर मोरेल्लो से मैं शिष्टाचार के दो शब्द कहता हूँ, तब तक तो उसने अपना कोमल हाथ मेरे सामने बढ़ाया। मैं रोमांचित हो उठा। मैं शायद ही कभी किसीसे हाथ मिलाता था।

"आपको यहाँ आना पड़ा, इससे मुझे बड़ा दुःख हुआ है, नेड। परन्तु हम एक बार फिर मिल सके, इसकी खुशी भी कम नहीं है।"

उसके अन्दर सुशिक्षित, संस्कारशील फिलीपाइन महिला की सुघड़ता थी। परन्तु मेरा जवाब उतना अच्छा नहीं बन पड़ा।

"मुझे आपके बारे में जब मालूम हुआ चरिता, तो बड़ा ही आघात लगा। और सांचो—"

"बेचारा सांचो! वह तो छूट गया, यह अच्छा ही हुआ।"

क्षणभर दोनों चुप रहे। फिर उसका चित्त ठिकाने आया और उसके चेहरे पर मुस्कराहट झलक आयी।

"अपने मकान और बगीचे को आपने कितना सुन्दर बना लिया है, इसकी फादर मोरेल्लो बड़ी तारीफ करते थे। केवल वे ही नहीं, जो मिलते हैं, वे सब करते हैं।"

"यह तो आपका प्रेम बोल रहा है। किन्तु जरा घूमकर देख ही लीजिये न? सबसे अधिक अच्छी जगह तो उन आमों के नीचे है।"

हम जब बैठे, तो चरिता की तरफ आँखों का इशारा करते हुए फादर मोरेल्लो ने कहा: "नेड, आपने तो कभी बताया ही नहीं कि ये इतनी सुन्दर हैं।"

चरिता ने बात बीच में ही काटते हुए कहा: "फादर, क्या धर्मगुरु भी इस तरह अत्युक्तिभरी बातें करते हैं?" उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में अद्‌भुत चमक थी!

चरिता आयी !

"हाँ फादर, आप सच कहते हैं। मैंने आपको यह नहीं वताया था। एक तो उस समय इनका रूप इतना खिला नहीं था। उस समय तो यह केवल एक सुन्दर वालिका मात्र थीं। और धर्मगुरु के फर्ज के वारे में तो मैं यही मानता हूँ कि सौन्दर्य जहाँ भी हो, उसकी कद्र उन्हें करनी ही चाहिए। इसलिए मैं तो आपका ही समर्थन करूँगा !"

वह हँसी। कुछ देर वाद हम लोग वगीचे में टहलने लगे। मैं वहुत कम वोल रहा था। फादर ने गुलमोहरे का वृक्ष और कुछ 'आरकिडो' दिखाये। उसे भूरा आरकिडो वहुत अच्छा लगा। उसने मुझसे यह वचन भी ले लिया कि मैंने उसे कहाँ और कैसे पाया, इसका सारा किस्सा किसी दिन अवश्य सुनाऊँगा। नारियलों के वीच से चौपाटी का जो सुन्दर दृश्य दीखता था, वहाँ जाकर हम खड़े हुए, तो वह मन्त्रमुग्ध-सी हो गयी।

"नेड, यह तो वहुत ही रमणीय है। मुझे लगता है कि इससे अधिक मनोहर चित्र और उसे फवनेवाली ही फ्रेम मैंने कहीं भी नहीं देखी।"

कुछ देर वातचीत करने के वाद फादर मोरेल्लो ने कहा : "अव मैं आप दोनों को यहीं छोड़कर जाना चाहता हूँ। मुझे अभी अस्पताल जाना है। चरिता, आपको वापस जाने का रास्ता नहीं मिल सकेगा। नेड, अव तो आप इतने अच्छे हो गये हैं न कि इन्हें वसति-गृह तक छोड़ आयें ?"

"अव तो मैं पहलवान वन गया हूँ।"—मैंने कहा।

"मैंने आपके मछलीवाले वन्धे की वात अभी चरिता से नहीं कही है। आप ही इन्हें सव वता दें।"

उनके चले जाने के वाद टॉमस ने पेड़ों के नीचे खाने के मेज सजाये और भूरी तश्तरियों में वह खाना परोसने लगा।

चरिता ने मेरी तरफ मुड़कर पूछा : "मछलीवाली योजना की क्या वात वे कर रहे थे ?"

मैंने उसे सव वताया कि मछली-योजना के वारे में मैं क्या सोच रहा था और इस डेंग्यू वुखार के कारण किस प्रकार कुछ नहीं हो सका।

वह विचारों में पड़ गयी। फिर वोली : "आपने यह वहुत जरूरी काम शुरू किया है। कुछ इसी प्रकार के कारणों को लेकर मैंने सेवू में नृत्यकला

सिखाने का काम शुरू किया था। किन्तु निश्चय ही केवल खेल की अपेक्षा प्रत्यक्ष उपयोगी कार्य सदा ही अच्छा माना जायगा। जब मुझे पहले-पहले सेवू भेजा गया, तो ऐसा लगा कि मैं पागल हो जाऊँगी। महीनों तक मैं बहुत बीमार रही। खुराक भी बहुत कम हो गयी। ऐसा लगने लगा कि इससे तो भगवान् मौत भेज दे, तो भला हो। किन्तु मठ की एक बहन मेरे पीछे पड़ गयी। धीरे-धीरे उसने मेरी सुस्ती कम की। उसने मुझे प्रेम से जीत लिया। उसके बाद मैं उसके साथ लड़कियों में काम करने लग गयी। मुझमें जो हिम्मत नहीं थी, वह उन लड़कियों में थी।"

शरमाते-शरमाते टॉमस चाय ले आया। चरिता ने उसे उत्साहित किया।

"टॉमस, मैंने आपके अद्भुत मुर्गे की तारीफ बहुत सुनी है। उसे दिखाना ही होगा। मैंने सुना कि ४ जुलाई को आपने काफी कमाया और रिझाल के दिन और भी कमानेवाले हैं।"

टॉमस का चेहरा खिल उठा।

"आपने सही सुना है बाई साहब! आप और मि० फर्ग्यूसन चाय लेकर मेरे कमरे में आने की कृपा करें। बड़ी खुशी से मैं आपको अपना मुर्गा दिखाऊँगा। आपने सुना तो होगा कि मि० फर्ग्यूसन ने मुझे यह दिया है। वे हमेशा मुझ पर बड़ी कृपा····।"

"हम मिस्ट्री देखने जरूर आयेंगे।"—मैंने बीच ही में कह दिया।

टॉमस बाजार से जो मीठी केक लाया था, वह हमने चाय के साथ चट कर डाली। फिर मुर्गा देखा। लड़ाकू मुर्गे के बारे में चरिता को बहुत अधिक जानकारी थी। उसने विश्वास दिलाया कि रिझाल के दिन वह निश्चय ही विजयी होगा।

वहाँ से निकलकर हम चौपाटी पर उतरने लगे। चरिता ने कहा : "सचमुच यह बड़ी ऊँची जात का मुर्गा है।"

मुझे एकाएक लगा कि मेरी तबीयत बिल्कुल अच्छी हो गयी है। चरिता ने जब प्याली में चाय उँड़ेली, तो उसका चाय उँड़ेलने का ढंग देखकर मैं मुग्ध हो गया। परोसने के इस छोटे-से काम में भी उसने जो कला दिखायी, उसने मेरे जीवन में ऐसी रम्यता भर दी, जिसका मैंने पहले कभी अनुभव

नहीं किया था। चौपाटी पर बैठकर हम वाडी, वाजे और प्रियजनों की अर्थात् महारोगी आश्रमों की, लुजोन में विताये दिनों की और चरिता के माता-पिता तथा भाई-वहनों की बातें करने लगे।

डूबते हुए सूर्य की प्रभा कोरन के पहाड़ों में छिप गयी। उसकी लम्बी छाया खाड़ी के दूसरे किनारों तक जा पहुँची। फिर भी हमारी बातें, जोश, विनोद चलते ही रहे, मानो आज हमारा पुनर्जन्म ही हुआ हो।

चरिता खड़ी हो गयी। "अव मुझे जाना चाहिए। आपने इस समय को आनन्द से इतना भर दिया कि मुझे कुछ ध्यान ही नहीं रहा कि वह कैसे वीत गया। मेरे घर के लोग शाम के भोजन के लिए मेरी राह देख रहे होंगे। अव खा तो सकूँगी नहीं। किन्तु वे लोग इतने भले हैं कि खाना उन्होंने गरम रखा होगा।"

उसे छोड़ने के लिए मैं साथ हो लिया। कितने ही वर्षों में मुझे ऐसा आनन्द नहीं मिला था।

◆◇◆

संतति-नियमन बनाम संयम : १९ :

अब तक मैं इस टापू की स्त्रियों के सम्पर्क में बिल्कुल ही नहीं आया था, किन्तु अब चरिता के साथ उत्सवों वगैरह में जाने-आने में मुझे कोई अस्वाभाविकता नहीं मालूम हुई। शुरू-शुरू में बहुत शिष्टाचार के साथ और बाद में बगैर किसी संकोच के वह मेरे यहाँ आने लगी। यह मान लिया गया कि वह जब भी आये, शाम की चाय या ब्यालू के लिए यहाँ रुकेगी ही। टॉमस जिस दिन हर्षित हृदय से अपनी माँ को मुझसे मिलने के लिए लिवा लाया, उस दिन चरिता घर में ही थी। मिसेस आग्विलार (टॉमस की माँ) एक क्षीण और झुर्रियाँ पड़ी महिला थी। फिर भी उसे देखने से ऐसा जरूर लगता था कि बचपन में वह सुन्दर रही होगी। सूरत-शकल टॉमस जैसी ही थी। वह मेरे यहाँ आकर शायद चक्कर में पड़ गयी थी। मैं नहीं जानता था कि उसने मेरे यहाँ क्या देखने का अन्दाज किया होगा और पाया क्या होगा!

चरिता ने अपनी स्वाभाविक चातुरी से मुलाकात को आनंदमय बना डाला। इसमें मिस्ट्री मुर्गे ने बड़ी सहायता की। टॉमस अपनी माँ को पहले-पहल सीधा मेरे पास ही लाया था, इसलिए उसे यहाँ तक लाने का खर्च जिस पक्षी ने जीतकर दिया था, उसे वह देख न सकी थी। अतएव माँ की खुशी को बढ़ाने के लिए टॉमस अपने मुर्गे को वहीं उठा ले आया, जहाँ हम बैठे थे।

"रिझाल के दिन जब यह जीतेगा, तो मैं तुझे बहुत-से पैसे भेजूँगा, देखना भला!" उसकी भविष्यवाणी सही साबित हुई। एक महीने के अन्दर मिस्ट्री दूसरी लड़ाई में जीत गया और अब वह संपूर्ण कोढ़िस्तान का एकमात्र समर-विजयी वीर कहलाने लगा।

इन माँ-बेटे को शान्तिपूर्वक और प्रेम से बातें करने के लिए हमने वहीं छोड़ दिया। शाम को जब विदा लेने वह आयी, तो बेचारी गद्गद हो गयी। टॉमस की सँभाल रखने के लिए उसने मेरे प्रति आभार प्रकट करने की कोशिश

की। चरिता उसे चौपाटी पर ले गयी और बड़ी देर तक उसके साथ बातें करती रही। जब वह गयी, तो संतुष्ट मालूम हुई।

"गरीब बेचारी! उसका दिल एकदम टूट गया था।"--चरिता ने कहा--"किन्तु मुझे लगता है कि अब वह राजी हो गयी है। कम-से-कम उसके एक बच्चे का तो ठिकाना लगा। आपने टॉमस पर सच्चा उपकार किया है, नेड!"

"वह तो अपना कमाता है। उसकी योग्यता से अधिक मैं उसे कुछ भी नहीं दे रहा हूँ।····चलो चरिता, मेरे पास कितने ही नये रेकार्ड हैं। इनकी ताल पर हम नृत्य करेंगे।" संध्या समय हम कई बार नाचते और अनेक परिचित जनों की, मेरी तथा चरिता की बहुत-सी बातें करते रहते।

उस रात हम चौपाटी पर घूमे। कोरन पर पूर्ण चन्द्र खिल रहा था। नारियल के वृक्षों की चोटियों पर अपनी रुपहली चादर डाल वह उसके श्यामल छाया-चित्र नीचे चमकती बालू पर अंकित करता रहा। इस निशीथ के सौंदर्य का हम खड़े-खड़े पान कर रहे थे। मैंने चरिता की ओर देखा। वह अपनी सुन्दर देशी वेश-भूषा में बड़ी सुहावनी लग रही थी। मैं उससे बोलने का साहस बटोर रहा था। मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। उसने उसे खींचने की कोई चेष्टा नहीं की। अचानक दूर, ऊपर किनारे की ओर से कुत्तों के रोने की लम्बी और तीव्र आवाज आने लगी। आवाज बड़ी भयानक थी। ऐसा लगा कि इससे हमारा रक्त जमकर बर्फ बन जायगा। चरिता बुरी तरह भयभीत होकर चिल्ला पड़ी और मेरी बाँहों में सरक आयी। मैं किसी तरह टूटे-फूटे छोटे-छोटे शब्दों में उसे सान्त्वना देने की चेष्टा करने लगा।

"डरो नहीं, चरिता! श्मशान में जंगली कुत्ते भोंक रहे हैं।"

"श्मशान में?"

चरिता बुरी तरह काँपने लगी। मैं उसके ऊपर झुक गया और बार-बार उसका चुम्बन करने लगा। मैंने उसे और अपने निकट खींच लिया। हम भूल गये अपना संकट, हम भूल गये अपना अभिशाप, हम भूल गये और सब कुछ—सिवा इसके कि रात हमारी है। मैं उसे घर में लौटा लाया। सवेरे जब मैं उसे छोड़ने गया, तब प्रभात हो चुका था।

"मेरे साथ बहुत दूर तक न आयें, नेड।"

"अच्छी तरह—अच्छी तरह चली जायँगी न ?"

"अव मैं रोमेरो के यहाँ जाऊँगी। वसति-गृह पर सीधी न जाऊँगी। जेटूलियो रोमेरो मेरे रिश्ते में होते हैं। वे कोई पूछताछ नहीं करेंगे। नमस्ते प्यारे!"

वह चली गयी।

× × ×

दो हफ्ते वीत गये। चरिता कहीं भी दिखाई नहीं पड़ी। मैं तो पागल-सा हो गया। वाजार में एक दिन जेटूलियो मिला। मैंने उसे रोका।

"कितने ही दिनों से चरिता दिखाई नहीं दी।"—मैंने कहा।

"उनकी तवीयत अच्छी नहीं है नेड ?"

घर पर लौटकर मैं इस पर विचार करने लगा। क्या जेटूलियो विलकुल सच कह रहा है ? चरिता मुझे टालना चाहती है या सचमुच वीमार है। और भी एक कल्पना आ रही थी। उसे मैंने हटाने का वहुत प्रयत्न किया, पर किसी प्रकार हटती नहीं थी। कहीं उसके पैर तो भारी नहीं हो रहे हैं ?

मुझे चरिता की जरूरत थी। वह भी मुझे चाहती थी। हम शादी करना चाहें, तो हमें रोकनेवाला कोई कारण संसार में नहीं था। मुझे एक प्रकार का आसुरी हर्ष हुआ। मैं विधाता को भी मात दे दूँगा और जीवन के आनंद का पूरा-पूरा उपभोग करूँगा। किन्तु यदि वच्चा पैदा हो गया तो ?—क्या वह भी कोढ़ी होगा ?

मैं विन्टन की वातों पर विचार करने लगा। प्रतिवर्ष यहाँ रोगियों में लगभग सौ वच्चे पैदा होते हैं। वे रोगी नहीं पैदा होते, क्योंकि कोढ़ आनुवंशिक रोग नहीं है। फिर भी उन्हें रोग की छूत लग जाने की अत्यधिक आशंका वनी रहती है। इसलिए जितनी भी जल्दी संभव हो, उन्हें उनकी माँ के पास से हटा लिया जाता है और नीरोग-विभाग के वाल-गृह में उनकी परवरिश की जाती है। परिणाम यह होता है कि या तो वे कोढ़ी वनकर यहाँ कभी आते ही नहीं। फिर उनके माता-पिता नीरोग होकर यहाँ से घर न पहुँच पायें, तो माँ-वाप अपने वच्चों को कभी देख ही नहीं पाते। हाँ, जव तक वच्चे कोढ़िस्तान के अन्दर रहते हैं, तव तक तो माँ-वाप अपने वच्चों को देखने के लिए जा सकते हैं। फिर भी उन्हें छू नहीं सकते।

इस विचार-मन्थन में डूबा मैं एक दिन उस बाल-गृह को देखने चला गया। वहाँ बाहर के तंबू में बीस माताएँ अपने बच्चों को देखने की प्रतीक्षा में बैठी थीं। सामने ऊपर की तरफ बाल-गृह की लम्बी छत थी। सफेद कपड़े पहने एक नर्स एक बच्चे को लेकर छत पर आयी। 'आह' के साथ एक लम्बी साँस डालते हुए एक स्त्री ने—वह तो एक बालिका ही थी—आगे बढ़कर अपने हाथ ऊँचे किये। वह इसीका बच्चा था, शांत पड़ा था। उसे किसीकी परवाह नहीं थी। सिस्टर बच्चे के साथ बातें करने लगी और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर उसके साथ खेलने लगी। बच्चा खिलखिलाकर हँस पड़ा। माँ को खुशी हुई। वह भी हँसने लगी। बाद में सिस्टर उसे लेकर अंदर चली गयी और एक मिनट बाद फिर आ गयी। अबकी बार उसके पास दूसरा बच्चा था। उसकी माँ मेरे सामने से होकर उधर गयी। मेरी ओर उसका ध्यान नहीं था। वह जमीन पर गिर गयी और रोने लगी। मैं वहाँ से चला आया। मुझे बड़ा दुःख हुआ। क्या चरिता पर यह संकट आनेवाला है? एक जबरदस्त आघात मुझे लगा। जेन को छोड़ने का या मुझे कोढ़ हो गया है, यह जानकर भी मुझे इतना अधिक दुःख नहीं हुआ था। इस नरक-कुण्ड में—कोढ़ होने की आशंकावाला—बच्चा मैं नहीं चाहता।

पाँच दिन तक मैं घर से बाहर नहीं गया। जोजि आया, पर मैं उससे नहीं मिला। धन्धा अपनी खबर आप लेता रहेगा। मैं तो पीकर रात-दिन नशे में चूर रहने लगा। टॉमस तंग आ गया। उसने मेरे साथ बातचीत करने का प्रयत्न किया। पहली बार मैंने उसे मारने के लिए हाथ उठाया और ढकेल दिया। इसके बाद चरिता आयी।

उस समय मैं आम के पेड़ के नीचे बैठा था। मैंने दाढ़ी नहीं बनायी थी। बाल भी सँवारे नहीं थे। सामने शराब की बोतलें पड़ी थीं। चरिता को देखकर मेरी आँखों का नशा उतर गया। मैं उठा और लड़खड़ाता उसकी ओर बढ़ा। उसने अपना हाथ देकर मुझे सँभाल लिया।

"चरिता, बताइये, क्या आपके पैर भारी हो रहे हैं?"

"अरे-अरे, प्रियतम! तो क्या इसी डर से आपकी यह हालत हो रही है?

टॉमस ने आकर मुझे आपका सारा हाल वताया। नहीं-नहीं नेड, ऐसी कोई वात नहीं है। मैं सचमुच वीमार हो गयी थी। चलिये, हम उधर चलकर वैठें।"

मैं टेवुल पर सिर रखकर रोने लगा। हिचकियाँ वँध गयीं। चरिता पास आकर वैठ गयी। वह भी धीरे-धीरे रो रही थी और मेरे शान्त होने की राह देख रही थी। आवेग शांत होने पर वोली :

"प्यारे नेड, आज क्रिसमस की रात है।"

मैं तो भूल ही गया था। मैंने सिर उठाकर पूछा : "क्रिसमस ?"

"हाँ, नेड, आज मैं यहीं रुक जाऊँ और खाना भी यहीं खाऊँ, तो कैसा रहे ?"

"खाना यहीं खायेंगी ? सचमुच चरिता, वड़े दिन का खाना यहीं खायेंगी ?" उसकी इजाजत लेकर मैं दाढ़ी वनाने और नहाने के लिए अन्दर चला गया।

इनसे निपटकर उसके पास जाने से पहले मैंने उस भूरे आरकिडो की कुछ डालियाँ इकट्ठी कीं और उनका एक सुन्दर आभूषण वनाया। कुछ गर्व के साथ मैंने उसे चरिता को भेंट में दिया।

"ओ प्रियतम, कितना सुन्दर है यह !"

"क्या करूँ ? वड़े दिन पर भेंट देने के लिए मेरे पास आज दूसरी कोई चीज ही नहीं है।"

"क्या कह रहे हैं ? इतना सुन्दर अमूल्य आरकिडो है यह ! उसका आपने ऐसा सुन्दर मध्याह्न के आकाश-सा आभूषण वनाया, फिर भी कह रहे हैं, मेरे पास कुछ नहीं ! प्रियतम, मैं इसका मूल्य जानती हूँ। मेरे दिल में इसकी स्मृति इन पत्तियों की-सी सदा ताजी वनी रहेगी।"

एक घण्टे वाद दूव के कालीन पर टॉमस हमारे पास चाय रख गया। चमेली के फूलों की तीव्र सुगन्ध चारों तरफ फैल रही थी। चरिता अपनी गहरी पोशाक और लेसदार ओढ़नी में सुन्दरता की मानो प्रत्यक्ष मूर्ति ही लग रही थी। अव वात करने लायक मैं स्वस्थ हो गया था।

"चरिता, आप मुझसे शादी करेंगी ?"

उसने लम्वी साँस छोड़ते हुए कहा : "नहीं, नेड।"

"लेकिन क्यों नहीं ? आपका प्रेम तो मुझ पर है ।"

"आपने ही तो मुझे आज असली कारण वता दिया ।"

"मैं तो मूर्ख वन गया था चरिता । अव ऐसी वेवकूफी न करूँगा । निश्चय मानिये, अव मैं किसी वालक का जन्मदाता नहीं वनूँगा ।"

"सच है नेड । किन्तु आप देखते नहीं कि इसी कारण तो मैं आपसे शादी नहीं कर सकती । यह मेरी धर्म-शिक्षा के विरुद्ध है ।"

"तुम्हारे कहने का तात्पर्य यह तो नहीं है कि धर्म इस वात में विश्वास करता है कि इस दुनिया में कोढ़ी वच्चों की संख्या वढ़े ?"

"इस तरह की शंका करना मेरा काम नहीं है ।"

"किन्तु चरिता, मैं तो आपके वगैर रह नहीं सकता । क्या हमें जीवन का आनंद लेना ही नहीं चाहिए ? क्या रोग के रूप में इतना शाप काफी नहीं है ? आप मुझसे जरूर शादी कर लीजिये । हम दोनों मिलकर जीवन का कितना अधिक आनंद लूट सकते हैं ?"

"नेड, आप कहते हैं कि हम शापित हैं । किन्तु क्या सचमुच हम दोनों समान रूप से शापित हैं ? अथवा एक है और एक नहीं, ऐसा भी हो सकता है ? यदि हमारी शादी पहले से ही हुई होती और दो में से एक अच्छा हो गया होता, तो सवाल ही खड़ा न होता । लेकिन अव यदि आप अच्छे हो गये और मैं रोगी वनी रही, तो आप वापस स्वदेश जाना चाहेंगे । किन्तु अगर मैं अच्छी· · ·नहीं, मैं तो जा ही नहीं सकती । आपके यहाँ के लोग कोढ़ के वारे में इतना कम जानते हैं कि वे आपको समाज में स्वीकार कर लेंगे । किन्तु मेरा तो संपूर्ण जीवन कोढ़ को जानने-पहचाननेवाले लोगों में ही वीता है । मैं लौट जाऊँ, तो भी लोग मुझसे परहेज करते रहेंगे और मेरी ओर शक और अविश्वास की दृष्टि से देखते रहेंगे । इसलिए मुझे तो यहीं रहना पड़ेगा ।"

"चरिता, यह संभव नहीं कि मैं अच्छा हो जाऊँ । पिछले वर्षों में रोग वढ़ता ही गया है । जव तक आयु है, तव तक हम सुख का उपभोग क्यों न कर लें ?"

"नेड, हमें सत्य की तरफ सीधी नजर रखनी चाहिए । यह तो हो नहीं सकता कि मैं आपके साथ शादी करूँ और ऐसे खटकर्म करूँ कि वच्चे पैदा ही न हों । यह काम मेरी धर्म-शिक्षा और ईश्वर-निष्ठा के विपरीत है । आप कहते

हैं कि जीवन में कुछ रहा नहीं है। किन्तु मैं कहती हूँ कि ईश्वर तो है ही और मेरे लिए तो ईश्वर सबसे बड़ा सत्य है। वह मेरे जीवन का प्रत्यक्ष एक भाग है।"

मैं उसे देखता ही रह गया। उस चाँदनी में उसका रूप अलौकिक कांतिमान् लग रहा था। यह कान्ति ईश्वर-शरण की थी। मेरे पास कोई जवाब नहीं था। उसका मार्ग अलग था और मेरा मार्ग अलग!

पुराने स्पेनिश घण्टे बजने लगे। घण्टे मन्दिर के थे। यह मन्दिर उसी पंथ का था।

"मध्य-रात्रि की पूजा को अब केवल आध घण्टा बचा है। नेड, आज बड़े दिन की पूजा है। मेरे साथ चलेंगे?"

मकान के पीछे से होकर हम सड़क पर आ गये। दोनों मौन थे। बहुत से लोग मंदिर की ओर जा रहे थे। बात करने की मेरी वृत्ति नहीं थी। होती भी, तो बच्चों की दौड़-धूप और हँसी तथा बड़ों की धीमी चाल के दृश्य मुझे मूक बना देते। चरिता भी कुछ नहीं बोली। रास्ते पर पेड़ लगे थे। उनकी छाया के बीच से जो चंद्र-किरणें आ रही थीं, उन्हींके प्रकाश में मैंने देखा कि उसका चेहरा फीका हो रहा है। मुझे स्मरण हो आया कि वह बीमारी से उठी है। इसलिए मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। कार्यालय की मुख्य सड़क आदमियों से भरी थी। टेकरी के ऊपरवाले पुराने स्पेनिश विभाग में जाने के लिए हमने मुख्य सड़क छोड़ दी। घूमती हुई लम्बी पत्थर की सीढ़ियाँ मानो घुटनों के बल पड़े आदमियों की कतारों-सी दीख रही थीं। उन्हें पार कर हम पत्थर के बडे दरवाजे के अन्दर से हो मन्दिर में घुसे। दरवाजों पर नक्काशी-काम बहुत सुन्दर था। अन्दर जाकर हम रुके। संगीत चल रहा था। उसके स्वरों में एक प्रकार का विलक्षण कंपन था। चरिता ने गीत पहचान लिया।

"कैसी दिल को हिला देनेवाली चीज है यह? यह चरवाहों का एक पुराना देहाती गीत है। इस वर्ष पहली बार ही ये इसे गा रहे हैं। महीनों से इसकी तालीम हो रही है।"

कदाचित् उस दिन मेरी मनोदशा अधिक अनुकूल होने से या अन्य किसी कारण से इस संगीत ने मुझे मुग्ध कर दिया। उसने मुझे व्याप्त कर लिया। जाने कितना ऊँचा चढ़ाकर ले गया। भजन पूरा होने तक हम वहीं रुके रहे।

पत्थर की जमीन, पत्थर की ही दीवालें, दोनों तीन सौ वर्ष पुरानी थीं ! सारी कुरसियाँ भरी हुई थीं। कहीं खड़े रहने की जगह न थी। फादर मोरेल्लो वेदी पर थे। इन सबमें अकेले वे ही नीरोगी थे। बाकी हम सब महारोगी। कितने ही गानेवाले लगभग अन्धे थे। कितनों की ही उँगलियाँ नहीं थीं। प्रसाद लेकर ज्यों-ज्यों भक्तजन वेदी छोड़ बाहर निकलते गये, त्यों-त्यों हम खाली जगह में आगे बढ़ते गये।

कुछ देर बाद चरिता ने कहा कि "उसके लौटने तक मैं एक जगह बैठकर उसकी राह देखूँ।" वह बीच के मार्ग से होकर वेदी की तरफ चली गयी। मैं देख रहा था कि सैकड़ों मनुष्य आगे-पीछे हट रहे हैं। प्रसाद लेकर लौटनेवालों के चेहरों पर शान्ति और प्रसन्नता थी। धीरे-धीरे मैं अनुभव करने लगा कि धर्म उनके जीवन का एक प्राणप्रेरक तत्त्व है। उससे उन्हें जीवन चलाने के लिए बल मिल रहा है। अंत में जब हम सीढ़ियाँ उतरकर चरिता के रिश्तेदार के मकान की ओर गये, तब सुबह का समय हो गया था।

मैं मौन रहा। धर्म-संप्रदायों का लोगों के दिलों पर कितना असर होता है, इसका तथा—मुझे इतना चाहने पर भी—चरिता इतनी दृढ़ क्यों रह सकी, इसका कारण मेरी समझ में आने लगा। मेरे अपने विचारों में कोई अन्तर नहीं हुआ। फिर भी उसके सिद्धान्तों के प्रति मेरे दिल में आदर उत्पन्न हो गया। चरिता के साथ मेरी शादी असंभव थी और असंभव रहनेवाली भी थी। किन्तु इस कारण मेरे दिल में कोई कड़वाहट पैदा नहीं हुई। रुकते-रुकते और चुने हुए शब्दों में मैंने अपने ये भाव चरिता से कह डाले।

"बड़ी आभारी हूँ नेड। आपने मुझे जो कहा, यह आपकी उदारता है। मेरा दिल अभी बहुत भारी है, पर वहाँ शान्ति है। जन्मग्रहण न करनेवाला हमारा पुत्र निःसन्देह आज हम लोगों का आभार मानता होगा।"

"हाँ, चरिता ! तुम बिलकुल सही कह रही हो।"

उसका मकान आ गया, हम रुक गये।

"अब आगे के बारे में क्या सोचा है ?"

"मुझे लगता है कि अभी कुछ समय तक हम केवल सभा-समाज में ही मिलते रहें। आपका क्या खयाल है ? इसके बाद आगे चलकर जब हम दोनों

के दिलों के घाव समय पाकर भर जायें, तो हम शुद्ध मित्रता का सम्बन्ध निवाह सकेंगे। मैं नहीं चाहती कि आप मुझसे सर्वथा दूर हो जायें, नेड!"

"और मैं भी आपको खोना नहीं चाहता, चरिता!"

"तो जब तक आपको अपने बारे में पूरा विश्वास नहीं हो जाता, हम दोनों समय की प्रतीक्षा करते रहें। फिर आप मुझे सूचना भेज देंगे, तो मैं आ जाऊँगी।"

"बड़े दिनों का अभिनन्दन, प्रिये!" मेरी आवाज खुद मुझे भी अजीब-सी लगी।

"नमस्कार प्रियतम! कुमारी माता मेरी आपको शान्ति प्रदान करें।"

मैं अकेला घर लौट आया। ऐसा अकेलापन और सूनासूना लगने लगा, जैसा पहले कभी नहीं लगा था। क्योंकि अब तो संपूर्ण जीवन अकेला ही रहना था।

◆◆◆

ईसवी सन् उन्नीस सौ सत्रह : २० :

सन् १९१७ तक हमारे मछलीवाले उद्योग ने अच्छी तरक्की कर ली थी। उसका स्वरूप सहकारिता का था। हर आदमी को उसकी मजदूरी मिल जाती। प्रारम्भ में महीने में दस पेसो (लगभग १८ रुपये) मिलते। वह बढ़ते-बढ़ते बीस पेसो तक चला गया। वेतन खर्च निकल जाने के बाद जो मुनाफा होता, उसमें से एक निश्चित भाग डिविडेन्ड (लाभ) के रूप में दे दिया जाता। प्रारम्भ में साधन-सामग्री के लिए अधिकांश पूँजी मैंने ही दी थी। किन्तु बाद में ज्यों-ज्यों काम करनेवालों की शक्ति बढ़ती गयी, त्यों-त्यों वे खुद उसके शेअरों में पूँजी लगाने लगे। यह सब चुक जाने के बाद जो विशेष बचत होती, उसमें चालीस प्रतिशत मेरा हिस्सा होता था। मैं वेतन के रूप में कुछ नहीं लेता था। इसे व्यवस्थापक का मेहनताना समझ लीजिये। बचत का शेष साठ प्रतिशत उस महीने में जिसने-जिसने जितने-जितने घण्टे काम किया, उस परिमाण में बाँट दिया जाता। डॉक्टरों की सलाह के अनुसार कुछ तो पूरे समय काम करते, तो कुछ कम समय। पूरे समय काम करनेवाले अगर किसी दिन किसी कारणवश काम पर नहीं आ पाते, तो उनके लिए यह लाजिमी था कि वे बदले में किसी दूसरे आदमी को भेज दें। कुछ वर्ष बाद मैंने बचत के अपने भाग को घटाकर पहले तीस प्रतिशत और बाद में बीस प्रतिशत कर लिया। पैसे कमाने का मुझे कुछ अभिमान जरूर होता था, पर उसका कुछ भी उपयोग न हो सकता था। मेरे रहने की जगह और मेरे नित्य-नैमित्तिक खर्च की पूर्ति मेरी पेंशन में से अच्छी तरह हो जाती थी। इस कारण यह कमाई तो पूरी तरह बच जाती थी।

जोजि क्रूज ने संकोचपूर्वक इतना ही कहा कि उसने किश्तियाँ आदि बनाने में कभी-कभी मदद की थी। वास्तव में तो यह हमारी कम्पनी का एक मूल्यवान् साथी सिद्ध हुआ। पहली किश्ती हमने मनीला से मँगायी थी। किन्तु बाद में तो सारी किश्तियाँ उसीने अपनी निगरानी में यहाँ बनवायी थीं।

हमने काफी वड़ी-वड़ी मोटर-वोटें वनायी थीं। छोटी किश्तियाँ तो वहुत छोटी थीं। मेरे मकान के सामने समुद्र में मछलियाँ पकड़ने के लिए हमने जो वाँस के फन्दे रख छोड़े थे, वहाँ तक जाने के लिए इनका उपयोग करते थे।

मछलियाँ आसानी से पकड़ में आ जाती थीं। वाँस के वनाये हुए हमारे फन्दे जल के ऊपर ऐसे दीखते थे, मानो किमचियों की वाड़ लगी हो। एक सिरे पर उसका चौड़ा प्रवेशद्वार वना दिया गया था। उसमें से होकर मछलियाँ अन्दर आतीं और अन्दर से कम चौड़े घेरे में घिरते-घिरते एक छोटे-से मुँह में पहुँच जातीं। यही फन्दे का द्वार था। मुख्य फन्दा था, वाँस की दूसरी वाड़। उसमें से मछलियाँ वापस आसानी से नहीं जा सकती थीं। उसमें से उन्हें वाहर निकालने के लिए हम हाथ की जालियों से काम लेते थे। जो पकड़ में आ जातीं, उन्हें किश्तियों में डाल लेते।

हमारे आदमियों से मेरा अच्छा परिचय था। मैं टागालोग भाषा अच्छी तरह वोल लेता था। कामचलाऊ विसायान भी वोल लेता। नौजवान अंग्रेजी वोलते, क्योंकि फिलीपाइन में अमेरिकी राज्य की स्थापना होने के वाद स्कूलों में अंग्रेजी की पढ़ाई जारी कर दी गयी थी।

जोजि और उसकी लड़की मारिया मेरे मकान के नजदीक एक छोटे-से मकान में रहते थे। जोजि की पत्नी उसके यहाँ आने से पहले ही मर गयी थी। उसे मारिया की वड़ी चिन्ता थी। किन्तु दवा से उसे काफी लाभ हो रहा था। जोजि को आशा थी कि आगे-पीछे उसे पेरोल (कच्ची मुक्ति) मिल सकेगी। इससे यह भय था कि जोजि एकदम अकेला हो जायगा। पर लड़की के हित के मुकावले में इसका क्या मूल्य था ?

सान्टियागो त्रिलास, विक्टर काविसान और रिकार्डो जासिल्डो ऐसे तीन अन्य युवक थे। वे अविवाहित थे। रोग भी प्रारम्भिक अवस्था में था। तीनों परिश्रमी मजदूर थे, पर उनमें अपनी सूझ-वूझ नहीं थी। काम शुरू होने से पहले वे वाजारों में केवल मटरगश्ती किया करते थे। सान्टियागो और जासिल्डो असल में मछुए थे। इसलिए वे वड़ी खुशी से कम्पनी में शरीक हो गये और फन्दे रखने के लिए अनुकूल जगह ढूँढ़ने में उन्होंने वहुत वड़ा काम किया। इसके अलावा जाल कहाँ फैलाया जाय, इस वात की सूझ उनमें जन्मजात थी।

फ्रान्सिस्कोर्ड नाम का एक और आदमी था। उम्र चालीस से कुछ ऊपर ही रही होगी। वह और उसकी पत्नी दोनों रोगी थे। उसकी बीमारी बहुत तेजी से बढ़ी थी। इसलिए हमने उसे जाल बुनने का काम सौंप दिया। उसकी पत्नी भी उसकी मदद करती और दोनों मिलकर हमारे लिए काफी जाल बना देते। कभी-कभी जब जालों में बहुत-सी मछलियाँ आ जातीं, तो उन्हें साफ करने में ये मदद करते।

किन्तु सबसे अधिक ध्यान खींचनेवाला हमारा साथी था फ्रेडरिक आरांग। बड़ा निष्ठावान् और होशियार मछुआ था। उसने एकाग्रतापूर्वक काम किया। परिणामतः उसके स्वास्थ्य में भी तुरन्त सुधार दीखने लगा। डॉक्टरों ने भी उसके उत्साह को बढ़ाया और उसे छूटने की आशा दिलायी। इससे उसके स्वास्थ्य में और भी तरक्की होने लगी। उसके चले जाने में हमारी बड़ी हानि थी। फिर भी हम सब उसकी रिहाई के दिन की बड़ी उत्सुकता के साथ राह देखने लगे।

आत्महत्या, पागलपन या शराबखोरी का मैं कहीं शिकार न हो जाऊँ, इस विचार से मैंने इस काम का प्रारम्भ किया था। विन्टन खूब जानते थे कि इन तीनों से मुझे बड़ा खतरा था। शायद यह भय उन लोगों के बारे में भी था, जो हमारे साथ काम करते थे। इसमें लगभग पचास मनुष्यों को पूरे या थोड़े समय का काम मिल गया था। उनकी कमाई अधिकांश में उनके अपने आश्रितों को भेज दी जाती थी, जो दूसरे देशों में पड़े थे। उपर्युक्त इन तीन अविवाहितों ने अपना खाना पकाने और कपड़े वगैरह धोने के लिए एक दम्पति को नौकर रख लिया था। कोढ़िस्तान के विस्तार को देखते हुए यह काम बहुत छोटा—एक बड़े तालाब में मेंढ़क के समान तुच्छ था। फिर भी यह मेंढ़क जानदार था और उसने अपने क्षेत्र में एक हलचल पैदा कर दी थी। सभी डॉक्टरों को यह प्रवृत्ति पसन्द आयी। उन्होंने कहा कि हमारी सफलता का असर बीमारों के भण्डार तथा अन्य व्यवसायों पर भी पड़ा है।

मैं मानता हूँ कि इसका बहुत कुछ श्रेय चरिता को था। हमारे जाल तथा मछलियाँ उतारने और साफ करने की क्रियाएँ दिखाने के लिए वह अपने विद्यार्थियों को ले आती। यही नहीं, विद्यालय के दूसरे शिक्षकों के सामने भी

इसका जिक्र करतीं। वे वाकायदा विद्यार्थियों को वर्गों में वाँटकर हमारे कार्यालय में लाते और हमारे कामों द्वारा समग्र फिलीपाइन द्वीपों में चल रहे मछली के धन्धे की उन्हें जानकारी देते।

वच्चों को इसमें इतना आनन्द आने लगा कि उन्होंने हमारे कारीगरों से छोटी-छोटी किश्तियाँ वनवाकर उन्हें इनाम के तौर पर विद्यार्थियों को देने की प्रार्थना की। हमारा काम देख जाने के वाद शिक्षक उनसे इस काम पर निवन्ध लिखवाते और अच्छे निवन्ध लिखनेवालों को ये किश्तियाँ इनाम के रूप में दी जातीं। इस प्रकार कोढ़िस्तान में हमारे काम का विज्ञापन होने लगा। ज्यों-ज्यों उसमें सफलता मिलती गयी, त्यों-त्यों अविकाधिक आदमी काम की माँग करने लगे। सवको तो हम तुरन्त काम नहीं दे सकते थे, किन्तु उनके नाम, पता और योग्यता एक सूची में लिखकर उसे मैं डॉ० विन्टन के पास भेज देता। डॉ० विन्टन इन लोगों को काम और उचित मजदूरी देने का यत्न करते रहते।

मेरा खयाल है कि जो लोग काम से लग गये थे, वे उपचार कराने में भी अधिक नियमित होते थे। जव उनके पास काम नहीं था, तो निराशा का मुकावला करना उनके लिए अधिक कठिन होता था। मुझे तो ऐसा भी लगा कि जिन्हें अपनी रुचि के अनुकूल काम मिल गया, वे अपने स्वास्थ्य की सँभाल भी अधिक अच्छी तरह कर पाते थे।

× × ×

इस वीच हमारे संस्थान में 'पेरोल' के लायक एक जत्था तैयार हो गया। डॉक्टरों की जाँच में तीस आदमी 'निगेटिव' (रोगजन्तुओं से मुक्त) पाये गये। अर्थात् अव उनका रोग वढ़ नहीं रहा था और समाज को उनसे कोई भय नहीं रह गया था। पुराने मंदिर के पास उनके लिए एक अलग जंतुमुक्त-निवास (निगेटिव हाउस) वनाया गया। डॉ० विन्टन का खयाल था कि इन लोगों को रोगमुक्त करने का श्रेय वे नहीं ले सकते थे। उनमें से अधिकांश खुद-व-खुद अच्छे हो गये थे। दूसरे रोगों की भाँति कोढ़ भी कभी-कभी खुद, वगैर उपचार के मिट जाता है। इसलिए डॉक्टरी दृष्टि से इस पहले जत्थेवाले आदमियों का कोई खास महत्त्व नहीं था। किन्तु रोगियों की दृष्टि से तो इसका महत्त्व काफी था। छूटनेवाला यह पहला वड़ा जत्था था। अर्थात् यहाँ जो

लोग आते हैं, उन्हें सारी जिन्दगी यहीं काटनी पड़ेगी, ऐसी बात नहीं—यह सिद्ध हो गया। हमें निश्चय हो गया कि यहाँ से भी छूटने की आशा है। फिर जो लोग यहाँ से छूटकर बाहर जायेंगे, वे यहाँ के बारे में आशादायक बातें लेकर जायेंगे। इससे अब दूसरे मरीजों को यहाँ लाने में इतनी सख्ती की जरूरत नहीं होगी। काम आसान हो जायगा। यह बहुत जरूरी था। क्योंकि स्वास्थ्य-विभाग के अधिकारियों को कई बार रोगियों को बलपूर्वक पकड़-पकड़कर लाना पड़ता था। ऐसा करने में बहुत-से अधिकारियों को गंभीर मार भी सहनी पडती।

इन तीस भाग्यशालियों को धूमधाम के साथ विदा देने के हक की अदायगी कोढ़िस्तान की तरफ से हमने कर दी।

इन्हें लेकर जो जहाज गया था, वह उधर से लौटते समय वॉल्टर सिमसन नामक एक नये अमेरिकन को ले आया। वह स्पेनिश युद्ध का एक अनुभवी सिपाही था। उसके आने का समाचार पाकर मुझे खुशी हुई और मौका मिलते ही मैं उससे मिलने के लिए गया। उम्र में वह मुझसे बड़ा, बाल कुछ लाल और मोटा-सा आदमी था। बड़ा उदास रहता था। मैंने उसे उत्साह दिलाने का प्रयत्न किया, पर कभी उसकी उदासी एकदम नहीं गयी। पैनसिलवेनिया संस्थान का वह निवासी था। रोग प्रकट होने से पहले सात वर्ष स्वदेश में रहा और यहाँ आने से पहले सेबू गया था। बस, उसके बारे में मुझे केवल इतनी ही जानकारी मिल सकी थी। हम दोनों के बीच एक और समानता यह थी कि हम दोनों ने इन्जीनियरी का अध्ययन किया था। फिर भी हम लोगों के विचार परस्पर बहुत कम मिलते थे। मुझे लगता है कि हम दोनों को परस्पर के समागम की अपेक्षा फिलीपाइन मित्रों का समागम अधिक अच्छा लगता था।

कुछ समय तक तो सिमसन ने किसी भी काम-धन्धे में कोई दिलचस्पी नहीं बतायी। इसमें मैं उसका दोष नहीं देखता। मैं तो उसे केवल मछली का काम बता सकता था। किन्तु इसमें उसे जरा भी दिलचस्पी नहीं थी। उसके और मेरे दृष्टि-बिन्दु एकदम अलग-अलग थे। अधिकांश में मैंने उसे अकेला ही रहने दिया। किन्तु वह अमेरिकन था, इसलिए मैं कभी-कभी टॉमस के साथ

उसके पास कोई खाने की चीज भेज दिया करता। धीरे-धीरे उसकी अलग रहने की वृत्ति कम होने लगी। फिर भी मुझे लगता है कि किसीके साथ घनिष्ठता उत्पन्न करना उसके स्वभाव में ही नहीं था।

× × ×

वावाल के रेडियो स्टेशन के जरिये हमें समाचार वहुत जल्दी मिल जाया करते। १९१७ में अमेरिका युद्ध में शरीक हो गया, इसके समाचार हमें मिले। स्वभावत: लोगों में कुतूहल और अधिकारी-वर्ग की तरफ से लड़ाई सम्वन्धी सभा, सम्मेलन, जुलूस वगैरह शुरू हो गये। वातावरण में लड़ाई की गरमी आ गयी।

एक अमेरिकन और भूतपूर्व सैनिक के नाते मैंने भी प्रचार-कार्य में उत्साह से भाग लिया। थोड़ी देर के लिए मैं पुन: सैनिक वन गया और ऐसे रंग में आ गया, मानो दुश्मनों के मुकावले के लिए कूच कर रहा हूँ। किन्तु यह सारा समाप्त हो जाने के वाद निराशा का उद्वेग आये वगैर नहीं रहा। लोग मेरे आसपास इकट्ठे होकर अनेक प्रश्न पूछते। जर्मनी को पराजित करने में अमेरिका को कितना समय लगेगा? अमेरिका के पास कितनी फौज है और वह कितनी फौज खड़ी कर सकती है? जर्मनी की पनडुब्बियाँ, नौसेना, हवाई सेना वगैरह का सामना करने के लिए अमेरिका के पास क्या-क्या साधन हैं आदि। इनमें से जितनों के जवाव मुझसे वन पड़े, मैंने दिये। इस विषय में लोगों को जो तफसील की वातों की जानकारी थी, उसे देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। उनके दिमाग से दुनिया मर नहीं गयी थी। उन्हें संसार की हलचलों में रस था। प्रचार के परिणामस्वरूप लोगों ने लड़ाई के वॉण्ड भी खरीदे थे।

'नेशनल गार्ड' (राष्ट्रीय संरक्षक दल) का पदाधिकारी होने के नाते टॉम को सेना में भरती होने में देरी नहीं लगी। वह तुरन्त लेफ्टनेंट के पद पर पहुँच गया। उसका पत्र मुझे मिला, तव तक तो वह यूरोप के लिए रवाना भी हो चुका होगा।

"नेड, हम दोनों साथ-साथ जा पाते, तो कितना अच्छा होता! अपने परिवार की तरफ से राष्ट्र के झण्डे को ऊँचा रखने का मैं यत्न करूँगा। अव

तक तो हमारे परिवार में से जो-जो भी युद्ध में गये, वे सभी जीवित वापस आये हैं। इसलिए मेरा अनुमान है कि मैं भी लौटकर आ जाऊँगा। फिर भी अगर न लौट सका, तो तुझे और भी अधिक आनंदित होना चाहिए। मैं तुझे बता दूँ कि जेन के विषय में कुछ भी चिन्ता मत करो। शिकागो के एक संगीत विद्यालय की वह आचार्या है और जहाँ तक मुझे पता है, खूब अच्छी तनख्वाह उसे मिलती है। मुझे कुछ हो गया, तो तेरे पास तुरन्त समाचार पहुँच जाय, इसकी व्यवस्था मैंने मेजर टॉमसन से मिलकर कर दी है। विल तो बच्चों के समान उमंगों से भरा है। वह पुनः डॉक्टरी दल में दाखिल हो गया है।"

इसके बहुत समय बाद टॉम की एक छोटी-सी चिट्ठी मिली। वह फ्रान्स पहुँच गया था। उसका दल शीघ्र ही घमासान में भाग लेने के लिए जानेवाला था।

फिर काफी लम्बा समय बीत गया। विल का पत्र आया कि पहली घमासान में ही टॉम मारा गया।

मुझे बहुत दुःख हुआ। टॉम की मृत्यु ने घर की स्मृति को ताजा कर दिया। कितने ही वर्षों से मेरा जीवन इतना प्रवृत्तिमय हो गया था कि गत जीवन के स्मरण के लिए विशेष अवकाश ही नहीं मिलता था। आज मुझे घर की याद बड़े जोरों से हो आयी। घण्टों तक मैं अपने पुराने गृह-जीवन के चित्र अपने स्मृति-पटल पर देखने में मशगूल हो गया। वह सब अब कितना बदल गया होगा, यह तो मैं भूल ही गया। अपने इस दिवास्वप्न में मुझे टॉम, माँ, जेन, माबेल और पिताजी भी दिखाई देते। फिर यह खयाल आते ही बड़ा दुःख होता कि अब जेन और माबेल को छोड़कर शेष सभी इस संसार से विदा हो गये हैं।

इन दिनों चरिता मेरे जीवन का आधार थी। हम दोनों बहुत-सा समय साथ-साथ बिताते।

धीरे-धीरे उसने मेरे विचारों को फिर कूलियन की तरफ मोड़ दिया। और अब तो पहले से भी अधिक मेरा गांव और धाम यही बन गया। ◆◆◆

युद्ध-विराम

: २१ :

वहुत दिनों से मेरे मन में वार-वार एक नया विचार आया करता। कोढ़िस्तान में एक छोटा-सा विद्युत्चालित वरफ-घर था। उसे वढ़ाकर रोशनी तथा अन्य कामों के लिए विजली पैदा करने लायक क्यों न वना लिया जाय! इसके लिए हमने एक लिमिटेड कम्पनी स्थापित की और वस्ती में से जो खरीद सकते थे, उन्हें उसके शेअर्स वेच दिये।

विजली के कारखाने की कल्पना ने सिमसन के अन्दर नया चैतन्य उत्पन्न कर दिया। मैंने उससे प्रार्थना की कि वह उसके सहायक मैनेजर का काम सँभाल ले। उसने तुरन्त स्वीकार कर लिया। हमने भी जितनी जल्दी हो सका, तार डालने का काम पूरा कर डाला। मिट्टी के तेल की वत्तियों और लालटेनों की जगहें अव विजली की वत्तियों और खम्भों ने ले ली। विजली आ जाने से अव नये-नये उद्योग खड़े होने लगे। विजली का उपयोग करने-वाली अनेक नयी-नयी चीजें वनने लगीं और वे कोढ़िस्तान की दूकानों पर विकने लगीं। इस वढ़ती हुई माँग को पूरी करने लायक विजली पैदा करने में हमें कुछ वर्ष लग गये। किन्तु कारखाना छोटा होने पर भी उसने हमारे लिए काफी व्यवसाय पैदा कर दिये।

फिर मैंने अपने निजी उपयोग के लिए एक छोटी-सी मोटर-वोट भी खरीद ली। टॉमस उसे चलाना सीख गया। कभी-कभी हम उसमें वैठकर सैर करने चले जाते। साथ में मछली पकड़ने के साधन भी रख लेते और अपने निजी उपयोग के लिए तरह-तरह की मछलियाँ पकड़कर ले आते। किस्मत अनुकूल होने पर कभी-कभी एकआध वड़ी मछली का भी शिकार कर लेते। समुद्र के इन वड़े-वड़े जलचरों का शिकार करने में हमें कम युद्ध नहीं करना पड़ता था।

एक दिन की वात सुनिये। हम दोनों शिकार के लिए कूलियन के समुद्र में कोरन से कुछ दूरी पर गये थे। तीसरे पहर का समय था। एकाएक हमें दूर से एक वोट आती दिखाई दी। सेवू और इलोइलो से नये वीमारों को

लेकर वह आ रही थी। ज्यों ही उसने चट्टानों को पार किया, त्यों ही उसकी डेक पर बड़ी गड़बड़ और कोलाहल होता दीखा। लोग रेलिंग पर झुककर जल में कुछ देख रहे हैं, ऐसा हमने देखा। शायद कोई समुद्र में गिर गया या कूद पड़ा होगा। मैं पतवार सँभाले बैठा था। अपनी किश्ती को मैंने सीधे उधर को घुमाया। इस बीच स्टीमर ने घूमकर एक छोटी-सी किश्ती नीचे उतारी। हम गिरनेवाले के अधिक नजदीक थे। टॉमस अच्छा तैराक था। तुरन्त वह समुद्र में कूदा और पानी में तड़फड़ाते हुए एक आदमी को उसने पकड़ लिया। इतने में दूसरी किश्ती भी आ पहुँची। टॉमस ने डूबनेवाले को उसमें चढ़ने में सहारा दिया और खुद वापस मेरे पास आ गया।

"एक लड़की थी साहब। वह कूदी थी। वह डूब मरना चाहती थी। किश्ती के आदमी कहते थे कि उसे यहाँ आने में बड़ा डर लग रहा है।"

मैं खुद जब आया था, तो मेरे साथी कितने डरते थे, सो मैं जानता था। इसके बाद कूलियन बहुत प्रसिद्ध हो गया था। इस कारण अब ऐसे आत्महत्या के किस्से बहुत अधिक नहीं होते थे। इसके अलावा टॉमस के कथनानुसार यह लड़की तो निरी बच्ची ही थी। बच्चे तो बहुत कम आत्महत्या करते हैं।

कुछ समय बाद मैंने चरिता से इस लड़की के बारे में पूछा। उसने बताया कि "वह निरी बच्ची नहीं थी। कम-से-कम बारह वर्ष की तो होगी ही। टॉमस ने उसे बचाया, इसलिए उसकी संपूर्ण कहानी सुनने के लिए हम टॉमस को भी बुला लें।"

मैं टॉमस को बुलाने के लिए गया। वह चौके में काम कर रहा था। बहुत 'हाँ-ना' करने के बाद वह आया। इस घटना के बाद इसके मित्र इसकी बहादुरी की तारीफ कर-कर, निर्दय बनकर उसे खूब चिढ़ाते रहते। उसे तो ऐसा नहीं लगता था कि उसने कोई बड़ा बहादुरी का काम कर डाला था। चरिता ने अपनी स्वाभाविक चतुरता से उसके इस संकोच को कुछ कम किया।

"इस लड़की का नाम कारमन टोलिनो है। यह माकटान द्वीप की निवासी है। इसका गाँव कॉरडोवा शहर से कुछ ही दूरी पर है। मॉकटान तो तुम जानते हो न टॉमस?"

"जी हाँ, सीयोरा टॉरेंस। प्रवासी मागेलान* वहीं तो उतरा था और मारा गया था। वहाँ उसका स्मारक भी खड़ा किया गया है।"

"कारमन का घर वहीं था। इसकी वातें वड़ी विचित्र हैं। इसे जव स्टीमर से उतारा गया, तव भी वह छूटकर भागने के लिए छटपटा रही थी और जोर-जोर से चीखें मार रही थी। डॉक्टर और नर्सें उसे शान्त न कर सकीं। अन्त में एक प्रोटेस्टण्ट नर्स उसे शान्त करने में सफल हुई। उसकी सूतक की अवधि समाप्त होने पर वह उसे वसति-गृह में ले आयी। उससे और खुद कारमन से मैंने जो कुछ सुना, उस पर से उसके घर की वातें मैं कुछ एकत्र कर सकी हूँ। वे इस प्रकार हैं :

"कारमन के वाप के पास अनव्रास का एक छोटा-सा खेत है। जमीन वहुत हलकी होने के कारण उसमें उपज अच्छी नहीं होती। कारमन का एक भाई है—विसेन्टी। पक्का शरावी है। कारमन के जन्म के समय इसे कोढ़ हो चुका था। किन्तु विसेन्टी और उसके माता-पिता ने कूलियन के वारे में फैली भयंकर अफवाहें सुन रखी थीं और उन पर उन्हें विश्वास हो गया था। इसलिए कुटुम्व ने वारह वर्ष से भी अधिक समय तक उसे अधिकारियों से छिपाकर रखा। प्रारम्भ में यह कठिन नहीं था, क्योंकि इनके मकान के पीछे ही एक ताड़ और नारियलों की वाड़ी है। इसके पीछे थोड़ी-सी खुली परती की जमीन है। उसके दूर के सिरे पर प्रवालों की एक चट्टान है। हाथ और घुटने

---

* कोलम्वस के समान ही मागेलान भी एक साहसी प्रवासी था। कोलम्वस भारत आने के लिए निकला और पहुँच गया अमेरिका। इसी प्रकार मागेलान इसके कई वर्ष वाद फिलीपाइन्स जा पहुँचा सन् १५२० के आसपास। वह स्पेन से अमेरिका की ओर वढ़ा और दक्षिण अमेरिका के किनारे-किनारे होकर अंतरीप पार कर आस्ट्रेलिया की ओर मुड़ गया। वहाँ से फिलीपाइन्स जा पहुँचा। वहाँ प्रारम्भ में तो उसका अच्छा स्वागत हुआ, पर अपनी होशियारी के और सिपाहियों के घमण्ड में आकर वहाँ के राजदरवारियों का उसने अपमान कर दिया और लड़ाई पर आमादा हो गया। इसमें वह मारा गया। वह साहसी, पर क्रूर था।

टेककर ही उस पर चढ़ा जा सकता है। उसके सिर पर पत्थरों की एक सँकरी-सी गुफा है। वाहर से वह झाड़ियों में ढँक गयी है। किन्तु पिछले भाग में छिपकर रहनेभर की जगह वहाँ है। भय और तकलीफ का मारा विसेन्टी इन वर्षों में वहीं छिपा रहा। अधिकारी आ रहे हैं, यह समाचार मिलते ही वह कुछ खाना लेकर वाड़ी में से होकर वहाँ पहुँच जाता। छाती धड़कती रहती और वह छिप-छिपकर चुपचाप टेकरी पर चढ़ जाता और गुफा में पड़ा रहता। कहीं जरा-सा खुटका सुनता, तो वह डर जाता। यदि इन्स्पेक्टर वहुत दिन रुक जाता, तो भाई-वहनों में से कोई छिपकर वहाँ रात में चला जाता और उसके पास टेकरी पर खाना पहुँचा देता। इन्स्पेक्टर के चले जाने पर वह वापस घर पर आ जाता। एक वार इन्स्पेक्टर वहीं नजदीक में था। इस कारण उसके पास खाना नहीं पहुँचाया जा सका। उन दिनों विसेन्टी भूख के कारण लगभग अवमरा हो गया था।

"विसेन्टी का जव तक पता नहीं लगा, तव तक कारमन हमें अपनी वात नहीं कहती थी। जव उसे पहले-पहल दवाखाने में ले गये और वीमारों की कतार तथा इन्जेक्शन की पिचकारियाँ लेकर खड़े डॉक्टरों को उसने देखा, तो खूब रोने-पीटने लगी। अव तो वह शान्त हो गयी है। विसेन्टी का पता लग गया है। वह सेवू के कुष्ठालय में है। वे लोग उसे यहाँ भेजनेवाले हैं। जव वह यहाँ आयेगा, तो उसे शायद अकेलापन लगेगा। टॉमस, तुमने उसकी वहन को वचाया है। इसलिए शायद वह तुम्हारे साथ मित्रभाव रखे। तो जव हम उसे लेने के लिए जायेंगी, तव तुम भी हमारे साथ आओगे न ?"

"उसने वड़ी मूर्खता की, जो छिपकर रहा।"—टॉमस ने तुरन्त कहा—"मुझे लगता है कि वह मेरी वात न सुनेगा। किन्तु मैं उससे कहूँगा कि डॉक्टर हमें अच्छा ही करना चाहते हैं। मैं कहूँगा कि मुझे ही देख लो। जव मैं यहाँ आया, तो क्या होगा, कुछ कह नहीं सकते थे। किन्तु अव देखिये, मैं पहले जैसा हो गया हूँ। परन्तु अव चाय का समय हो रहा है। मैं अभी चाय लेकर आता हूँ।" कोई उसका आभार माने, इसका मौका उड़ा देने के लिए ही उसने यह ढंग अपनाया।

"इस लड़की—कारमन—का केस खराव है, चरिता ?"

"नहीं, पर वीमारी ने उसके हाथ पर अभी से वुरा असर डाल दिया है। लेकिन यह लड़की वड़ी होशियार है। उसकी उँगलियाँ खराव हो गयी हैं, फिर भी वह वहुत ही ऊँचा कढ़ाई-काम करती है। अगर लोगों में अधिक वहम न हो, तो इन चीजों को जंतुमुक्त कर वेचने के लिए वाजार में भेजने में कोई हर्ज नहीं होना चाहिए। परन्तु आज तो उन्हें कोई भी खरीद नहीं रहा है।"

टॉमस चाय ले आया। हम सव चुप हो गये। चरिता में यह एक वड़ी खूवी थी कि हम साथ में वैठकर भी चुप रह सकते थे। अंत में जव सूर्य अस्त होने लगा, तो वह वोली: "नेड, मुझे एक निजी समाचार आपको सुनाना है। वे लोग कहते हैं कि मेरी जाँच में अव जंतु नहीं पाये जाते।"

"क्या कह रही है चरिता—मैं उत्साह में आकर वोल उठा—तव तो आप अच्छी हो गयीं? चरिता! अव आप नीरोगी हैं। वापस मनीला भी जा सकती हैं।"

"अभी तो किसी प्रकार नहीं। अभी काफी राह देखनी पड़ेगी। किन्तु नेड, मैं आपसे एक वार कह चुकी हूँ न कि मुझे कहीं जाने की इच्छा ही नहीं होती। यह वड़ा कठिन है। मुझे यहीं वहुत सुख है। यहाँ काम है और आपके पास भी तो हूँ।"

वह रोने जैसी हो गयी। मैं यह सह नहीं सका। इसलिए मैंने उतावली से कहा: "मैं भी तो यही चाहता हूँ चरिता!"

किन्तु उसी रात जव मैं अकेला वीड़ी पीता वैठा था, तो मैंने निश्चय कर लिया कि चरिता की निगरानी (ऑवजरवेशन) का समय पूरा होने के वाद यदि वह जंतुमुक्त ही वनी रही, तो अपनी शक्तिभर पूरा प्रयत्न कर मुझे उसे उसके समाज में भेज ही देना चाहिए। अभी वह युवती है। काफी जिन्दगी पड़ी है। इसलिए उसे वहीं लौट जाना चाहिए।

इसके वाद एक वर्ष और वीत गया। डॉ० विन्टन ने एक दिन मुझे खवर सुनायी कि पेरोल पर जानेवाला दूसरा जत्था शीघ्र ही रवाना होनेवाला है।

"चरिता भी तो अव जंतुमुक्त (निगेटिव) ही है न?"—मैंने पूछा।

"हाँ, मैं समझता हूँ कि अव उसकी वीमारी हमेशा के लिए चली गयी है।"

कुछ देर वाद वह भी आ गयी। विन्टन की वात मैंने उसे सुनायी और

कहा : "अब आपको यहाँ पड़े नहीं रहना चाहिए। आप अच्छी हो गयी हैं। अब आपको अपनी दुनिया में लौट जाना चाहिए।"

"मुझे नहीं जाना है नेड, मैंने आपसे कितनी बार कहा। बाहर के लोगों के भय और शक का मैं सामना न कर सकूँगी। फिर यहाँ मेरे पास काम भी तो काफी पड़ा है। मुझे नहीं लगता कि अच्छे लोगों में मुझे काम मिल जायगा।"

"चरिता, यदि आपको यह बात कठिन हो रही है, तो दूसरों का क्या होगा ? उन्हें तो सामना करना ही पड़ेगा। आप अकेली अपने रहने का प्रबन्ध यहाँ कर सकती हैं। किन्तु कूलियन में सभी जंतुमुक्त लोगों को रखने जितनी गुंजाइश कहाँ है ? फिर जिन्हें बाहर काम न मिल सकेगा, उन्हें तो यहाँ आना ही पड़ेगा। आपके तो स्वजन काफी हैं। चरिता, जिन्हें आपने नीरोग किया है, उनके प्रति भी आपका कुछ कर्तव्य है। आपको वापस लौटकर समाज में उनके लिए युद्ध करना है, जो पेरोल पर छूटकर जानेवाले हैं। कोई ऐसा रास्ता ढूँढ़ निकालना है, जिससे वे समाज में वापस शामिल हो सकें। यह सेवा करने की योग्यता आपमें है।"

उसने कोई जवाब नहीं दिया। उसके मन में चल रहे संघर्ष की रेखाएँ उसके चेहरे पर प्रकट हो रही थीं। मालूम पड़ता था कि मैंने जो विचार रखा, वह उसके मन में भी उठता रहता, लेकिन उसे वह हटा दिया करती थी।

हम चुपचाप बैठे थे। इतने में फादर मोरेल्लो आ पहुँचे। मैं उनके स्वागत के लिए उठा। कुछ देर इधर-उधर की बातें करने के बाद मैं पुनः पेरोलवाली बात पर आ गया।

"फादर, आप आ गये, यह बड़ा अच्छा हुआ। मैं अभी चरिता को समझा रहा था कि उन्हें कूलियन छोड़ देना चाहिए।"

इस बूढ़े पादरी का तो चेहरा एकदम उतर गया।

"किन्तु नेड, चरिता तो मेरा दाहिना हाथ है। वह यहाँ कोढ़िस्तान में कितना सुन्दर काम कर रही है।"

"फादर, यदि चरिता यहाँ सिस्टर विक्टरी के समान आयी होती, तो मुझे कुछ भी कहना नहीं था। सिस्टर विक्टरी एक नीरोगी महिला हैं। वे

स्वेच्छा से रोगियों की सेवा करने के लिए आयी हैं। किन्तु चरिता स्वेच्छा से नहीं आयी हैं। उन्हें यहाँ आना पड़ा, इसलिए आयी हैं। महारोगियों को जो भी भय, भागने की इच्छा, निराशा वगैरह भाव होते हैं, वे सारे उन्हें सहने पड़े हैं। अब वे रोगमुक्त—अच्छी हो गयी हैं। शंकाशील संसार में उन्हें आशा और श्रद्धा का सन्देश पहुँचाने का काम करना है। जो लोग पेरोल पर जायेंगे, उनके लिए चरिता जैसी स्त्री समाज में रहना कुछ आसान बना सकेंगी। ऐसी बात नहीं कि वे यहाँ जो काम कर रही हैं, उनके मूल्यों को मैं नहीं जानता। बल्कि जानता हूँ, इसीलिए चाहता हूँ कि वे यहाँ से बाहर, समाज में जायँ।"

फादर मोरेल्लो असमंजस में पड़ गये।

"किन्तु नेड, यहाँ वे जो काम कर रही हैं, उस पर जरा और विचार तो कीजिये। अपने पतियों से वियुक्त कितनी ही पत्नियों को उनसे सान्त्वना मिल रही है, इसका खयाल कीजिये। माता-पिता से बिछुड़े कितने ही बच्चों को कुमारी माता मरियम की समर्थ गोद में लाकर उन्होंने छोड़ दिया है, इसका विचार कीजिये। फिर उन माताओं का भी खयाल कीजिये, जो अपने बच्चों के बीच से खींचकर यहाँ लायी गयी हैं और उन्हें चरिता ने दिव्य शिशु ईसा के करुणामृत का पान कराया है।"—पादरी बाबा तो इस तरह बोलते ही जा रहे थे, मानो वे मंदिर में प्रवचन कर रहे हों। परन्तु वे बीच में ही रुके और फिर बोले—"अब मैं बूढ़ा हो रहा हूँ। चरिता, कहीं ऐसा तो नहीं कि मैं स्वार्थी बन गया? आपका कार्यक्षेत्र, आपका स्वधर्म कहीं अन्यत्र हो और कहीं आपकी प्रेमभरी सहायता और उपस्थिति का मुझे अनुचित लोभ तो नहीं हो रहा है?"

यों कहकर वे नीचा सिर कर सोच में पड़ गये। मिनटों तक हममें से कोई भी न बोला। अन्त में फादर ने ही मौन का भंग किया।

"आपको जाना है चरिता! मेरी जरूरत ने मुझे अन्धा बना दिया था। परमपिता मुझे क्षमा करें।....नेड, मैं आपका आभार मानता हूँ।"

चरिता अभी तक खामोश बैठी थी। उसका सिर झुका हुआ था और उसका वक्षस्थल धीमी-धीमी साँसों से ऊँचा-नीचा हो रहा था। मैंने उसके हाथ छूकर कहा :

"वरनावी क्रिसोलाया की याद है चरिता ? वह पेरोल पर गया है। जब गया, तो घर जाने की उसे बड़ी ख़ुशी हो रही थी। वहाँ माँ को छोड़ उसका दूसरा कोई रिश्तेदार नहीं था। उसके पहुँचने के कुछ ही दिनों वाद उसकी माँ मर गयी। इसके वाद मनीला के मुहल्लों में वह भीख माँगता पकड़ा गया। उसे गुजर के लिए वापस यहाँ आना पड़ा। किन्तु उसे रहने का अधिकार नहीं है। किन्तु हम कूलियनवाले मनीला में उसकी कोई मदद नहीं कर सकते। शायद आप उसकी मदद कर सकतीं। फ्रेडरिक आरांग भी वापस जानेवाले हैं। कौन जानता है कि उनके कुटुम्वीजन कहाँ और किस हालत में हैं ? उनकी भी मदद आप शायद कर सकें। आपके जाने पर कुछ समय वाद शायद कारमन भी जायँ। खराव हाथों से वह किस प्रकार अपनी गुजर कर सकेगा ? यह सारा काम आप यहाँ जो काम कर रही हैं, उससे किसी प्रकार कम महत्त्व का नहीं है।"

चरिता ने अपना सिर ऊपर उठाया। उसकी आँखों में आँसू थे।

"क्या—क्या आपकी इच्छा है कि मैं जाऊँ ?"

मेरी तो रग-रग चाहती थी कि वह यहीं रहे। किन्तु अव मेरे सामने यह प्रश्न नहीं था।

"मैं आपको भेजना ही चाहता हूँ। हम लोग जो यहाँ रह जायेंगे, वे वापस जाने के सपने अपने दिलों में से रहे हैं। उनके इन सपनों को जीवित रखने में मैं आपकी मदद चाहता हूँ। यदि घर पर पहुँचने पर हमारा तिरस्कार होने लगे, तो ये सपने कैसे टिकेंगे ? यदि इस स्थान को कोढ़िस्तान के अलावा प्रत्यक्ष नरक नहीं वनने देना है—जिसके अन्दर पहुँचने के वाद मनुष्य वाहर निकलने की आशा ही छोड़ दे—तो घर पर लौटने की आशा को यहाँ जीवित रखना ही होगा। जो-जो भी आदमी यहाँ लौटकर आता है, वह इस आशा का भंग करता है।"

"मेरे वच्चे"—फादर मोरेल्लो की यह आवाज थी—"अपने वन्दीवास में आपने अच्छी आध्यात्मिक उन्नति की है। चरिता, अपने आत्मार्पण के आनन्द से इस मित्र को आप वंचित न करें। इस आनन्द के ये अधिकारी हैं, क्योंकि इसमें इनका लेशमात्र भी स्वार्थ नहीं है।"

वे चुप हो गये। चरिता ने अपनी आँखें मेरी ओर घुमायीं। फिर लड़खड़ाती जबान से बोली : "फादर, मुझे जाना स्वीकार है।"

फादर मोरेल्लो खड़े हो गये। "बच्चो ! अब इस विषय में अधिक चर्चा करने के लिए मैं आपको स्वतंत्र छोड़ देना चाहता हूँ।" वे चले गये।

कुछ देर तक हम दोनों चुप रहे।

"आप कहाँ जायँगी चरिता ?"

"अपने ससुराल तो हरगिज नहीं नेड ! क्योंकि वहाँ मेरा स्वागत न होगा। मैं वापस अपने पीहर जाऊँगी। वहाँ मेरे पिता एक छोटे से अधिकारी हैं। वे आनन्द और श्रद्धापूर्वक मेरा स्वागत करेंगे। वहाँ दूसरों के लिए मैं क्या कर सकूँगी, यह नहीं जानती। मुझे भय है कि लौटनेवाले तिरस्कृत और अछूत महारोगियों में मैं भी एक हो जाऊँगी।···नेड, मैं सोमवार को यहीं खाना खाऊँगी। आज तो एकदम थक गयी हूँ।"

मैं सड़क तक उसे छोड़ने गया। मैंने उसे जाते हुए देखा, इसके साथ ही आनेवाले लम्बे-लम्बे वर्षों के सूने चित्र भी मेरी आँखों के सामने खड़े हो गये, जो मुझे अब अकेले ही बिताने थे। जिसके साथ घण्टों बातें करता रहा, चाय तथा भोजन में जिसने साथ दिया, वह अब चली जायगी। कोढ़िस्तान के उत्सवों की सहगामिनी अब विदा होगी—ऐसे-ऐसे चित्र आँखों के सामने खड़े हो रहे थे। पादरी ने सच कहा कि कूलियन छोड़ने की सलाह मैंने निःस्वार्थ बुद्धि से दी, लेकिन यह त्याग मेरे लिए असह्य था।

चरिता गुरुवार को रवाना हो गयी और उसके साथ-साथ सच्चे सुख का मेरा दूसरा सपना सदा के लिए विदा हो गया।

× × ×

वॉल्टर सिमसन और मैं बिजली के कारखाने में थे। इसमें अब एक बरफ-घर, लकड़ी चीरने का यंत्र और रोशनी का महकमा, इस तरह तीन विभाग थे। हम मनीला से मँगाये जानेवाले सामान की सूची देख रहे थे। कारखाने के बाहर खड़े थे। हमारे आसपास पड़ोस के टापुओं से चीरने के लिए आये लकड़ी की बड़ी-बड़ी लाटों के ढेर खड़े थे।

पाँच-छह आदमी कंपनी के माल की किश्ती खाली कर रहे थे। बालाला

के घाट पर एक दूसरी किश्ती खड़ी थी, जिसके अन्दर से चावल की बोरियाँ निकाली जा रही थीं। उसके आदमी काम करते-करते एकाएक रुक गये और हाथ ऊँचे कर चिल्लाते हुए सुनायी दिये। स्टीमर का भोंपू जोर से बजने लगा। हम जहाँ खड़े थे, वहीं से देखा कि एक लड़का कोढ़ीवास के नीचे के रास्ते पर जोर से साइकिल ले जा रहा है। वह जिधर से गुजरा, उसके पीछे के मकानों के दरवाजे एकाएक खुल गये और लोग बाहर आ गये। कोलाहल मच गया। ज्यों ही वह कोढ़ीवास के दरवाजे तक पहुँचा, त्यों ही आसपास खड़े हुए लोग उसके पीछे दौड़ने लगे। फिलीपाइन के आदमी जब दौड़ते हैं, तो पूरे जोर से दौड़ते हैं। वह हमारे नजदीक आ पहुँचा, तब भी चिल्लाता ही था। अब उसका दम फूल गया था। वह क्या बोल रहा है, यह पहले सिमसन ने समझा।

"युद्धविराम !" "युद्धविराम !"

सिमसन कारखाने में बड़े भोंपू की रस्सी खींचने के लिए लपका। पहली भाफ फुसकारे डालती बाहर निकली। बाद में तो इतनी जोर की सीटी हुई कि कोढ़िस्तान को पार कर कोरन की चट्टानों से जाकर टकरायी और प्रतिध्वनित होकर फिर लौट आयी। बीच-बीच में बंद कर उसने तीन बार सीटियाँ बजायीं, फिर दूसरी बार तीन सीटियाँ और तीसरी बार तीन सीटियाँ, इस प्रकार नौ सीटियाँ बजायीं ! फिर एक लड़के को बुलाया, सीटी की रस्सी उसके हाथ सौंपी और आगवाले से यह कहने के लिए दौड़ गया कि भाफ पूरे वेग से छोड़े। बॉयलर एकदम खाली हो गये, तब तक कोढ़िस्तान के बिजलीघर की सीटियाँ बन्द नहीं हुईं। मैं कोढ़ीवास के ऊपर के रास्ते पर गया। मंदिर के आँगन में लोगों का झुण्ड शोर कर रहा था। इसके बीच फादर मोरेल्लो खड़े थे।

मैं जानता था कि आज का प्रसंग बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जायगा। लोग इसकी तैयारी कर ही रहे थे। अच्छे कपड़े पहनकर झण्डे फहराते हुए वे मकानों से बाहर निकलने लग गये। सब मारे खुशी के हँसते-गाते स्वातंत्र्य चौक की ओर जा रहे थे। किन्तु मैं शून्यमनस्क हो रहा था। वहाँ जाने के बजाय मैं मकान पर चला गया। टॉमस वहाँ नहीं था। मैंने मान लिया कि निश्चय ही वह उत्सव में ही गया होगा।

पता नहीं, मुझे क्या हो रहा था। मुझे अकेला पड़े रहने की इच्छा हुई।

सीटियाँ बजीं, उस समय लगा कि कोई बात जो अंतःकरण में दबी हुई थी, वह ऊपर आना चाहती है।

नारियलों की छाया चौपाटी की तरफ लम्बी होती जा रही थी। पोर्च में ठंढक हो गयी थी। मैं रसोईघर में गया और वहाँ से शराब की एक बोतल, एक प्याली और एक ठंढे पानी का घड़ा ले आया। अकेले और एकान्त में ही युद्ध-विराम मनाने का मैंने निश्चय किया। मेरे दिल की गहराई में बैठा हुआ एक विचार बाहर आने का यत्न कर रहा था। किन्तु उसके ऐसा करने से पहले मुझे कितनी ही प्यालियाँ खाली करनी पड़ीं। मैं—नेड लैंगफर्ड मेरे—नेड फर्ग्यूसन के सामने नजर गाड़े खड़ा था और अंदरवाला साक्षी दोनों के बीच सुलह करवाने के लिए जोर लगा रहा था। मैं उठकर आमों के नीचे गया। मैंने जो भी मैत्री, प्रेम-सम्बन्ध, भाईचारा सँजो रखे थे, वे सब इन्हींके नीचे किये थे।

टॉमस को बुलाने के लिए मैंने मेज पर रखी चाँदी की घण्टी बजायी। वह तो आया नहीं। बहुत कर वह अभी तक युद्ध-विराम के जलसे में ही होगा। मैं फिर विचारों में डूबा। युद्ध बन्द हो गया। टॉम गया, बिल भी मर ही गया होगा। क्योंकि महीनों से उसके भी कोई समाचार नहीं मिले हैं। टॉम और बिल के सम्मान में मैंने शराब ली। उन्होंने लड़ाई में अपना भाग वीरता-पूर्वक अदा कर दिया था।

अन्दर छिपा हुआ नेड लैंगफर्ड मुझसे कुछ कहना चाहता था। सब कुछ मिथ्या लग रहा था। यह कूलियन और यहाँ जो कुछ चल रहा है, यह सब भी शायद माया ही हो। मैं तो उसी समय मर गया, जब मोटर नदी में उलटकर डूब गयी थी। मैं काँपते पैरों से उठा और मायावी आभास के नाम पर फिर शराब ली। फिर नेड लैंगफर्ड बोला : "मेरी भी लड़ाई समाप्त हो गयी है। मैंने भी युद्ध-विराम पर हस्ताक्षर कर दिये हैं।"

अब मैं जागा। आज तक मैंने यह बात अपने सामने कबूल नहीं की थी, तो दूसरों के सामने करने का सवाल ही कहाँ? रास्तों पर और सभा-समाजों में मैं दस्ताने पहने रहता या इस तरह उन्हें छिपा रखता कि किसीकी नजर उन पर न पड़ने पाये। इससे ऐसे स्थान में भी किसीको धोखा हो रहा होगा,

ऐसा मानकर मैं कितनी बड़ी बेवकूफी कर रहा था। पहली पोर तक खराब हो गयी उँगलियों को मैंने ऊँचा किया और उन पर दाँत किचकिचाने लगा। मैं नशे में चूर था।

"मन के मोदक छोड़ दे मूरख और असलियत को स्वीकार कर! वाह रे भगवान्!" मैं अपनी जिद पर ही खूब हँसने लगा। फिर मैंने शराब की प्याली भरी और जोर से चिल्ला उठा: "सचाई के सम्मान में!"

पहले मुट्ठीभर, फिर गाडीभर और उसके बाद सौ-सौ आदमियों तक को यहाँ से अच्छे होकर अपने-अपने घर वापस जाते मैंने देखा। इसी कारण पीछे रहनेवालों को आशा बँधी रहती थी। हमारे शरीरों पर ऐसे-ऐसे भयंकर चिह्न थे कि हर कोई जानता था कि इनसे तो केवल मौत ही छुटकारा दिला सकती है। फिर भी हमें आशा बराबर धोखा देती ही रहती थी। अन्त तक हमें वह अपने पंजे में दबाये रखना चाहती थी, किन्तु अब यह मोह, यह आत्म-वंचना समाप्त हो गयी और मैंने अपनी हार स्वीकार कर ली।

हम किस प्रकार अपने-आपको धोखा देते फिरते हैं? केवल कोढ़ी ही नहीं, मनुष्यमात्र! जब तक देह का अंत नहीं हो जाता, तब तक आशा को चिपटे पड़े ही रहते हैं। इस बात को मैंने आज संपूर्ण रूप में और सही तौर पर समझ लिया। मुझे निश्चय हो गया कि मैं कभी अच्छा होकर कूलियन नहीं छोड़नेवाला हूँ। शायद कोढ़ से न भी मरूँ, पर मरनेवाला हूँ कोढ़ी ही।

और मेरे जीवन-व्यापार का तलपट क्या कह रहा है?

समुद्र में दूर मेरी मछली-बोट की छाया दिख रही थी। दूसरी कई बोटें समुद्र में लंगर डाले पड़ी थीं। नीचे के घाट पर एक कारखाना था। अमेरिका की दृष्टि से यह बहुत छोटा था, परन्तु कूलियन को देखते हुए वह बहुत अच्छा था। मित्रों और आप दोनों की मदद के बगैर मैंने इन दोनों को खड़ा किया था। ऐसे स्थान पर जो कुछ आशा की जा सकती है, उससे कहीं अधिक मैंने यहाँ कर दिखाया। लोग मेरी ओर आदर की दृष्टि से देखते थे। मुझसे सलाह लेते थे। चूँकि वे सब कोढ़ी थे, इसलिए उनके लिए इस धन्धे का महत्त्व निठल्लापन मिटाने और पैसे कमाने की अपेक्षा कहीं अधिक था। वे जो कुछ सीखते थे, उससे उन्हें एक हुनर मिल जाता था। फिर अच्छे होकर घर पर

लौटने का मौका आता, तो नीरोगियों की दुनिया में करने लायक एक धन्धा उन्हें मिल गया था।

डॉक्टर तो प्रगति कर ही रहे थे। मेरे मामले में न सही, परन्तु दूसरों के मामलों में तो जरूर कर रहे थे। मेरे हाथ खराब हो चले थे। कारमन के हाथ मुझसे भी अधिक खराब थे। फिर भी डॉक्टर कहते थे कि उसका रोग रुकने की सम्भावना थी। मेरी बात ऐसी नहीं थी। मेरे लक्षण दूसरे थे। खड़ा हो जा और जूझ, बहादुर ! लौटकर फिर रण के मैदान में आ जा ! पड़ा न रह और इस समय तो हरगिज नहीं। शेष अवधि के लिए प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर कर दे। जब तक हाथ पूरी तरह बेकार नहीं हो जाते, तब तक आँखें खोलकर हस्ताक्षर कर दे। 'कोढ़ी—जीवनभर—कोढ़ी रहकर लड़ता रहूँगा' इस दस्तावेज पर अपने हस्ताक्षर कर दे। मैंने फाउन्टेनपेन उठाया और मेज के पटिये पर पक्की स्याही से दस्तखत कर दिये। उसके ऊपर कुछ भी लिखा नहीं था, पर उस मजमून को मैं जानता था। अपने अच्छे होने की आशा मैंने छोड़ दी, फिर भी मेरे पास काम था, शक्ति थी। जब तक जिन्दा रहूँगा, बराबर काम करता रहूँगा,—मैंने निश्चय कर लिया।

फिर शराब पी और लेट गया। मन में भयंकर असन्तोष था। अन्त में निश्चय किया कि अब निःस्वार्थ होकर जीना है। अब मुझे एक नयी स्वतन्त्रता का अनुभव होने लगा। 'जो जीवन की लालसा छोड़ देता है, उसीको वह मिलता है।' यही इस दृष्टि का नियम है। इसे नाजरथ के ईसा ने पहचान लिया था।

टॉमस बड़ी देर से लौटा।

"आप विजयोत्सव में नहीं आये साहब ?"

"नहीं टॉमस, अभी विजय नहीं हुई। यह युद्ध-विराम तो कच्ची सुलह है।"

"हाँ, किन्तु लड़ाई तो रुक गयी न साहब ?"

"हाँ, लड़ाई जरूर रुक गयी। अब बहुत दौड़-धूप की जरूरत नहीं रही। जीवन टेरते जाना है। यही हमारा युद्ध-विराम है। टॉमस, देख"—मैंने उसे वे हस्ताक्षर बताये, जो मैंने पक्की स्याही से मेज पर कर दिये थे—"देख, मैंने हस्ताक्षर कर दिये हैं।"

◆●◆

लियोनार्ड वूड : २२ :

दिन और दिनों के वाद महीने और महीनों के वाद वर्ष भी वीतने लगे। युद्ध-विराम को तीन वर्ष हो गये। एक दिन हमारे कोढ़िस्तान में फिर उत्साह की वाढ़ आयी। फिलीपाइन के लिए नये गवर्नर जनरल की नियुक्ति का समाचार आया। यहां के मेरे निवास की अवधि में पता नहीं, कितने अधिकारी आये और चले गये। किन्तु ये नये गवर्नर जनरल तो मेरे परिचित—१८९८ के मेरे आदर्श वीर–लियोनार्ड वूड थे। इससे पहले इन टापुओं में वे दो वार आ चुके थे। पहली वार एक प्रान्त (मोरो) के गवर्नर के तौर पर और दूसरी वार एक कमीशन के सदस्य की हैसियत से। वूड की नियुक्ति से मुझे खुशी हुई। इसके कारण दो थे। मेरी वाल्यावस्था के इस आदर्श वीर ने केवल अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा ही नहीं की, वल्कि वे इससे भी ऊपर चढ़ गये हैं। यह देख मुझे स्वभावतः वड़ा सन्तोष हुआ। किन्तु दूसरा कारण यह था कि जिसके जीवन का प्रारम्भ डॉक्टर के रूप में हुआ था, वही अव वड़ा अधिकारी वनकर आया था। इससे मुझे आशा वँध गयी कि अव कूलियन को अवश्य ही विशेष लाभ होगा।

एक दिन तीसरे पहर अपने वगीचे में खड़ा मैं अपने प्रिय आरकिडो की ओर देख रहा था। इनमें से कई ऐसे थे, जिन पर अमेरिका में इनाम मिल सकते थे। इतने में डॉ० विन्टन आये। मैंने कतरनी नीचे रख दी और हम हमेशा की भाँति आम के नीचे जाकर वैठ गये।

"नेड, मुझे आपसे यह कहते दुःख हो रहा है कि मैं वापस घर जा रहा हूं।"

"वापस घर पर जा रहे हैं? अरे, अभी तो आप आये ही हैं।"

"घर से मेरा मतलव है अमेरिका। मैं कूलियन छोड़कर जा रहा हूं।"

मैं तो सन्न रह गया। उसकी ओर टुकुर-टुकुर देखता ही रहा। उसके वगैर मैं इस स्थान की कल्पना भी नहीं कर सकता था।

"किन्तु क्यों और कहाँ जा रहे हैं ?"

"एक नया काम है नेड ! लूजियाना संस्थान के कारविल कुष्ठालय को अव अमेरिका को केन्द्रीय कुष्ठालय वनाना है। मुझे उसका सुपरिण्टेण्डेण्ट वनाया गया है। यह वेटनरूज के पास मिसिसिपी के तीर पर है।"

"हाँ, मेजर टॉमसन ने जव मेरे रोग को पहले-पहल पहचाना, तव इस संस्था के वारे में मैंने कुछ सुना था। किन्तु यदि आप लौट रहे हैं, तो मुझे भी वहीं क्यों नहीं ले चलते ?"

"मेरा खयाल है कि यह हो सकता है नेड ! और मुझे यह पसन्द भी होगा। किन्तु भैया, कूलियन को आपकी कितनी जरूरत है, क्या यह आप नहीं जानते ? आपके इस उद्योग का कितना महत्त्व है, क्या आपसे यह छिपा हुआ है ? सिमसन से यह सव न सँभलेगा। इंजीनियर के रूप में वह अच्छा है, किन्तु लोगों पर उसका उतना प्रभाव नहीं है, जितना कि आपका है। नहीं, अभी आपको यहाँ से छुट्टी नहीं मिल सकेगी और न आपको यहाँ से छूटने की जरूरत ही है। हाँ, आगे चलकर हो सकती है। तव हम कारविल में आपका अवश्य स्वागत करेंगे।"

मैं टेवुल पर अपने किये हुए हस्ताक्षर को देखता वैठा रहा। मेरे उद्योग महत्त्वपूर्ण तो हैं ही। विन्टन भी स्वीकार कर रहे हैं। यह हस्ताक्षर करते समय मैंने जो वात सोची थी, वही तो यह कह रहा है। भविष्य में ऐसा समय आयेगा, जव मैं कुछ भी करने लायक न रह जाऊँगा। तव मैं कारविल जा सकूँगा।

"तो अभी इस वात को मुल्तवी रखें। अच्छा, कव जाने की सोच रहे हैं ?"

"इसी सप्ताह के अंत में। गवर्नर जनरल ने कहलाया है कि वे यहाँ आने-वाले हैं, इसलिए कुछ दिन रुकना चाहता था। किन्तु आदेश मिला है कि मुझे तुरन्त रवाना हो जाना चाहिए। उसे मानना ही पड़ेगा।"

जितनी देर मैं उन्हें रोक सकता था, मैंने रोका। मुझे उनसे वड़ा गहरा प्रेम हो गया था। इसलिए उन्हें विदा करते हुए दुःख हो रहा था। कुछ दिन वाद वड़ी धूमधाम के साथ हमने उन्हें विदा किया। स्टीमर जव तक आँखों से

ओझल नहीं हो गया, तब तक मैं उन्हें देखता रहा। मुझे—हम सबको उनके बगैर कितना सूना-सूना लग रहा था !

× × ×

जनरल वूड आये, उस दिन उनका खूब स्वागत हुआ। उसमें भाषण तो हुए ही। मुझे लगा कि मैं भी इस समारोह में जाऊँ, किन्तु ठीक मौके पर मुझे हिम्मत नहीं हुई। यह अच्छा नहीं लगा कि मेरे जैसे एक प्रौढ़—पुराने सैनिक को जनरल वूड इस शारीरिक व्यंग्य की हालत में देखें। कारखाने के दो बहुत जरूरी आदमियों को छोड़ शेष सबको मैंने जाने की इजाजत दे दी थी। मैं बगीचे में काम करने के लिए गया। किन्तु वहाँ मन नहीं लगा। तब मैं एक छोटी-सी बन्दूक उठाकर चौपाटी पर चला गया। इस बन्दूक से मैं निशाना साधने का अभ्यास करता था। खाली बोतलों को मैं ऊपर उछालकर समुद्र की ओर फेंकता और उनके समुद्र में गिरने से पहले हवा में ही उन्हें गोली मारता। यह था मेरा खेल ! अगर हवा में उसे न मार पाता, तो पानी में गिरते ही उसे खतम कर देता। पानी पर तैरते हुए एकआध टुकड़े को उसके नीचे गोली मारकर उसे ऊपर उड़ाता और पुनः पानी में गिरने से पहले उसे फिर छेदने का प्रयत्न करता। किन्तु इसमें मुझे अभी सफलता नहीं मिली थी। मेरा ध्यान अभी उसीमें लगा हुआ था कि इतने में मेरी बगल में एक गहरी आवाज आयी :

"खूब, खूब ! अच्छा प्रयत्न है। किन्तु मैं नहीं सोचता कि इसमें सफलता मिल सकती है।" मैं चौंका और घूमकर देखा कि मेरे सामने एक कद्दावर, धूप से पके रंग की चमडीवाला, शरीर पर दूध के समान शुभ्र वस्त्र धारण किये, बगल में टोप दबाये एक पुरुष खड़ा है। उसकी हँसती हुई आँखों और प्रसन्न मुद्रा में मैंने पचीस वर्ष पहलेवाले अपने फौजी सरदार को पहचान लिया। वह अकेला ही था। मेरी घबरायी हुई आँखें पीछेवाले लॉन पर पहुँचीं। वहाँ एक बड़ा-सा झुण्ड खड़ा था, जिसमें उनके रिसाले के आदमी तथा डॉक्टर लोग थे।

"आपको तो हमारे 'रफ राइडर्स' दल में होना चाहिए था। ऐसे निशाने-बाज आदमियों का स्थान तो स्वदेश में होना चाहिए।"

मेरी जवान तो मानो तालू से चिपक गयी थी। ज्यों-त्योंकर मैंने जवाव दिया : "मैंने इसके लिए प्रयत्न किया था जनरल।"

कैसी फजीहत हुई! द्वीपों के वड़े-से-वड़े अधिकारी के सम्मान में किये गये समारम्भ में जाने से मुँह छिपानेवाला यों घर वैठे पकड़ लिया गया।

"अच्छा, आपने प्रयत्न किया था? फिर क्यों नहीं दाखिल हो सके?"

मेरा अहंभार* चला गया। इनके दल में भरती होने के प्रयत्न तथा उनसे हुई पहली भेंट का किस्सा मैंने उन्हें कह सुनाया।

उनका चेहरा गम्भीर हो गया। वे वोले : "आज सुवह आपने मुझसे दूर रहने का प्रयत्न अवश्य किया। किन्तु मैंने आपके विषय में वहुत कुछ सुना है। मनीला में मार्शल, विन्टन वगैरह की जवानी भी आपकी वातें सुनी हैं। इसलिए आप मुझसे दूर भाग ही नहीं सकते थे। अतः आपको सजा देने के लिए ही मैंने यहाँ आने का निश्चय किया। और इस सजा को वढ़ाने के लिए आपकी इस निशानेवाजी की कला में ही मैं आपको हराना चाहता हूँ।" यों कहकर वे पीछे की ओर मुड़े और अपने अंगरक्षक को इशारा करते हुए कहा :

"स्टीमर से जरा मेरी छोटी वन्दूक तो मँगाइये।"

अंगरक्षक अदव के साथ अभिवादन कर चला गया।

वैठने के लिए एक शिला-खण्ड की ओर संकेत करते हुए मैंने कहा : "वह अच्छा है।"

"मैं कहता हूँ कि भगवान् करें कि इस कोढ़ से घवड़ाने और डरने के वजाय लोग इसके प्रति अधिक समझदारी भरा रुख अपनाना सीखें।.... किन्तु आपके मछली-उद्योग और विजली के कारखाने के क्या हाल हैं? डॉक्टर

---

* कभी-कभी मनुष्य में अपने वड़प्पन का और विशेषताओं का भान जाग्रत रहता है। इसी प्रकार कभी अपनी खामियों और अल्पताओं का भी होता है। ये दोनों भार उसे सरल, स्वाभाविक व्यवहार करने से रोकते हैं। यह जो अहं की भाररूप जाग्रति है, उस अर्थ में यहाँ 'अहंभार' शब्द का प्रयोग किया गया है। यों अहंकार में भी अहंभार तो है। परन्तु उसमें केवल अपने 'वड़प्पन' का, अभिमान का भाव आता है। अहंभार में अनुचित वड़प्पन और अनुचित अल्पता दोनों का समावेश हो जाता है।

कहते हैं कि आपके आदमी अधिक सुखी हैं और उनके रोगों में भी अधिक नहीं, तो भी कुछ सुधार हुआ ही है। आपका क्या खयाल है ?"

"मेरा भी यही खयाल है जनरल ! उन्हें पैसे मिलते हैं, इससे वे अपनी जरूरत की चीजें खरीद सकते हैं। उन्हें सन्तोष का अनुभव होता है और इसका परिणाम उनके शरीर पर भी पड़ता है !"

"मुझे भी लगता है कि आपका कहना सही है। ऐसे स्थान में रहनेवाले लोगों को काम से और उससे मिलनेवाले आनन्द से वंचित रखना बड़ा भयंकर है। आप जो कर रहे हैं, इसे जरा बड़े पैमाने पर कर सकें, तो उससे इनके कुटुम्बी जनों को भी लाभ हो सकता है। इससे सरकार की भी बड़ी मदद हो जाय, क्योंकि इतने सारे लोगों के निर्वाह का पूरा-पूरा बोझ आज तो उसी पर पड़ रहा है। वह हलका हो जायगा। फिर खर्च के सवाल के कारण जो राज्य महारोगियों के लिए ऐसी संस्थाएँ खड़ी नहीं कर सके हैं, उन्हें भी इससे मार्ग-दर्शन मिलेगा। इस दृष्टि से आपका उद्योग एक अनुकरणीय प्रवृत्ति है। भविष्य में इसी दृष्टि से इसका मूल्यांकन होगा। जब कभी आपको लगे कि मुझसे कुछ मदद हो सकती है, तो आप कभी संकोच न करें।"

"आपसे आज मुझे बड़ा प्रोत्साहन मिला है माननीय ! जैसे-जैसे यह कार्य विकसित होता गया, तैसे-तैसे मुझे निश्चय होता गया है कि अभी तो इसमें से और भी बहुत कुछ निपजाया जा सकता है। यदि कुष्ठालयों को ऐसी जगह रखा जाय, जहाँ खेती तथा दूसरे उद्योगों की अनुकूलता हो, साथ ही विशेषज्ञों का मार्गदर्शन भी मिल जाय, तो मैं मानता हूँ, बावजूद इसके कि बहुत-से कोढ़ी परिश्रम करने के लिए अशक्त हैं, कुष्ठालय अपनी जरूरत की बहुत-सी चीजें खुद ही पैदा कर सकेंगे। आम तौर पर डॉक्टर की राय है कि अधिकतर रोगी तो काम करने लायक सशक्त होते हैं। यह सच है कि बाहर के बाजार उनके लिए बन्द होते हैं। फिर भी इतना तो किया ही जा सकता है कि एक कुष्ठालय मछलियाँ पकड़े, दूसरा धान पैदा करे, तीसरा कपड़े बुने। इस प्रकार जिसे जिस प्रकार के उत्पादन की अनुकूलता हो, वह वह चीज पैदा करे और ये आपस में अपनी चीजों की लेन-देन कर सकें। उनके अपने बाजार तो रोगियों के लिए खुले किये ही जा सकते हैं।"

मैंने मकान की तरफ नजर डाली। मैंने देखा कि गवर्नर के आदमी अधीर हो रहे हैं।

"इन लोगों की चिन्ता न करें। इस विषय में और भी कुछ विचार हों, तो बताइये।"

"केवल एक ही विचार है, जनरल ! उसके बारे में मेरी अपेक्षा आप अधिक अच्छी तरह विचार कर सकते हैं। मुझे लगता है कि कोढ़िस्तान कुछ ऐसी चीजें जरूर बना सकता है, जिन्हें बाहर के—खुले—बाजार में भी भेजा जा सकता है।"

"उदाहरणार्थ ?"

"उदाहरणार्थ, सड़कें बनाने के साधन, पत्थर, कंकड़ आदि। इसके अलावा ईटें, खपरैल, कंकरीट की फर्शी, लोहे का सामान वगैरह। इस सबको आसानी से जंतु-शुद्ध किया जा सकता है। मुझे जरा भी संदेह नहीं कि बीसियों विशेषज्ञ ऐसी चीजें बता सकते हैं, जिन पर बड़े-से-बड़े शंकाशीलों को भी आपत्ति नहीं होगी। कुछ समय पूर्व यहाँ एक विज्ञान-शास्त्री आये थे। मेरे साथ बातचीत करते हुए उन्होंने बताया कि ताड़ी से अलकोहल (शराब) बनाया जा सकता है। इस चीज में तो निश्चय ही कोई खतरा नहीं है।"

"आपकी बातों में मुझे बड़ा रस आ रहा है नेड ! इस प्रवृत्ति को आप अवश्य जारी रखें। इसमें से नयी-नयी चीजें पैदा करने की बहुत गुंजाइश है। मैं समझ नहीं पाया कि लोग इसकी छूत से इतने क्यों डरते हैं ? इसके जंतुओं में छूत लगाने की शक्ति इतनी धीमी है कि प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिक रीति से किसीको इसकी छूत लगाने में अभी तक विज्ञान-शास्त्री सफल नहीं हो पाये हैं।"

घर और आँगन में टहलते हुए वे बातें करते ही रहे। मछली की और दूसरे जानवरों की शिकार की बातें भी चल पड़ीं। कूलियन की बड़ी मछलियाँ, जंगली सुअर और छोटे हिरनों की चर्चा भी हुई। इतने में अंगरक्षक बन्दूक लेकर आ गया। अब मिनटों तक जनरल वूड लक्ष्यवेध के अपने प्रयोग दिखाते रहे। वे हवा में लकड़ियाँ फेंकते और उन्हें बड़ी आसानी से निशाना मार देते। उनके लिए मैंने भी लकड़ी के कई टुकड़े ऊपर फेंके। इसके बाद उन्होंने

एक बड़ा-सा पत्थर हवा में फेंका, पर उसे वे गोली नहीं वेध सके। दूसरी वार फेंका, पर फिर चूक गये। तीसरी वार फेंका और वायें हाथ में बन्दूक पकड़ी। मुझे उनकी पकड़ में कुछ अटपटापन मालूम हुआ। उस पत्थर को ताककर उन्होंने गोली छोड़ी, किन्तु फिर चूक गये। फिर दूसरी वार छोड़ी। अवकी वार निशाना ठीक लगा। पत्थर का एक टुकड़ा उड़कर दूसरी तरफ चला गया। पत्थर से टकराने के कारण गोली भी अपनी दिशा छोड़कर सनसनाती हुई दूसरी तरफ चली गयी। इतनी तेज और अचूक निशानेवाजी मैंने कभी नहीं देखी थी। सफलता पर कुछ प्रसन्नता के साथ उन्होंने वन्दूक साथी को दे दी और वोले : "निशाना ठीक लग जाने के वाद फिर से निशाना लगाना ठीक नहीं।"

इसके वाद दूसरे लोगों के साथ हम जा मिले। कुछ देर तक सवके साथ थोड़ी-थोड़ी वातें हुईं। फिर मकान के पीछे से होकर वे सड़क पर चले गये। मैंने देखा कि वूड चलते हुए कुछ लँगड़ाते थे। वायें हाथ में वंदूक पकड़ते समय जो अटपटापन मालूम हुआ था, उसकी भी मुझे याद आयी। उन्हें क्यूवा में कुछ ईजा हुई थी, यह मैं जानता था। उसीके कारण यह खामी आ गयी थी। किन्तु कमी रहने पर भी उन्होंने अपनी जीवन-नौका का खेना जारी रखा। यही नहीं, उन्होंने खुद मेरे घर आकर अपनी खामी मुझे दिखाई और मैं शर्म का मारा घर पर ही बैठा रहा। यदि विन्टन होता, तो मुझे ऐसी हिम्मत न होती।''''दूसरी वार जव वूड आये—किन्तु अव यह वताना वेकार है। मुझे अपने ऊपर वड़ी शर्म आयी।

◆◆◆

मेरे बगीचे का अगला दरवाजा खुला और किसीके पैरों की आहट सुनायी दी। मैंने देखा कि दो पुरुष मकान के पीछे से होकर आ रहे हैं। उनके स्वागत के लिए मैं पोर्च में आकर खड़ा हो गया। दोनों अमेरिकन थे। एक का मुँह लाल और विशाल था। बाल काले थे। सिर पर एक गन्दा-पुराना टेनिस खेलते समय पहनने का टोप था। उसकी सफेद पोशाक भी मैली, घिसी हुई और शिकनें पड़ी हुई थी। दूसरा आदमी सीधा, पतला नौजवान था। उसका सिर खुला था। उसके बदन पर खुले गलेवाली स्वच्छ कमीज, उतनी ही स्वच्छ और प्रेस की हुई पतलून और पॉलिश किये चमकदार पीले बूट—इतने चमकदार कि कोई उसमें अपना मुँह देख ले! उसका मुँह और हाथ धूप खा-खाकर उसके बूटों के समान ही पीले हो रहे थे। उसकी हँसी मन-मोहक थी।

लाल मुँहवाले ने पहले तो मेरी ओर देखा और फिर बगीचे पर दृष्टि डाली। नौजवान पहले बोला :

"नमस्कार। आप ही मि० फर्ग्यूसन हैं ?"

"जी हाँ।"

"मेरा नाम लैंवर्ट—रिचर्ड लैंवर्ट है। इन भाई का नाम पिट ग्राण्ट है। ये मनीला में रास्ते और मकान बनाने का काम करते हैं और मैं कुछ ही समय में फिलेडेल्फिया में वकालत शुरू करने जा रहा हूँ। अभी हम समुद्र और जंगल में शिकार करने के लिए निकले हैं और जोलो तथा मिन्डानाओ से घूमते-घूमते यहाँ पहुँचे हैं। पिछली रात हमने यहीं मुकाम किया। कुछ डॉक्टरों ने आपका जिक्र किया, तो सोचा—चलो, परिचय तो कर लें। हम आपको कष्ट तो नहीं दे रहे हैं ?"

"ओ हो भाइयो! मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपका यह आगमन तो मेरे लिए वसन्तागम के समान ही स्वागतयोग्य हो गया है। आइये, यहाँ

आपके लिए कुर्सियाँ हैं। इन्हीं पर वैठिये। दूसरी कुर्सियों को न छूएँ, इसका ध्यान रखिये।"

"कोरा वहम है।"—लाल मुँहवाले ग्राण्ट ने कहा। उसकी आवाज साँड़ जैसी थी। मना की हुई कुर्सियों में से ही एक पर वह जा वैठा और मेरी ओर देख जंगलीपन के साथ वोला :

"कोरा वहम है। कोई खतरा नहीं है। जव से लड़ाई शुरू हुई, मैं इन टापुओं में सर्वत्र घूमा हूँ। कोढ़, हैजा, चेचक और जिन-जिनको आप भयंकर वीमारियाँ वताते हैं, सवके संपर्क में आया हूँ। यहाँ के निवासियों के साथ वे सव काम किये हैं, जो नहीं करने चाहिए। फिर भी मुझे कभी किसीकी छूत नहीं लगी। अगर किसीको छूत लगती होती, तो मुझे भी जरूर लग जाती।"

"किन्तु मुझे तो लग गयी है।"—मैंने वीच में ही कहा। लैंवर्ट अभी तक खड़ा ही था। वह मिलने आनेवालों की कुर्सी पर वैठ गया। ग्राण्ट मुझ पर अपनी दृष्टि वरावर फेर रहा था। उसकी नजर से कुछ छूट नहीं पाया।

"हाँ, भगवन्! सही वात है। आपको जरूर छूत लग गयी है। इस विपय में मैंने भूल की या शायद मैं इस वारे में एकदम पक्का हो गया हूँ। इसी कारण मुझ पर कोई परिणाम नहीं हुआ। अच्छा हुआ, हमारा यह प्रवास लाभदायक ही रहा। टामाराउ का शिकार कोई मामूली वात नहीं है।"

"टामाराउ!"—मैं वोल उठा–"क्या आप इस प्राणी के शिकार के लिए निकले हैं? अरे, यह तो शायद कोई पुराणकालीन प्राणीमात्र है। यहाँ रहने-वालों में से किसीने उसे देखा तक नहीं है।"

"इसलिए कि यह प्राणी यहाँ होता ही नहीं। समस्त संसार में यह केवल एक जगह—मिन्डोरा में है।" इतना कहकर ग्राण्ट चुप हो गया।

फिर लैंवर्ट ने कहा : "लोग कहते हैं कि यह कोई प्राणी नहीं, वल्कि एक चौपाया वज्र है। दोस्त, अगर एकआध को मारकर उसके सींग घर पर ले जा सकूँ, तो कितना मजा रहे। किन्तु इससे भेंट हो जाने पर आदमी शायद ही जिन्दा घर पर लौट सकता है।"

हम टामाराउ की वातों में लग गये। ऐसे-ऐसे विचित्र किस्से कहे गये,

जिन पर कोई विश्वास भी न करेगा। अगर सब किस्सों को मिलाकर उसका कोई रूप बनाया जाय, तो वह गैंडा, राक्षस और दर्याई तूफान इन सबकी सम्मिलित शक्ति धारण करनेवाला जानवर बन जाय, जिसके वेग को कोई भी रोक नहीं सकता। इसके बाद मछली के उद्योग और बिजली के कारखाने की बात निकली।

"सचमुच बड़ी हिम्मत का काम है भाई"—कहकर ब्राण्ट ने पुनः मेरे शरीर पर नजर फेरी। "कहता हूँ लैंबर्ट, हम इन्हें मिण्डोरा ले चलें।" और फिर मेरी तरफ देखकर लैंबर्ट के जवाब की राह बगैर देखे बोले: "इच्छा है?"

मेरा दिल उछलने लगा।

"क्यों नहीं?" —लैंबर्ट ने मेरी ओर से दलील की—"मुझे तो लगता है कि बड़ा मजा रहेगा। आप चल सकेंगे?"

मैंने एक क्षणभर में जल्दी-जल्दी विचार कर लिया। मैं एक नमूनेदार रोगी माना जाता था। लगभग दस वर्ष मुझे यहाँ हो गये थे। कदाचित् ही कभी-कभी नशा कर लेता। इसे छोड़ दें, तो मेरा यहाँ का जीवन स्वच्छ रहा। तो एक बार—केवल एक ही बार क्यों न मजा उड़ा लें? कुछ दिन बाद तो शायद मैं बंदूक पकड़ भी न सकूँगा। विन्टन तो अभी है नहीं। गोता मार आऊँ, तो उसकी कोई बदनामी नहीं होगी। नया आदमी तो अभी आया ही नहीं है। यदि चुराकर छुट्टी ले सकता हूँ, तो अभी ही। फिर ऐसा मौका नहीं मिलेगा।

"अपनी किश्ती पर आपको मुझे चुराकर ले जाना होगा।"

"यह तो निश्चित बात है।"—लैंबर्ट ने कहा—"आज रात में अपने किसी आदमी को साथ ले चले आयें। खाड़ी के बाहर आ जायँ, तो हम आपको मिलेंगे। फिर तो वे हमें पकड़ने के लिए आयें, तो भी हम परवाह न करेंगे। हमारी किश्ती में दो इंजन हैं और हम बड़ी तेजी से जा सकेंगे। चार या पाँच दिनों में आप लौट आयेंगे। फिर तो किसे पता लग सकता है?"

"छोटा-से-छोटा बच्चा भी जान जायगा"—मैंने कटाक्ष किया—"क्योंकि यहाँ जो भी कोई छोटी-से-छोटी घटना होती है, उसके समाचार आधे घण्टे के अन्दर सारी बस्ती में फैल जाते हैं। किन्तु बाद में वे मेरा क्या बिगाड़ सकते

हैं ? मैं तो जेल में हूं और जेल में फिर लौट आऊँगा। यहां कोई फांसी पर तो लटकानेवाला है नहीं। मुझे अपना खाना और वर्तन साथ में ले लेने होंगे। मैं अपने नौकर टॉमस को भी साथ में ले लेना चाहता हूं। वह मेरे लिए खाना पका देगा।"

"हमारे पास दो प्राइमस स्टोव हैं। उनमें से एक पर आपका खाना पक जायगा। परन्तु वन्दूकों का क्या करेंगे ?"

टॉम की भेजी वन्दूक की मुझे याद आ गयी। भगवान् उसका भला करे।

"सौभाग्य की वात है कि मेरे पास एक अच्छी राइफल है। खूब ऊँची पावर की।"

"शानदार ! तब तो हम आपकी आशा करेंगे।"

उनके चले जाने पर मैंने वन्दूक निकालकर उसकी जाँच की। एक कारतूसवाली वन्दूक भी छोटे जानवरों के लिए रख ली और एक रिवाल्वर भी। यदि कोई प्राणी नजदीक से हमला करे, तो उसका सामना करने के लिए।

सारा जरूरी सामान एकत्र करने और सिमसन तथा जोजि के लिए काम के वारे में सूचनाएँ लिखने में कुछ घण्टे निकल गये। अधिकारियों की दृष्टि से मेरी यह चोरी वहुत गंभीर मालूम हो, तो भी मेरे कागज सिद्ध कर सकते थे कि मेरे साथियों को इसका कुछ भी पता नहीं था।

जोजि हमें मेरी किश्ती में चढ़ाकर उनकी किश्ती तक ले गया। इसलिए उसे पता हो गया कि हम कहीं सैर के लिए जा रहे हैं। फिर भी उसे यह पता नहीं था कि हम कहाँ जा रहे हैं। इसलिए वह भी इस दोष में फँस नहीं सकता था।

रात वड़ी खुशनुमा थी। जब हम लैंवर्ट और ग्राण्ट के नन्हे-से स्टीमर पर सवार हुए, तो कूलियन में जगह-जगह सितार वज रहे थे, मानो हमें विदा दे रहे थे। स्टीमर कोरन के पश्चिमी किनारे की ओर मुड़ा टॉमस और मैं पीछे एक छोटी-सी डेक पर वैठे थे। दूसरे लोग सामने की विशाल डेक पर थे। दोनों डेकों के वीच एक छोटा-सा पुल जाने-आने के लिए था। स्कूल से छिपकर भागनेवाले लड़के की तरह इस वक्त मेरा दिल हो रहा था। मैं स्टीमर की गति के कारण समुद्र के जल में उठनेवाली फेन की रेखा की ओर आँखें लगाये खड़ा था। खूब मजा आ रहा था।

"कितने खलासी हैं टॉमस ?"

"चार साहव ! मेरा खयाल है कि मि० लैंवर्ट ने और ग्राण्ट ने उन्हें हमारे वारे में कुछ वता दिया है। इसलिए वे हमारे पास न आयेंगे।"

दूसरे दिन दोपहर में हम एक सँकरे और टेढ़े-मेढ़े वन्दरगाह में दाखिल हो गये। वन्दर के दोनों किनारे दीवाल की भाँति एकदम सीधे और ऊँचे थे। किनारे से दूर ही हमने लंगर डाल दिया। हमारा मार्गदर्शक टागालोगा जाति का था। वह मिन्डोरा का निवासी था और उसे उन स्थानों की जानकारी थी कि हम जिस जानवर के शिकार के लिए जा रहे थे, वह कहाँ मिल सकता है। कहीं भी आवादी के चिह्न नहीं दीखते थे। किनारे पर गाँव वहुत दूर-दूर विखरे थे और अन्दर का प्रदेश अमेरिकनों तथा फिलीपाइनों के लिए भी अज्ञात था। पहाड़ों में मलाई तथा नीग्रो लोगों की एक मिश्र जाति रहती थी। किनारों पर उनसे कुछ अधिक सुधरी हुई टागालोगा जाति वस रही थी।

दोपहर में लैंवर्ट और ग्राण्ट ने एक छोटी-सी किश्ती उतारी और वे मछली पकड़ने के लिए चले गये। टॉमस और मैं डेक पर ही उनकी राह देखते रहे। लैंवर्ट ने सोचा था कि हम रात को जंगलों में प्रवेश करेंगे और पेड़ों पर चढ़कर वहाँ वैठे-वैठे टामाराउ की राह देखेंगे। उसका अनुमान था कि टामाराउ अपनी मौत को खोजता हुआ अपने-आप वहाँ आ पहुँचेगा। उसने टामाराउ के विपय में वहुत-सा साहित्य पढ़ा था।

किन्तु हमारा मार्गदर्शक इस वात से सहमत नहीं था। उसने कहा : "साहव ! टामाराउ का शिकार इस तरह खोजने में समझदारी नहीं है। आपको मच्छर वहुत काटेंगे और टामाराउ वहाँ आयेगा ही नहीं। वह वड़ी कठिनाई से मिलता है। इससे वेहतर यह है कि रात में आप जहाज पर ही रहें। कल सुवह अँधेरे-अँधेरे हम एक जगह जायँगे। टामाराउ रात को पानी पीने के लिए वहाँ आते हैं। वहाँ से हम हाथिया घास में उसका पता लगा लेंगे।"

मैं यह राय मानना चाहता था, पर लैंवर्ट अपनी वात पर दृढ़ था। ग्राण्ट ने तो साफ कह दिया कि "उस मार्गदर्शक की राय ही ठीक है। उसकी जानकारी सही है। मैं तो यहीं आराम करूँगा। आप लोग भले ही जायँ और मूर्ख पक्षियों की भाँति पेड़ों पर छिपकर वैठे रहें।"

"आपकी राय क्या है नेड ? आप मेरे साथ चलेंगे ?"

अब क्या किया जाय ! लैंवर्ट मेरा मेजवान था और ग्राण्ट की भाँति साफ-साफ कह देने की हिम्मत मुझमें नहीं थी। मार्गदर्शक ने अपना तीव्र असन्तोष प्रकट किया, पर वह साथ में हो लिया। हम एक छोटी-सी किश्ती में सवार हुए और एक पहाड़ी किनारे पर जा उतरे। एक झरने के किनारे-किनारे चढ़ने लगे। चारों तरफ जंगल था। इस तरह घण्टेभर चलकर हम एक खुली जगह पर पहुँचे। कमर से कन्धे तक ऊँची हाथिया घास से यह प्रदेश ढँका था। मार्गदर्शक ने पेड़ चुने। हर आदमी उसकी एक-एक डाल पर चढ़कर बैठ गया। चुपचाप रहना जरूरी था। पाँच मिनट के अन्दर मच्छरों ने मुझे ढूँढ़कर हमला बोल दिया और मेरी ऐसी आरती शुरू कर दी, जैसी जीवनभर में कभी नहीं हुई थी। मेरे चारों तरफ शोर और चीत्कार सुनाई दे रहे थे। जंगली जानवरों के बाहर निकलने की यह आवाज थी। चन्द्र अस्त हो चुका था और हम घोर अन्धकार में कैद थे। मैं इधर-उधर मुड़ता और अपने को बचाने की कोशिश कर रहा था। इस तरह चार घण्टे बीत गये। तब लैंवर्ट मेरे पेड़ के नीचे आकर बोला :

"मैं कहता हूँ नेड, नीचे उतरो। ये मच्छर तो हमें खा गये भाई !"

मैं जल्दी से नीचे उतरा। ऐसा लगा कि बहुत बड़ी यातना से छुट्टी मिली। हमारा मार्गदर्शक जब हमें वापस किश्ती पर ले जा रहा था, तो उसका सिर गर्व से ऊँचा था। फिर भी वह कुछ भी बोला नहीं। लैंवर्ट बहुत शान्त था। मैं तो थककर चूर हो गया था। डेक पर पहुँचकर मैं तो सुहावने बिस्तर में घुस गया और एक मिनट के अन्दर गहरी नींद में सो गया।

हम तीन दिन तक रुके, पर टामाराउ कहीं दिखाई नहीं दिया। ग्राण्ट और लैंवर्ट अधीर हो गये। वे सोचने लगे कि यहाँ नहीं तो और कहीं उसकी खोज करें। किन्तु मार्गदर्शक यह सोचकर दृढ रहा कि "ये अमेरिकन चले हैं टामाराउ की खोज में। अरे, अगर वह कहीं मिल सकता है तो यहीं मिलेगा, और कहीं नहीं।" वह इसी दृढ निश्चय के साथ रोज सुबह दिन निकलने से पहले हमें जगाने लग गया। इससे पहले वह उन दोनों का और टॉमस मेरा

नाश्ता तैयार कर लेते। फिर हम निकल पड़ते। जल के प्रवाहों के मार्ग से बढ़ते जाते और देखते कि पिछली रात में कहीं कोई टामाराउ जल पीने के लिए आया तो नहीं है, कहीं उसके पैरों के चिह्न तो नहीं हैं ? फिर कहीं ऐसे चिह्न दीख जाते, तो मीलों उनके पीछे-पीछे चले जाते। एक जगह के निशान ताजे थे। उनके पीछे-पीछे हम लगभग दिनभर भटकते रहे। लगभग पंद्रह मील घूमे होंगे। कभी ऊँची-ऊँची घास से जाते, तो कभी उलझी हुई झाड़ियों के जंगल में से होकर गुजरते। कभी-कभी हमें शक होता कि हमारा शिकार यहीं कहीं नजदीक है, तो बिलकुल चुप हो जाते और इतनी सावधानी से हाथों और पैरों के बल चलते कि उसे कहीं कोई आहट न लग जाय। गरमी भयंकर थी ! हाथिया घास के बीच से चलते हुए हमारी बन्दूक की नाल इतनी गरम हो जाती कि उसे हाथ भी नहीं लगा सकते थे। हमारे हाथों में काँटे और पत्थर खूब चुभ गये थे। शरीरों पर मुश्किल से ऐसी कोई जगह बची थी, जहाँ मच्छर न काटे हों। ऐसा लगने लगा कि कहीं यह साहस निरा पागलपन तो साबित न हो। मेरे हृदय पर श्रम का परिणाम होने लगा। हाथों में आयी हुई सूजन आगे चलकर कहीं अधिक तकलीफ तो नहीं देगी, यह भी डर लगने लगा।

किन्तु जब हम इस तरह निराश हो रहे थे, उसी क्षण वह दीख गया। जब हम शिकार के लिए रोज रवाना होते, तो टॉमस आतुरतापूर्वक हमारी ओर देखता रहता। इसलिए आज मैंने उसे हमारे साथ चलने की इजाजत दे दी और अपनी चिड़ियाँ मारने की बन्दूक उसे दे दी। वह भरी हुई थी। साथ में अलग से और भी कारतूस रख लिये थे। मार्गदर्शक ने कहा : "टामाराउ के लिए तो यह बेकार है साहब !" फिर भी मैंने उसे साथ में ले ही लिया।

जंगल पार कर हम खुली जगह में प्रवेश कर रहे थे। झाड़ियों में से रास्ता बनाकर निकलने में कुछ कठिनाई हो रही थी। लैम्बर्ट बायीं ओर मुझसे लगभग सौ गज के फासले पर था। जमीन नरम थी। जहाँ तक संभव था, हम जरा भी आवाज न होने देते थे। एकाएक लैंबर्ट की सीध में तीन टामाराउ चौंके और भयानक वेग से भागे। दो गहरे रंग के थे और एक बहुत छोटा कुछ ललाई लिये हुए रंग का था। बहुत करके नर, मादा और बच्चा होंगे। लैंबर्ट ने

कन्धे से बन्दूक लगाकर नर पर निशाना लगाया और गोली मार दी। जब हम उस स्थान पर पहुँचे, तो घास पर, आसपास की झाड़ियों पर खून के निशान नजर आये। लैंवर्ट मारे खुशी के पागल हो रहा था।

"आपने देखा या नहीं? कैसा अद्भुत था! मादा ने बच्चे के पेट के नीचे सिर घुमाकर उसे अपनी गर्दन पर उठा लिया और वह भाग गयी। कैसी जबरदस्त माँ थी। मैंने ऐसा कभी नहीं देखा।"

मार्गदर्शक अधीर हो रहा था। उसने टूटी-फूटी भाषा में कहा: "घायल टामाराउ बहुत खतरनाक होता है। सुराग निकालकर उसका पीछा हमें करना होगा। चारों तरफ देखता हुआ टामाराउ पहले तो सीधा भागता है। फिर घूम-कर लौट पड़ता है। घायल टामाराउ बड़े जोर से हमला करता है। वह जरूर आयेगा। चारों तरफ—आगे, पीछे और दोनों बाजुओं की तरफ होशियारी से देखते हुए हमें आगे बढ़ना चाहिए।"

यह सब सुनकर ग्राण्ट भी गंभीर हो गया। अपनी मोटी आवाज में वह बोला: "सचमुच प्रसंग बड़ा विकट है।" मार्गदर्शक आगे बढ़ा।

किन्तु उसकी सूचनाएँ अभी पूरी नहीं हो पायी थीं। उसने सावधान करते हुए कहा: "टामाराउ का शिकार करना हँसी-खेल नहीं है। इसका शिकार संसार में मुश्किल-से-मुश्किल है। गोलियों की वह परवाह ही नहीं करता। वह दिखा कि दनादन गोलियाँ मारते ही चले जाइये। गिर पड़े, तो एकाएक उसके पास न जायँ, जब तक कि मैं कह न दूँ कि वह मर गया है।"

सावधान होकर उसकी सूचना के अनुसार हम आगे बढ़ने लगे। उसने हमें जंगल में फैला दिया। दोनों प्राणी जुदी-जुदी दिशाओं में गये थे। इसलिए हमें उनके पाँवों के निशानों के पीछे-पीछे जाना पड़ा और वे एक-दूसरे के बहुत दूर-दूर थे। मैं दाहिनी तरफ देख रहा था। लगभग हम आध घण्टा चले होंगे। तब तक टॉमस और मेरे बीच काफी फासला हो गया। मैं समझ रहा था कि बड़े जंगल की अपेक्षा यहाँ मैं अधिक सुरक्षित हूँ। सूरज खूब तप रहा था। मैंने अपनी चाल कुछ धीमी कर दी। पाँवों के निशान कुछ धुँधले होते जा रहे थे। अन्त में वे घास में एकदम गुम गये। मैं घूम-घूमकर उन्हें खोज रहा था। टॉमस मेरे पीछे-पीछे आ रहा था कि इतने में वह जोर से चिल्लाया:

"देखिये, वह आ रहा है।" मैंने पीछे घूमकर देखा। नर टामाराउ आगे चलकर दूसरी तरफ मुड़ गया और हमारा पीछा करने लगा था। वहाँ से वह सीधा हमारी ओर जोर से दौड़ा। घास के ऊपर वड़े-वड़े सींगोंवाला केवल उसका तिकोना सिर ही मैं देख सकता था। मैंने सोचा, "मुझे इसे रोकना ही होगा। वहीं रोक देना चाहिए।"

मैंने अपना एक घुटना जमीन पर टेक दिया और शान्ति के साथ निशाना लेकर धीरे से चाप दवा दिया। दिमाग विलकुल ठण्ढा रखकर मैं यह कर रहा था। मेरी पहली गोली उसे अचूक लग गयी, पर वह रुका नहीं। उसका सिर जरा भी हिला नहीं। वह वरावर मुझ पर लपका आ रहा था। मैंने फिर गोली चलायी, एक चलायी और चलाता ही गया। इस भारी वन्दूक से चार गोलियाँ उसे लग चुकी थीं, फिर भी उसका वेग कम नहीं पड़ा। मैंने सुना कि टॉमस चिल्ला रहा है। किन्तु मैं जल्दी नहीं कर सकता था। मैंने उस पर छठी और आखिरी गोली छोड़ी। तव तक तो वह ठेठ मेरे पास आ पहुँचा था। किन्तु वहीं वह चारों पैर फैलाकर जमीन पर गिर पड़ा। गिरते-गिरते भी उसने घास में गड्ढा कर दिया और उसका भारी-भरकम शरीर इतने जोर से गिरा कि उसके एक जरा-से धक्के से मैं चारों खाने चित हो गया।

मैं खड़ा होता हूँ, तव तक तो दूसरे सभी साथी आ पहुँचे थे। टामाराउ मर चुका था। मार्गदर्शक से इसके लिए प्रमाण-पत्र की जरूरत नहीं रही। टामाराउ की खोपड़ी का चौथाई हिस्सा टुकड़े-टुकड़े होकर उड़ गया था। फिर भी उसकी यह वात सही सिद्ध हुई कि संसार का कोई भी जानवर इतनी गोलियाँ नहीं सह सकता।

× × ×

कोढ़ी-ग्राम के घाट पर जव हम अपनी छोटी-सी किश्ती से उतरे, तो एक वड़ा-सा झुण्ड हमारे स्वागत के लिए वहाँ खड़ा था। गाँव का एक-एक मर्द, औरत और वच्चा वहाँ आ गया था। शिकार के समाचार यहाँ पहले ही पहुँच चुके थे। क्योंकि टामाराउ की लाश को किनारे से किश्ती पर रखते हुए किसी आदमी ने हमें देख लिया था और उसने इस अद्‌भुत और आश्चर्यजनक शिकार का समाचार चारों तरफ फैला दिया था। मार्गदर्शक ने इस जानवर की खाल

को उतारकर अलग कर लिया। यह खाल, साफ की हुई खोपड़ी और सींग मैं अपने साथ ले आया। उसे देख छोटे-बड़े सब मेरे आसपास झुण्ड बनाकर खड़े हो गये और सींगों को हाथ लगाने की इजाजत माँगने लगे। टॉमस उसकी रखवाली करने लगा। अब हम दोनों पर प्रश्नों की झड़ी लग गयी: "शिकार कहाँ मिला, कैसे किया", आदि-आदि। बहुत-से लोग तो मानते थे कि हमने टामाराउ का क्या, शैतान का ही शिकार किया। शैतान की कथाओं में वर्णित सींग, पूँछ वगैरह सभी चिह्न तो इसमें थे!

टॉमस का वर्णन सुनने के बाद मुझे तो सब प्रथम श्रेणी का वीर समझने लग गये। पेड्रो रॉमास को हमने सारे अवशेष सौंप दिये। वह चमड़ा कमाना जानता था। कोढ़िस्तान में वह कभी-कभी यह काम करता था। एक हफ्ते के अन्दर वह उसके सिर और सींगों को लकड़ी पर लगाकर अच्छी तरह सजा-कर ले आया। चमड़ा कमाने में उसे कुछ अधिक समय लग गया, पर वह भी धीरे-धीरे आ गया। उसे मैंने अपने पलंग के पास नीचे फैला दिया। यहाँ दीमक बहुत था। इनसे चमड़ा और सिर भी बहुत दिनों तक बचे रहेंगे, इसकी आशा तो नहीं थी। फिर भी रोज सुबह उठकर उसके सुहावने कालीननुमा चमड़े पर जब मैं घूमता, तो एक विशेष प्रकार का आनन्द होता। सिर को मैंने पोर्च की दीवाल पर लगा दिया।

× × ×

अधिकारियों ने हमारी गैर-हाजिरी की तरफ ध्यान नहीं दिया। हमारा अनुमान था कि वे इस घटना से आँखें मूँद लेंगे। किन्तु एक दिन सुबह टॉमस उदास चेहरा लेकर आया और उसने कहा कि डॉ० पालाओ ने उसे बुलाया है।

विन्टन के चले जाने पर पालाओ को मुख्याधिकारी बनाया गया था। यह बुलाहट शायद हमारी चोरी की छुट्टी के बारे में हो। अधिक संभव यह था कि अभी-अभी एक स्टीमर आया था। इसमें टॉमस के घर से कोई समाचार आये होंगे। परिवार में कोई मृत्यु हो जाती, तब भी प्रायः इस तरह की बुलाहट हुआ करती थी। मैंने टॉमस से तुरन्त चले जाने के लिए कह दिया। उसे वहाँ लगभग घण्टाभर लग गया। इतने में उसे लौटते हुए देख मेरा

चेहरा आश्चर्य से खिल गया। दो शानदार चरवाही जर्मन कुत्तों को खींचता हुआ और उनकी ताकत से कुछ-कुछ खुद भी खिचता हुआ वह आ रहा था। छोटे-बड़े पचास के करीब आदमी उसके पीछे-पीछे जुलूस की तरह, किन्तु अदब के साथ आ रहे थे। यों टॉमस हमेशा गंभीर रहता था, पर आज इन कुत्तों ने उसे खींच-खींचकर तंग कर डाला था। मैं उन्हें लेने के लिए दौड़कर दरवाजे पर गया और टॉमस के हाथ से रस्सियाँ ले लीं। इतने में पंजों की दो जोड़ियाँ मेरे कन्धों पर टिकी देखकर मैं तो चकित हो गया। टॉमस ने दरवाजा बन्द किया और लोगों से नम्रतापूर्वक कहा कि वे बाहर ही रुक जायें। कुत्तों को मैं घर के अन्दर ले गया। वह अच्छी नस्ल का जोड़ा था। दोनों भूखे-प्यासे थे, पर बिल्ली के बच्चों के समान गरीब। दोनों को हमने खिलाया। फिर टॉमस ने अपनी जेब से एक चिट्ठी निकालकर मुझे दी। वह पिट ग्राण्ट की थी :

"प्रिय नेड, मैं तो कह ही रहा था कि आपमें बहुत साहस है। हर आदमी के पास कुत्ते होने चाहिए। शाग और मेमी दोनों ऊँची नस्ल के हैं। इनका वंश-परिचय साथ में भेज रहा हूँ। फिर मिलूँगा—पिट।"

◆◆◆

चालमोगरा की कहानी : २४ :

विन्टन ने जाने से पहले अमेरिकनों से चन्दा एकत्र कर अपनी देखभाल में यहाँ एक प्रोटेस्टण्ट चर्च बनवा दिया था। इस चर्च में अपने खर्चे से उसने एक व्यासपीठ बनवाया था। उसे आशा थी कि कोढ़िस्तान के लिए किसी दिन एक स्थायी धर्मोपदेशक मिल जायगा। यह आशा अभी सफल नहीं हो पायी थी। हडसन का तबादला फिलीपाइन से किसी दूसरी जगह हो गया था। उनके बाद कई आये और चले गये। अंत में पादरी मेनसन को खास तौर पर कूलियन के लिए ही मनीला से भेजा गया। उन्हें आये एक महीना भी नहीं हो पाया था, तब तक तो उनमें और फादर मोरेल्लो के बीच गाढ़ी मित्रता हो गयी। दोनों मिलकर मरीजों की समस्याओं पर विचार करने लगे। कूलियन में उपदेश और पाठ-पूजा का काम तो केवल नाममात्र के लिए था। स्वास्थ्य के बारे में मरीज डॉक्टरों से बातचीत करते। किन्तु अपने व्यक्तिगत प्रश्नों के बारे में तो सभी इन दोनों धर्मगुरुओं से ही मशविरा किया करते।

नये गवर्नर (लियोनार्ड वूड) की भेंट के बाद उनकी तरफ से बार-बार जानने योग्य बातें मिलती रहतीं। वैद्यक-शास्त्र में उन्हें रुचि थी। वह उन्हें कार्य-प्रवृत्त रखती। उन्होंने एक अमेरिकन विज्ञान-शास्त्री को हमारे यहाँ भेजने का निश्चय किया। वे जानना चाहते थे कि कोढ़िस्तान का अच्छी तरह विकास करने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है? ये सज्जन आये, तो हम बहुत खुश हुए। वे एक प्रसिद्ध पुरुष थे। फिलीपाइन की वैद्यक-शाला से उनका वर्षों का सम्बन्ध था।

हमारी पहली भेंट अचानक हो गयी। मैं अस्पताल गया था। वहाँ महकमे का मुख्य डॉक्टर डॉ० पॉन्स एक अनजान व्यक्ति को लेकर बाहर आये।

"नेड, मैं आपका डॉ० बॉण्ड से परिचय करवा देना चाहता हूँ। डॉक्टर, यह नेड फर्ग्यूसन हैं।"

उनका चेहरा खिल गया। "टामाराउ का शिकार करनेवाले न ?"

"जी"—मैंने शर्माते हुए कहा—"इतने लम्बे समय बाद भी मुझे चोरी से छुट्टी लेने पर उलहना मिलेगा ?"

"यदि आप दिखायें, तो मुझे उसका चमड़ा और सिर देखना है। कितना आश्चर्यजनक यह शिकार रहा होगा ? ग्राण्ट ने मुझे उसका कुछ किस्सा सुनाया था।"

हमने बहुत-सी बातें कीं। मालूम हुआ कि उन्हें भी शिकार का शौक था। टामाराउ मारने की उन्हें बड़ी हविस थी। देखने में वह साधारणतया वूड के समान ही थे। उम्र में उनसे छोटे और ऊँचाई में भी एकआध इंच कम होंगे। मूँछें भी वूड की मूँछों की-सी ही कटी थीं।

"मैं जल्दी ही आपसे मिलने के लिए आऊँगा।"—विदा लेते हुए उन्होंने कहा।

× × ×

तीन दिन बाद जब वह मेरे मकान पर आया, तो एकदम थका हुआ था।

"कुछ पिलायेंगे ? विन्टन कहते थे कि आप मेहमानों का आतिथ्य खूब करते हैं।"

"अवश्य, हाजिर करूँगा। किन्तु जरा वहाँ आम के नीचे चलिये। वहाँ अधिक ठंडक है।"

बॉण्ड ने भरा हुआ प्याला उठाया। उसने नारियलों तथा समुद्र की ओर दृष्टि डाली और फिर बेलों और फूलों पर।

"ऐसी जगह पर इतना सुन्दर स्थान मैं पहली बार ही देख रहा हूँ। ऐसा सभी कर सकें, तो कितना अच्छा हो ? कूलियन को बहुत सुन्दर बनाया जा सकता है। यहाँ बहुत-सी सुविधाएँ हैं। पोर्च में लगाया हुआ टामाराउ का सर मैंने देखा। कैसा डरावना जानवर यह रहा होगा वहाँ। इस टापू पर शिकार के लायक जानवर हैं ? आपको शायद पता होगा कि मुझे यहीं काम करने के लिए आना है। अगर आ सका, तो हम दोनों शिकार के लिए साथ-साथ जाया करेंगे।"

"यहाँ सुअर और हिरन बड़े अच्छे हैं।"

इसके बाद हम संस्था की बातों में लग गये। मैंने अपनी प्रिय धुन उन्हें सुनायी : "प्रत्येक शक्तिशाली पुरुष और स्त्री को उसके लायक काम और बच्चे पैदा न करते हुए दाम्पत्य-जीवन का सुख मिलना चाहिए।" उसने मेरी बात केवल सुन ली। उस पर अपनी तरफ से कोई राय नहीं प्रकट की। वह उठा, तो मैंने आशा प्रकट की कि वह मुख्य अधिकारी बनकर यहाँ शीघ्र ही लौटे।

"यह तो नहीं कहा जा सकता। आपको शायद पता नहीं कि मुझे हुकूमत का शौक नहीं है। हाँ, आयुर्वेद सम्बन्धी संशोधन के लिए यदि वूड कुछ रुपयों की व्यवस्था कर दें, तो इस काम को मैं हाथ में लेना चाहता हूँ।"

इस विचार का मैंने खूब स्वागत किया, तो उसे बड़ा आनंद और आश्चर्य भी हुआ। अपनी पहली 'सुलह' के बाद मैंने खूब पढ़ा और सोचा भी। इस महारोग में मुझे एक प्रकार की तटस्थतायुक्त दिलचस्पी हो गयी थी।

"आप असाधारण रोगी हैं। बहुत-से रोगी रोगविषयक ज्ञान से भी घबड़ाते हैं।"

"सच है। शुरू-शुरू में मेरा भी यही हाल था। किन्तु अब उस स्थिति को मैं पार कर चुका हूँ। अपने बारे में मैंने सारे प्रश्नों के उत्तर मालूम कर लिये हैं। कम-से-कम मुझे तो उनके विषय में कोई शक नहीं रहा है। अब मैं कोढ़ के विषय में पढ़ सकता हूँ, चर्चा कर सकता हूँ और बगैर घबराहट के उसे देख सकता हूँ। इस कारण अब मुझे कोढ़ से सम्बन्ध रखनेवाले सभी प्रश्नों में बड़ी दिलचस्पी हो गयी है। मैं जानना चाहता हूँ कि यह चालमोगरा के तेल की दवा के रूप में खोज कैसे हुई? इसका आविष्कार कब से हुआ है?—क्यों टॉमस, क्या बात है?"

"साहब, जासिल्डा आये हैं—मछलियों के फन्दों के नये नक्शे लेकर।"

"उन्हें आने दीजिये फर्ग्यूसन! चालमोगरावाली बात काफी लम्बी है। कुछ दिन बाद मैं फिर यहाँ आने का यत्न करूँगा। अभी तो मैं आपके ये नक्शे देखना चाहता हूँ।"

हमने जासिल्डा को अन्दर बुलाया। उस समय यह बात वहीं रह गयी।

इसके कुछ ही समय बाद डॉ० वॉण्ड वापस मनीला चले गये। उनके लौटने

की आशा तो नहीं थी। फिर भी मुझे यह आशा थी कि हम कहीं मिलेंगे जरूर।

× × ×

इस बीच एक नयी बात पैदा होने लगी। कारमन का भाई विसेन्टी सेवू से आ गया था। हमने सुना था कि वह एक असंतुष्ट राजनैतिक आन्दोलनकारी है। जिन बातों का उसे कुछ भी ज्ञान नहीं था, उनके बारे में भी वह मरीजों को बहका दिया करता। उसके आने से कोढ़िस्तान को कोई लाभ मिलने की संभावना नहीं थी। गिरफ्तारी से पहले उसका रोग काफी बढ़ गया था। इस कारण उसके सुधार की कोई आशा नहीं थी।

कारमन इस समय सत्रह वर्ष की हो गयी थी। उँगलियों की खामी को छोड़ दें, तो अन्य प्रकार से वह एक चित्रलिखित सुन्दरी-सी थी। विन्टन की राय थी कि उसका सुधार जारी रहेगा और रोग पूरी तरह छूट जाने की आशा है। भाई के आ जाने पर वह बहुत प्रसन्न थी और टॉमस से उसने यह आश्वासन ले लिया था कि वह उसके भाई का मार्ग-दर्शन करता रहेगा।

दो-एक हफ्ते तक टॉमस ने उससे मित्रता करने का यत्न किया, पर बाद में वह थक गया और उसने यह प्रयत्न छोड़ दिया। जब मैंने कारण पूछा, तो उसने केवल यही कहा कि "विसेन्टी मूर्ख आदमी है।"

"वह भले ही मूर्ख हो टॉमस, परन्तु उसकी बहन तो अति सुन्दरी है।"

टॉमस ने सम्मतिसूचक सिर हिलाया, पर गम्भीरतापूर्वक बोला : "बहन के कारण भाई तो समझदार नहीं हो जाता।"

दो-एक हफ्तों में तो विसेन्टी स्वतन्त्रता के नारे लगाता हुआ सारे कोढ़िस्तान में घूम आया। अगर उसका बस चले, तो वह इस आरोग्य-मंदिर के निर्माण में भाग लेनेवाले सभी आदमियों को निकाल बाहर कर दे। इसमें बॉण्ड को भी न छोड़े और वूड को भी नहीं—यद्यपि इस समय वूड कूल्यिन के लिए अधिक धन प्राप्त करने की कोशिश कर रहा था।

मैं इस आदमी से दो-एक बार मिला। मुझे उससे एकदम नफरत हो गयी। सदा असंतुष्ट और सदा दूसरों की आलोचना और निन्दा किया करता। इसका चेहरा—जिसे डॉक्टर सिंह-मुद्रा कहते हैं—वैसा था। अर्थात् रोग के

कारण उसकी पेशानी पर बड़े-बड़े टीले, भौंहों पर गहरी रेखाएँ, गाल झूलते हुए और मोटे सूजे हुए तथा लटकते हुए कान—इस प्रकार उसका चेहरा हो रहा था।

× × ×

एक दिन डॉ० पॉन्स ने मुझे समाचार सुनाया कि डॉ० वॉण्ड ने कूलियन के मुख्य रोग-संशोधक और कार्यवाहक मुख्याधिकारी का पद स्वीकार लिया है। यह सुनकर मुझे खुशी हुई। इसका अर्थ यह था कि एक तो डॉ० वॉण्ड ने संस्था के बारे में जो सुझाव दिये थे, उन्हें गवर्नर जनरल ने मान्य कर लिया है और दूसरे यह कि मालकायान पैलेस में कोढ़ी जनता के हितों का खयाल अब रखा जाने लगा है।

वॉण्ड के लौटने पर संस्थान के वातावरण में बड़ा अन्तर दिखाई देने लगा। दवाखानों और कितने ही नये बढ़े डाक्टरों के लिए रहने के मकानों की नयी योजनाएँ तैयार होने लगीं। वे वैद्यकशाला के अध्यापक रह चुके थे। इस कारण यहाँ के कितने डॉक्टर उनके विद्यार्थी रहे हैं। इसलिए उनकी शक्ति को ध्यान में रखते हुए वे मनीला से डॉ० डॉमिग्वेज तथा दूसरे कितने ही नौजवान फिलीपाइन डाक्टरों का एक मण्डल अपने साथ-साथ ले आये थे।

मेरे हाथ के नीचे काम किये हुए आदमियों की कार्य-शक्ति के बारे में सलाह-मशविरा करने के लिए डॉ० वॉण्ड ने मुझे कई बार बुलाया था। बालाला में डॉक्टरों के लिए बनाये जानेवाले मकानों में रोगियों से तो काम नहीं लिया जा सकता था, किन्तु कोढ़ीग्राम में वसतिगृह, दवाखाने और अस्पताल के अनेक विभागों के बनाने में तो उनकी सेवाओं का उपयोग अवश्य किया जा सकता था। अब तक जो लोग बेकार बैठे रहते थे, उन्हें इनमें काम करने के लिए मैं राजी कर सका। मैंने उन्हें समझाया कि कूलियन की नवरचना में यहाँ के हर आदमी की बुद्धि और श्रम-शक्ति प्रकट करने के लिए यह बड़ा ही सुन्दर अवसर है।

वॉण्ड को आये एक महीना हो गया। एक दिन वे मेरे यहाँ आये और चाहा कि मैं उनके साथ शिकार के लिए जाऊँ। कूलियन के हिरन छोटी जाति के होते हैं। रात में बत्ती के प्रकाश में उनका शिकार आसानी से हो सकता

है। शिकारी अपने सिर पर टॉर्च बाँध लेता है और ऊँचे हाथिया घास में घुस जाता हैं। बत्ती के प्रकाश से हिरनों की आँखें चमकने लगती हैं। इस पर से शिकारी को उनका पता लग जाता और वह उनका शिकार कर लेता है। किन्तु शिकार का यह आसान तरीका मुझे पसन्द नहीं था। इसमें कोई मजा नहीं आता। परन्तु दिन में ऊँची-ऊँची घास में हिरन को खोजकर मारना असंभव होता। इसलिए वह मुझे अच्छा लगता और इस तरह शिकार कर मैं अपने मांसाहार की पूर्ति कर लिया करता। कभी-कभी हम जाते हिरन का शिकार करने और भेंट हो जाती सुअर से। किन्तु यह तो अपवाद की बात है, क्योंकि सुअर का शिकार तो अक्सर दिन में ही होता था। जंगली काराबाउ (साबर ?) के विषय में तो इस बड़े जानवर को किसीने जंगलों में कभी-कहीं भले ही अकस्मात् देख लिया हो। किन्तु वास्तव में कोई निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि इन जंगलों में सचमुच वह पशु है। हाँ, कोई पालतू जानवर जंगलों में भटक गया हो, तो नहीं कह सकते। क्योंकि इस टापू को कोढ़िस्तान बनाने से पहले कुछ काराबाउ यहाँ लाये गये थे और उनमें से कुछ जंगली हो गये थे। मैंने कभी इस प्राणी को एक बार भी नहीं देखा। इच्छा भी नहीं रही। मुझे तो अपने एक टामाराउ से ही सन्तोष था।

उस रात बॉण्ड और मैं साथ-साथ रवाना हुए। कॉगन (हाथिया घास) और जंगल की सीमा पर खड़ी कठिन झाड़ियों में कुछ घण्टे घूमे। किन्तु किलकारी मारकर भागनेवाले वन्दरों और घबड़ाकर किटकिटाते भागनेवाले गिरगिट के सिवा कोई जानवर हमें नहीं दीखा। अन्त में थककर हम वापस लौटे। बालाला जाते हुए मेरा मकान रास्ते में पड़ता था। इस लिए मैंने बॉण्ड को कुछ पेय लेकर फिर आगे बढ़ने के लिए कहा।

"चलिये, चौपाटी पर जाकर थोड़ा बैठेंगे। रात में बालू पर बैठकर जल को देखना मुझे बड़ा अच्छा लगता है।"

बड़ी देर तक हममें से कोई नहीं बोला। हम यों ही चुपचाप बैठे रहे। रात बड़ी स्वच्छ और सुहावनी थी। हवा में एक अजीब ताजगी थी, जो केवल गरम देशों में ही पायी जाती है। सितारों की झंकार बन्द हो गयी थी और कुत्ते भी खामोश थे।

"मुझे ऐसी रातें अच्छी लगती हैं।"—वॉण्ड ने कहा—"युनाइटेड स्टेट्स में मैं उत्तर का रहनेवाला हूँ। दक्षिण की वैद्यक-शाला में काम करने लगा। तब से मुझे उससे प्रेम हो गया। वहीं मुझे मेरी सहधर्मिणी मिल गयी। वह अभी अपने पीहर में है। जब हमारा मकान बनकर तैयार हो जायगा, तब वह भी यहाँ आ जायगी।"

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। जरूरत भी नहीं थी।

कुछ देर चुप रहकर वह फिर बोला : "आपने एक बार मुझसे चालमोगरा के बारे में पूछा था। उस दिन मैं कुछ नहीं बता सका था। आज भी देरी तो हो गयी है। परन्तु आज अच्छा मौका है। कम-से-कम बीच में आकर कोई खलल तो न डालेगा।"

"मेरे लिए तो सभी समय एक-सा है। संसार से कटकर हम लोग बिलकुल एक तरफ पड़े हुए हैं। जीवन स्थिर हो गया है। यहाँ काल की कोई गिनती नहीं है।"

उसने एक सिगरेट निकाली। उसे एक काली नली में बैठाया और उसे एक चान्दी के लाइटर (सुलगाने की वस्तु) पर रखा।

"मेरी पत्नी ने यह भेजी है—अच्छी है न ?"

"बहुत सुन्दर है।"—मैंने कहा।

"यह चालमोगरावाली बात काफी पुरानी है। इसकी एक दंतकथा है। वह विश्वास करने लायक नहीं है। फिर भी लोग जमाने से उसे कहते आये हैं। कहते हैं कि ब्रह्मदेश के एक राजा को कोढ़ हो गया था। जब यह बात लोगों को मालूम हो गयी, तो उसे जंगल में ले जाकर छोड़ दिया गया। किन्तु उसकी जीने की अभिलाषा बड़ी प्रबल थी। जंगल में उसे जो भी कन्द-मूल-फल-फूल मिल जाता, उसी पर वह जीने लगा। यों करते-करते चालमोगरा का पौधा उसे मिला। असली चालमोगरा ब्रह्मदेश में ही होता है। उसका फल उसने तोड़ा और उसे काटकर खाया। मैं नहीं मानता कि उसका स्वाद उसे अच्छा लगा होगा। शायद यह तो आप भी जानते ही होंगे।"

मैंने उसे न्यूयार्क का अनुभव सुनाया। मुझे तो उसका नाम ही सुनकर कै होने लगती थी। "बड़ा बुरा स्वाद होता है। मुझे लगता है कि बेचारा राजा भूखों मरने लग गया होगा।"

"फिर भी आपने असली चालमोगरा तो चखा ही न होगा। अमेरिका में और यहाँ जो काम में लिया जाता है, उसे तो भारत का 'कारपस' कहते हैं। यह चालमोगरा के गुण-धर्मवाला पौधा है और बहुत पाया जाता है। अरे हाँ, वह राजावाली बात तो अधूरी ही रह गयी। उसने बार-बार यही फल खाया। इससे धीरे-धीरे उसका कोढ़ कम होता गया और अन्त में एकदम मिट गया। फिर उसे अपना राज्य मिल गया और उसने राज्यभर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि कोढ़ पर चालमोगरा अक्सीर दवा है।

"आप चाहें तो इस बात को मानें या न भी मानें। इसका सार केवल यही है कि कोढ़ की दवा चालमोगरा है और सैंकड़ों वर्षों से उसका उपचार होता आया है। वास्तव में हम भी इसके फल का नहीं, तेल का उपयोग करते हैं।

"फिलीपाइन आते हुए रास्ते में मैं हिन्दचीन में कुछ रुक गया था। वहाँ अंकोर-वट का एक प्रसिद्ध मंदिर है। उसके पास ही वोर राजाओं के प्राचीन नगर—'अंकोर-टॉम' के खँडहर पड़े हैं। उन्हें देखने मैं गया था। नगर बहुत पुराना है। जंगलों में छिप-सा गया है। वोर-राजवंश की स्थापना ईसवी सन् की पहली सदी में हुई। अंकोर-टॉम की आबादी दस लाख के करीब थी। उसमें अनेक पुराने मन्दिर तथा महल थे। कहते हैं कि इनमें से एक राजा को भी कोढ़ हो गया था। यों तो सारा शहर खँडहर बन गया है, फिर भी कुछ मन्दिरों और महलों को बचाकर रख लिया गया है। राजमहल के पास एक इमारत है, जिसे 'कोढ़ी राजा की छत' कहते हैं। उस रोगी राजा को शायद वहाँ रखा गया हो। छत का बाहरी भाग पत्थर की दीवाल का है। उस पर शेर, चीते, हाथी और युद्ध के दृश्य खुदे हैं। इन सबके बीच किसी पौधे का चित्र भी है। वहाँ के निवासी कहते हैं कि यह चित्र महारोगियों की जीवन-डोर—चालमोगरे का है।

"इस प्रकार चालमोगरा की जड़ें भूतकाल में काफी गहरी जा चुकी हैं। फिर भी आधुनिक विज्ञान-शास्त्री अब तक इससे अधिक अच्छी दवा नहीं ढूँढ़ सके हैं। हाँ, इसके सेवन की विधि में जरूर हमने बहुत सुधार किया है। किन्तु असली वस्तु तो वही पुरानी चीज है। दूसरा अधिक अच्छा इलाज ढूँढ़ने के प्रयत्न में कितने ही नवीन परिणाम आये हैं। 'एनिलाइन' रंग के

कितने ही प्रयोग हैं। कितने ही डॉक्टरों की श्रद्धा 'मैथलीन ब्लू' पर है। किन्तु दुःख की बात है कि इस दवा से मरीज की चमड़ी में कुछ भूरापन आ जाता है, जो लम्बे अर्से तक बना रहता है। जब नया इलाज काम नहीं देता, तब पुराने इलाज का ही सहारा लेना पड़ता है।....आप ऊब तो नहीं गये?"

"जरा भी नहीं, आप कहे जाइये।"

"इलाज की खोज भी एक बड़ा जबरदस्त काम है। महारोगी-संकट-निवारण और महारोग-संकट-निवारण के बीच बड़ा फर्क है। दूसरे में खोज-भाल बड़ी महत्त्व की वस्तु है। मैं चाहता हूँ कि मानव-जाति के इस दुश्मन का नाश हो। इसके शिकारों की चिन्ता तो करनी ही है। वह एक दयाधर्म की बात है, किन्तु असल बात तो इस शत्रु का नाश है। अनुमान है कि संसार में तीस लाख महारोगी हैं। उनमें से केवल तीन प्रतिशत की शुश्रूषा हो रही है। संसार के हर देश में यह है। आइसलैंड और नॉर्वे जैसे ठण्डे देश में भी है और भारत तथा अफ्रीका जैसे गरम देशों में भी है। यह राक्षस अपने शिकार से त्राहि-त्राहि कहलवा देता है और जिन्हें यह नहीं लगा है, उनमें भी इस दुःख का दावानल सुलगा देता है। पुरुष को रोग होता है, उसके औरत बच्चे होते हैं और एकाएक उसे खींचकर ले जाता है। वे बेचारे पीछे रोते-तड़पते रह जाते हैं।"

यह सुनकर मुझे आरांग वकील का स्मरण हो आया, जो मेरे साथ काम करते थे। दूसरे जत्थे में उन्हें घर पर लौट जाने की छुट्टी मिल जायगी। आरांग ने अपनी सारी कमाई घर पर भेज दी थी। क्या वह काफी होती होगी? लौटने पर वहाँ उसे क्या हालत दिखाई देगी?

बॉण्ड ने आगे कहा : "अपने क्षेत्र की अपेक्षा मैं बहुत अधिक कह गया, नेड! रोगी को पकड़कर लानेवाली सरकार के सोचने का यह प्रश्न है, या होना चाहिए कि पीछे रहनेवालों का वह क्या करे? मेरा काम तो रोग के उपचार या नाश के उपाय सोचना है। नये परिणाम, नये साधन और गहरे अभ्यास से यह प्रश्न हल हो सकेगा। एक परिवार में एक मनुष्य को यह रोग होता है। प्रायः दूसरों को नहीं होता। इसका कारण अभी तक समझ में नहीं आया है। हमारे इलाज—अगर उन्हें इलाज कहा जाय तो—लगा तो

तीर, नहीं तो तुक्का जैसे हैं। हम जानते हैं कि कुछ उदाहरणों में यह रोग एक हद तक बढ़ता है और फिर अपने-आप जल जाता है। अर्थात् बगैर किसी उपचार के वह मनुष्य जन्तु-मुक्त हो जाता है। दो रोगी समान भूमिका पर हैं। दोनों का उपचार समान रूप से होता है। फिर भी उनमें से एक पर इलाज काम कर जाता है। वह अच्छा होता हुआ भी दिखता है। दूसरे का रोग इलाज करने पर भी बढ़ता जाता है और असाध्य हो जाता है।"

"सच है जैक, यह तो मैं अपने अनुभव से जानता हूँ।"

"क्षमा कीजिये नेड ! मैं आपकी बात तो भूल ही गया था। तो इस प्रकार अभी बहुत-सा काम करना है। सच तो यह है कि अभी श्रीगणेश ही हुआ है। एक आदमी जन्तु-मुक्त हो जाता है और हम उसे वापस अपने घर भेज देते हैं। फिर भी वह पुनः लौटकर न आयेगा, इसका कोई भरोसा नहीं। इन प्रश्नों का जब तक समाधान नहीं हो जाता, तब तक मनुष्य को रुकना नहीं चाहिए।"

उसके चले जाने पर बड़ी देर तक मैं वहीं बैठा-बैठा उसकी बातों पर विचार करता रहा। क्या इसकी आशा कभी सफल होगी ? इन दुःखों का कभी अंत भी होगा ? ◆◆◆

नवाँ बच्चा : २५ :

एक दिन कारखाने पर जाते हुए रास्ते में मैंने एक झुण्ड देखा। उसके बीच में विसेन्टी था। वह एक जोशीला भाषण दे रहा था। जब मैं पहुँचा, तो वहाँ कुछ आदमी और पाँच-छह कुत्ते इकट्ठे हो गये थे। धीरे-धीरे भीड़ जुटने लगी। "हमारे देश को हजम करके बैठनेवाले गोरों को कुचल देना चाहिए।" यह तथा ऐसे ही कुछ शब्द मैंने सुने। मैं दाँत पीसने लगा। झुण्ड के बीच घुसकर उसकी गर्दन मरोड़ देने की मुझे बड़ी जोर से इच्छा हुई। किन्तु बड़ी कठिनाई से मैंने उसे दबा लिया और मैं आगे बढ़ गया।

कॉनराडो मिगुएल जल्दी-जल्दी मेरी ओर आ रहा था। वह हमारा एक मछुआ था। वह जरा मिजाजखोर, किन्तु अच्छा कारीगर था।

"मि० नेड, मेरी कुछ मदद करेंगे?"

"जरूर कॉनराडो, कहो क्या बात है?"

"मुझे अदालत से बुलाहट आयी है। उस मारसियानो सान्तेज ने मुझ पर दावा कर दिया है।"

"कैसा दावा?"

"अभी सारा किस्सा सुनाने का समय तो नहीं है मि० नेड। मारसियानो वहाँ पहुँचे, तब तक मुझे भी वहाँ पहुँचकर हाजिर हो जाना चाहिए।"

हमारे गाँव में लगभग स्वायत्त पंचायती राज्य था। कोढ़िस्तान का मुख्याधिकारी सरकार का प्रतिनिधि था। स्थानीय कानून बनाना, उन पर अमल करना तथा व्यवस्था रखना अधिकांश बीमारों के हाथ में ही था। पंचायत और पुलिस-दल का चुनाव भी हम ही सब करते थे।

कोढ़िस्तान की दीवानी अदालत संस्थान के दफ्तरवाली इमारत में ऊपर की मंजिल पर लगती थी। मामले तो मामूली होते। किन्तु उन्हें देखने से खास तौर पर वकीलों को लड़ते देखकर बीमारों का अच्छा मनोरंजन हो जाता। आज वकील नहीं थे, किन्तु अदालत का कमरा खासा भर गया था। संकोचवश

मैं कॉनराडो के पीछे-पीछे हो लिया और अदालत के शीर्षस्थान के पास जाकर बैठ गया।

डॉ० मोरालिस कार्यवाहक अध्यक्ष थे। जाली के उस तरफ बैठे-बैठे वे मेरी तरफ देखकर कुछ हँस दिये। वह एक धोबन की फरियाद सुन रहे थे। उसे तय किये पैसे नहीं दिये गये थे। मोरालिस ने उसके तथा प्रतिवादी के बीच समझौता करवा दिया। इसके बाद उसने आवाज लगायी :

"मारसियानो सान्तेज विरुद्ध कॉनराडो मिगुएल—पक्षकार आयें।"

"यह एक सुअर के बारे में फरयाद है साहब"—न्यायासन और अदालत के बीच की जाली के पास पहुँचते-पहुँचते मारसियानो बोला : "साहब, मेरे पास एक बहुत अच्छी नसल का सुअर है। वह मेरी रोजी का साधन है। संस्थान के जो लोग अपनी सुअरी के लिए उसकी सेवा चाहते हैं, उन्हें मैं एक शर्त पर उसका उपयोग करने देता हूँ। शर्त यह कि सुअरी के जितने बच्चे हों, उनमें से आधे वे मुझे दें। मैं कोई नकद रकम नहीं लेता।—अब इस मामले में ऐसा हुआ कि कॉनराडो की सुअरी ने नौ बच्चे दिये। बच्चे जब तक माँ से अलग नहीं किये जा सकते थे, तब तक वे माँ के पास ही रहे। उसके बाद चार बच्चे और मेरा कुलीन सुअर लेकर कॉनराड मेरे पास आया। किन्तु जब मैंने पाँचवें बच्चे के लिए कहा, तो उसने वह बच्चा मुझे देने से इनकार कर दिया।"

डॉ० मोरालिस ने कण्ठ साफ किया।

"मारसियानो, तुम्हारे बीच इस बारे में भी कोई इकरार हुआ था कि यदि सुअरी ने विषम संख्या में बच्चे दिये, तो क्या होगा ?"

"नहीं साहब, इस विषय में कोई बात नहीं हुई थी।"—कॉनराडो बीच ही में बोल उठा—"किन्तु संसार का हर देश मानता है कि बाप की अपेक्षा माँ का अपनी संतति पर अधिक अधिकार होता है। इस बार का आखिरी बच्चा कमजोर था। वह उसकी माँ की प्रेमभरी सँभाल के कारण ही बचा और बड़ा हुआ।"

"नहीं, बाप का भी अधिकार माना गया है सरकार !"—मारसियानो ने उसे रोककर कहा—"नेपोलियन की स्मृति बाप का अधिकार पहले मानती है और आप यह जानते हैं।"

अपनी हँसी को रोकना मेरे लिए वड़ा कठिन हो गया। मालूम होता है, कोर्ट के इस नाटक के लिए उन्होंने अच्छी तैयारी कर ली थी। मोरालिस भी वड़ी कठिनाई से अपने चेहरे पर गंभीरता कायम रख सके। अन्त में उन्होंने एक मार्ग सुझाया :

"अच्छा, मान लीजिये कि नवें वच्चे की कीमत अदालत कायम कर दे और कॉनराडो के भाग का आधा वच्चा मारसियानो खरीद ले तो ?"

"मेरे पास पैसे नहीं हैं, सरकार !"—मारसियानो ने कहा।

"अच्छा तो कॉनराडो, आप वह आधा हिस्सा खरीद लें तो ?"—मोरालिस ने कहा।

"माँ के अधिकार का दावा मैं नहीं छोड़ सकता साहव।"—कॉनराडो ने दृढ़ता से कहा।

अदालत में शोर मच गया। उपस्थित प्रेक्षकों के वीच माता के अधिकार और नेपोलियन-स्मृति पर शास्त्रार्थ शुरु हो गया। विद्वत्ता के प्रदर्शन का फिलीपाइन्स पर वड़ा असर होता है। कॉनराडो और मारसियानो को कोढ़ी-समाज में अव वड़ी प्रतिष्ठा मिलनेवाली थी। दोनों इस वात को जानते थे। दोनों के चेहरे पर झगड़े के स्थान पर आत्मसन्तोष का भाव झलकने लग गया।

कुछ देर वाद न्यायालय में शान्ति स्थापित करने के लिए न्यायमूर्ति ने अपने मेज पर न्याय-दण्ड से हलके-हलके आघात किया।

"एक सूचना पेश करता हूँ। आप लोग इस पर विचार करें।"—गंभीरता का दिखावा करते हुए न्यायमूर्ति ने कहा—"मैं एक न्याययुक्त हल सुझाता हूँ। मेरा सुझाव है कि मारसियानो और कॉनराडो मुँह से लेकर पूँछ तक वीच से इस वच्चे के दो भाग वरावर-वरावर करें और दोनों पक्ष इसे कुदरत की भेंट समझकर उसकी लेचन (एक फिलीपाइनी खाना) वनायें और खुशी मनायें।"

कॉनराडो और मारसियानो की आँखें उपस्थित प्रेक्षकों की ओर घूम गयीं। जाहिर था कि वे अपनी पत्नियों की सलाह लेना चाहते थे। एकाएक कॉनराडो का गंभीर चेहरा प्रसन्न हो गया और वह वोला :

"मुझे स्वीकार है साहब।"

"और मुझे भी सरकार!"—मारसियानो ने कहा।

"अदालत बरखास्त।" तुरन्त डॉ० मोरालिस ने घोषित कर दिया। लोग बाहर चले गये। कॉनराडो मेरे पास आया और मेरी उपस्थिति के लिए धन्यवाद दे गया।

"लेचन मुबारक हो।"—मैंने कहा।

फिर मैं डॉ० मोरालिस के पास गया। हँस-हँसकर हम दोनों के पेट में बल पड़ गये।

"सुअर, नेपोलियन स्मृति और माता का अधिकार!"—उसने कहा—"क्या हालत है? मेरे देशभाइयों को भविष्य के विषय में जरा भी चिन्ता करने की जरूरत नहीं है।"

"किन्तु आप न्यायमूर्ति को कैसे भूल रहे हैं? सोलोमन को तो आपने कोसों पीछे छोड़ दिया। मुझे लगा कि सुलह की खातिर मैं उस बच्चे को खरीद लूँ। किन्तु आपका सुझाव सोलहो आने ठीक रहा।"

हमारा वह भोज बहुत अच्छा रहा। 'हमारा' इसलिए कह रहा हूँ कि उस दिन मारसियानो और कोनराडो के बीच समझौता हो जाने के कारण दोनों ने एक सम्मिलित भोज का आयोजन किया और उसमें मुझे भी खास तौर पर निमन्त्रित किया! यह समारंभ चौपाटी पर हुआ। दूसरे व्यंजन भी बनाये गये थे। किन्तु फिलीपाइन के कुशल रसोइये सुअर के मांस के जितने अच्छे व्यंजन बनाते हैं, उसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। स्त्रियों ने खुर्मे और शाक की कचौड़ियाँ वगैरह बनायी थीं।

मैंने कहा: "आज तो डॉ० मोरालिस ने सोलोमन को भी न्याय देने में मात दे दी।"

◆◆◆

रणभूमि पर सम्मानित—पचीस वर्ष पहले 'चाइना' नामक जहाज पर सवार होकर जब हम रवाना हुए, तो ऐसा कौन सिपाही न होगा, जिसने अपनी आँखों के सामने बड़े-बड़े मनोहर कल्पना-चित्र खड़े न किये होंगे ?— मानो एक दिन हमारे जत्थे को कतार बाँधकर खड़े होने का हुक्म मिला है, सारे सिपाही चित्र के समान स्थिर खड़े हैं। सामने से उनका कर्नल गुजर रहा है और हर सिपाही के कोट पर एक-एक तमगा लटकाता जा रहा है—युद्ध में जिस वीरता से वह लड़ा, उसे संसार के सम्मुख प्रकट करने के लिए। मुझे कभी ऐसा चाँद नहीं मिला। किन्तु ऐसे सपने तो मैं भी जरूर देखता रहता था। आज भी हम एक रणभूमि पर ही खड़े हैं और जूझ रहे हैं। तलवारों की लड़ाई की अपेक्षा यह लड़ाई कम मुश्किल नहीं है। किन्तु इस कठिन लड़ाई में वैसे मान-सम्मान होते बहुत कम देखे जाते हैं। फिर भी एक व्यक्ति को ऐसा सम्मान मिलने का अवसर आ गया। एक दिन हमें समाचार मिला कि गवर्नर जनरल सिस्टर विक्टरी को एक तमगा समर्पित कर उनकी निष्ठापूर्ण सेवा का सम्मान करने जा रहे हैं। मुझे लगा कि कम-से-कम एक पुरुष तो ऐसा निकला, जो इस क्षेत्र में की गयी सेवाओं की कद्र कर सकता है।

हम सब सिस्टर विक्टरी का बहुत आदर करते थे। उनके चेहरे पर सदा करुणायुक्त मुस्कराहट चमकती रहती थी। फ्रान्स के चार्ट्रिज नगर की वे निवासिनी थीं और कूलियन की स्थापना के समय से यहाँ आयी थीं। वे तथा दूसरी कई सिस्टरें बीमारों के पहले जत्थे की व्यवस्था करने के लिए पहले ही भेज दी गयी थीं।

उन्हें तमगा समर्पित करते हुए जनरल वूड ने एक छोटा-सा भाषण दिया : "सिस्टर, आज यहाँ मैं दो हैसियतों में खड़ा हूँ। एक तो उन लोगों की तरफ से, जो यहाँ रहते हैं और जो आपके प्रति अपना प्रेम और कृतज्ञता प्रकट

करना चाहते हैं। मेरा हृदय उन्हींके समान आपके प्रति प्रेम से भरा है। किन्तु मेरी एक दूसरी भी हैसियत है। जिस टापू पर आप अपने आशीर्वाद वरसाने आयी हैं, उसकी तरफ से और जिस देश ने इस कार्य को संभव वनाया, उस देश के प्रतिनिधि के रूप में भी आज मैं यहाँ खड़ा हूँ। आपने जो अविश्रांत सेवा की है, उसकी कद्र के रूप में यह तमगा आपको समर्पित किया गया है। उसे इन दोनों हैसियतों से अर्पित करने का यश मुझे मिल रहा है। इसे मैं अपना भी गौरव मानता हूँ।"

वूड ने वह सोने का तमगा सिस्टर विक्टरी के श्वेत वस्त्रों पर जव लगाया, तो उनके चेहरे पर वह चिरपरिचित मुस्कराहट फिर चमकने लग गयी।

"धन्यवाद, आदरणीय गवर्नर, आपको और सभी सज्जनों को धन्यवाद !"

इस घटना को वहुत दिन हो गये। कुछ समय से डॉ० डोमिंग्वेज हमारे मुख्याधिकारी नियुक्त हुए थे। उन्हें मैंने वहुत दिन से निमंत्रण दे रखा था। आज वे मेरे यहाँ आये। फिलीपाइन लोगों के कितने ही गुण मुझे अच्छे लगते थे। वे शिष्टाचार का पालन करते हैं और संकोचशील होते हैं। वगैर वुलाये कभी घर पर मिलने नहीं आते।

डॉ० डोमिंग्वेज मुझे वहुत अच्छे लगते। जिम्मेदारियाँ वहुत वढ़ जाने के कारण वॉण्ड ने मुख्याधिकारी पद से त्यागपत्र दे दिया था। उनकी राय थी कि किसी फिलीपाइन को मुख्याधिकारी वनाया जाना चाहिए। मैं भी यही मानता था। फिलीपाइन सरकार ही इस संस्था को चला रही थी और वॉल्टर सिनसन और मुझे छोड़ वस्ती के सारे लोग फिलीपाइन ही थे। कुछ चीनी और मोरो भी थे।

डॉ० डोमिंग्वेज जैसे शक्तिशाली और भावनाशील पुरुष इस संस्था को मिल गये, यह हमारा सौभाग्य ही था। महारोग के विषय में उन्हें वड़ी रुचि थी और अपनी जिम्मेदारियों को वे वड़ी निष्ठापूर्वक निवाह रहे थे। यहाँ आये उन्हें वहुत दिन नहीं हुए थे, फिर भी उन्होंने चालमोगरा के इंजेक्शन देने की नयी पद्धति को आजमाना शुरू कर दिया। इसमें सीधे चकत्तों पर ही इंजेक्शन दिया जाता था। मांस में लगाये जानेवाले दूसरे इन्जेक्शनों के

अतिरिक्त ये इन्जेक्शन भी दिये जाते। कई बीमारों पर इसका परिणाम अद्भुत हुआ। उनके चकत्ते लगभग पूरे मिट गये।

डॉ० डोमिंग्वेज साधारण फिलीपाइन की अपेक्षा अधिक ऊँचे और आँखों में भर जाने लायक आदमी थे। ठीक निश्चित समय पर मेरे बगीचे के दरवाजे में उन्होंने प्रवेश किया। जब भी वे मेरे यहाँ आते, समय का बराबर ध्यान रखते। मेरे साथ काम करनेवाले दूसरे साथी उतने ही अनियमित होते थे। मुझे तो लगता है, अत्यन्त परिश्रम से साधना किये बगैर इतना नियमित रहना संभव नहीं है। जासिल्डो जैसे आदमी के साथ यदि तीन बजे का समय निश्चित हुआ हो और वह कहीं ३. ५९ बजे पहुँचे और यदि उसे कोई उलहना दे, तो वह अवश्य कहता कि "अभी चार तो नहीं बजे। चार नहीं बजे", अर्थात् तीन ही बजे हैं। मतलब यह कि वे समय पर ही आये हैं, कोई देरी नहीं हुई। इसे हम 'फिलीपाइन टाइम' कहते। उनकी राय में अमेरिकन टाइम में दो बजकर साठवें मिनट को ही तीन कहने का आग्रह करना बेहूदी बात है।

डोमिंग्वेज के साथ एक अनजान व्यक्ति थे। मैंने उन्हें यहाँ पहले कभी नहीं देखा था। वे ऊँचे, छरहरे बदन के थे और सफेद कपड़े पहने हुए थे, जो गरम देशों में अच्छे होते हैं। सिर पर भी सफेद गरमी के मौसम में पहनने का हैट था। उनका चेहरा भी लम्बा और पतला था। आँखों में वह तेज था, जो एक दृढ़ निश्चयी—मनधारा काम पूरा करने की शक्ति रखनेवाले—आदमी के चेहरे पर होता है। उम्र कोई साठ वर्ष की होगी। मैंने अनुमान किया कि वे अंग्रेज होंगे। जैसे ही उन्होंने बोलना शुरू किया, यह सही भी साबित हो गया।

"नेड ! मैं डॉ० ऐन्स्ली को आपसे मिलाने लाया हूँ। ये कलकत्ता से आ रहे हैं और महारोग का काम करनेवाले संसार के सबसे अधिक अनुभवी डॉक्टरों में से एक हैं।"

"यहाँ पधारकर आपने बड़ी कृपा की। डॉक्टर, हम बाहर बगीचे में चलें। वहाँ हम अधिक आराम से बातचीत कर सकेंगे।"

"आपके बारे में मैंने मनीला में बातें सुनी थीं मि० फर्ग्यूसन। तभी से

आपसे मिलने और आप तथा आपके साथी जो काम कर रहे हैं, उन्हें देखने के लिए उत्सुक हो रहा हूँ। मैंने सुना था कि आपका निवास और बगीचा खुद ही बड़ी देखने लायक चीजें हैं। किन्तु वास्तव में मैंने जैसी कल्पना की थी, उससे ये कहीं अधिक सुन्दर हैं।"

"मेरा प्रिय स्थान तो चौपाटी की तरफ है।....हम वहीं चलें।"

जब हम तीनों आगेवाली लॉन पर पहुँचे और वहाँ से उन्होंने समुद्र का दृश्य और पेड़ों की रचना देखी, तो बहुत खुश हो गये।

डोमिंग्वेज ने कहा कि "यहाँ सबसे उत्तम स्थान यही है और पूरे टापू में सबसे ठंढा है। मुझे लगता है, हममें से बहुत से तो केवल ठंढक पाने के लिए ही यहाँ चले आते हैं। यहाँ हमेशा थोड़ी-थोड़ी हवा आती रहती है। मैं नहीं मानता कि गरमी से बचने लायक इससे बढ़कर कोई दूसरी जगह इस टापू में होगी। टेकरी के नीचे हमारे लिए जो मकानात बनाये गये हैं, उनसे तो यह स्थान निश्चित रूप से अधिक अच्छा है। वहाँ तो दिन और रात में भी बड़ी गरमी होती है। यह तो कल रात में आपको जो अनुभव हुआ, उसी पर से आप मान लेंगे डॉक्टर।"

हम आम के नीचे जा पहुँचे।

"किन्तु आप भूल तो नहीं रहे हैं डॉ० डोमिंग्वेज कि मैं भारत से आ रहा हूँ और वहाँ भी यहीं की-सी गरमी है।"

"हाँ, वहाँ भी इतनी ही गरमी पड़ती है। किन्तु जरा ठहरिये, मैं दो कुरसियाँ लाता हूँ।"

डोमिंग्वेज जल्दी-जल्दी टपरिया (छोटी झोपड़ी) में गये और वहाँ से मेहमान के तथा अपने लिए दो कुरसियाँ उठाकर ले आये। हम तीनों बैठे। मेरे आसपास फैले सौंदर्य को देख मुझे कुछ गर्व भी हुआ। डॉ० डोमिंग्वेज ने ठीक ही कहा था। मेरे विशाल वृक्षों की छाया में यहाँ की गरमी को हार ही माननी पड़ती थी। ईशान्य दिशा की ओर से आनेवाली वायु से समुद्र बड़ी-बड़ी लहरें मारने लग गया था और ठंढी हवा के झोंके मैदान से होकर पेड़ों की डालियों को हिला रहे थे।

"मुझे मानना पड़ेगा मि० फर्ग्यूसन कि यह स्थान सचमुच बड़ा रमणीय

है। मुझे आश्चर्य होता है कि डॉ० डोमिग्वेज जैसे आदमी लालच दिखाकर आपसे यह स्थान ले क्यों नहीं लेते ?"

"इसलिए कि ऐसा करने में उन्हें कोई बहुत फायदा नहीं होगा, डॉ० ऐन्स्ली !"—मैंने हँसकर डॉ० डोमिग्वेज की तरफ देखते हुए कहा—"बात यह है कि सरकार ने पहले से ही तय कर दिया है कि अधिकारी लोग कहाँ रहें। इसलिए वे दूसरी किसी जगह रह नहीं सकते। उनकी अपेक्षा तो हम बीमारों को अधिक आजादी है। आपको यह स्थान पसन्द आ गया, इस पर मुझे गर्व है। अगर आप यहाँ अधिक समय तक रुकनेवाले हों, तो मैं आशा करता हूँ कि जब भी आपको इच्छा हो, तब आप इसका उपभोग करेंगे।"

"कृपा है आपकी। किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि मुझे परसों ही यहाँ से मनीला के लिए रवाना हो जाना है। फिर भी अभी तो मैं इसका पूरा आनंद उठा ही सकता हूँ।"

इस प्रकार हम छाया में बातें करते हुए बैठे। टॉमस संतरे के सोडे की बोतलें ले आया। छोटे-छोटे नारियलों के पानी की बनायी ताड़ी की अपेक्षा अधिक तीव्र पेय फिलीपाइन लोग नहीं पीते। इस ताड़ी को यहाँ के लोग 'टूबा' कहते हैं। इसे साधारणतया गरीब लोग ही पीते हैं। मेरे मेहमान अंग्रेज थे। इसलिए मैंने उनसे कहा कि मैं उन्हें स्कॉच शराब और पानी आसानी से हाजिर कर सकता हूँ। किन्तु उन्होंने इनकार कर दिया और कहा कि उन्हें संतरे का सोडा ही अधिक पसन्द है। बाद में बातचीत के सिलसिले में मुझे ज्ञात हुआ कि वे पादरी डॉक्टर थे। इस काम के करनेवाले दूसरे डॉक्टरों में से बहुत-से पादरी ही होते हैं।

"आप किसी कुष्ठालय के प्रबन्धक हैं डॉ० ऐन्स्ली ?"—मैंने पूछा।

"सर्वथा ऐसी बात तो नहीं। किन्तु स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन (उष्णदेशीय रोग विद्यालय) से मेरा सम्बन्ध है और उसके महारोग-विभाग का मैं संचालक हूँ। कलकत्ता के पास हमारा एक छोटा-सा कुष्ठालय भी है और उसकी औषधि-विषयक जिम्मेवारी मुझ पर ही है। किन्तु मेरा असली काम तो विद्यालय के महकमे में ही है।"

"डॉ० ऐन्स्ली अपने बारे में बड़े संकोच के साथ बोल रहे हैं, नेड !"—

डोमिंग्वेज बीच में ही बोले—"भारत में स्थान-स्थान पर जितने भी कुष्ठालय स्थापित हुए हैं, उनके ये धर्मपिता के समान हैं। बहुत-सी संस्थाएँ अर्ध-मिशनरी प्रवृत्तियाँ हैं। उन सबके वैद्यक संचालक डॉ० ऐन्स्ली से मार्ग-दर्शन और प्रेरणा पाते हैं। भारत के एक मिशनरी अस्पताल में जब आपने अपना काम शुरू किया, तब आज के बहुत-से कार्यकर्ताओं का जन्म भी नहीं हुआ था। केवल आपके साथी ही नहीं, हम सब आपसे मार्ग-दर्शन और सलाह लेते रहते हैं। आपकी राय की हमें जरूरत रहती है। आपका यह आगमन हमारे लिए एक बहुत बड़ा लाभ है। कल यहाँ की मेडिकल सोसाइटी में आप आये थे और ब्रिटिश साम्राज्य में कोढ़ियों के लिए जो अद्‌भुत काम किया जा रहा है, उसका हाल आपने वहाँ बताया।"

"इस बात में मुझे बड़ा रस आ रहा है।"—मैंने कहा—"यहाँ कूलियन में हम अलग पड़ गये हैं। इस कारण हमारा खयाल ऐसा हो सकता है कि इस रोग के बारे में जो कुछ काम हो रहा है, केवल यहीं हो रहा है। किन्तु संसार के दूसरे देशों में भी ऐसा काम चल रहा होगा। इस बारे में मैंने तो अधिक सोचा भी नहीं था। हाँ, अमेरिका में कारविल में जो काम चल रहा है, उसके बारे में जरूर मुझे कुछ जानकारी है।"

"संपूर्ण साम्राज्य में जहाँ-तहाँ कोढ़ बहुत है। आपको पता होगा कि भारत में तो वह हजारों वर्षों से है। हाट-बाजारों में और गलियों में भीख माँगनेवाले कोढ़ी जिस प्रकार ईसा को दीखते थे, उसी प्रकार बुद्ध को भी मिलते थे। इन कमनसीब लोगों को सबसे पहले ईसाई डॉक्टरों की तरफ से सहायता मिली। या तो कुटुम्बी जन उन्हें ईसाई अस्पतालों के अहातों में पहुँचा देते या वे खुद ही इलाज या सहायता की खोज में वहाँ आ पहुँचते। उनकी तरफ डॉक्टरों या उनमें से कुछ का ध्यान गया और वे उनका इलाज भी करने लगे। इसके परिणामस्वरूप खास तौर पर अफ्रीका में, भारत में और पश्चिमी द्वीपसमूह (वेस्ट इण्डीज) में इनके लिए छोटे-बड़े अस्पताल खुलने लगे। वहाँ इन्हें भरती कर इनका उपचार होने लगा।"

"इनमें से कुछ संस्थाएँ तो बहुत पुरानी होंगी ?"

"जी हाँ, बहुत पुरानी हैं। कई तो पुश्तों पुरानी हैं। डॉक्टर, कुछ रोज

हुए, तब हमारे यहाँ एक आकर्षक कार्यक्रम हुआ था।"—डोमिग्वेज बोले—"हमारे यहाँ की एक सिस्टर ने लगातार पचीस वर्ष तक इस कोढ़िस्तान की सेवा की थी। इस अवधि में वह एक बार भी अपने देश (फ्रान्स) नहीं गयी। उसे सोने का तमगा देने के लिए स्वयं जनरल वूड यहाँ आये थे।"

"बहुत ही अच्छा! हमारे यहाँ भी ऐसे आदमी हैं। कई धार्मिक संघों की निष्ठा देखकर आश्चर्य होता है। सभी पंथों में ऐसे लोग होते हैं, मानो स्वेच्छापूर्वक देश-निकाला ग्रहण किया हो, इस तरह वे बगैर कोई दिखावा और बकवास किये, बल्कि अत्यन्त प्रसन्न चित्त से दिन-रात—रविवार, सोमवार का बगैर खयाल किये—एक क्रिसमस से दूसरे क्रिसमस तक इस प्रकार लगातार वर्षों तक बीमारों की सेवा किया करते हैं और उनकी हर प्रकार से चिन्ता रखते हैं।"

"हाँ, किन्तु इन सेवकों के त्याग के अतिरिक्त एक बात का मुझ पर बड़ा असर हुआ है। वह यह कि इनमें से एक को भी इस रोग की छूत लगी हो, ऐसा नहीं सुना है। भारत या दूसरे देशों में यह हुआ हो, इसका आपको पता है?"

"लगभग कहीं नहीं। सारे संसार के अंक लेकर देखें, तो ज्ञात होगा कि सैकड़ों नहीं, हजारों आदमियों ने कुष्ठालयों में काम किया है। किन्तु जहाँ तक मुझे पता है, छूत लगने के उदाहरण उँगलियों पर गिन लें, इतने भी शायद न हों। ये संस्थाएँ कितनी ही पुरानी हैं। उदाहरण के लिए जोहोर को ही ले लीजिये। सिंगापुर के नजदीक यह एक कुष्ठालय है। दो सौ वर्ष पुरानी संस्था है। नीरोग आदमी वहाँ रोगियों की सेवा करते हैं। फिर भी जहाँ तक हमें ज्ञात है, वहाँ एक भी परिचारक को यह रोग नहीं लगा है।"

"हमारे यहाँ मनीला में भी सान-लाजारो है। डॉक्टर! यह संस्था तीन सौ वर्ष पुरानी है। किन्तु आपने जोहोर के बारे में जो बात कही है, वही इसके बारे में भी है।"—डोमिग्वेज ने कहा।

"तब लोग इससे इतने डरते क्यों हैं?"

डॉ० ऐन्स्ली ने हँसकर डॉ० डोमिग्वेज की तरफ देखा और पूछा: "आपका क्या खयाल है डॉक्टर?"

"मैं अभी तक इस वात को समझ नहीं पाया हूँ। रोग की अपेक्षा इसके प्रति समाज में जो घृणा है, वही सवसे अधिक गूढ़ वात है। लोगों में इसका जितना भय है, इतना डरने लायक इसमें कुछ है नहीं, यह तो पक्की वात है।"

"आपका कथन विलकुल सही है।"—डॉ० ऐन्स्ली ने इसका समर्थन करते हुए कहा—"कितने ही ऐसे रोग हैं, जो कोढ़ के समान अथवा इससे भी अधिक वुरे कहे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए तीव्र उपदंश ही लीजिये। कोढ़ी का लिखा हुआ पत्र हाथ में लेने से या किसी चीनी धोवन द्वारा धुले कपड़े पहनने से किसीको कोढ़ लग गया, ऐसे उदाहरण अवश्य सुनने में आते हैं। किन्तु अनुभव तो यह कहता है कि इस रोग का संसर्ग दूसरे को कदाचित् ही लगता है। सच तो यह है कि जव जाँच की गयी, तो यह पता लगा कि यदि किसीको छूत लगी है, तो वहाँ किसी कोढ़ के बीमार से अचानक संसर्ग होने की अपेक्षा दूसरे अधिक वलवान् और विश्वास करने योग्य कारण पाये गये हैं।"

"हाँ, हमारे यहाँ कुछ वर्ष पूर्व ऐसा एक केस हुआ था।"—डोमिग्वेज ने कहा—"यहाँ के एक क्लर्क मुद्रा-विनिमय विभाग में काम करते थे। फिलीपाइन सिक्के के वदले में वह यहाँ के सिक्के दिया करता था। उसे रोग पाया गया। पहले तो हमने सोचा कि सिक्कों के लेन-देन में इसे कहीं छूत लग गयी है। किन्तु वाद में मालूम हुआ कि इसके कुटुम्व में यह रोग था। वह यहाँ नौकर हुआ, उससे पहले ही उसे यह रोग लग चुका होगा। किन्तु तव वह प्रारम्भिक अवस्था में रहा होगा। इस कारण डॉक्टरी जाँच में वह पकड़ में न आ सका।"

"विलकुल सही है। मैं भी यही कहना चाहता था। अफवाहों में जो वातें सुनी जाती हैं, उनकी अपेक्षा वास्तविकता वड़ी जोरदार होती है। इस रोग के प्रति लोगों में इतनी कठोरता क्यों है, यह समझ में नहीं आता। ठीक है न?"

"यह रोग कैसे फैलता है? क्या इस विषय में कुछ भी सही-सही जानकारी नहीं मिल सकी है?"—मैंने पूछा।

"मेरा खयाल है और डॉ० डोमिग्वेज भी मुझसे सहमत होंगे कि इस विषय में अभी हमें निश्चित कहने लायक ज्ञान वहुत कम मिला है। हाँ, अव तक

सर्वत्र जो अवलोकन हुआ है, उस पर से कुछ निश्चित अनुमान अवश्य होते हैं। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि लम्बे समय तक निकट का संस्पर्श होते रहने से यह रोग लग सकता है। फिर भी ऐसा हो सकता है कि दो आदमी निकट हों और दोनों की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति एक-सी हो, फिर भी एक आदमी पर यह रोग अधिक जोर से आक्रमण कर दे और दूसरे पर उसका आक्रमण या तो बहुत सौम्य या केवल नाममात्र का कहा जाय। संसार के विभिन्न भागों में काम करनेवाले लोगों के अनुभवों में यह विलक्षणता पायी जाती है कि कोढ़ी पति की छूत पत्नी को या कोढ़ी पत्नी की छूत पति को बहुत कम लगी है। साधारण अनुमान यह है कि ऐसे उदाहरण पाँच या छह प्रतिशत से अधिक नहीं हैं।"

"कुछ लोगों की यह भी राय है कि गरम देशों में बसने से या अमुक प्रकार का खाना खाने से यह रोग होता है।"

"रायें तो अलग-अलग समय में जुदी-जुदी पायी गयी हैं। हाँ, एक बात निश्चित है। गरम देशों में यह रोग अधिक पाया जाता है। किन्तु यह भी याद रहे कि यह रोग संसार के सभी भागों में पाया जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि अमुक प्रकार का खाना खाने से यह रोग होता है। एक डॉक्टर का निश्चित अभिप्राय था कि मछली खाने से यह रोग होता है। किन्तु आज शायद ही कोई यह स्वीकार करेगा।"

"किन्तु खटमल जैसे कीड़ों के कारण यह रोग नहीं फैलता ?"—मैंने पूछा।

"इस विषय में आपका क्या खयाल है डॉक्टर ?" डॉ० डोमिग्वेज के प्रति इस विख्यात विशेषज्ञ का आदर-भाव देख मुझे बड़ा आनंद हुआ। यद्यपि मेरी राय तो एक साधारण आदमी की राय ही मानी जायगी, फिर भी डॉ० डोमिग्वेज एक बुद्धिमान् और तौलकर अपने मुँह से बात निकालनेवाले आदमी थे। इसलिए उनके प्रति डॉ० ऐन्स्ली का यह आदरभाव देखकर मुझे बड़ा सन्तोष हुआ।

"ऐसा हो ही नहीं सकता, यह मानने के लिए तो कोई कारण नहीं है। मक्खी, मच्छड़, खटमल जैसे छोटे-छोटे जीव मनुष्य के संपर्क में बहुत आते हैं।

इनमें कोढ़ के जंतु होते हैं या नहीं, यह देखने के अनेक प्रयोग हुए हैं। इनका इतिहास डॉ० ऐन्स्ली आपको वता सकते हैं। वे आपको यह भी वतायेंगे कि रोगियों के शरीर पर पाये जानेवाले इन कीड़ों की जाँच में एक वार भी कोढ़ के जंतु नहीं मिले हैं।"

"फिर भी क्या वे छूतवाहक नहीं माने जा सकते ?"

डॉ० ऐन्स्ली ने इसके जवाव में कहा : "जरूर हो सकते हैं। अव तक पकड़ में नहीं आये, इस पर से यह तो नहीं कहा जा सकता कि उनमें छूत होती ही नहीं। यदि ऐसे कोई जीव गुनहगार हो सकते हैं, तो मेरा खयाल है कि वे जीव वही होंगे, जो घरों में रहते हैं और वहुत दूर का प्रवास नहीं करते। एक मकान में इस रोग के वहुत-से वीमार होते हैं और पड़ोस के घर में विलकुल नहीं होते। इसका एक स्पष्टीकरण यह हो सकता है।"

"क्या इस वात का पता लगाने का कोई मार्ग नहीं है डॉक्टर ?"

"मुझे निश्चय है कि जरूर है। डॉ० डोमिग्वेज वेगी रोगशास्त्री* हैं। संशोधन के लिए उन्होंने यह क्षेत्र पसन्द किया है। इस वारे में क्या संभव है डॉ० डोमिग्वेज ?"

"मेरा खयाल है कि क्षेत्र में जाँच करने से हमें कुछ जानकारी मिल सकती है। अलग-अलग परिस्थितिवाले संसार के विभिन्न भागों में निश्चित क्षेत्र चुन लिये जायँ और उनकी पूरी-पूरी डॉक्टरी जाँच की जाय। वहाँ के एक-एक परिवार का इतिहास मालूम किया जाय। जहाँ कोढ़ वहुत हो, वहाँ की तथा जहाँ जरा भी न हो या लगभग न हो, ऐसे दोनों प्रकार के क्षेत्रों का अध्ययन किया जाय। खास तौर पर ये दोनों प्रकार के क्षेत्र पास-पास हों और उनकी रहन-सहन एक समान हो। उनका अध्ययन वारीकी से करने की जरूरत है। स्थानीय खानपान, जलवायु, जीवन की परिस्थिति, दूसरे रोगों की हस्ती तथा रोगों का प्रतीकार करने की मनुष्य की शक्ति को कम करने-वाले कारण—इन सव पर विचार करना चाहिए। अभी जिन छोटे-छोटे जीवों

* Epidemiologist—चेचक, प्लेग, हैजा जैसे रोग एकाएक वड़े वेग से और जोर से फैलते हैं और शमन भी हो जाते हैं, उनके जानकार।

का हमने जिक्र किया, उन्हें भी खुर्दबीन से देखना चाहिए। मतलब यह कि रोग की छूत ले जानेवाली एक भी संभवनीय बात की अवगणना न हो।"

"किन्तु इसमें तो बहुत समय लगेगा।"

"जी हाँ, बहुत-से लोगों का संपूर्ण जीवन बीत सकता है। किन्तु इससे क्या? सत्य की खोज बहुत बड़ी बात है। इन कामों में लम्बा समय लगता है, यह मानकर ही हमें आगे बढ़ना चाहिए। किन्तु मेरी तो अटल श्रद्धा यह है कि संसार में ऐसा एक भी रोग नहीं, जिसके पीछे हम हाथ धोकर पड़ जायँ और फिर भी वह नष्ट न हो सके।"

उसके ये शब्द, उसकी आँखों में चमकता हुआ तेज, उसकी उमंग और उसने जो आशाभरा चित्र चित्रित किया—अर्थात् यह कि एक दिन ऐसा जरूर आयेगा, जब मानव को—निराशाभिभूत स्त्री-पुरुषों को इससे अवश्य ही मुक्ति मिलेगी—यह सब देखकर मेरा तो दिल हिल उठा!

"आपने जो कुछ कहा, उससे मैं पूर्णतया सहमत हूँ।"—डॉ० ऐन्स्ली ने कहा—"बड़ी प्रसन्नता की बात है कि इस पुराने रोग से लड़ने में नयी दिशा में अनुसंधान करने की ओर ध्यान दिया जा रहा है। आपने बताया, उस प्रकार अनुसन्धान करने के क्या-क्या परिणाम होंगे, सो आज नहीं बताया जा सकता।"

नारियल के पेड़ों की परछाइयाँ लम्बी होने लगीं। दोनों जाने के लिए उठे। थोड़ी देर हम तीनों मैदान में टहलते रहे और फिर मैं उन्हें फाटक तक विदा देने के लिए गया। केवल फिलीपाइन में ही नहीं, अमेरिका में और सारे संसार में लोग हमारे लिए जूझ रहे हैं, यह बात मैं जान गया। इससे मुझे बड़ी सान्त्वना मिली। डॉ० ऐन्स्ली जैसे सूक्ष्म बुद्धिवाले और तीव्र रस लेने-वाले पुरुष भी उसमें हैं। उनकी भेंट मेरे लिए कितनी कीमती थी, यह प्रकट करने का मैंने यत्न किया। दरवाजे पर खड़े रहकर मेरी तरफ इशारा करते हुए वे बोले :

"मि० फर्ग्यूसन, आप भी भूलें नहीं कि आप यहाँ जो काम कर रहे हैं, वह भी एक महान् सेवा-कार्य का प्रारम्भ है। संसार से जो लोग अलग पड़े हैं, उनके दिलों में उत्साह और आशा भरना, 'यहाँ भी जीवन का उपयोग

किया जा सकता है' यह आश्वासन पैदा करना इससे बढ़कर और क्या काम हो सकता है ? यही नहीं, बल्कि इसके समान महत्त्वपूर्ण काम बहुत कम हैं। मैं जब लौटकर भारत जाऊँगा, तब यहाँ जो कुछ हो रहा है, उसका सन्देश अपने साथ ले जाऊँगा। मुझे विश्वास है कि आपके काम के सुफल केवल कूलियन को ही नहीं, बल्कि ऐसी-ऐसी जगहों पर भी मिलनेवाले हैं, जिन्हें आपने देखा-सुना भी न होगा। आपको सफलता मिले। कभी निराश होकर न बैठने का निश्चय करनेवाला आदमी क्या-क्या कर सकता है, यह आपने मुझे प्रत्यक्ष दिखा दिया। इसके लिए मैं आपका आभार मानता हूँ।"

उनके चले जाने पर भी मैं बड़ी देर तक उस सूने मार्ग को ही देखता खड़ा रहा। उत्साह की एक नयी ऊर्मि मेरे मन में उठ रही थी।

"अब तो इसका मुकाबला करना ही होगा जवान ! रोकर या सीना तानकर !"—ये शब्द फिर मेरे कानों में गूँजने लगे।

◆◆◆

डॉ० वॉण्ड का मकान तैयार हो जाने पर तुरन्त उनकी पत्नी कूलियन में रहने के लिए आ गयीं। वे युवती और आकर्षक थीं। लेखिका भी थीं। इस संस्थान से सम्बद्ध उनकी लिखी अनेक वातें अमेरिका के अखवारों में छप चुकी थीं। जब गवर्नर जनरल वूड ने कोढ़ और कोढ़ियों के कामों का विस्तार करने के उद्देश्य से अमेरिका में चन्दा एकत्र करने के लिए अपील जारी करने का निश्चय किया, तो उन्होंने श्रीमती वॉण्ड को मनीला बुलाया और वूड के नाम पर अपील जारी कर चन्दा एकत्र करने के लिए उनसे प्रार्थना की। उन्होंने इसे स्वीकार किया, जिससे सबको हर्ष हुआ।

१९२७ में वूड छुट्टी पर अमेरिका गये, तो वापस नहीं आये। क्यूवा में उन्हें जो पुराना घाव हो गया था, वह प्राणघातक सिद्ध हुआ। उनकी मृत्यु के वाद महारोग-सम्वन्धी हलचल उनके स्मारक के रूप में जारी रही। प्रारम्भ में धीमी गति से और वाद में तीव्र गति से अमेरिका ने उसे चलाया। पहाड़ियों के वीच से एक रास्ता वनाने के लिए टापू में वहुत-से मरीज काम पर लगा दिये गये। यह रास्ता जंगलों में से होकर खेती लायक जमीनों तक ले जाया गया था। जो रोगी खेती करने के लिए वहाँ रहना चाहते थे, उनके आने-जाने के लिए इससे काफी सहूलियत हो गयी।

वालाला में डॉक्टरों के लिए वहुत-से मकान वन रहे थे। गहरे अनुसन्धान के लिए कितने ही नये डॉक्टर यहाँ आकर रहनेवाले थे। प्रयोगशाला में काम करने के लिए आनेवाले विशेषज्ञों के लिए भी मकान वनाये जा रहे थे। नर्सों के लिए भी एक मकान की वड़ी जरूरत थी। वह भी वनाया जा रहा था। पेशेवर नर्सों पर काम का वोझ वहुत वढ़ गया था। इसलिए कोढ़ी स्त्री-पुरुषों में से कुछ को परिचारक के तौर पर पहली वार भरती किया गया। इस प्रकार कोढ़िस्तान वढ़ रहा था। १९२६ में पाँच हजार से अधिक वीमार थे। नये चन्दे का वहुत-सा हिस्सा इन नये सहायकों के वेतन पर खर्च होनेवाला था। अर्थात् वीमारों को अधिक काम और कमाई मिल गयी।

टेकरी पर पहलेवाले अस्पताल के ठीक पीछे नयी प्रयोगशाला के लिए जमीन साफ की जा रही थी। इस प्रयोगशाला में अमेरिकन तथा फिलीपाइन डॉक्टर दोनों एक साथ कन्धे-से-कन्धा भिड़ाकर काम कर रहे हैं। मैं ऐसे सपने देखने लग गया कि कोढ़ का इलाज हमें मिल गया और कोढ़ पूर्णतया नष्ट हो गया।

एक शनिवार की बात है। अपने कुत्ते—शाग और मैमिनी के साथ मैं आँगन में चक्कर काट रहा था। चरिता कहाँ होगी और उसका काम-काज कैसे चल रहा होगा आदि विचार मेरे मन में चक्कर काट रहे थे। इतने में वॉण्ड हाँफते-हाँफते आये। उनके हाथ में श्रीमती वॉण्ड का एक तार था। वह उन्होंने मेरे सामने रख दिया।

"वूड के एक मित्र ने स्मारक के लिए १ लाख ८० हजार डॉलर देने का वादा किया है। काम शुरू होते ही तार से खबर करें।"

वॉण्ड ने कई बार सेबू की बात कही। यह टापू हमारे पूर्व में है। इसका मुख्य शहर सेबू फिलीपाइन्स का दूसरे नंबर का शहर है। वॉण्ड वहाँ एक आदर्श कुष्ठालय बनाना चाहते थे। दूसरे सभी टापुओं की अपेक्षा यहाँ सबसे अधिक घनी आबादी है। कोढ़ ने उसे अपना घर बना लिया है। कूलियन में सबसे अधिक कोढ़ी यहीं से आते हैं।

"नेड, आज किसीको कोढ़ हो जाता है, तो उसे बड़ा डर रहता है कि किसीको यह मालूम न हो जाय। किन्तु जो लोग यहाँ से अच्छे होकर पैरोल पर लौटते हैं, वे कुछ अंशों में इस डर को दूर कर देते हैं। अब सेबू के कुष्ठालय से इसमें और भी मदद मिलेगी, यह आप अनुभव से देखेंगे ही। आज उपचार के लिए बीमारों को जबरदस्ती लाना पड़ता है। उसके बदले धीरे-धीरे लोग खुद होकर आने लगेंगे। अब तक हम कभी-कभी ऐसे किस्से सुनते रहते हैं कि अमुक इन्स्पेक्टर को डरे हुए कोढ़ियों ने भालों से मार डाला। अब ऐसी बातें नहीं सुनी जायँगी। अमुक रोगी अमुक जगह पर छिपा हुआ है, इस तरह की खबर अधिकारियों को देनेवालों को पड़ोसियों ने जान से मार डाला है। ऐसा अब न होगा। इस प्रकार हमें सारा वातावरण बदल देना है।

"सेवू का कुष्ठालय रोगियों के घर से नजदीक होगा। वहाँ क्या हो रहा है, यह उनके रिश्तेदार खुद देख सकेंगे। संसार से दूर कहीं एक कोने में अव उन्हें एकान्तवास न करना होगा।"

उसी क्षण मैं जान गया कि एक दिन ऐसा जरूर आयेगा, जव महारोगी को एक अपराधी समझकर उसका देश-निकाला न कर दिया जायगा। मैंने कहा:

"मैं समझता हूँ कि आपको हुकूमतवाले कामों में कोई दिलचस्पी नहीं है।"

किन्तु वॉण्ड के दिल में इतना उत्साह था कि वह मेरी वातों की तरफ क्यों ध्यान देने लगा। वह कहता जा रहा था:

"हम एक काम और करना चाहते हैं। सेवू के पुराने कुष्ठालय में सारे मकान नीपा के ही वने हैं। वे एकदम अपर्याप्त हैं। नया कुष्ठालय वनने पर हम उन्हें हटा देंगे और उनके स्थान पर एक नये ढंग का दवाखाना वनायेंगे, जिसमें सव प्रकार के चर्म-रोगों का इलाज होगा। कोढ़ की प्रारम्भिक स्थिति की जाँच करने में यह दवाखाना मददगार होगा। यदि समय पर इसके अस्तित्व का पता लग गया, तो इलाज तत्परता से करने में सहूलियत होगी।"

मुझे अपने पहले चकत्तों की याद आयी। वे क्या हैं, इसका पता लगने में वहुत सारा समय वीत गया। यदि उनकी परख जल्दी हो जाती, तो…………

"सच है"—मैंने गम्भीरतापूर्वक कहा।

× × ×

दिन निकलने को था। मुर्गों के पहले दल ने कान फोड़ डालनेवाली वाँग शुरू कर दी थी। मुझे अभी-अभी नींद लगी थी। इतने में खिड़की के वाहर से किसीने पुकारा। वह जैक वॉण्ड का नौकर सोकोरों था। एक चिट्ठी लाया था।

"नेड, मैं घर पर लौटा, तो गवर्नर जनरल का सन्देशा आया पड़ा था। दान की वात का पता उन्हें लग गया है और मुझे मनीला ले जाने के लिए वे दो फौजी हवाई जहाज भेज रहे हैं। यह सव सत्य है कि मुझे भ्रम हो रहा है?"

"सोकोरो"—मैंने पुकारा—"डॉ० वॉण्ड से कहना कि तू 'डॅम' किस्मत-

वाला आदमी है। विदा करने के लिए मैं आऊँगा। समझा न ? वहाँ जाकर क्या कहेगा ?"

"जी हाँ, मैं कहूँगा कि मि० फर्ग्यूसन ने कहलाया है कि आप शापित* किस्मतवाले हैं। वे आपसे मिलने के लिए आयेंगे।" तव मैंने उसे सीधी-सादी भाषा में वात समझायी। अव तो दिन निकल आया था।

खाड़ी पर नजर फैलानेवाली एक टेकरी पर मैं खड़ा था। कूलियन का बच्चा-बच्चा—जो विस्तर पर पड़ने लायक वीमार नहीं था, वाहर निकल आया था। दो सुन्दर फौजी हवाई जहाज उत्तर दिशा से आये। हम सवने देखा कि वे नीचे उतरकर अव वालाला के घाट पर दौड़ते हुए आ रहे थे। डॉ० वॉण्ड और डॉ० डोमिग्वेज शुभ्र पोशाक पहनकर तेजी से उस तरफ पहुँचे। घाट के अधिकारी ने उन्हें सलाम किया। वॉण्ड और डोमिग्वेज जहाज पर चढ़े और जहाज खाड़ी के किनारे-किनारे कुछ दौड़कर ऊपर उठे और टापू के ऊँचे-से-ऊँचे शिखर पर होकर अदृश्य हो गये। मैं गर्व से फूल उठा। इस काम में भी फौज अपना हिस्सा अदा कर रही है।

वॉण्ड वहुत दिन तक वाहर ही रहे। वे लौटे, तो पतझड़ का मौसम समाप्त हो रहा था। वे खूव उत्साह में थे और नये-नये समाचारों से भरे थे। नये कुष्ठालय के लिए उपयुक्त स्थान की तलाश में वे और डोमिग्वेज टेकरियों, घाटियों और जंगलों में मीलों घूमे। अंत में सेवू से आठ मील दूर एक स्थान पसन्द किया गया। वहाँ काम भी शुरू हो गया। पिट ग्राण्ट ने कहलाया था कि उसने मुझे याद किया है। इमारतें वनाने का कण्ट्राक्ट उसे मिला था।

कारखाने से घर और दफ्तर चक्कर लगाने से अव मुझे थकावट महसूस होने लग गयी। एक मोटर की जरूरत हुई। अव तो ये इतने किस्म की दीखती

---

* अंग्रेजी वोलनेवाले वात-वात में 'डॅम' शव्द का प्रयोग करते हैं—जिस तरह हमारे देश में 'साला' शव्द का किया जाता है। यहाँ उसका कुछ भी अर्थ नहीं है। सोकोर्रो अंग्रेजीभाषी नहीं था। नौसिखा था। उसने उसका अनुवाद कर डाला, जो नहीं करना चाहिए था।

थीं कि कौन-सा नमूना खरीदा जाय, यही मैं सोच नहीं पाता था। इसलिए मैंने पिट ग्राण्ट को लिखा कि वह मेरे लिए एक छोटी-सी मोटर—ऐसी कि जिसमें अधिक तेल खर्च न हो—खरीदकर भेज दे। कुछ ही दिनों में एक प्रसिद्ध जाति की ताजा नमूने की मोटर आ पहुँची। हाँ, उसने काले रंग की नहीं—जो आम तौर पर लोग खरीदते हैं—गहरे भूरे रंग की गाड़ी पसन्द की। जो गाड़ी मैंने न्यूयॉर्क की नदी में डुवा दी थी, उससे मिलता-जुलता यह रंग था। वॉण्ड ही मोटर रखनेवाले पहले अधिकारी थे।

टापू पर मैं जितने भी दिन रहा, अस्पताल जाने में वहुत ही नियमित रहा। इसमें मेरे हेतु दो थे। डॉक्टर मुझसे कहते थे कि दूसरे वीमारों पर इसका अच्छा असर पड़ता है। क्योंकि कुछ दिन वाद लोग थक जाते हैं और वीमारी से जूझना छोड़ देते हैं। दूसरे मुझे खुद ऐसा लग रहा था कि मेरा रोग यद्यपि वढ़ रहा था, फिर भी नियमित उपचार के कारण उसका वेग धीमा हो गया है। इलाज के अनेक प्रकार मुझ पर आजमाये जा चुके थे। प्रारम्भ में शुद्ध चालमोगरा के इञ्जेक्शन, इसके वाद कपूर के तेल के साथ उसके इञ्जेक्शन और अंत में कितने अम्लासवों (ester) के। ये अंतिम इञ्जेक्शन अधिक तकलीफदेह नहीं थे। अव तो मुझे इन्हें अलग-अलग और एक साथ लगवाने का अभ्यास भी हो गया और मुझे लगभग कोई कष्ट नहीं होता था। कभी-कभी घण्टेभर वाद कुछ चक्कर आते, पर थोड़ी ही देर में ठीक हो जाता।

एक दिन सुवह मैं इलाज के लिए दवाखाने जा रहा था। मैंने एक लड़की को दवाखाने की चाल में डॉ० पॉन्स से वातचीत करते देखा। दूर से ही वह लड़की मुझे परिचित-सी जान पड़ी। उसके हाथ में एक गुच्छ-पुष्प था। उससे मिलने के लिए मैंने अपनी चाल जरा वढ़ा दी। किन्तु उसने मुझे देख लिया और घवड़ाकर वह जल्दी से चली गयी। मैंने डॉ० पॉन्स को पकड़ लिया।

"यह कारमन ही थी न डॉक्टर ?"

"जी, नेड।"

"फिर उसे यहाँ क्यों आना पड़ा ?" वीमारी ने पलटा तो नहीं न खाया ?"

"नहीं, नहीं । विलकुल नहीं । कुछ दिन पहले मैंने खुद इसकी जाँच की थी । इसकी स्थिति अत्यंत सन्तोषजनक है । मुझे लगता है कि किसी निजी काम से आयी होगी । इसके पिता शान्त हो गये हैं । आप जानते हैं कि उसका भाई विसेन्टी यहीं रहता है । किन्तु क्षमा करें, मुझे जल्दी दवाखाने जाना है ।"

डॉ० पॉन्स मुझसे कुछ छिपा रहा था । इसमें कोई रहस्य होगा । चरिता ने मुझे कारमन के विषय में क्यों नहीं कुछ लिखा ? मैं डाकघर गया । मेरे नाम दो पत्र थे । एक चरिता का—छोटा-सा, विनोदी और वातूनी । आपका काम कैसे चल रहा है, टॉमस, शाग और मेमी कैसे हैं ? आप सवसे मिलने की वड़ी इच्छा है, किन्तु काम में वुरी तरह फँसी हुई हूँ, वगैरह । कारमन के वारे में एक शब्द भी नहीं था ।

दूसरा पत्र वॉव सेलर्स का था :

"कुछ दिन पहले यहाँ पिट ग्राण्ट नामक एक अमेरिकन आया था । उसने तुम्हारे एक टामाराउ के शिकार का ऐसा किस्सा सुनाया कि उस पर विश्वास ही नहीं होता । किन्तु मुझे आशा है कि वह सच्चा होगा । उसके लिए तुम्हें वधाई देता हूँ । नेड, मैं तुम्हें पिछली वार मिला, तव वड़ी निराशाजनक स्थिति में मैं था । इस वीच वहुत-से पासे पलटे । वेंगू के टापू में मुझे अच्छी कमाईवाला काम मिल गया है । मेरी पत्नी और वच्चे यहाँ आ गये हैं । उसे यहाँ अच्छा लगता है । तुमने मुझे वड़ा सहारा दिया, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता । तुमने मुझे जो रकम दी थी, वह पोस्टल ऑर्डर से भेज रहा हूँ । यह रकम लौटाने में इतनी देर हो गयी, जिसके लिए मुझे दुःख है । सचमुच तुमने मेरे प्राण वचा लिये ।"

मेरा यार वॉव ! उसके दिन पलट गये, यह जानकर मुझे वड़ी खुशी हुई । मैं घर पहुँचा, तो टॉमस घूमता हुआ नहीं पाया गया । मैंने उसे नीचे की मंजिल पर ही देखा । इसके मेज पर कितावों और पत्रकों का ढेर लगा था और वह काम में मग्न था । मुझे देखकर वह असमंजस में पड़ा-सा दीखा ।

"मेहरवान मि० फर्ग्यूसन ! आप यह काम किस तरह करते हैं और हिसाव कैसे रखते हैं, यह जानने-समझने की मुझे वहुत इच्छा हो रही है । हेडक्लर्क ने मुझे हिसाव-किताव और गिनती के वारे में कितनी ही किताव दी हैं ।

जब समय मिलता है, तो मैं इन्हें पढ़ता हूँ। आपको कोई आपत्ति तो नहीं है न ?"

"आपत्ति ? इससे विलकुल उलटी वात ! टॉमस, तू मेरा वहुत अच्छा सेक्रेटरी सिद्ध हुआ है। मैं मानता हूँ कि तू एक अच्छा हिसावनवीस वनेगा। यह काम मैं खुद तुझे सिखाकर तैयार कर दूँगा।"

"आपका वहुत आभारी हूँगा साहव ! वहुत आनन्द और कृतज्ञता के साथ आपकी इस कृपा का स्वीकार करूँगा। किन्तु हाँ, साहव, मैं अपना असली काम तो भूल ही गया। जोजि क्रूज आये थे। कारखाने के वारे में आपसे कुछ सलाह करना चाहते थे। आपको वुला गये हैं। वहुत अफसोस है साहव, क्षमा करेंगे।"

किश्ती के घाट पर जोजि मिला। हमारी एक मच्छीमार किश्ती में पानी आने लगा था। उसे तुरन्त ठीक करना जरूरी था। मैं इस काम में लग गया और कारमन को मैं विलकुल भूल ही गया।

♦♦♦

कोढ़ियों की बगावत

: २८ :

विसेन्टी भयंकर उपद्रवी साबित हो रहा था। उसका असंतुष्ट दल बढ़ता जा रहा था। उन्हें श्रम से विरोध था, भाषणों से नहीं। अमेरिकन सरकार से लेकर छोटे-से-छोटे क्लर्क तक हर आदमी के विरुद्ध उसकी बकवास निरंतर जारी रहती। वर्षों से हम बहुत शान्तिमय और एकता का जीवन बिता रहे थे। यहाँ हजारों की आबादी थी। उसे देखते हुए यह शान्ति और एकता एक अद्भुत वस्तु मानी जा सकती थी। ऐसे असंतुष्ट लोग बहुत ही कम थे, जिनमें सुधार की गुंजाइश न हो। किन्तु गरमागरम भाषणों के प्रभाव में आनेवाले कच्ची बुद्धिवाले आदमियों की संख्या बढ़ती जा रही थी। विसेन्टी के दल का एक भी आदमी कभी वॉण्ड की या दूसरे किसीकी बात न सुनता और न कभी मन लगाकर काम ही करता। फिर भी जाने कहाँ से उनके पास खूब पैसे रहते। मुर्गों की लड़ाई में वे हमेशा पहली कतार में दिखाई देते और उन पर शर्तें बदते।

इस दल की करतूतों की खबर टॉमस ले आता। अंगूर के बगीचे के बीच से होकर उसके जाने-आने का रास्ता था। जो खबरें उसे नहीं मिलतीं, उनके समाचार उसे इस रास्ते से मिल जाते। टॉमस द्वारा मुझे ज्ञात हुआ कि इन लोगों की मुख्य शिकायत स्त्री-पुरुषों के बीच रुकावटों के बारे में थी।

इस बीच डॉ० डोमिग्वेज का तबादला कूलियन से सेबू हो गया। डॉक्टर और मुख्याधिकारी की हैसियत से उसने बहुत अच्छा काम कर दिखाया था। इसकी कद्र करते हुए सरकार ने उन्हें नये कुष्ठालय का संचालक नियुक्त किया था। उनके स्थान पर मनीला से डॉ० डेमेट्रियो टाबोराडा नाम के एक दूसरे फिलीपाइन आ गये। इसके आने के बाद विसेन्टी और उसके साथियों ने बाकायदा कुछ माँगें उसके सामने पेश कीं। स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों के बारे में कुछ अधिक छूट की माँग भी की। और भी कुछ बातें थीं, पर सबसे

महत्त्व की वस्तु यही थी। वे चाहते थे कि युवकों को शादी करने और बच्चे पैदा करने की पूर्ण स्वतंत्रता हो।

इस सम्बन्ध में कोई फेरफार करना डॉ० टावोराडा के अधिकार में नहीं था। व्यवस्था, वैद्यक-शास्त्र, धर्म और प्रत्यक्ष व्यक्ति से सम्बन्ध रखनेवाले अनेक पहलू इसमें इकट्ठे हो गये थे। इनका निर्णय मनीला की सरकार ही कर सकती थी। अपवादरूप मामलों में ही शादी की इजाजत दी जाती। इन सब बातों को विसेन्टी समझ नहीं सकता था। उसकी माँगें तुरन्त स्वीकृत नहीं की गयीं, इसका दोष उसने डॉ० टावोराडा पर डाला। विसेन्टी का दल बगावत फैलाना चाहता है, इस प्रकार की खबरें आने लगीं। बगावत का स्वरूप क्या होगा, यह हम समझ नहीं पा रहे थे। क्योंकि कुछ तरापे और किश्तियों के अलावा इस दल के पास कोई साधन नहीं थे। इनका उपयोग कर वे कोरन के उत्तर तरफ के रास्ते से अधिक आगे नहीं जा सकते थे।

हफ्तों तक यह सब पकता रहा। एक रात को लगभग एक ही समय मुझे दो खबरें मिलीं। पहली खुशखबर यह थी कि डॉ० और मिसेस बॉण्ड कुछ दिन में वापस यहाँ आनेवाले हैं। दूसरा गुप्त समाचार मुझे टॉमस ने यह सुनाया कि विसेन्टी और उसका दल उपद्रव करने पर तुल गये हैं और उन्होंने मुख्याधिकारी का खून करने तथा वाल्ाला में डॉक्टरों की वस्ती को आग लगाने का निश्चय किया है।

समय की गुंजाइश नहीं थी। इसलिए मैंने उसे पूछा कि "क्या मुख्याधिकारी को इसका पता है? तेरा क्या खयाल है?"

टॉमस ने कहा: "मुझे इसकी जानकारी नहीं है। मैंने उन्हें नीचे के रास्ते से जाते हुए अभी देखा। शायद पता हो या न भी हो।"

"हमें उनसे तुरन्त मिल लेना चाहिए। मैं तुझे एक चिट्ठी देता हूँ, वह उनके पास पहुँचा दे।"

टॉमस ने ऐसा करने में 'बहुत दुःखपूर्वक' लाचारी प्रकट की। इसलिए मैंने उसे इस काम से मुक्त कर दिया और खुद ही जाने का निश्चय किया। चलने से पहले जोजि को मैंने इस आशय की एक चिट्ठी घसीट मारी कि वह

किश्ती की मोटरों में से कुछ पुर्जे निकाल ले, जिससे कोई उनका उपयोग न कर सके। टॉमस को मैंने यह चिट्ठी देकर वहाँ भेज दिया। मुझे वालाला पहुँचना था। इसलिए पैदल ही जाने का निश्चय किया। हाथ में एक मजबूत लकड़ी ली और कोढ़ीग्राम में से होकर ऊपर के रास्ते के नाके की ओर चला गया।

खास इजाजत के वगैर किसी मरीज के वालाला में जाने की मुमानियत थी। इजाजत भी नीचे के रास्ते से जाने की ही मिलती। नये सरकारी मकान नीचे के रास्ते पर थे और कभी-कभी हम वहाँ जाते भी, किन्तु ऊपर के रास्ते से कभी किसीको जाने नहीं दिया जाता था। वह रास्ता डॉक्टरों के मकानों पर जाता था। दोनों विभागों के वीच के दरवाजे पर मैं पहुँचा, तो वहाँ एक उथली लकड़ी की सन्दूक पड़ी देखी। उसमें जन्तुनाशक दवाएँ डली रहती थीं। डॉक्टर तथा दूसरे नीरोगी लोग इधर से गुजरते हुए इस संदूक में पैर रखकर आगे जाते। मुझे पता नहीं था कि उसके अन्दर पैर रखकर आगे जाना चाहिए। लेकिन मुझे तो वालाला में किसीके मकान के अन्दर नहीं जाना था। इसलिए मैंने उसके अन्दर से न होकर जाने का निश्चय किया। मुझे आशा थी कि रास्ते में कोई मिल जायगा। उसे मैं सन्देशा कहकर लौट आऊँगा। किन्तु संयोगवश सारा रास्ता सूना था। अन्त में मैं मुख्याधिकारी के मकान की सीढ़ियों तक पहुँच गया। रास्ते पर खड़े-खड़े ही मैंने डॉ० टावोराडा को आवाज लगायी। मकान के चौड़े और रोशनीवाले चवूतरे पर उनकी पत्नी आयीं। वे मुझे देखकर चौंकीं, डर गयीं और अन्दर भाग गयीं। एक मिनट में डॉक्टर आये। जहाँ मैं खड़ा था, वे जल्दी से मेरे पास पहुँच गये।

"नमस्कार मि० फर्ग्यूसन, क्या वात है ?"

मुझे जो समाचार मिला था, वह मैंने उन्हें जल्दी-जल्दी कह दिया। "शायद आपको सूचना मिल गयी होगी डॉक्टर।"

"हे भगवन्, विलकुल नहीं। मैं तो यह पहली वार सुन रहा हूँ। हाँ, उनकी माँगें मिल गयी थीं। उन्हें मैंने मनीला भेज दिया है। किन्तु यह काण्ड यहाँ तक पहुँचेगा, इसकी मुझे कल्पना भी नहीं थी। आपको कैसे मालूम हुआ ?"

"टॉमस से। उसे कहाँ मालूम हुआ, यह मैं नहीं जानता। किन्तु उसकी ख़बरें विश्वसनीय होती हैं, इतना जरूर कह सकता हूँ।"

"आप सूचना देने के लिए आ गये, इसलिए आपका आभारी हूँ। बात सही हो या झूठ, हम तैयार रहेंगे। अगर अधिक जानकारी मिल सके, तो जरूर कोशिश करें।"

मैंने स्वीकार किया और घर की तरफ लौट आया।

× × ×

उस रात वालाला में जो घटनाएँ घटीं, उनके समाचार तो मुझे कई दिन बाद मिले। मेरे सन्देश का परिणाम बिजली की भाँति हुआ। मुख्याधिकारी ने डॉक्टरों तथा क्लर्कों को तुरन्त अपने दफ्तर में बुलाया और सुरक्षा के लिए क्या-क्या किया जाय, इस विषय में मशविरा किया। सभा चल रही थी, तभी एक लड़के ने आकर सूचना दी कि "बागी मुख्याधिकारी को मारकर सारे वालाला को आग लगानेवाले हैं।"

यह आखिरी तिनका था। मुख्य क्लर्क ने एक दर्जन मजबूत आदमियों को खड़ा किया और तुरन्त एक छोटी-सी 'नागरिक सेना' बना ली। मकान के पीछेवाले एक कमरे में पुलिस-विभाग की ओर से कोढ़िस्तान को भेंट में दी गयी कुछ पुरानी बन्दूकें पड़ी थीं। आतुर हाथों ने यह कमरा खोला। बन्दूकें बाहर निकालीं। उनमें संगीनें नहीं थीं, फिर बारूद तो कहाँ से हो? फिर गोलियाँ ढूँढ़ने के लिए भाग-दौड़ मची। अन्त में जब कारतूसों की एक सन्दूक मिल गयी, तो सभी जोर से 'हुर्रे' कहकर चिल्ला उठे। ये कारतूस भी असली पुराने थे। कितने ही लोग उन्हें घिसने में जुट गये, जिससे वे बन्दूक की नाल में जा सकें। रक्षा की तैयारी पूरी हो गयी। युद्ध की योजना बन गयी। हर आदमी को कहाँ खड़े रहना चाहिए, यह सारा निश्चित कर दिया गया।

वालाला के इन क्लर्कों में अधिक उत्साह नहीं था। एक तो जो सूचना मिली थी, उसकी सचाई में उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था। लेकिन यह था वालाला! रोजी देनेवालों के सामने वे क्या कर सकते थे? जिन्होंने बन्दूक को कभी हाथ भी नहीं लगाया था, वे बन्दूक थामकर करने-मारने को तैयार हो गये। कितने ही पुराने आदमियों ने बन्दूकें खोलकर उनके अन्दर गोलियाँ

रखकर दिखाया। दूसरे आश्चर्यचकित हो देख रहे थे। कितने ही ऐसे थे, जो एक हाथ में वन्दूक और दूसरे हाथ में कारतूस लिये खड़े थे और सोच रहे थे कि इनका सम्मेलन किस प्रकार किया जाय। अन्त में हर आदमी को वन्दूक भरने और निशाना ताकने का पहला पाठ सिखा दिया गया।

"खूव ध्यान रखना"—मुख्याधिकारी ने सावधान करते हुए कहा—"कोई भी रोगी नजदीक आने लगे, तो उसे वहीं रोक देना और हुक्म देना कि वह कोढ़ी-ग्राम में चला जाय। इतने पर भी वह आगे बढ़े, तो उसे रुक जाने का हुक्म देना। फिर भी नहीं माने, तो गोली मार देना।"

कोढ़ी-ग्राम जानेवाले दोनों रास्तों पर जिन आदमियों को नियुक्त किया था, उन्होंने अपने काम को मुस्तैदी से सँभाल लिया। लगभग सौ गज आगे जाकर वे छाया में खड़े हो गये और पहरा देने लग गये। कुछ देर वाद उन्होंने सोचा कि खड़ा रहने के वजाय वैठ जाना ठीक होगा। वैठने के वाद आराम से लेट जाने और निद्रा के वश हो जाने में कोई वहुत देर नहीं लगती। वालाला के पीछेवाली टेकरी पर नियुक्त आदमी इतने भाग्यशाली नहीं थे। सरकारी दफ्तर समुद्र के किनारे पर था। वहाँ से टेकरी पर चढ़ना खुद ही एक कसरत का काम था। जो ठेठ शिखर पर पहुँच गये, वे थक गये और धीरे-धीरे अपनी निश्चित जगह पर खिसकने लगे। नागरिक सैनिकों में से एक चढ़ते-चढ़ते थक गया और वह टेकरी पर अपनी निश्चित जगह पर वड़ी कठिनाई से पहुँचने का यत्न कर रहा था। अपनी वन्दूक की नाल पकड़कर वह उसे पीछे-पीछे घसीटता ले जा रहा था। वन्दूक का घोड़ा एक डाल में अटका, वहाँ से उछला और फिर गिरा। एक भयंकर धड़ाका हुआ। वेचारा क्लर्क जोर से एक झाड़ी में कूदा, किन्तु घनी घास में सिर के वल औंधा गिरा और मौत की घड़ियाँ गिनने लगा। उसकी वायीं तरफ पचास गज की दूरी पर एक दूसरा क्लर्क धड़ाका सुनकर चौंका और डरकर भागा, परन्तु एक जड़ में उसका पैर उलझ गया। इसकी वन्दूक हाथ से छूटकर टेकरी के नीचे वालाला की तरफ दन-दन छूटी। खुद वह टेकरी के एक करारे पर गिर गया। पत्थर की एक तेज नोक ने उसकी पतलून को फाड़ दिया।

इस वीच सर्वत्र तमाम घवराहट छा गयी। पहले धड़ाके की आवाज हर घर

में सुनाई दी थी। लगा कि शायद हमला शुरू हो गया। कोढ़ीग्राम के सिरे पर मजदूरों के एक मकान के चबूतरे पर डरी हुई स्त्रियों का एक झुण्ड और कुछ आदमी इकट्ठे हो गये। हर आदमी के चेहरे पर घबराहट और चिन्ता थी। एक क्षण बाद दूसरी बन्दूक छूटी। उसकी गोली नीचे आयी और उसने बरामदे में छेद कर दिया। नीचे खड़े हुए लोग मानो एक शरीर हों, इस प्रकार एक साथ जमीन पर गिर गये।

ये गोलियाँ हमारे ही पहरेदारों की बन्दूकों से अचानक और अकल्पित रीति से छूटी थीं। किन्तु यह तो बड़ी देर बाद मालूम हुआ। इस पर सबको बड़ा गुस्सा आया। अधिकारी ने इन पहरेदारों को वापस बुलवा लिया। उसकी यह सख्त आज्ञा पहुँचाने के लिए दूत दौड़े।

"इन आदमियों को इनकी बन्दूकों सहित तुरन्त वापस बुला लीजिये। किन्तु पहले इन बन्दूकों को खाली करवा लेना।" नागरिक सेना के इस किस्से को वालाला बहुत दिन तक भूल न सका।

उधर कोढ़ी-ग्राम में तो एक लगभग करुणान्त नाटक हो गया। मैं डॉ० टावोराडा के पास समाचार देने गया था और टॉमस जोजि क्रूज को मेरी चिट्ठी देने चला गया था। इस बीच कारमन मेरे मकान में घुस गयी। वह मेरे मकान से अच्छी तरह परिचित थी। मेरे लिए कई बार उसने सिलाई का काम किया था। वह सीधी मेरे सोने के कमरे में पहुँच गयी और चोरखाने के अन्दर रखी मेरी रिवाल्वर निकालकर उसे अपनी ओढ़नी में छिपाकर ले गयी। रास्ता उतरकर वह वापस कोढ़ीग्राम पहुँची और जहाँ दूसरे तीन आदमी रहते थे, वहाँ गयी। किन्तु वहाँ उसे कोई नहीं दीखा। एक लड़के ने उसे बताया कि विसेन्टी घाट पर गया है। कारमन तुरन्त दौड़ती हुई वहाँ पहुँची। मुझे पहले से ही शक था कि विसेन्टी हमारी किश्तियों को देखने के लिए जायगा। अगर हम समय पर सावधान न हो जाते, तो वह और उसके साथी उस रात में भाग जाते और हुआ भी यह कि जब कारमन ने उसे खोज निकाला, तो वह एक मोटर-बोट की जाँच कर रहा था।

"विसेन्टी !"—कारमन ने आवाज दी। विसेन्टी ने सिर उठाकर ऊपर देखा और कमरपट्टे के अन्दर से एक छूरी निकाली और घूमकर खड़ा हो गया।

"कौन कारमन !" तूने यहाँ क्या गड़बड़ मचा रखी है ?"

"तुम लोग क्या करने जा रहे हो, मुझे पता है। इसीलिए यहाँ आयी हूँ। अब कुछ भी न कहो। मैं सब जानती हूँ।"

"यह तू क्या बक रही है ?"

"मैं सब जानती हूँ भैया ! मेरी बात सुनो। तुम्हारे कामों से मैं कितनी परेशान हूँ, यह तुम जानते ही हो। मैंने सारे जीवनभर तुम्हारी रक्षा की है। मोकलान में रात-बिरात प्रवालों पर और टेकरियों पर जाकर मैंने तुम्हारे पास खाना-पानी पहुँचाया है। तब मुझे कितना डर लगता था। फिर भी मैं बराबर जाती थी। किन्तु यहाँ कूलियन में तुम जिस तरह का जीवन बिता रहे हो और जैसी बातें बकते रहते हो, उनसे मैं बड़ी दुःखी हूँ, फिर भी मैं चुप रही। बुरा न मानकर तुम्हारे लिए मैं यह सब सहती रही। लेकिन अब तो तुम महा-पाप करने पर उतारू हो गये हो। तुम आग लगाने और खून करने जा रहे हो। क्या तुम अपना और मेरा भी सर्वनाश करना चाहते हो ? हमारे नाम को कलंकित करना चाहते हो ? अब तक मैंने सब कुछ सह लिया, पर अब यह न सहूँगी।" उसने अपनी ओढ़नी के अन्दर से रिवाल्वर निकाली और अपने बिगड़े हाथ में पकड़कर खड़ी हो गयी। उसकी चमकदार नाल अँधेरे में भय पैदा कर रही थी। वह एक ऐसा उद्‌गार-चिह्न था कि जिसकी अवहेलना कोई नहीं कर सकता था।

"पर तेरे सिर पर कैसा भूत सवार है ?"

वह पीछे हटी और बन्दूक सामने करके बोली : "बिसेन्टी, खबरदार ! एक इंच भी आगे बढ़ा, तो याद रखना। तू बढ़ा कि मैंने घोड़ा दबाया। बोल, कसम खा कि अपने पागल विचारों को तूने छोड़ दिया है। कहीं आग नहीं लगायेगा और न किसीकी हत्या ही करेगा। कसम खा, नहीं तो मैं हमारे स्वर्गस्थ पिता के नाम पर कसम खाती हूँ कि तुम्हारा वध किये बगैर नहीं रहूँगी।"

"मूरख, क्या तू अपने सगे भाई का खून करेगी ?"

कारमन ने जवाब नहीं दिया। उसकी रिवाल्वर तनी हुई थी।

"तू समझती नहीं। हमारे इन जेलरों, हमें गुलाम बनानेवालों, हमसे

मजदूरी करानेवालों और गुनहगारों की भाँति हमें कैद में रखनेवालों को रोकना ही पड़ेगा।"

"कसम खा, विसेन्टी!"

"कारमन, तू अपने भाई को ही गोली मारना चाहती है? यह तुझसे कैसे होगा?"

"कसम खा विसेन्टी! तेरा समय पूरा हो रहा है। हमारे स्वर्गीय पिता इस समय रात में हमें देख रहे हैं। अगर कसम तोड़कर तूने वालाला में एक भी गलत कदम उठाया, तो जहाँ भी कहीं होगा, तुझे ढूँढ़कर तेरा वध कर डालूँगी। हाँ, बोल, कसम खा!"

विसेन्टी ने सोचा, यह तो पागल हो गयी है। किन्तु उसकी आँखों से दृढ़-निश्चय टपक रहा था। जल्दी में वह बोला:

"अच्छा, हमारे स्वर्गीय पिताजी को याद कर मैं सौगंध खाता हूँ। बस, अब तो तू अपनी बन्दूक अलग रख दे।"

वह पीछे मुड़ गयी और भाग गयी। विसेन्टी उसके पीछे दौड़ा, पर उसे पा न सका।

बागियों ने वालाला पर हमला करने का साहस नहीं किया। किन्तु उस रात विसेन्टी और उसके साथियों ने तरुण लड़कियों के एक वसति-गृह पर छापा मारा और हर जवान एक-एक लड़की को उड़ा ले गया। वे पहाड़ों में भाग गये और जंगलों में छिप गये। अखबारों में ये सारे किस्से 'कोढ़ियों में हुल्लड' इस शीर्षक में छपे।

तीन दिनों के अन्दर डॉक्टर और मिसेस वॉण्डवाले स्टीमर में पुलिस का भी एक दस्ता कूलियन आ पहुँचा। यह घटना बिल्कुल अभी-अभी घटी थी। फिर भी इन सेवाभावी डॉक्टर के स्वागत के लिए बिस्तरों पर पड़े बीमारों को छोड़कर सारा कोढ़िस्तान उमड़ पड़ा। किनारे से लेकर एक मील तक रोगियों की किश्तियों का काफला स्टीमर को घेरे खड़ा था। इससे पहले जंगलों में छिपे जोड़े भूख के मारे वापस लौटने लग गये थे। पुलिस का दस्ता एक महीना रुका और वालाला के क्लर्कों को बन्दूक चलाने की तालीम दे गया।

विसेन्टी ने अन्त में आत्मसमर्पण कर दिया। सार्वजनिक शांति की दृष्टि से

एक खतरनाक आदमी होने के कारण उसे अनिश्चित काल के लिए जेल में डाल दिया गया। कितने ही प्रमुख आदमियों को दूसरे कुष्ठालय में भेज दिया गया। कूलियन अपनी पुरानी लीक पर आ गया।

संक्षेप में टॉमस ने इस सारी घटना का इस प्रकार उपसंहार किया : "बहुत-सी लड़कियों को पकड़कर जंगल में ले जाया गया। मेरा तो खयाल है कि अगर लड़कियाँ न चाहतीं, तो उन्हें ले जाना बहुत मुश्किल होता। यह कठिनता उनके सहयोग से ही दूर हुई होगी। मेरी तो यही राय है।" ◆◆◆

विवाह-समारोह : २९ :

मिलाप का दिन ! आज स्टीमर आनेवाला था। बीमारों के प्रिय जनों की भेंट को देखना मैं हमेशा टाल दिया करता था। मैं यहाँ नया-नया आया, तो एक बार गया था। उस बार मैंने जो दृश्य देखा, उससे जीवनभर के लिए मेरा पेट भर गया। माताएँ अपने बच्चों को देखने आतीं। उन्हें वे केवल देख सकती थीं, छू नहीं सकती थीं। स्त्रियाँ अपने रोगी पतियों को देखतीं, बातें करतीं; इससे अधिक कुछ नहीं। अपने माता-पिता के वियोग में घर पर सूख-कर काँटा होनेवाले बच्चे यहाँ आकर उन्हें टुकुर-टुकुर देखा करते। किन्तु माता-पिता उनके शरीर पर प्यार से हाथ तक नहीं फेर पाते थे। कभी-कभी यदि कोई भावनावश इन मर्यादाओं को तोड़ देते, तो डॉक्टर, नर्स और पुलिस के जवान तुरन्त उन्हें खींच-खींचकर अलग कर देते। मैं अपने रोग और भाग्य का आदी हो गया था। फिर भी दूसरों, और खासकर बच्चों के इस दुर्दैव को देखते रहने का अभ्यास अभी तक नहीं कर पाया था। इसे देखकर मेरा सिर घूमने जैसा होने लगता था। इसलिए मैं घर पर ही पड़ा रहता।

मिलाप का स्टीमर जिस दिन आता, उस दिन पूरी छुट्टी मनायी जाती। रोगी काम पर आयेंगे, यह आशा छोड़ दी जाती। उनके अपने प्रियजन न आनेवाले हों, तो भी अपने घर और गाँव की ताजी खबरें सुनने के लिए वे आसपास मँडराया करते। फिर जिनके प्रियजन आते, उनके साथ अपनी भी सहानुभूति का सुर मिला देते।

टॉमस स्टीमर पर गया था। जहाँ तक मुझे मालूम था, उसका कोई रिश्तेदार नहीं आनेवाला था। मैंने अपना पुराना फोनोग्राफ खोला। महीनों से मैंने उसे चलाया नहीं था। इसलिए आज सारे पुराने रेकार्ड लगाना शुरू कर दिया। पुरानी दुनिया का जेन का लिखा हमारा वह प्यारा गीत बजने लगा। प्रशान्त महासागर के उस पार वह मुझे ले गया। किस्मत जेन को खींचकर कहाँ ले गयी ?—यह पूरा भी नहीं हुआ था कि मैंने सुना, कोई

आवाज दे रहा है। मैं पोर्च में गया। चरिता नीचे खड़ी थी। मेरी तरफ ऊपर देखकर हँस रही थी। छलाँगें भरता मैं नीचे गया और अपना हाथ बढ़ाया, पर फौरन झटके के साथ वापस खींच लिया। चरिता अब हममें से नहीं थी। मैं उसे छू नहीं सकता था।

"पागल मत बनो, नेड !" सीढ़ी चढ़कर उसने अपना मुँह मेरे सामने किया और मेरे कन्धे पर अपनी भुजाएँ डाल दीं। "हमारे बीच भय नहीं और न कभी पैदा होगा।"

"चरिता, आप आनेवाली हैं, इसकी मुझे कल्पना भी नहीं थी। नहीं तो मैं आपके स्वागत के लिए स्टीमर पर नहीं आ जाता ?"

"मैं आपको यह मालूम नहीं होने देना चाहती थी। अचानक आकर आपको चकित कर देने का मैंने निश्चय कर लिया था और वह पूरी तरह सफल हो गया। क्यों ? ठीक है न ?"

"पूरी तरह' शब्द सही नहीं है। किन्तु यह तो बताइये, आप कैसी हैं ? चलिये, हमारी पुरानी जगह, आम की छाया में।"

"प्यारे नेड, यह स्थान कैसा अद्भुत लगता है ? एक भी चीज आपकी नजर से नहीं छूटती। आप सच्चे सिद्ध हुए। दूसरों को शुरू-शुरू में टालते रहे। किन्तु मैं सदा बड़ी भाग्यशालिनी रही हूँ। डॉ० बॉण्ड और डॉ० डोमिग्वेज हमेशा मेरी मदद करते रहे हैं। मैंने उनसे कह रखा था कि वे आपसे कुछ भी न कहें। मैं आरोग्य समिति के मातहत काम करती हूँ। छुट्टी पर जानेवाले रोगियों की निगरानी करना मेरा काम है। अपनी बस्तियों को छोड़कर ये लोग चले जाते हैं, तब अनेक बार उनका पता लगाना कठिन हो जाता है। यदि वे अपनी चिन्ता खुद नहीं करते, तो मैं उन्हें समझाती रहती हूँ कि वे नियत अवधि में अपनी जाँच करवा लिया करें और आवश्यक हो, तो इलाज भी करवा लिया करें। मैं उनके साथ रही हूँ, इसलिए वे मुझ पर विश्वास करते हैं। छुट्टी पर गये हुए लोगों में से कितनों के ही शरीर पर फिर से चिह्न नजर आने लगते हैं, तब उन्हें समझाना पड़ता है कि वे फिर यहाँ आ जायँ या सेबू चले जायँ। हमारे काम में यही सबसे दुःखद बात है। यह

रोग हो ही नहीं पाये, इसकी तरकीब ढूँढ़ना सबसे बड़ा काम है। डॉ० बॉण्ड का यह कथन एकदम सही है। भविष्य के लिए यही सबसे महत्त्व की बात है।"

"जो लोग जंतुमुक्त हो गये हैं, उनके संसर्ग से डरना लोग छोड़ देंगे ? आपका क्या खयाल है ?"

"अवश्य ! जब कोढ़ के कारणों और सही-सही उपचारों के बारे में लोगों को निश्चित ज्ञान हो जायगा, तब झूठा भय निश्चय ही चला जायगा। छुट्टी पर गये हुए लोगों में मैंने जो काम किया, उस पर से मैं एक नतीजे पर पहुँची हूँ। वह यह कि कोढ़ के सामने युद्ध छेड़ने के लिए टी० बी० के समान इसे भी एक नया नाम देना होगा। जो लोग इसके शिकार बन गये हैं, उनके तथा इसका उपचार करनेवाले डॉक्टरों के दिमाग से उसके भयानक नाम का बोझ हटा देना बड़ा जरूरी है। तभी वे ठंडे दिमाग से उसके बारे में विचार कर सकेंगे। टी० बी० के बारे में यही किया गया था। कोढ़ के लिए भी ऐसा करना बहुत जरूरी है। 'कोढ़' शब्द के उच्चारण के साथ एक बीमारी का चित्र तो सामने खड़ा होता ही है। किन्तु उसके साथ दूसरी कल्पनाएँ भी वह पैदा कर देता है। आप और मैं भी जानती हूँ कि यह रोग सभी को कुरूप नहीं बना देता। फिर इसकी छूत भी ऐसी अजीब किस्म की है कि यदि जान-बूझकर किसीको लगाना चाहें, तो भी नहीं लगायी जा सकती।

" 'कोढ़ी' शब्द संसार के साहित्य में केवल किसी रोग के बीमार का ही पर्यायवाची नहीं है। किन्तु उससे ऐसे मनुष्य का बोध होने लग गया है, जिसका सबको बहिष्कार करना चाहिए।—मानो वह कोई दुष्ट, दुश्चरित्र और चाण्डाल हो। नेड, आपके और मेरे लिए भी गाली जैसे इस अपशब्द का प्रयोग किया जाता है। इन छोटे-छोटे निर्दोष बच्चों पर भी इस गन्दे शब्द का ठप्पा लगा दिया जाता है।

"इसमें हमें डॉक्टरों की सहायता की जरूरत है। जब तक इस रोग का नामोनिशान नहीं मिटा दिया जाता, तब तक इसके पीछे अविश्रान्त रूप से पड़ जानेवाले डॉक्टरों की और काम करनेवालों की जरूरत तो है ही। लेकिन मेरे प्यारे, इस बात का भी प्रबन्ध होना आवश्यक है कि लोग हमें कोढ़ी न कहें।"

चरिता रोने लग गयी थी। मैंने उसे कई व्यक्तिगत परेशानियों में पड़ी देखा था। किन्तु इस भावना के आवेग के सामने तो मैं भी हतबुद्धि हो गया। यह कोई व्यक्तिगत बात नहीं थी—या होगी ?

जरा शान्त होने पर वह फिर बोली : "छुट्टी पर गये हुए लोगों का मैं यह जो काम कर रही हूँ, वह मुझे अच्छा लगता है। आपसे यह कहने के लिए ही मैं यहाँ आयी हूँ। किन्तु यहाँ एक दूसरे काम से भी मैं आयी हूँ। कारमन यहाँ आयी है न ?"

"हाँ, यह तो मैं भी जानता हूँ। किन्तु चरिता, आपने मुझे कहा क्यों नहीं ?—खैर, वह यहाँ क्यों आयी है ? डॉ० पॉन्स कहते हैं कि वह अभी तक जन्तुमुक्त ही है। ठीक है न ?"

"अपनी मेल जरा रोकिये। आपकी भाषा में यह एक विचित्र शब्द-प्रयोग है। मैंने सुना है कि कारमन कूलियन की एक वीरांगना बन गयी है। उसके भविष्य की दृष्टि से यह एक शुभ शकुन है । वह यहाँ एक अत्यन्त महत्त्व के काम के लिए आयी है।"

"उसका दिमाग खराब हो गया होगा। और क्या ? नहीं तो वह अच्छी चंगी हो गयी । भला अब यहाँ उसका क्या काम है, जिससे यहाँ आने की उसे इच्छा हुई ?"

चरिता ने एक मधुर हँसी हँसकर मुझे आगे बोलने से रोक दिया।

"नेड, आप आदमी तो अच्छे हैं, पर हैं एकदम बुद्धू। क्या सचमुच आप इतने जड़ हैं ? क्या आपको सचमुच पता नहीं कि कारमन और टॉमस एक-दूसरे के प्रेमपाश में बँधे हुए हैं ?"

बात सही थी। कारमन मेरे मकान पर बार-बार आती रहती थी। किन्तु मैं कैसा मूरख कि इतनी-सी बात भी समझ नहीं सका। फिर भी मैंने जिद पकड़कर कहा :

"खैर ऐसा हो, तो भी वह यहाँ क्यों आयी ?"

"रोग-मुक्त होने के कारण वह टॉमस के साथ तो नहीं रह सकती। फिर भी टॉमस से शादी करने के लिए वह यहाँ आयी है।"

"यह कैसी शादी चरिता ? यदि अलग-अलग ही रहना पड़े, तो ऐसी शादी का अर्थ क्या हुआ ?"

"जरा धीरज रखिये नेड। इसमें कई बातें हैं। कारमन और टॉमस नियम जानते हैं और उनका पालन भी बराबर करेंगे। फिर भी वे शादी कर लेना चाहते हैं। कुछ समय से कारमन बाहर चली गयी है। अब उसके मकान पर एक छोटे भाई को छोड़कर और कोई नहीं है। माता-पिता दोनों मर गये। भाई इनके एक चाचा-चाची के साथ रहता है। वह सुन्दर कढ़ाई का काम करती है। किन्तु हाथों में व्यंग्य है, इस कारण अपनी गुजर-बसर के लायक कमाई नहीं कर सकती। टॉमस के वियोग में वह सूखती रहती है। उसे केवल इतनी ही सान्त्वना है कि वह टॉमस की माँ के पास जाती-आती रहती है। मिसेस आग्विलार अब वृद्धा हो गयी हैं। टॉमस से शादी हो जाने पर वह उनके पास रहने के लिए चली जायगी। इससे वृद्धा को सहारा हो जायगा। टॉमस दोनों की गुजर के लायक खर्चा यहाँ से भेज सकेगा।"

थोड़ी देर मैं विचार करता रहा। चरिता चुप थी। मैंने मान लिया था कि महारोगियों पर बीतनेवाली सभी बातों और समस्याओं को मैं जानता-समझता हूँ। किन्तु यह तो एक नयी समस्या थी। टॉमस, मेरा लड़का—

"टॉमस के वापस आने की राह देखने में और उसकी माँ की सेवा करने में कारमन के मन को कुछ समाधान मिलेगा, नेड ?"

"टामस की राह ? उसे यहाँ आये बीस वर्ष हो गये हैं। कारमन इतनी मूर्ख कैसे बन गयी और उसने यह आशा कैसे कर ली कि टॉमस यहाँ से अच्छा होकर कभी लौट सकेगा ?"

"उसने डॉक्टरों से पूछ लिया है। मेरा खयाल है कि डा० पॉन्स के साथ वह बातचीत कर रही थी, तो आपने उसे देखा भी था। सब डॉक्टर उसे प्यार करते हैं। वे कहते हैं कि टॉमस का केस बड़ा चक्कर में डालनेवाला है। उसका रोग बढ़ नहीं रहा है, पर जाँच में हर बार जंतु पाये गये हैं। डॉक्टरों की अपेक्षा उसे भविष्य के प्रति अधिक श्रद्धा है। इससे उसे बहुत खुशी हो रही है। कानून उन्हें अधिक-से-अधिक केवल विवाह-विधि कर लेने तक की छूट देता है। और कारमन तथा टॉमस के बीच इतना अनुराग

है कि कानून अधिक अनुकूल न होने पर भी जिस हद तक वह उन्हें सहधर्मचारी बनने की अनुज्ञा दे सकता है, उस सीमा में बँध जाने के लिए भी वे उत्सुक हैं। कम-से-कम कारमन के मन में तो जरा भी शंका नहीं कि किसी दिन वह उसे पूरी तरह पा लेगा। आप जानते हैं नेड कि कारमन खुद तो चंगी हो ही गयी है। यहाँ ऐसा एक भी मनुष्य नहीं है, जिसके दिल में आशा न हो। उसके अपने बारे में तो उसकी आशा सफल भी सिद्ध हुई है।"

मैंने नीचे देखा। मेज पर मेरे हस्ताक्षर कायम थे। आज इसे बारह वर्ष हो गये थे। वे आशा के साथ मेरी सुलह के प्रतीक थे। उन्हें यदि आशा हो, तो भगवान् उनकी यह आशा पूरी करें।

चरिता धीरज के साथ मेरे बोलने की राह देख रही थी। मेरे मुँह से शायद बड़ी देर तक कुछ शब्द नहीं निकले।

"अच्छा, चरिता, इन शरारतियों से मिलने और उन्हें अपने आशीर्वाद देने की इजाजत मुझे आप देंगी? शायद आपने उन्हें यहीं कहीं छिपा रखा होगा।"

"अब तो आप चतुर होते जा रहे हैं, नेड!" पोर्च के सिरे पर जाकर उसने दोनों को पुकारा। फौरन कारमन और टॉमस बाहर आ गये।

"सियोरा टॉर्रेस मुझे कह रही हैं कि कारमन और तू शादी करना चाहते हैं। और वह तुम्हारी शादी करवाने के लिए ही यहाँ आयी हैं।"

मैंने कारमन की तरफ देखा। यहाँ आयी, तब वह कितनी छोटी थी। किन्तु कितनी बहादुर है। अपनी उँगलियों के ठूँठों को ढाँकने के लिए उसने पुष्प-गुच्छ हाथ में रख छोड़ा था। मैं उसे देखता रहा।

"बेटी, कारमन! मैं तेरा अभिनन्दन करता हूँ। चरिता, मैं जानता हूँ कि आपने सब पहले से ही तय कर रखा है। तो बताइये, कब है शादी?"

"रिझाल के दिन नेड! और तब तक मैं यहीं हूँ। आप निश्चिन्त रहें।"

"यह तो सबसे अच्छे समाचार हैं। क्यों टॉमस?"

"जी साहब, आपके बाद हमारी सबसे बड़ी हितचिंतक सियोरा टॉर्रेस ही तो हैं।"

इस प्रकार सब निश्चित हो गया।

× × ×

विवाह की तैयारियाँ होने लगीं, त्यों-त्यों टॉमस के वारे में मुझे अधिकाधिक विचार आने लगे। मैं जानता था कि जो भी कुछ किया जा सकता था, डॉक्टर कर रहे थे। फिर भी मन को सन्तोप नहीं हो रहा था। इसलिए डॉ० टावोराडा से मिलने का अवसर मैंने ढूंढ़ा।

"डॉक्टर, टॉमस मेरे साथ ही यहाँ आया था। यों वाहर से देखने पर तो उसके अन्दर कोई हेरफेर नहीं दिखाई देता। इसके शरीर पर रोग के चिह्न भी नहीं के समान हैं और वे भी वह यहाँ आया, तभी से हैं। फिर भी रिपोर्टों में वह अभी तक जंतुमुक्त नहीं पाया गया है।"

"और भी कितने ही इसीके समान हैं। कभी-कभी रोगी जीवनभर ऐसे ही रहते हैं। टॉमस जैसे रोगी यदि मनीला की सड़क पर घूमने लगें, तो किसीको शंका भी न होगी कि उन्हें ऐसा कोई रोग होगा। फिर भी इसके शरीर में जंतु हैं और इस कारण वह अधिक खतरनाक सावित हो सकता है। क्योंकि जिस आदमी के शरीर, हाथ या मुँह पर प्रकट चिह्न होते हैं, उससे लोग सावधान रहते हैं। किन्तु ऐसे आदमी से कोई परहेज नहीं करता। कभी-कभी मुझे लगता है कि टॉमस जैसे तथा जिन्हें जंतुमुक्त वताकर छोड़ दिया गया है, ऐसे लोगों की स्थिति प्रकट रोगियों के समान ही दयनीय होती है। क्योंकि लोग उनसे डरते रहते हैं। इस कारण वे अपनी गुजर नहीं कर सकते। जावा के सुरावाया के कुष्ठाश्रम में पिछली वार मैं गया, तो वहाँ मैंने एक वूढ़े आदमी को देखा था। उसके शरीर पर शायद ही कोई चिह्न रहे होंगे। फिर भी चालीस वर्प से एक साधारण रोगी के समान उसे वहाँ रहना पड़ा था।"

"चालीस वर्प!" मेज पर किये गये हस्ताक्षरों की मुझे याद आ गयी। अच्छा ही था कि मैंने आशा देवी से युद्ध-विराम की सुलह कर ली थी। किन्तु टॉमस को तो अभी आशा थी।

घर पहुँचकर मैं चौपाटी पर चला गया और टॉमस के भविष्य के वारे में कुछ सोचने लगा। जव तक मैं कूलियन में हूँ, तव तक तो उसे किसी वात की तकलीफ नहीं होगी। उसने अपना अध्ययन जारी रखा था। कुछ समय से उसने अपने नित्य के काम-काज के अलावा मेरा हिसाव-किताव का काम

अपने हाथ में ले लिया था। इसके लिए मैं उसे अतिरिक्त पारिश्रमिक दे रहा था। शादी के बाद कारमन की जिम्मेवारी भी उस पर आ जायगी। कुछ समय से वह अपनी माँ के लिए पैसे भेज ही रहा था। अब उसे ऐसी तालीम देने की जरूरत है, जिससे कारखाने में किसी जिम्मेवारी के पद पर वह नियुक्त किया जा सके।

हमारे उद्योग में एक नयी बात करने का प्रारम्भ हो गया था। नये सामान और अधिक आदमियों की मदद से हम इतनी बिजली पैदा करने लग गये थे कि लोग अपने मकानों में रिफ्रिजरेटर रख सकें। बरफ, ठंडी मिठाइयाँ, ठण्डे पेय आदि चीजों के शौकीन अमेरिकन ग्राहक यहाँ काफी थे। बहुत से फिलीपाइन डॉक्टर और सरकारी नौकर बरफ काम में लेने लग गये थे। किन्तु मरीजों को इसकी परवाह नहीं थी। जो पैसे खर्च कर सकते थे, उन्हें थी। हाँ, बिजली की सुविधा हो जाने के कारण रेडियो की इच्छा सबको हो गयी और जो भी खरीद सकते थे, सस्ते रेडियो रखने लग गये।

× × ×

टॉमस रिज़ाल दिन को एक शुभ दिन मानता था। इसलिए उसने विवाह के लिए वही दिन स्वीकार कर लिया। सच पूछिये, तो यह दिन शोक की याद दिलानेवाला था; क्योंकि उस दिन जोकि रिज़ाल का वध किया गया था। रिज़ाल संसार के अमर महापुरुषों में से एक था। पैंतीस वर्ष में अपनी जीवन-यात्रा पूरी कर यह पुरुष अपने देश-बन्धुओं पर एक अमिट छाप छोड़ गया है। इसकी बुद्धि लियोनार्डो विन्सी या बेंजामिन फ्रांकलिन के जितनी तीव्र और अठपहलू (विविध क्षेत्रों में विकसित) थी। किन्तु देश-भक्ति के कारण स्पेनिश सरकार ने उसे दो बार जेल भेजा और षड्यंत्र से उस पर राजद्रोह के झूठे अपराध लगाकर उसे गोली मार दी गयी थी।

रिज़ाल कवि तथा इतिहासकार था। 'नोलिमे तांगेरे' नामक अपनी किताब में उसने स्पेनिशों की कड़ी निन्दा की थी, जो उसके वध का अप्रत्यक्ष कारण थी। वास्तव में वह लोकतंत्र का माननेवाला था। किन्तु राजनीति के अलावा उसने अपने छोटे-से जीवन-काल में अनेक क्षेत्रों में प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी। संपूर्ण यूरोप में वह अपने समय के बड़े-से-बड़े नेत्र-वैद्यों में से एक

था। इसके अतिरिक्त वह एक मूर्तिकार, मानववंश-शास्त्री और प्राणी-शास्त्री भी था। उसके द्वारा एकत्र नमूने ड्रेसडन के संग्रहालय में रखे हैं। सुन्दर और व्यंग्य चित्र बनाने में वह कुशल था। वह एक विद्वान् भाषा-शास्त्री था। बारह भाषाओं में लिख सकता था। उसके उपन्यासों की भाषा चित्ताकर्षक और ओजस्विनी है। फिलीपाइन के बाहर भी उसकी किताबें पढ़ी जाती थीं। फिर वह शिक्षण-शास्त्री और शिल्प-शास्त्री (सिविल इंजीनियर) भी था। जब उसे मिंडानाओ में निर्वासित किया गया, तब उसने वहाँ के एक छोटे शहर में नये प्रकार की शाला खोली और शहर के लिए एक जल-घर (वॉटर वर्क्स) बना दिया। क्यूबा पश्चिमी द्वीपसमूह का एक बड़ा टापू है। वहाँ जब पीला बुखार शुरू हुआ, तो निर्वासित रिझाल ने स्पेनिश सरकार से अपील की कि उसे वहाँ भेज दिया जाय और उसे वहाँ के किसी अस्पताल में नजरबंद कर दिया जाय, ताकि वह वहाँ की जनता की सेवा कर सके। सरकार ने इस अपील को मान लिया। वह बारसेलोना (वेनेझूला का एक बंदरगाह) के रास्ते क्यूबा जा भी रहा था। किन्तु उसे फिर जहाज पर ही गिरफ्तार कर लिया गया और मनीला ले जाकर फोर्ट सेंटियागो में एकांत कैद में डाल दिया गया। सात हफ्ते कैद में रखकर उस पर मामला चलाया गया। उसे वकील तक की सुविधा नहीं दी गयी और अंत में उसे मृत्यु की सजा दी गयी।

संपूर्ण फिलीपाइन टापुओं में उसे फिलीपाइन का जार्ज वाशिंगटन माना जाता है। टॉमस के दिल में उसके प्रति लगभग ईश्वर के समान पूज्य भाव था। इसलिए रिझाल-दिवस के दिन विवाह करना उसे दूनी दीक्षा लेने के समान लग रहा था।

× × ×

विवाह के एक दिन पहले कारखाने के तथा मछली-व्यवसाय के आदमियों की तरफ से जोजि मेरे पास आया और बोला : "मि० नेड, यदि आपकी सम्मति हो, तो टॉमस आग्विलार को कंपनी के कुछ शेअर विवाह की भेंट के रूप में देने का हम लोगों ने तय किया है।"

टॉमस को इससे बड़ी ही खुशी हुई। पत्नी के साथ-साथ जनता में प्रतिष्ठा प्राप्त करने का आनंद भी इससे उसे मिल गया। फिलीपाइन में 'घर नौकर

नं० १' का जो दर्जा और जिम्मेवारी होती है, ऐसी कोई चीज पश्चिम के देशों में शायद ही कोई हो। उसमें भण्डारी, रसोइया, शिक्षक और निजी सचिव चारों पद एक साथ होते हैं। इस कारण समाज में वह आदर का पात्र होता है। टॉमस तो इससे भी अधिक प्रतिष्ठा का पात्र था। ये शेअर उसके जीवन में एक नयी बात पैदा करने जा रहे थे।

मेरी अमराई में दोपहर में यह विवाह-समारोह हुआ।' मेरा अनुमान है कि बस्ती की आधी आबादी आज वहाँ उपस्थित थी। कितने ही विशेष मेहमान थे। कारमन जिस वसतिगृह में रहती थी, वहाँ की करीब बीस लड़कियाँ, चरिता के कुछ परिचित और टॉमस के अपने अखाड़े के कुछ नौजवान भी निमन्त्रित किये गये थे।

जहाँ देखिये, वहाँ फादर मोरेल्लो अपने शुभ्र, लम्बे वेश में घूमते नजर आते थे। वर-वधू को लक्ष्य कर वे हँसते और विनोद करते जाते थे। यद्यपि मि० मेनसन अभी नये ही थे और उनके पंथ के लोग कम थे, फिर भी वे फादर मोरेल्लो का बराबर साथ दे रहे थे।

सबसे अधिक परेशानी में पड़े मेहमान तो मुख्याधिकारी डॉ० टावोराडा दिखाई देते थे। कारमन और टॉमस अलग-अलग पंथों के माननेवाले थे। इस कारण विवाह-विधि करवाने की जिम्मेवारी उनके सिर पर आ गयी थी। उनके लिए यह एक बिल्कुल नया काम था। इसलिए स्वभावतः कुछ सभा-क्षोभ वे अनुभव कर रहे थे। मैंने उन्हें ऑपरेशन रूम में काम करते देखा था। वहाँ उनकी चाल-ढाल में जो डॉक्टरोचित स्थिरता और आत्म-विश्वास होता था, वह आज यहाँ दिखाई नहीं पड़ रहा था। यह काम उन्हें कुछ अधिक कठिन लग रहा था। उन्हें केवल कुछ ही लकीरें पढ़नी थीं। किन्तु इतने में भी उनके हाथ और आवाज भी काँप रही थी। सुननेवाले मेहमानों के भी ध्यान में यह बात आये बगैर नहीं रही। इसलिए वे एकदम चुप हो गये। इस शांति का परिणाम डॉ० टावोराडा पर भी हुआ। अब उनकी आवाज स्थिर हो गयी और अंत तक तो वे बिलकुल स्वस्थ हो गये। इसके बाद उत्कृष्ट फ्राक से सजी कारमन और हमेशा की अपेक्षा अधिक ऊँचा सिर किये टॉमस को आगे कर सभी बड़े-बड़े मेहमान धीमी और शानदार गति में चलते हुए एक

जुलूस के रूप में चौपाटी पर आये, जहाँ मेजों पर खाना सजाया गया था। वह प्रख्यात 'लेचन' तो था ही। उसके वगैर फिलीपाइन-भोज अधूरा ही माना जाता। जिसने वह खाया नहीं, वह उसके स्वाद की कल्पना भी नहीं कर सकता। आग पर भूनी हुई और भाफ में पकायी मछली, भात तथा फिलीपाइनों की प्रिय वहुत-सी मिठाइयाँ वनायी गयी थीं। नारियल का आइस्क्रीम, देशी फल, संतरे, सेव वगैरह अच्छे-अच्छे फल भी थे। उपस्थित निमन्त्रितों में से कितनों ही ने तो सेव देखे भी नहीं थे।

नीरोग मेहमानों की मेज अलग थी। उनका खाना वालाला में तैयार करवाया गया था। उन्हींके नौकर परोसते भी थे।

इस समारंभ में शाग और मेमी की खूव वन आयी। मेहमानों के वीच घूम-घूमकर उन्होंने इतने टुकड़े खाये कि वाद में तो मुझे उन्हें कमरे में वन्द कर देना पड़ा। वे अव वूढ़े हो रहे थे। यहाँ की गरमी भी उन्हें अनुकूल नहीं होती थी। वहुत खाना उनके लिए अच्छा नहीं था।

निमन्त्रितों ने तथा प्रेक्षकों ने भी भापणों को वहुत पसन्द किया। मुझे भी कुछ कहने के लिए आग्रह किया गया। मैं इनकार भी नहीं कर सकता था। मैं खड़ा हुआ और "परमात्मा तुम्हारा कल्याण करें, मेरे वच्चो!" कहकर वैठ गया। मैं कभी वक्ता न वन सका।

तंतुवाद्यों की ध्वनि हमारी तरफ आती सुनायी दी। यह हमारा पहले नम्वर का वैण्ड था। वर-वधू के अभिनन्दन के लिए खास तौर पर आया था। जोजि ने ताली वजाकर सवका ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा :

"आज हम विवाह का रास खेलेंगे। टॉमस, कारमन को तथा तुम्हें नेतृत्व करना होगा।"

पहले तो युवकों और युवतियों की जोड़ियाँ नाचती-नाचती कई वार चारों तरफ घूमीं। फिर चारों तरफ कतार वनाकर वे खड़ी हो गयीं। उनका मुँह एक-दूसरे के सामने था। अव वे विविध प्रकार की आकृतियाँ वनाकर भव्य रास करने लगे। नाचनेवालों को आगे-पीछे, आड़े-टेढ़े घूमते देख वड़ा आनंद आ रहा था। खड़िया के रंगोंवाली फ्राकें पहनी लड़कियाँ वहुरंगी तितलियाँ

जैसी दीखती थीं। पुरुप तो हमेशा की भाँति सफेद पाजामे और मलमल की कमीजें पहने हुए थे।

इस प्रकार घण्टेभर नाच हो चुका। फिर एक सजायी हुई गाड़ी फ़ाटक पर आकर खड़ी हो गयी। फूलों और झंडियों से सजी एक ऊँची वैठक पर कार-मन को वैठाया गया और उसके सामने एक नीची वैठक पर हँसी-मजाक के साथ टॉमस को।

अव वर-वधू का जुलूस निकला। गाड़ी के पीछे-पीछे दो-दो की जोड़ी में युवक और युवतियाँ चल रही थीं। उनके पीछे मेहमान और सवसे पीछे प्रेक्षक।

जो वुजुर्ग जुलूस के साथ नहीं जा सकते थे, उन्हें विदा करने के लिए चरिता और मैं पीछे रुक गये। अन्त में हम दोनों रह गये।

"आपने इन्हें 'मेरे वच्चो' कहा, सो वहुत अच्छा रहा नेड !"

"हैं ही ये मेरे वच्चे। जव कभी मैं यह स्थान छोड़कर जाऊँगा, तो इनका प्रवन्ध करके जाऊँगा।···चलो, थियेटर चलने के लिए मोटर निकालें। आप थक गयी होंगी।"

हमने धीरे-धीरे मोटर चलायी। चौक की ओर जानेवाले खुले मैदान के सामने हमने उसे सड़क से नीचे उतारा और लियोनार्ड वूड की प्रतिमा के सामने उसे खड़ी कर दिया।

"मुझे इस प्रतिमा पर खास तौर पर वड़ा गर्व है, चरिता। इसकी कल्पना और कारीगरी संस्थान की अपनी चीज है। कुल तीन हफ़्ते तो हुए ही हैं इसके अनावरण को। वूड की आकृति और चेहरे से वहुत अधिक मिलती है।"

"यही तो आपके वचपन का देव है।"—उसने धीरे से कहा।

× × ×

नाट्यशाला नजदीक ही थी। जुलूस अभी पहुँचा नहीं था।

कूलियन के अपने निवास में मैं भाषणों से तंग आ गया था। किन्तु उस दिन का भाषण सुनने की मुझे वड़ी इच्छा थी। महारोगी मण्डल के अध्यक्ष और शालाओं के आचार्य फ्रांसिसको वॉनिफाशियो आज के वक्ता थे। लोगों में मान्यता थी कि फिलीपाइन में स्पेनिश हुकूमत के विरुद्ध वगावत खड़ी करने-

वाले काटिपुनान नामक क्रांतिकारी दल के नेता प्रसिद्ध देशभक्त वॉनिफाशियो के दूर के एक रिश्तेदार थे।

आचार्य वॉनिफाशियो की उम्र लगभग चालीस वर्ष की थी। शरीर दुवला-पतला और चञ्चल। सिर पर भौंरे के समान काले वाल और चेहरा लम्वा, किन्तु आकर्पक और मोहक। उनकी तीखी, काली-काली आँखों में एक विलक्षण तेज था। कोढ़िस्तान के लोगों पर इनका अच्छा असर था। उद्दण्डता के कोई चिह्न उन्होंने प्रकट नहीं किये थे। फिर भी सभी टापुओं में स्वतन्त्रता की हलचल तो सदा वढ़ती ही जा रही थी। कोढ़िस्तान के एक वुद्धिमान् नागरिक की हैसियत से अपने विचार प्रकट करने का यह एक उत्तम अवसर था।

नाट्यशाला देखते-देखते भर गयी और लोगों को इवर-उवर खड़ा रहना पड़ा। टॉमस और कारमन को आगे करके जुलूस भीड़ को अलग करता हुआ वीच के रास्ते से सामने आया। कारमन अद्‌भुत सुन्दरी दीखती थी। उसकी आँखें और सारा चेहरा जीवन के इस धन्य प्रसंग पर तेज से दमक रहे थे। विवाह की खुशी में राजनैतिक भापण सुनने के लिए जाना एक अजीव, विलक्षण प्रथा थी—अमेरिका की दृष्टि से। फिलीपाइनों की दृष्टि से तो यह उचित ही था। मि० मेनस ने प्रार्थना करवायी। तव हम सव खड़े हो गये। इसके वाद मनोरंजन का कार्यक्रम शुरू हुआ। कोढ़िस्तान के विभिन्न लोगों ने काव्य-गायन किया। इसके वाद डॉ० टावोराडा ने एक छोटे-से भापण द्वारा वॉनिफाशियो का परिचय कराया।

इनके पहले के आचार्य अपने भापणों में हमें "मेरे अभागे भाइयो!" इस प्रकार करुण सम्वोधन करते थे। किन्तु आज तालियों की गड़गड़ाहट के वीच आचार्य वॉनिफाशियो मंच पर आये और हाथ उठाकर लोगों को शांत करने के वाद उन्होंने हमें "कूलियन के नागरिक!" इस प्रकार सम्वोधन कर अपना भापण शुरू किया, तव श्रोता चकित हो गये। इन सीधे-सादे दो शब्दों का उच्चारण कर उन्होंने हमें कितनी प्रतिष्ठा प्रदान कर दी। हम महारोगी जरूर थे, पर नागरिक भी तो थे। मताधिकार खोये हुए अपराधी नहीं, वल्कि नागरिक थे।

जोजिरिझाल का जीवन-वृत्तान्त उन्होंने जन्म से लेकर उनके वध तक संक्षेप में हमें कह सुनाया।

"इस गोली से वह निःसहाय पुरुष—शांति के साथ गिरा, तो उसकी आँखें खुली हुई थीं। वह एक शहीद और वीर पुरुष था। उसने कभी यह सूचित तक नहीं किया कि वह फिलीपाइन को स्पेन से हिंसा के मार्ग से मुक्त करना चाहता था। उसने सारी शिक्षा और कला यूरोप से ही पायी थी। वह चाहता था कि इस विद्या और कला का तथा स्वातन्त्र्य द्वारा मिली प्रतिष्ठा का भी लाभ अपने देशभाइयों को मिले। जिस अकल्पित दिशा से स्वतन्त्रता हमें मिलनेवाली थी, रिझाल को शायद इसका सपने में भी खयाल नहीं था। उसकी मृत्यु के सोलह महीने बाद एक बलवान् राज्य की जलसेना प्रशान्त महासागर पारकर मनीला के समुद्र में आयी और उसने स्पेन की नौसेना को पराजित कर उसका नाश कर दिया। उसके बाद तीन महीने तक मनीला पर अमेरिका का झण्डा फहराता रहा। किन्तु आज सभी टापुओं पर ये दोनों झण्डे फहरा रहे हैं।"

यह कहकर उन्होंने सितारे और पट्टियोंवाले अमेरिकन झण्डे के नीचे-वाले तिरंगे—लाल, भूरे और सफेद पट्टों में से सफेद पट्टे पर चमकनेवाले तीन सितारे और उगते सूर्यवाले झण्डे की ओर ज्यों ही इशारा किया, श्रोताओं ने तालियाँ बजाकर इसका स्वागत किया। अपना भाषण जारी रखते हुए वे आगे बोले :

"आज हम जिस सुख और शान्ति का उपभोग कर रहे हैं, उसके प्रति अंधी आँख करनेवाले कुछ लोग हमारे बीच बैठे हैं, यह हमारा दुर्भाग्य है। हमारे महान् नेता रिझाल जिन बातों के लिए लड़े, झगड़े और मरे, वे सारी बातें आज हमारे हाथों से ही सिद्ध हो रही हैं। इसमें हमें अमेरिकनों से शिक्षण और मदद मिल रही है, यह सत्य है।

"मैं अपने देश की स्वतंत्रता चाहता हूँ। मैं उसे मुक्त भी करना चाहता हूँ—मुक्त ! हाँ, मुक्त—अज्ञान से, रोगों से, दारिद्र्य से जिनसे अभी संसार का कोई देश मुक्त नहीं हो पाया है—इनसे मुक्त करना चाहता हूँ। किन्तु इस विषय में जितनी प्रगति करने में दूसरे देशों को सैकड़ों वर्ष लग गये, उतनी

प्रगति इन टापुओं ने तीस वर्षों में की है। यह बात मैं अनुभव से कहता हूँ। इन टापुओं के प्रत्येक भाग में अज्ञात शत्रु से लड़ने के लिए शिक्षा-मंदिर खड़े होते जा रहे हैं। इस शत्रु से लड़ने के यन्त्र प्राप्त करने के लिए हमारे बच्चे रोज इन मन्दिरों की यात्रा कर रहे हैं।

"हम दूसरी बातें भी देख रहे हैं। फौज, पुलिस, न्यायालय और फौजदारी अदालतों में हमारे देश के लोग अमेरिकनों की जगह लेते जा रहे हैं। डॉ० डेमेट्रियो टावोराडा इस कोढ़िस्तान के वर्तमान मुख्याधिकारी स्वयं एक फिलीपाइन हैं।

"हम और भी देख रहे हैं। हमारे रास्ते जो पहले गाड़ियों की लीकभर थे, वे अब पक्की सड़कों का रूप लेते जा रहे हैं। अब उनके द्वारा आराम से सैकड़ों मील की यात्रा कर सकते हैं। हमारे लोग अधिक समृद्ध हो गये हैं, उन्हें अधिक अन्न, अधिक वस्त्र और अधिक मनोरंजन भी मिल जाता है। इससे भी अधिक—हम कूलियन के निवासी जानते हैं—प्रति दिन, हर घड़ी अनुभव कर रहे हैं कि हम एक के बाद एक रोग पर विजय पाते जा रहे हैं। मलेरिया, चेचक और हैजा पर हमने काफी मात्रा में नियंत्रण कर लिया है। हमारा औसत जीवन-मान बढ़ गया है। सन् १८९८ अर्थात् स्पेनिश राज्य के अंतिम वर्ष में प्रति हजार ३०.५ मनुष्य मरते थे। आज वह मृत्यु-संख्या घटकर २१.७ तक आ गयी है। इसका अर्थ यह है कि प्रतिवर्ष ८० हजार आदमियों की मौत से रक्षा होने लग गयी है।

"और हम महारोगी [बॉनिफाशियो ने इस शब्द का उच्चारण कुछ ऐसे ढंग से किया, मानो वह कोई गौरवशाली संज्ञा हो]—जो मानव-जाति के युग-युग के गूढ़ शत्रु के साथ प्रतिदिन युद्ध कर रहे हैं—जानते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में हमारी आशाओं का सितारा कितना ऊँचा चढ़ गया है। हमने देखा है कि हमारे कितने ही भाई हमेशा के लिए अच्छे होकर प्रतिवर्ष यहाँ से लौटकर अपने घर जा रहे हैं। जहाँ तक उनसे सम्बन्ध है—इतनी विजय तो शत्रु पर मिल ही गयी है। वे नीरोगी मनुष्यों के संसार में पुनः शामिल हो गये हैं।

"स्वतंत्रता के लिए योग्य होते ही वह हमें अवश्य मिलनेवाली है। शिक्षण,

व्यवस्था और स्वास्थ्य के ज्ञान का उपयोग हम सीख रहे हैं। इसमें समुद्र के उस पार के लोग हमारी मदद कर रहे हैं।

"इतिहास के महापुरुषों में जिसका नाम लिखा जा सकता है, ऐसा एक पुरुष—हमारे जोजि रिझाल—हमारे देश ने संसार को अर्पित किया है। विज्ञान तथा कला में उसकी कीर्ति को यूरोप तथा अमेरिका में भी सब मानते थे। हम इस बात को कभी भूल नहीं सकते कि उसकी यादगार में एक राष्ट्रीय दिवस मनाने का प्रारम्भ यहाँ के पहले गवर्नर जनरल विलियम हावर्ड टाफ्ट ने किया है।

"एक दिन ऐसा आनेवाला है, जब हमारे टापुओं पर केवल एक ही झण्डा फहरायेगा। तब तक यहाँ आज जो हाजिर हैं, उनमें से ऐसे कितने ही निकलेंगे, जो नीरोग हो जायँगे और जहाँ वे चाहेंगे, स्वतंत्रतापूर्वक जाकर रह सकेंगे। उस दिन हम आज के इस समारम्भ को याद करेंगे।"

श्रोताओं पर मैंने नजर दौड़ायी। कारमन और टॉमस गीली आँखों से ऊपर देख रहे थे। चरिता के मुख पर भी मैंने वही तेज देखा, जो पहले सिस्टर विक्टरी के चेहरे पर देखता था। क्योंकि सूर्योदय और अपने को गोली मारनेवालों की राह देखते हुए रिझाल ने अपने कैदखाने में जो गीत गाना शुरू किया था, वही अब बॉनिफाशियो गा रहे थे :

अब विदा तुझे है, प्रिय स्वदेश, दिनकर-कर-लालित ऋतु-निवेश।
पूर्वोदधि-मुक्तामणि-प्रकृष्ट, हे मेरे नंदनवन विनष्ट।
मैं वार चला तुझ पर सराग, मुरझे जीवन का सार भाग।
पर यह होता भी तेजवान, ताजा कि अधिक सौभाग्यवान।
तो भी न मूल्य का कर विचार, मैं तुझ पर देता इसे वार।
मेरी समाधि जो चिह्न-हीन, रह जाय किसीको याद भी न।
तब तोड़-फोड़ दे उसको हल, फिर करें फावड़े उथल-पुथल।
जिससे तनुरज मेरी महीन, होने से पहले शून्य-लीन।
उठ फैले तेरे भूतल पर, बिछ जाय बिछायत-सी मृदुतर।
जो मुझसे छीन गये दीन, जिनका निवास तक पराधीन।

विवाह-समारोह

बचपन के मित्र-समाज विदा, तुम सबसे होता आज विदा।
तुम सब मिलकर अब करो दुआ, श्रममय दिन से मैं मुक्त हुआ।
है विदा तुझे भी सखी प्रिया, जिसने पथ मेरा सुगम किया।
है अन्त विदा सबको प्रियजन, है मृत्यु परम विश्रान्ति-सदन॥

(अनुवादक—श्री लक्ष्मणसिंह चौहान)

◆◆◆

तूफान

शाम को कारमन और टॉमस सिनेमा देखने के लिए गये। इसमें भी कूलियन समुद्र के उस पार के लोगों की मदद का अनुभव कर रहा था। अमेरिका में जब से बोलनेवाली तस्वीरें चल पड़ीं, तब से पुरानी गूँगी तस्वीरें कपाटों में बंद पड़ी रहने लग गयीं। अमेरिकन सिनेमा-कम्पनियों ने इनमें से कुछ अच्छे चित्रों का संग्रह भेंट के रूप में हमारे पास भेज दिया था। इन्हें यहाँ हफ्ते में दो बार दिखाया जाता था।

चरिता और मैं घर पर ही रहे। उसका जहाज दूसरे दिन निकलनेवाला था। कारमन उसके साथ जानेवाली थी। हम दोनों जानते थे कि बहुत दिन तक अब मिलना नहीं हो सकेगा। चरिता की बनायी कॉफी और केक का स्वाद लेते हुए हम पोर्च में बैठे थे। कोरन के किनारों पर बादल उमड़ते मैंने देखे। हवा तेज हो गयी। साफ दीख रहा था कि बरसात इधर आ रही है। समुद्र के किनारों पर चट्टानों से लहरें टकरा रही थीं। उनकी गर्जना हमारी आवाज को दबा रही थी। चट्टानों का यह निःश्वास एक विचित्र चीज थी। तूफान जब आने को होता है, तब वे हमेशा इस तरह रोने जैसी सिसकियाँ भरती हैं। एकाएक शाग ने ऊँचा सिर कर रोना शुरू कर दिया। मेमी ने भी चौपाटी पर से इसी सुर में जवाब दिया। चरिता घबड़ायी।

"आपके कुत्ते भी इस प्रकार रोते होंगे, इसकी मुझे कल्पना नहीं थी, नेड!"

"मालूम होता है कि समुद्र में तूफान आ रहा है। इन दिनों तूफान का आना एक अनहोनी बात है।"

पोर्च के पीछे से होकर कोई आ रहा था। वह मुख्याधिकारी के दफ्तर का एक क्लर्क था। चरिता की तलाश में था।

"एक सन्देश आया है सियोरा टॉर्रेस। स्टीमर कल नहीं आयेगा। यह तूफान आ रहा है। इसलिए स्टीमर खुए-रटो-प्रिन्सेसा या कूयो में ही रुक

जायगा। जब आने की संभावना होगी, तब आपको सूचना भेज दी जायगी।"

"वाह, तूफान को धन्यवाद! इसका अर्थ यह है चरिता कि आप एक दिन—शायद और भी अधिक दिन—रुक जायेंगी। मेरे लिए तो यह बड़ा शुभ समाचार है।"

"मैं आशा करती हूँ नेड कि यह कहीं आपके इस सुन्दर स्थान को हानि न पहुँचाये।"

वह चिंतित मुद्रा से समुद्र की ओर देख रही थी। इतने में जोजि ऋूज सीढ़ी के सामने दिखा।

"माफ कीजिये सियोरा टॉरेंस-नेड, लोग कहते हैं कि समुद्र में तूफान आ रहा है। इन किश्तियों का क्या करें?"

"कुछ आदमियों को बुलवा लो और किश्तियों को खाड़ी में लाकर लंगर डाल दो।....क्यों टॉमस?"

कारमन और टॉमस हाँफते-हाँफते जोजि के पास खड़े थे।

"जी साहब, थियेटर में हमने सुना कि बहुत बड़ा तूफान समुद्र में आ रहा है। इसलिए तैयार रहने के लिए हम सब निकल पड़े। नं० ६ की निशानी ऊपर चढ़ा दी गयी है।"

"नंबर छह! चरिता, जब से मैं यहाँ आया हूँ, तब से आज तक मैंने इस निशानी को चढ़ते नहीं देखा। तब तो यह सचमुच बहुत बड़ा तूफान होगा। फिर तो यह इसी—हमारी दिशा में ही आ रहा है।"

मैं यह कह रहा था कि इतने में तो बरसात जोरों से आ गयी। जोजि, टॉमस और कारमन आश्रय के लिए चबूतरे पर आ गये। बिजली की कौंधों से बगीचा और समुद्र प्रकाशित हो उठे।

"नेड, आप जोजि की मदद के लिए जाइये। टॉमस, कारमन और मैं यहाँ रहकर मकान को बराबर बन्द कर देंगे।"

"किन्तु उन्हें मेरी जरूरत नहीं है।"

"है, है, नेड। जोजि से पूछिये।"

"लोग घबड़ायेंगे। आप आयें, तो अच्छा रहेगा।"

"अच्छा जोजि, चौक के सहारों को गिरा दो और पश्चिम की तरफ टट्टर वाँध दो। वे जमीन से ऊपर हों और मजबूत वँधें, इसका ध्यान रखना। पोर्च की खिड़की के टट्टर गिरा दो।"

"कारमन मजबूत है, वह भी मदद करेगी।"—टॉमस ने गर्व से अपनी वहू की सिफारिश की। मैंने एक ओवरकोट उठाया और रवाना हो गया। रास्ता एकदम सूनसान था। पहले मकान के सामने हम पहुँचे, तो देखा कि सारा कुटुम्व लम्वे वाँसों को खींचने में लगा हुआ है। नीपा के इन नाजुक झोपड़ों को यदि ठीक से वन्द कर दिया जाय, तो वे तूफान से खासी टक्कर ले सकते हैं। दूसरे मकान भी इसी प्रकार वन्द किये जा रहे थे। दूकानदार अपना माल मकान के वीच रखकर टट्टर गिरा रहे थे। हमारे कारखाने के घाट की ओर जाते हुए हमने देखा कि कोढ़िस्तान की वत्तियाँ एक के वाद एक वन्द होती जा रही थीं। इसका अर्थ यह था कि लोग अपने दरवाजे और खिड़कियाँ वन्द करते जा रहे थे। अस्पताल की ऊँची और चौड़ी खिड़कियाँ भी एक के वाद एक वन्द हो रही थीं। समुद्र पर तूफान पूरे जोर में था। जमीन पर भी हवा इतने जोर से चल रही थी कि उसके सामने चलना वहुत कठिन था। हम भागते जा रहे थे। दो वड़ी मोटर किश्तियाँ किनारे से थोड़ी दूर लंगर डाले पड़ी थीं और वे अपनी जंजीरों से युद्ध कर रही थीं। घाट के पास वहुत-सी छोटी किश्तियाँ, होड़ियाँ, मछुवे और छोटी मोटर किश्तियाँ खड़ी थीं। रिकारडो जासिल्डो और विक्टर काविसान भी आ पहुँचे थे और भूत की तरह काम कर रहे थे। मैंने विक्टर से कहा कि सव आदमियों को वुलवा लो। कारखाने के सव नौकरों से भी कह दो कि वे भी हाजिर हो जायँ और उसकी रक्षा करें। जोजि, जासिल्डा ने और मैंने एक किश्ती ली और हम मछली पकड़ने की वड़ी किश्ती की तरफ गये। उसे हम ढकेलते हुए खाड़ी के वीच ले आये और वहाँ उसका लंगर डाल दिया। कभी-कभी केवल खतरे के मौकों को छोड़कर इसका लंगर हम कभी नहीं डालते थे। किश्ती से वापस आने में हमें वड़ी कठिनाई हुई, पर किसी तरह आ पहुँचे।

घाट पर लौटे, तव तक एक दर्जन के क़रीव आदमी मदद के लिए आ पहुँचे थे। मैंने उनसे कहा कि किश्तियों को खींचकर वालू पर ले आओ। इसके

बाद तराफे और छोटी मोटर-बोटों को खींच लाये। फिर सबसे बड़ी किश्ती को लेने के लिए गये, ताकि अधिक गहरे पानी में उसे लंगर डालकर खड़ी कर दें। वर्षा और हवा का वेग कुछ कम हुआ। इससे काम करने में जरा सहूलियत हुई। हमने इस शांति का पूरा उपयोग कर लिया। किन्तु बिजली हमें बड़ी तंग करने लगी। एकाएक सारा आकाश प्रकाशित हो उठता और हमारी आँखें चौंधिया जातीं। फिर भी उसे हम लाये और लंगर डालकर खड़ी कर दिया। इतने में घाट पर बड़ा शोर सुनाई दिया। हमारी एक किश्ती अलग होकर किनारे से दूर जा रही थी। जब दूसरी बार बिजली चमकी, तो मालूम हुआ कि उसके पिछले भाग में एक आदमी है। वह पतवार के हत्थे पर झूल रहा था। ऐसे तूफान में वह बड़ी खतरनाक जगह थी। लहरें किश्ती के अगले भाग से ऊपर उठ जातीं, उसे तथा आदमी को ढांक देतीं और फिर आगे बढ़ जातीं। हम घाट के नजदीक पहुँचे, तो लोगों की चिल्लाहट सुनी।

"विसेन्टी ! यह विसेन्टी है। जेल तोड़कर भागा है। उसे रोको।"

इस पागल को कोई रोक न सका। मैंने चिल्लाकर उसे पुकारा। किन्तु आँधी-तूफान में मेरी आवाज डूब गयी। जवाब में वह चिल्लाया और हाथ हिला दिया। वह पिछले भाग में सीधा खड़ा था। किश्ती भीतरवाले द्वार से निकलकर अदृश्य हो गयी। शायद वह कोरन पहुँचे। किन्तु इसकी संभावना बहुत कम थी।

बरसात और हवा से झगड़ता हुआ मैं अकेला ही घर लौटा। घर की रक्षा के लिए चरिता, कारमन और टॉमस ने भी वह सब किया, जो जरूरी था। भगवान् भला करे चरिता का। मेरे प्यारे गुलमोहर को बचाने के लिए उसने उसे बाँस के सहारे लगा दिये थे।

"चरिता, आज इस टापू पर शायद ही कोई आदमी सोया होगा। आप और कारमन दूसरे कहीं की अपेक्षा यहीं अधिक सुरक्षित हैं। यहाँ के अधिकांश मकानों की अपेक्षा यह मकान अधिक मजबूत है। आपको कोई उलहना दे, तो इसका जिम्मा मेरा। फिर"—मैंने हँसकर कहा—"मैं आपको अपने पास रखना चाहता हूँ। आपको रोकने के लिए ही तो मैंने इस तूफान को निमंत्रण दिया !"

हम सबने पोर्च में ही शेष समय बिताया। उसकी केवल एक खिड़की हमने, जहाँ तक संभव था, खुली रखी। टापुओं पर बिजलियाँ चमक रही थीं। सफेद शिखरवाली बड़ी-बड़ी प्रचण्ड लहरें किनारों से टकरा रही थीं और ताड़ तथा नारियल के पेड़ अनंत बार झुक-झुककर प्रबल वायुदेव की वन्दना कर रहे थे। फिर भी उन्हें संतोष नहीं हो रहा था। पिछली रात में तूफान ने और भी जोर पकड़ा। पोर्च की संपूर्ण लम्बाई में बरसात की झड़ियाँ आ रही थीं। एक केल गिरकर दीवाल से टकरायी। आखिरी खिड़की भी मैंने बन्द कर दी। बिजली के तार तो शाम से ही बिगड़ गये थे। पोर्च के एक कोने में मैंने एक लालटेन लटका रखी थी। वही हमें मंद-मंद प्रकाश दे रही थी।

शाग और मेमी हमारे पास ही थे। उन्होंने रोना बन्द कर दिया था, लेकिन बेचैन थे। हम जहाँ जाते, वे भी हमारे पीछे-पीछे आते। तूफान से चरिता को जोश चढ़ रहा था। वह खूब निर्भय और उत्साह में थी। तूफान के उन्माद का असर अन्त में मुझ पर भी हुआ—घण्टों के शोर के बाद अब शान्ति हो गयी। एकदम नीरव! हम जान गये कि अब हम तूफान के मध्य में पहुँचे हैं। मैंने खिड़की खोली। वर्षा बन्द हो गयी थी। हवा भी कम हो गयी थी। सारे दरवाजे, खिड़कियाँ, टट्टर, बन्द हैं या नहीं, यह देखने के लिए टॉमस और मैं निकला। हम जानते थे कि यह राक्षसी तूफान फिर घूम-कर सामने की ओर से हमला करेगा। कितने ही टट्टर खोलकर हमने उलटी ओर से बाँधे। बिजली के प्रकाश में मैंने देखा कि मेरे आँगन में विनाश का कैसा ढेर लगा है। पेड़ों के गिरने से बाड़ एकदम टूट गयी थी। आम की बड़ी-बड़ी डालें टूटकर गिर गयी थीं। जहाँ देखिये, वहाँ गिरे हुए नारियल पैरों से टकराते थे। हम पोर्च में पहुँचे, तब तक तो फिर हवा का जोर बढ़ गया। बची हुई रात हमने बैठे-बैठे ही बितायी। तूफान की आवाज में बातें तो कर ही नहीं सकते थे। कदाचित् दो-चार शब्द भले ही बोल सकते। शाग और मेमी हमें सटकर बैठे थे।

सुबह वर्षा बन्द हुई। हमने बाहर निकलकर देखा। वास्तविक नुकसान बहुत कम हुआ था। यह देखकर हम खुश हुए। छप्पर कहीं-कहीं बैठ गया

था। कहीं उखड़ भी गया था और एक दो जगहों पर मकान की वाजुओं पर गुँथा हुआ टट्टर उड़ गया था। नारियलों को सबसे अधिक नुकसान पहुँचा था। कितने ही पेड़ तो एकदम नंगे हो गये थे, विजली के खंभों की भाँति दीख रहे थे। सारे पत्ते टूटकर गिर पड़े थे। सारा आँगन और चौपाटी टूटी चीजों, पत्तों, डालियों और लकड़ियों से पट गये थे। एक किश्ती का भाग मेरे लॉन के पास आकर पड़ा था। मैंने उसे जरा ध्यान से देखा, तो मालूम हुआ कि वह मेरी किश्ती का नहीं था।

धीरे-धीरे हम कोढ़ीग्राम में घूमे। कहीं-कहीं मेरे घर से भी अधिक नुकसान हो गया था। किन्तु कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि कूलियन ने अच्छा मुकावला किया। मनुष्य-हानि नहीं हुई। एक मरीज के मकान की लकड़ी उस पर गिर गयी, जिससे उसे सख्त चोट आयी। विसेन्टी के भाग जाने की वात कारमन को सुवह मालूम हुई। उसने उसे शान्तिपूर्वक सह लिया। उसने समझ लिया कि वह इस तूफान में जिन्दा न वचा होगा। दूसरे किसीने भी उस पर शोक नहीं किया। उसका छोटा-सा दल टूट गया। एक तो नेता को जेल की सजा होते ही वगावत शान्त हो गयी थी, तिस पर इस तूफान में उनका नेता गायव हो गया। इस दोहरी चेतावनी के वाद वह क्या टिकनेवाला था?

तूफान के वाद दूसरे दिन चरिता का स्टीमर आया। चरिता और कारमन को विदा देने के लिए मुख्याधिकारी की विशेष इजाजत से टॉमस और मैं घाट पर गये। हम वहाँ पहुँचे, उससे पहले ही वे दोनों वहाँ आ गयी थीं।

चरिता से अलग होना मेरे लिए कष्टदायक था। उसकी आँखों में मैं देख रहा था कि उसकी भी यही हालत हो रही थी। जव तक स्टीमर आँखों से ओझल नहीं हो गया, वह डेक पर खड़ी-खड़ी वरावर रूमाल हिलाती रही। कुछ दिन वाद उसका एक पत्र आया। लिखा था कि मनीला से वहुत दूर, टापू के अंतःप्रदेश में—और कूलियन से तो और भी दूर—मिण्डानाओ में उसका तवादला हो गया है। इस चिट्ठी को पढ़कर मैंने समझ लिया कि अव कभी उससे मिलना न हो सकेगा। ◆◆◆

वॉल्टर सिम्पसन कोढ़िस्तान छोड़कर जा रहे थे। वड़े लम्बे समय से उनका स्वास्थ्य गिरता जा रहा था। उनकी मूत्रग्रन्थि (किडनी) में सूजन थी। वहुत-से कुष्ठ-रोगियों को यह विकार हो जाता है। फिर भी वे काम वरावर करते रहते। उनका जीवन देखकर मैं चकित था। मनीला में एक प्रकार का वुखार (Encephalitis) शुरू हो गया था। पता नहीं क्यों, कूलियन में भी उसके कुछ केस हो गये। उनमें सिम्पसन भी आ गये। उन्होंने चाहा था कि मुझे सान-लाजारो भेज दिया जाय। वहाँ के एक फौजी डॉक्टर पर उन्हें वड़ी श्रद्धा थी। वह अपना राह-खर्च दे सकते थे। इसलिए उन्हें तुरन्त इजाजत मिल गयी। किन्तु उनका रोग प्राणघातक सिद्ध हुआ। सान-लाजारो पहुँचने पर तीन महीने के अन्दर उनकी मृत्यु हो गयी।

अव मुझ पर दो-दो कामों का वोझ आ गया। पहले तो सिम्पसन की जगह भरनी थी। फिर आदमियों को इस प्रकार तैयार करना था, जिससे उनके वगैर और आगे चलकर मेरे वगैर भी वे काम चला ले जायँ। मैंने वहुत विचार किया। फिर अपने आदमियों की एक सभा वुलायी। जव सभी एकत्र हुए, तव मुझे पता लगा कि कुछ समय से वे लोग भी इसी प्रश्न पर विचार कर रहे थे।

मेरे लिए यह आँखें खोलनेवाली वात थी। मैं समझता था, उसकी अपेक्षा लोगों को मैं अधिक कमजोर दीखने लग गया था।....हमने निश्चय किया कि वॉल्टर सिम्पसन का स्थान जोजि क्रूज ग्रहण करे और विक्टर काविसा उसके सहायक का काम करे। सभी शेअर होल्डरों को तथा मुझे भी इस निर्णय से वड़ा सन्तोप हुआ। मेरे अपने अर्थात् हिसाव-किताव और अर्थ-व्यवहार के काम में टॉमस को मेरा सहायक नियुक्त किया गया।

इस वैठक के कुछ दिन वाद डॉ० वॉण्ड ने मुझे दवाखाने में मिलने के लिए वुलाया। इस वुलाहट पर मुझे कुछ आश्चर्य हुआ। क्योंकि मैं नियम-

पूर्वक उपचार लेता था और इसके एक दिन पहले ही मेरी जाँच हुई थी। मैं तुरन्त मिलने के लिए चला गया। उसने कहा :

"नेड, आज मैंने आपका कार्ड देखा। आपसे यह कहते हुए मुझे दुःख होता है कि आपके हृदय को जैसा काम करना चाहिए, वैसा वह नहीं कर रहा है।"

"खराव-से-खराव जो कहना चाहते हों, कह दीजिये। मुझे सच्ची हालत जान लेनी चाहिए। क्या वहुत खरावी है ?"

"वहुत अच्छा भी नहीं कहा जा सकता। प्यारे भाई, साधारण काम-काज करने में तो कोई हर्ज नहीं। किन्तु थकावट लानेवाले काम नहीं करने चाहिए।"

"शिकार ?"

"हरगिज नहीं।"

"मालूम होता है कि सावारण कामों से भी आप मुझे छुट्टी दिलाना चाहते हैं।"

"एकदम ऐसी वात तो नहीं है। किन्तु आपको वहुत सावधान रहना चाहिए।"

मेरे साथ वे दरवाजे तक आये। "आपने सुना होगा कि अमेरिका के प्रेसिडेण्ट ने सारा सोना इकट्ठा करने का हुक्म जारी किया है।"

"नहीं, मैं नहीं जानता। क्या वह हमें भी लागू होगा ?"

"हाँ, मनीला से एक इन्स्पेक्टर आनेवाले हैं।"

जव इन्स्पेक्टर आया, तव मैं भी दफ्तर में गया—यह देखने के लिए कि कितनी रकम मिलती है। छूत को रोकने के लिए डॉक्टरों ने वड़े दरवाजे के सामने एक लम्वी मेज रख दी थी। इन्स्पेक्टर अंदर की तरफ मेज के सामने वैठा। मरीज एक जन्तुनाशक द्रव के पात्र में सिक्के डालते जाते और इन्स्पेक्टर हाथ में दस्ताने पहनकर उन्हें उठाता जाता। कोढ़िस्तान के सारे सिक्के जन्तुमुक्त किये जाते थे। जव मैं पहुँचा, तव इन्स्पेक्टर ने अपना काम शुरू कर दिया था। वह वर्दी पहने मोटी ऐनकवाला एक जवान था। मेज पर सोने के सिक्के की ढेरियाँ पड़ी थीं। उनकी चमक सूर्य की किरणों से होड़ कर रही थी। लोग इन्हें वहुत प्यार करते थे। कितने ही सिक्के ऐसे भी थे, जो अमेरिका में नहीं पाये जाते थे। इनकी कीमत आँकने में इन्स्पेक्टर को

वड़ी कठिनाई हो रही थी। काँच से वह स्पेनिश डवलून, एशिया की मुहरों और अज्ञात टापुओं के सोने के सिक्कों की जाँच करता जा रहा था। कितने ही सिक्के हाथ की टकसाल के वने जान पड़ते थे।

इन्स्पेक्टर चिमटे से सिक्के को उठाता, दो-दो चश्मों से उनकी जाँच करता, उन्हें तौलता और फिर कुछ पुस्तकों में देखकर उनकी कीमत के बारे में निर्णय देता। काम चलने लगा, त्यों-त्यों उसका आत्मविश्वास वढ़ता गया। किसी वीमार को उसके निर्णय पर सन्देह नहीं हुआ। उन्हें उसके निर्णय पर सन्तोष था और सोने के सिक्के के वदले में मिलनेवाले कोढ़िस्तान के सिक्के लेकर वे रवाना हो जाते।

इन्स्पेक्टर को केवल सिक्कों की ही कीमत नहीं आँकनी थी। प्रेसिडेण्ट की माँग सोने के सिक्कों की नहीं, सोने की थी। मैं दरवाजे के पास एक कुरसी पर वैठा था। मैंने देखा कि जासिल्डा मेज की तरफ वढ़ रहा है। अभिमान के साथ उसने सोने का अमेरिकन ईगल (दस डॉलर का सोने का सिक्का) और ढाई डॉलर की कीमतवाला सोने का एक छोटा सिक्का मेज पर रखा। इस छोटे सिक्के में एक छेद था। इससे जान पड़ता था कि किसी छोटे वच्चे के गले में पहनाने के काम में वह लिया गया था।···· उसके पीछे मारशिया आयी। वह एक मेरे मजदूर की लड़की थी। मैं उसे एक उथले मिजाज की औरत समझ रहा था। किन्तु वह हँसती हुई आयी और अपने कण्ठ, कलाई, वाहुएँ तथा कानों से मालाएँ, चूड़ियाँ, भुजवन्द और कर्णफूल निकालने लगी। वह वोली :

"मैं यहाँ आयी, तो मेरी शादी हो गयी थी। मेरे पति ने ये सारी चीजें मुझे भेंट में दी थीं। ये काफी होंगी न ?"

इन्स्पेक्टर ने विश्वास कर लेने के इरादे से कहा : "आपको गहने देने की जरूरत नहीं। वहन ! हाँ, अगर आप इन्हें पहनना ही नहीं चाहती हों, तो हम वड़ी खुशी से इन्हें ले लेंगे।"

मारशिया ने दृढ़ता से जवाव दिया : "मैं इन्हें देना ही चाहती हूँ। यह सच है कि मैं गहनों को पसन्द करती हूँ। किन्तु यह भी सही है कि मेरे

पिता को और मुझे इस टापू में बहुत सुख मिला है। यदि अमेरिका को सोने की जरूरत है, तो हम देना चाहते हैं।"

इन्स्पेक्टर ने खँखारकर कहा : "अवश्य।" और वह इनके बदले में कोढ़िस्तान के सिक्के देने लगा। उसके पीछे टॉमस खड़ा था। उसने अपनी पूँजी मेज पर रखी। एक टूटा हुआ लॉकेट था, टॉमस की पूज्य माँ ने यह उसे भेजा था। किसी समय इसमें उसके माता-पिता के चित्र थे। इस समय खाली पड़ा था। चित्रों को निकालकर टॉमस ने कहीं रख दिया था। इसके अलावा पाँच जगमगाते सोने के ईगल उसने रखे।

इन्स्पेक्टर की आँखों में सन्देह झलका। "इतने तुम्हारे पास कहाँ से आये?"

"मनीलावाले पिट ग्राण्ट ने विवाह की भेट के रूप में मुझे भेजे हैं। यहाँ मि० नेड बैठे हैं। इनके वे मित्र हैं। मैं मि० फर्ग्यूसन का निजी सचिव हूँ।"

"यह सब सही है इन्स्पेक्टर।"—मैंने विश्वास दिलाते हुए कहा : "मि० ग्राण्ट ने सियोरा टॉरेंस के साथ ये ईगल भेजे थे।"

"धन्यवाद मि० फर्ग्यूसन! वाह जवान, आपके पास अच्छी रकम है।"

टॉमस गया। उसकी आँखें प्रसन्न थीं।..... लोग आते ही गये, आते ही गये। बच्चों के जेवर लेकर माताएँ आयीं, सिक्के लेकर युवक आये, गहने लेकर युवतियाँ आयीं, यह सब देखकर एक अमेरिकन के नाते मेरा हृदय भर आया। अपनी थोड़ी-सी पूँजी मेज पर रखते हुए मुझे बड़ी लज्जा मालूम हुई। सोने की चीजों का मुझे कभी खयाल भी नहीं हुआ था। किन्तु मैंने अपनी घड़ी निकालकर रख दी। दूसरी घड़ी घर पर थी ही। यह मेरे पिताजी की थी। यह देने से उन्हें आनन्द ही होता। इसके बदले में मिले कोढ़िस्तान के सिक्कों की ढेरी मैंने उठायी।

"एक कृपा करेंगे इन्स्पेक्टर? यह सब हो जाने पर मैं जानना चाहता हूँ कि यह कितना हुआ?"

"कल दोपहर में बता सकूँगा। बेशक, आपको बताने में कोई आपत्ति नहीं है मि० फर्ग्यूसन।"

दूसरे दिन मैं अपने कमीज के सामने के और हाथों के सोने के बटन लेकर फिर पहुँचा। दूसरों का काम होने तक रुका रहा। मैंने अपने सिक्के उठाये, तब इन्स्पेक्टर ने हँसते हुए कहा :

"कुल मिलाकर छह हजार पेसों से कुछ ऊपर होगा।"

तीन हजार डॉलर ! कूलियन के कोढ़ियों की तरफ से इतना सोना वॉशिंगटन के सरकारी खजाने में पहुँचा।

× × ×

इसके बाद के वर्ष में सान-लाजारो के मेरे मार्गदर्शक डॉ० राबिनो का तबादला कूलियन में हो गया। उनके स्वास्थ्य पर समय का बहुत अधिक परिणाम नहीं हुआ था। वे जरा मोटे हो गये थे और सिर पर चाँद पड़ गयी थी। फिर भी शरीर में उत्साह तो जवानों का-सा ही था। यहाँ पहुँचने के कुछ ही दिन बाद वे मुझसे मिलने के लिए आये। उनकी मित्रता मेरे लिए आशीर्वाद बन गयी, क्योंकि उनके तथा डॉ० बॉण्ड के सारे प्रयत्नों के बावजूद दिन-ब-दिन मेरा स्वास्थ्य गिरता ही जा रहा था। जीवनभर मैं जिस सपने को सँजोता आ रहा था, वह अब समाप्त होने को था। बरसों पहले जिस दिन मैं घर से निकलकर रेल में बैठा और घर को अपने से दूर हटते हुए देखा, तब से दिन-रात वह सपना सदा मेरी आँखों के सामने रहा। इसमें मैंने कल्पना कर ली थी कि मैं अच्छा-चंगा हो घर चला गया हूँ और बगैर किसीको खतरे में डाले— बगैर किसी प्रकार के डर के मैं स्वतंत्रतापूर्वक घूम रहा हूँ और सबको स्पर्श करता हूँ। यह सपना टूट गया। लगभग चौथाई सदी तक मैं कोढ़ी रहा।

कई रातें मैं पोर्च में अकेला बैठकर काट देता। मैं भूला। मैं एकदम अकेला नहीं था, क्योंकि मेरे साथ ही बूढ़े बने हुए शाग और मेमी भी तो थे। अनेक बार समुद्र की तरफ देखता हुआ मैं अपना सारा जीवन क्रमशः देख जाता। इस एकान्त जीवन में मैंने अपना जीवन-युद्ध जारी रखा था। पैसों के विषय में मैं यहाँ के तथा बाहर के लोगों की दृष्टि से एकदम असफल तो नहीं कहा जा सकता। कारखानों में मेरा भाग और मेरी नकद रकम दोनों मिलकर लगभग चालीस हजार पेसो मेरे पास पड़े थे। जिस जमीन पर मेरा मकान था, वह मेरी नहीं थी; सरकारी थी। किन्तु उसके ऊपर का इमला तो मेरा ही था। अर्थात् बीस हजार डॉलर और एक मकान का मैं स्वामी था।

अमेरिका के मेरे कस्बे में यदि कोई आदमी वगैर किसीकी कोई खास मदद के वीस हजार डॉलर इकट्ठे कर ले और अपना मकान भी वना ले, तो इसे कोई असफल नहीं कहता। जिस समाज में मैं रहता था, उसमें मैं एक मामूली नागरिक नहीं, वल्कि एक प्रतिष्ठित पुरुष माना जाता था। यह सच है कि यह सारा समाज कोढ़ियों का ही था। किन्तु इसीलिए उसकी कई विशेपताएँ भी थीं। साधारण मनुष्य को, जिस समाज में वह रहता है, उसके प्रति कुछ कर्तव्य अदा करने पड़ते हैं। यहाँ हम एक कर्तव्य को छोड़कर शेप सव कर्तव्यों से मुक्त थे। लेकिन हाँ, वह कर्तव्य सव पर समान रूप से लागू होता था। कुछ भी हो, रोग से निरन्तर लड़ते रहना—यह करने के उपरान्त मनुष्य जैसा था, उससे अधिक अच्छा दीखने का ढोंग करने के लिए वहाँ कोई खास कारण ही नहीं था। अपने विचार के अनुसार न वरतने का खयाल तक करने की वहाँ जरूरत नहीं थी। महारोगी की हैसियत से वह वन्धन में था। किन्तु इस महारोग के कारण ही उसे कितनी ही वातों में इतनी विलक्षण और सच्ची आजादी थी, जो सामान्य मनुष्यों को नहीं हुआ करती। ऐसे समाज में मैं प्रतिष्ठित था। इसका अर्थ यह है कि मेरे गाँव के लोग मेरे विचारों और कामों का आदर करना जानते थे और वे मेरा ऐसा आदर करते भी थे।

इतनी सफलता के अलावा मैंने अपने घर में सुन्दरता उत्पन्न की थी। मैं मानता हूँ कि सौंदर्य के वगैर मनुष्यता सुशोभित ही नहीं होती। मेरा यह सुन्दर घर मेरे तथा मेरे मित्रजनों के लिए एक नन्दनवन था। यह अन्त तक मेरे पास ही रहेगा। मैं यहीं मर सकता हूँ और जिन्दा या मरने पर मेरे मित्रों के वीच ही रह सकता हूँ।

किन्तु एक रात एकाएक मेरे मन में वड़े जोर से यह विचार उठा कि अव मुझे यहाँ नहीं रहना है। अव मैं वीमार, वृद्ध और थक गया हूँ। मुझे घर पर लौट जाने की वड़े जोर से इच्छा हुई। मुझे उत्कण्ठा होने लगी कि मैं वहाँ लौट जाऊँ और वहाँ खेतों के वीच उगते सूर्य को देखूँ, वहाँ की टेकरियों पर चरती गायों को देखूँ, किसानों के मकानों के आसपास के वृक्षों को निहारूँ, जाने कहाँ-कहाँ तक जानेवाली सीधी, साफ और सफेद सड़कों को देखूँ और आम रास्तों के पास भीड़ वनाकर खड़े धूआँ उगलनेवाले कारखानों तथा लाल

इँटोंवाले गोदामों को देखूँ। अब तो मुझे मेरा देश चाहिए। मैं अपने जाति-बन्धुओं और देशबन्धुओं से मिलना चाहता हूँ। अफवाहें कानों से टकरा रही थीं कि अब फिलीपाइन्स पर से यह पट्टों और सितारोंवाला अमेरिका का झण्डा हट जायगा और यहाँ पड़ी हुई फौज और नौसेना भी लौट जायगी। स्वदेश लौट जाने की तीव्र उत्कण्ठा मुझे हो गयी।

और अवसर मिलते ही बॉण्ड को मैंने अपनी यह इच्छा प्रकट भी कर दी।

"आपकी इच्छा को मैं समझ सकता हूँ नेड। क्या मैं आपकी किसी प्रकार मदद कर सकता हूँ?"

"हाँ, आप विण्टेन को लिख सकते हैं कि वे मुझे कारबिल भेज दें।"

"जरूर, आज ही लिख दूँगा।"

जबाब आने में कई महीने लग गये। बॉण्ड खुद समाचार लाये। "विण्टन ने अमेरिका के स्वास्थ्य-विभाग और फौजी विभाग तक पहुँचकर सारा प्रबन्ध कर दिया। उसके अनुसार व्यवस्था भी हो गयी है। आप यहाँ से मनीला जायँगे। वहाँ से एक फौजी जहाज आपको सानफ्रान्सिस्को पहुँचा देगा। वहाँ से ट्रेन में। फौजी जहाज अगले महीने की पंद्रहवीं तारीख को रवाना होगा। मुझे दुःख है नेड कि आपको विदा देने के लिए मैं यहाँ उपस्थित न रह सकूँगा। भारत में एक परिषद् है। वहाँ मुझे जाना है। इसके लिए कल सुबह के स्टीमर से मैं रवाना हो रहा हूँ।"

वे मेरे पास घण्टों बैठे रहे। हमने मिलकर कई काम किये थे, उनकी बातें करते रहे। विदा होने का समय आया। उस समय दोनों के हृदय इतने भर आये कि हम अधिक देर तक एक-दूसरे के सामने खड़े नहीं रह सके।

"अलविदा जैक!"

"अलविदा नेड, आपका कल्याण हो।"

मैं अभी इतना बूढ़ा, बीमार या श्रान्त नहीं हो गया था कि विन्टन के पत्र से मैं भावनावश नहीं हो जाऊँ। मेरे मन और शरीर में उसने नयी उमंगें भर दीं। मेरा प्यारा देश! वह मुझे वापस बुला रहा है। मेरी फौज अपने रक्षण में मुझे बुलाकर वापस ले जा रही है। इस निर्वासन से वह वापस अपने घर ले जा रही है। अब मैं अपनी प्रिय जन्मभूमि में जानेवाला हूँ।

◆ ◆ ◆

नमस्कार कूलियन! : ३२ :

अपने स्वदेश की यात्रा पर मुझे दोपहर में लोकल स्टीमर से रवाना होना था। इससे पहलेवाली रात में मैं वहुत अच्छी तरह नींद न ले सका। घण्टों विस्तर पर पड़ा-पड़ा करवटें वदलता रहा और गाँव में चल रहे संगीत की तानें सुनता रहा। चन्द्र आकाश में उगा हुआ था। जव तक वह अस्त नहीं हो गया, यह संगीत चलता रहा। शाग और मेमी आकुल-व्याकुल-से हो घर के अन्दर से आँगन में और आँगन से घर में जा-आ रहे थे। एक वार शाग मेरे विस्तर के सामने आकर खड़ा हो गया और मच्छरदानी में मुँह डालकर मेरे मुँह की तरफ देखता रहा। क्या मेरे ये पुराने वफादार साथी मेरे विचार जान गये ? और मेमी तो वीमार थी—लगभग जीवन के किनारे पहुँच गयी थी। इनका क्या किया जाय, इसका निर्णय करने में मुझे वहुत देर लगी। डॉ० राविनो ने मुझे मार्ग वताया। मेमी अव वहुत अधिक जीनेवाली नहीं थी। उसका आजीवन साथी शाग भी उसके मर जाने के वाद वहुत दिन न काट सकेगा, इसलिए जाने से पहले मैं ही उन्हें क्यों न सुला दूँ। किन्तु यह काम हृदय-विदारक सिद्ध होनेवाला था।

पोर्च में टॉमस मेरा नाश्ता मेज पर सजा रहा था। सारा काम वह चपलता से, हलके से और चुपचाप कर रहा था। मैं देखता था कि वह चुरा-चुराकर टेढ़ी नजर से वीच-वीच में मेरी तरफ देख लिया करता था। उसकी आँखों में आँसू थे। भूरी तश्तरियाँ मेज पर रखते हुए उसके हाथ धूजते जाते थे। एक तश्तरी में भूरे आरकिड का गुच्छा रखा था।

"साहव, नाश्ता !"—उसकी आवाज रुक गयी। चमकीले पीले आम को मैं धीरे-धीरे अपने हाथ में घुमाने लगा। उसने मेरी रुचि की सारी चीजें तश्तरियों में परोस दी थीं, किन्तु मैं वहुत कम खा सका। वगीचे की तरफ ताकता हुआ मैं वैठा। वाड़ के पासवाली ओढ़ौल पर रात की नमी के चिह्न अभी तक झलक रहे थे। टॉमस का प्रभात में दिया पानी अमरवेल से

धीरे-धीरे टपक रहा था। ताड़ के पत्ते हवा से हिलते हुए इस प्रकार की आवाज कर रहे थे, मानो वरसात आ रही हो। सुवह की छाया में कूलियन का समुद्र घनश्याम नजर आ रहा था। सूर्य ज्यों-ज्यों ऊपर चढ़ता जा रहा था, त्यों-त्यों कोरन के शिखर सुनहला रंग धारण करते जा रहे थे। थोड़ी देर में दिन पूरी तरह निकल आयेगा। फिर उष्ण देश की ठंढक पश्चिम की तरफ हटती जायगी और समुद्र के ज्वार की भाँति चारो तरफ गरमी फैल जायगी। कूलियन में मेरा यह अन्तिम दिन था।

× × ×

मैंने निश्चय कर लिया था कि कई काम अन्त-अन्त में करूँगा। मेन्सन और फादर से मिलना था। इन दोनों ने मेरे लिए वहुत कुछ किया था। मेरा खयाल है कि मेन्सन समझ रहे थे कि मैं उनके पथ में शरीक हो गया हूँ। एक प्रकार से यह सच भी था। कितने ही संस्कार लम्वे समय से मेरे जीवन के साथ जुड़ गये थे। कितने ही अभी तक—इस दरवाजे से वाहर कदम रखने के क्षण तक—मेरे साथ थे। अपनी मोटर मैंने जोजि को सौंप दी। इस भेट के लिए मैं पैदल चलकर ही गया।

कुत्ते पीछे थे ही। उन्हें पीछे ढकेलने की मुझे हिम्मत नहीं हुई। मेमी के लिए इतना चलना भारी था। किन्तु उसकी आँखों में 'मुझे आने दीजिये' इसकी प्रार्थना दिखी। दोनों जानते थे कि मैं कभी उन्हें अपने साथ कोढ़ीग्राम में नहीं ले जाता था। किन्तु वे जान गये थे कि आज का प्रसंग जुदा था। रिझाल चौक के रास्ते हम तीनों रवाना हुए। जहाँ-जहाँ पेड़ों और पत्तों के वीच खाली जगह होती, वहाँ मैं रुककर खड़ा हो जाता और वन्दरगाह का सौन्दर्य देखने लग जाता। इसे मैंने रात-दिन तथा दिन-रात देखा था। रास्ता मुड़ा और प्रोटेस्टेण्ट चर्च के पास से मैं नीचे उतरा। धीरे-धीरे मैं चर्च की सीढ़ियाँ चढ़ गया। मेन्सन का सहायक लियॉन दरवाजे से वाहर आ रहा था।

"नमस्कार मि० फर्ग्यूसन, हमें आपकी वड़ी याद आयेगी।"

"धन्यवाद, लियॉन। गुरुजी अन्दर हैं?"

"वे मन्दिर में हैं। अन्दर आइये।"

इस ऊँची छतवाले मंदिर में कितनी अच्छी ठंढक थी। इसके मन्द

प्रकाश में कुर्सियों और वेदी की रूपरेखाएँ अच्छी दीखती थीं। मेन्सन वीच में होकर आये।

"आपके आने से वड़ी खुशी हुई नेड ! आपका प्रवास आराम से और निर्विघ्न हो, यह प्रार्थना करने के लिए ही मैं मन्दिर में आया था।"

मेरी जवान भारी हो गयी। शाग के सिर पर हाथ रखकर ही मैं वोलने का प्रयत्न करने लगा। किन्तु उन्होंने अपनी वात जारी रखी। "यह लीजिये, आपके लिए कुछ है। पिछली वार मैं मनीला गया था, तव आपके लिए खास तौर पर लाया था। मैं आपको जो अच्छी-से-अच्छी भेंट दे सकता हूँ, वह यही—वाइविल—है।"

मेरे कुरूप हाथ में उन्होंने एक गत्ते का डिव्वा रखा, जो महीन कागज में लपेटा हुआ था। अटकते-अटकते शव्दों में मैंने उनका आभार माना। मेरा हृदय भर आया है, यह वे जान गये। फिर भी पूछा कि स्टीमर कितने वजे खुलेगा ? हम 'विदा' नहीं कह सके। ये शव्द मुँह से निकल ही न सके। उन्होंने पलभर मेरे कन्धे पर अपना हाथ रख दिया। वस, इतना ही।

कैथोलिक गिरजे का रास्ता लम्वा था। रास्तेभर आदमी मिलते गये। सव मेरे मित्र हो गये थे। वे सिर झुकाते, नमस्कार करते और अपने प्रेम को मौन में दवा देते। वातचीत करने के लिए कोई रुका नहीं, यह अच्छा ही हुआ। मैं खुद यह अधिक सह नहीं सकता था। आवाज तो मानो मैं खो ही वैठा था। इसलिए जवाव में केवल सिर झुकाकर या हाथ हिलाकर प्रेम प्रकट कर देता। अन्त में गिरजा पहुँचा और उसकी लम्वी-चौड़ी सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। ऊपर से एक प्रसन्न आवाज आयी। मैंने ऊपर को देखा। पादरी मिलने के लिए नीचे आ रहे थे। उनका लम्वा लवादा पैरों में फहरा रहा था।

"नेड है ? शरारती ! खास तौर पर मिले विना नहीं जा सकता था न ? तो अव शराव की प्याली के लिए आया है या इस वूढ़े से मिलने के लिए ?" उन्होंने प्रेम से मुझे चिकोटी काटी। "क्या समझता है काफिर ! इस सुवह के प्रहर अभी तेरे लिए जप करके उठा हूँ।"

कण्ठ तो रुक ही गया। मेरे किये कामों का उसने जिक्र किया। योग्यता से अधिक श्रेय मुझे दिया। दूसरे पंथ का होने पर भी उनके मन में मैंने कभी

भेदभाव नहीं देखा । दूसरा पंथ ? उसी क्षण मैं जान गया कि सभी पंथ एक हैं ।

मैंने यह कहने का प्रयास करना चाहा । किन्तु जवान से एक शव्द भी न निकल सका । लेकिन मेरी अपेक्षा उनका अपने ऊपर अधिक अधिकार था । इसलिए वे हँसकर वोले : "चला जा अव ! वहाँ सीधे रहना, नहीं तो पाँव में वेड़ियाँ डलवाकर पकड़कर यहाँ वुलवा लूँगा ।"—यों कह वे सीधे चलते वने और सड़क पर हो गये ।

जहाँ आधी जिन्दगी वितायी, उस स्थान को छोड़ना आसान नहीं था । मैं डॉ० टावोराडा के दफ्तर की ओर चला । पादरी की कही कई वातें सही थीं । मैंने यहाँ कुछ उपयोगी काम जरूर किये थे । जिस रास्ते पर होकर हम जा रहे थे, उसे विजली देना, जो खाना हम खाते थे, उसे सँभालकर ठंडा रखने वाला वरफ, जो सुविधाएँ यहाँ थीं, उन्हें निर्माण करनेवाला वह कारखाना—जो समुद्र के किनारे पर गरजता रहता है—इन सवके वनवाने में मैंने खास भाग लिया था । खैर ! मेरे वगैर भी अव वह कारखाना चलता रहेगा । अव तो मैंने जोजि को अच्छी तरह तैयार कर दिया था ।

समुद्र के तीरवाला नीचे का रास्ता अव मैंने पकड़ा । हम तीनों—मेरे दोनों कुत्ते और मैं अव पूरी तरह थक गये थे ।

दरवाजे के सामनेवाले वड़े वृक्षों के नीचे वड़ी ठंडक थी । भोजन लाने का समय हो गया था । लोग अपने-अपने टिकट थामे खड़े थे । जो थोड़े से आदमी मिले थे, वे संकोचशील थे । किन्तु अव तो समूह में आते ही उनमें हिम्मत आ गयी । वे मुझे पुकारकर कहने लगे :

"हमें भी अमेरिका ले चलेंगे न मि० फर्ग्यूसन ?"

"यहीं रह जाइये न भाई ! कभी तो पीछे आयेंगे ?" वगैरह-वगैरह ।

मुख्य वलर्क के मकान के सामने पहुँचा, तो मिसेस विल्ला ने अपने वरामदे में से ही पुकारा : "शुभास्ते पंथानः मि० फर्ग्यूसन ! मैं सोचती हूँ कि हम भी अमेरिका जा सकते, तो कितना अच्छा होता ?"

दफ्तर के सामने खड़ा चपरासी चिल्लाया : "आपकी जय हो मि० फर्ग्यूसन !"

फूलों के छोटे-छोटे पौदोंवाली गली से होकर कुत्तों को साथ में लिये मैं सरकारी मकान पर गया। डॉ० टावोराडा ऑफिस में बैठे थे। स्वच्छ शुभ्र पोशाक पहने थे। वे खिड़की के पास मेज पर नीची दृष्टि किये काम कर रहे थे। मैं कुछ बोलता, इससे पहले ही उन्होंने ऊपर देखा और उठकर खिड़की के सामने आ गये।

"कहिये, क्या समाचार हैं नेड ?"

कारखानों के वारे में कुछ अन्तिम व्यवस्था करनी थी। इस विषय में वातचीत की। मैंने उसे विश्वास दिलाया कि जोजि वरावर काम सँभाल लेगा।

मैं वहाँ हूँ, यह समाचार सारे दफ्तर में फैल गया। दूसरे सरकारी नौकर भी मुझसे मिलने के लिए खिड़कियों पर आ गये। डॉ० टावोराडा ने एक छोटे-से भाषण में मेरे कामों की प्रशंसा की। दूसरे लोगों ने करतल-ध्वनि कर मुझे विदा दी।

मैं वहाँ से निकला, तो अपने मन में विचार करने लगा कि यहाँ इतना जीवन विताकर और ऐसे काम कर जानेवाले नीरोग आदमी और मेरे वीच क्या अंतर है, तो केवल यही पाया कि लोग खिड़की के उस तरफ खड़े होकर मुझसे वातें करते थे।

कारखाना वड़ी दूर था, पर समुद्र के किनारे का रास्ता समान था। चढ़ाई आयी, तव हम धीरे-धीरे चलने लगे। मेमी थक गयी थी। मेरी सृष्टि के स्थान आये, तो भावनाओं का एक तूफान मेरे दिल में उमड़ने लगा। यन्त्र धड़धड़ा रहे थे। हर लड़का अपने काम में लग रहा था। जोजि के चौड़े मुँह और सफेद दाँतवाले चेहरे पर हँसी उसके हुकूमतवाले अहंभार को प्रकट कर रही थी। कारखाने के नये सरदार की हैसियत से अपने पुराने 'सरदार' का स्वागत करते हुए उसे वड़ा संकोच हो रहा था। मैं इधर-उधर घूमा। लड़के आपस में हँसने और वातें करने लगे।

"साहव, जरा दफ्तर में चलेंगे ?" जोजि ने प्रार्थना की। मैं धीरे से कमरे में गया। अभी तक वह मुझे अपना ही लग रहा था। मेरी-टेवुल साफ कर ली गयी थी। उसके वीचोवीच हमारे पहले (पुराने) कारखाने का एक लकड़ी

का चित्र (मॉडेल) रख दिया गया था। वह हूबहू था, किन्तु उसमें एक सुधार कर दिया गया था। उसके छोटे-से दरवाजे पर एक पटिया लगी हुई थी, जिस पर लिखा था :

"कॉलोनी इलेक्ट्रिक पॉवर एण्ड फिशिंग कम्पनी,
पहले सेठ—नेड फर्ग्यूसन।"

यह मॉडेल मेरे लिए बनवाया गया था और उसे मुझे अपने साथ अमेरिका ले जाना था। वह एक अद्भुत कारीगरी का नमूना था। मैं अपने आदमियों के सामने खड़ा हुआ और मेरे साथ मेहनत करनेवाले मेरे मैले-कुचैले, थके-माँदे कोढ़ी इंजीनियरों और मजदूरों पर मैंने नजर घुमायी। वे मेरे शब्द सुनने की राह देख रहे थे। मैंने बोलने के लिए मुँह खोला। किन्तु किसी प्रकार मुँह से शब्द निकल ही नहीं रहे थे। फिर बहुत जोर लगाकर टेबुल पर हाथ मारा और चिल्लाया :

"जाओ, यहाँ से भागो, अपना काम करो।"

जोर से हँसते हुए सब बिखर गये। केवल जोजि और मैं रह गये।

"आप जायँगे, तब इसे स्टीमर पर पहुँचा देंगे साहब।"—उसने कहा।

× × ×

मैं घर पर पहुँचा, तो 'डॉन जॉन' स्टीमर की सीटी दूर से धीरे-धीरे सुनाई दे रही थी। अब मुश्किल से एक घण्टा रहा था। मैंने कुत्तों को अपने कमरे में बुला लिया और दरवाजे बन्द कर दिये। फिर मैं गड्ढा खोदने के लिए अकेला निकला। टॉमस कहीं नहीं दिखा। मैं मेमी को बाहर लाया और उस पर हाथ फेरते-फेरते उसे बारीक सूई चुभो दी। डॉ० राबिनो ने मुझे विश्वास दिलाया था कि कुत्तों को कुछ भी मालूम नहीं होगा। और काम तुरन्त और शान्ति के साथ हो जायगा। पर क्या इतनी जल्दी !

मैंने उसका शव गड्ढे में रखा और ऊपर से मिट्टी डाल दी। मुझे चक्कर आ रहे थे, पर विश्राम के लिए समय नहीं था। शाग के पास गया। उस पर झुका। तब उसने आँखें ऊपर करके देखा और फिर बन्द कर लीं और लम्बी साँस लेकर गिर पड़ा। "भगवान् करें और मेरा छुटकारा भी इसी प्रकार जल्दी हो जाय !"

कुछ देर तक मैं अपने लगाये ओढौल के नीचेवाली मिट्टी के ढेर की तरफ देखता रहा। टॉमस का अभी तक कहीं पता नहीं था। मुझे निश्चय था कि वह कहीं छिपकर यह सब देख रहा होगा। छोटे स्टीमर ने लम्बी सीटी लगायी। इसका अर्थ यह था कि वह घाट पर पहुँच रहा है। मैं खड़ा हुआ और अपने बगीचे की ओर देखने लगा। बड़ी हिम्मत कर शाग और मेमी से विदा ली। टॉमस पोर्च में खड़ा राह देख रहा था।

"आपका सामान तैयार है साहब ! जहाज पर ले जाऊँ ?"

"नहीं टॉमस, मैंने दूसरा विचार किया है। तुझे समझना है कि मैं यहीं रहूँगा। जब तक कारमन के साथ रहने जाने के लिए तुझे कूलियन न छोड़ना पड़े, तुझे यहीं रहना है।"

यों टॉमस बहुत बोलता था, किन्तु आज उसकी भी जबान बन्द हो गयी। फिर भी इतना बोले बगैर उससे नहीं रहा गया :

"आपकी कृपा है साहब, यह घर सदा आपका ही रहेगा।"

"जब तू यहाँ से जायगा, तब तेरे लिए मैंने कुछ प्रबन्ध कर दिया है। मुख्याधिकारी यह जानते हैं।"

एक लड़का सीढ़ियों के पास आया। उसके हाथ में डॉ० टाबोराडा की चिट्ठी थी।

"हमारा कार्यक्रम बदल गया है। सीधे बालाला के घाट पर से आप स्टीमर पकड़ें, इसके बदले हमने निश्चय किया है कि आप कोढ़ीग्राम के छोटे घाट पर से किश्ती पर सवार हों। वहाँ से आपको स्टीमर पर पहुँचा दिया जायगा। सामान की चिन्ता न करें, आधे घण्टे के अन्दर घाट पर आ जायगा।"

कुछ षड्यंत्र है ! किन्तु मैं कुछ भी नहीं कर सकता था। आधा घण्टा। घर में, चबूतरे पर, बैठक में और रसोई घर में हो आया। मेरा यह घर ! रोग, एकान्त, निराशा और अन्य सब चीजों से झगड़कर मैंने इसे बनाया। मुझे भी उस पर गर्व हो रहा था।

डॉन जॉन की छोटी सीटी सुनायी पड़ी। मेरा आधा घण्टा हो गया। टॉमस दरवाजे पर खड़ा था। इतने में 'पों-पों' की कर्कश आवाज ने मेरा

ध्यान भंग किया। मैंने ऊपर देखा और जोर से हँस दिया। जोजि मेरी पुरानी—अब उसकी—मोटर लेकर आया था। यदि उसमें जोजी न होता, तो मैं उसे पहचान भी न पाता। मुख से पीठ तक उसे अनेक प्रकार से सजा दिया गया था। विविध रंग की पट्टियों और लाल-भूरे-सफेद-तिरंगी झण्डों से उसे सुशोभित किया गया था। इंजन के सामने दो झण्डे—एक फिलीपाइन्स का और दूसरा हमारा, अमेरिका का, सितारे और पट्टोंवाला झण्डा—खड़े फहरा रहे थे। इंजन के ठीक ऊपर एक गत्ते पर 'यात्रा सफल हो' इस आशय के शब्द लिखे थे। गाड़ी के दाहिनी और बायीं तरफ भी विसायान और टोबा लोकभाषाओं में तथा पीछे स्थानीय भाषा में यही शुभेच्छादर्शक शब्द लिखे थे। कोढ़िस्तान की सात हजार की आबादी में इन तीनों भाषाओं के प्रतिनिधि थे। मेरा कण्ठ भर आया। जोजि ने जोश में आकर एकाएक ब्रेक दबा दिया। गाड़ी बालू में कुछ धँसती हुई रुक गयी।

"मुझे आपको बन्दरगाह पर ले चलना है।"—उसने कहा और बाहर कूद पड़ा। सलाम किया और मेरे बैठने के लिए पीछेवाला दरवाजा खोल दिया। फाटक से बाहर निकलकर मैंने एक बार फिर घूमकर पीछे देखा।

"टामस बेटा, अलविदा! मैंने कभी बहुत प्रार्थना नहीं की। किन्तु अब रोज प्रार्थना करूँगा कि तेरी और कारमन की श्रद्धा जल्दी सफल हो और तुम दोनों का मिलन हो।"

बड़ी कठिनाई से उसने कहा : "अलविदा, साहब!"

कहीं रोना न आ जाय, इसलिए मैं हँसता रहा। पिछला दरवाजा मैंने जोर से खींचकर लगा दिया। जोजि को अगली बैठक पर ढकेल दिया और मैं उसकी बगल में बैठ गया। टॉमस ने विदाई का हाथ हिलाया। पों-पों करती हुई मोटर चल दी, टेकरी से नीचे उतरी और रिझाल चौक से होती हुई भीतर के समुद्र के घाट पर आ पहुँची।

सारे रास्ते सूनसान थे। दिन में ऐसा कभी नहीं होता। किन्तु जब किनारे की तरफ हम मुड़े, तो कारण समझ में आया। लोग वहाँ एकत्र हो गये थे। वानर-सेना (बॉय स्काउट्स) और स्वयंसेविकाओं की कतारें रास्ते के दोनों

तरफ खड़ी थीं। उनके सामने से हम गुजरे, तो उन्होंने अदव के साथ सलाम किया। घाट पर वैण्ड खड़ा था। ज्यों ही जोजि ने मोटर को रोका, त्यों ही 'जय जय सरदार' की धुन छेड़ दी। लोगों ने हाथ हिलाये और जय-घोप किया। छोटी किश्तियों, तरापे आदि से वन्दरगाह भर गया था। सवसे अधिक किश्तियाँ और वाँस लकड़ी के तरापे ही थे। प्रत्येक पर विविध रंगों की झण्डियाँ फहरा रही थीं। कौन्सिल के अध्यक्ष—सेवेस्टियन लानोसे ने भाषण दिया। कारखाने से टापू को जो लाभ हुए, उनका तथा हमारे वीच जो मधुर सम्वन्ध कायम हो गये थे, उनका इसमें संक्षेप में जिक्र था। कोढ़िस्तान के निवासी किश्तियों में एकत्र जनता, वानर-सेना, स्वयंसेविकाएँ आदि की तरफ हाथ से इशारा करते हुए और सवका समावेश करते हुए उन्होंने कहा : "हम सवको आपकी वड़ी याद आयेगी।"

मैंने जवाव दिया। वह भाषण नहीं था। अपने जीवनभर के साथियों के वियोग से हृदय में जो दु:ख हो रहा था, उसका कुछ उल्लेखमात्र था। मेरे हृदय की स्थिति को सव जान गये। मेरा भाषण समाप्त होने पर क्षणभर सभी शान्त रहे। इसके वाद अध्यक्ष, पुलिस के मुख्य अधिकारी और जोजि मुझे वोट पर ले गये। पुलिस के शेष आदमी हमारी वोट के लिए किश्तियों के वीच से रास्ता वनाने में लग गये। वोट का इंजन चला। खलासियों ने रस्से खींच लिये और धीरे-धीरे हम किनारे से दूर हटने लगे। वैंड अमेरिका का झण्डा-गीत गा रहा था। मैं वड़ी कठिनाई से अपने तौल को सँभालकर हाथ हिलाकर सवसे विदा माँग रहा था। किनारे और किश्तियों में से जयघोप उठा। हमारी वोट के वरावर आने के लिए किश्तियाँ जोर से डाँड मार रही थीं। इस प्रकार इस विजयी नौसेना के वीच से निकलकर मैंने कूलियन के कोढ़िस्तान का अंतिम दर्शन किया।

दस मिनट के अन्दर मैं 'डॉन जॉन' पर पहुँच गया। पिछली डेक पर मेरे लिए प्रवन्ध किया गया था। मेरा सारा सामान पहले ही आ पहुँचा था। कट-घरे पर खड़े रहकर मैंने वालाला की गोदी पर नजर डाली। कैसा आश्चर्य ! मैंने देखा कि लगभग एक-एक डॉक्टर तथा नर्स, मेन्सन, फादर, सिस्टर विक्टरी तथा उनकी साथिनें—मुझे लगता है कि नीरोगी वस्ती का एक-एक आदमी,

जो हमारी सेवा में नियुक्त था, मुझे विदा देने के लिए आया हुआ था। डॉ० टावोराडा और डॉ० राविनो ने सबसे पहले मुझे कठघरे पर देखा और अपने हाथ हिलाने लगे। फिर सबके हाथ उठे। मेरे हृदय का हाल क्या बताऊँ! मेरे अन्दरवाला पुराना सैनिक जाग उठा। मुझे भान भी नहीं रहा। सिपाही की तरह अकड़कर मैं खड़ा हो गया और हाथ उठाकर सबको सलामी कर दी। उसी क्षण रस्से जल में फेंक दिये गये और स्टीमर धीरे-धीरे किनारे से दूर हटने लगा। कारखाने की सीटी चीत्कार कर रही थी और जमीन पीछे हटती जा रही थी। गोदी पर खड़े आदमी छोटे होते जा रहे थे।

इस छोटे से टापू पर एक मनुष्य के पचीस वर्ष बीत गये—इसका अर्थ क्या है? कठघरे के पास खड़ा-खड़ा मैं यही बात अपने दिल में बार-बार सोचता जा रहा था। जबाब अंदर ही था। वह धीरे-धीरे निकला। जीवन—चाहे वह किसी तरह बीते—है एक गूढ़ वस्तु। वह जैसा भी मिला हो, उसे स्वीकार-कर लगातार लड़ते रहना चाहिए, हारना नहीं। पचीस वर्ष के जीवन ने मुझे यही सिद्धान्त पढ़ाया। एक कुष्ठालय में पचीस वर्ष के जीवन का सार ढूँढ़कर इस कोढ़ी ने यही पाया कि वह भी एक मानव ही है। पहले मानव—बाद में और सब। और मानव होने के नाते उसके लिए भी जीवन एक अमूल्य निधि है। नमस्ते, कूलियन!

◆◆◆

मैं घर जा रहा हूँ

:३३:

"मेरी प्यारी चरिता,

बुधवार को कारविल पहुँचूँगा। स्वास्थ्य-विभाग का एक आदमी मेरे साथ है। वह इसे डाक में डाल देगा।

मेरा खयाल है कि कूलियन छोड़ने से पहले तुम्हें मैंने जो पत्र दिया था, वह तुम्हें उत्साह से शून्य लगा होगा। इतने वर्ष जहाँ बिताये, वहाँ के जीवन से विदा लेना आसान नहीं था। किन्तु आज मैं अधिक उमंग के साथ यह पत्र लिख रहा हूँ। यह है तो विचित्र। लेकिन अपना जीवन ऐसा ही लग रहा है, मानो कोई विचित्र विजय-यात्रा की हो। एक वाक्य मेरे मन में बराबर घूम रहा है। मैं घर जा रहा हूँ—मैं घर जा रहा हूँ। मनीला के लिए रवाना होते समय 'डॉन जॉन' का इंजन बड़बड़ाया। तब से यह मेरे दिमाग में चक्कर लगा रहा है। मनीला से जब मैं फौजी जहाज में बैठा, तब उसके राक्षसी यंत्रों ने भी यही मंत्र जारी रखा। मनीला से सानफ्रान्सिस्को की लंबी यात्रा में अपनी एकांत कैबिन में पड़ा-पड़ा यही मन्त्र मेरे कानों में गूंज रहा था। इस फास्ट ट्रेन के पहिये भी ध्वनि रट रहे हैं—'मैं घर जा रहा हूँ—मैं घर जा रहा हूँ।'

प्रवास ने मुझे विचार करने के लिए एकान्त दिया था। एकान्त—क्योंकि मेरे पास कौन आनेवाला था? इस एकान्त में मैंने अपने पिछले मृत-जीवन का हिसाब लगाया। और क्या पाया? सबसे पहली चीज—मानसिक कष्ट! एक प्रकार का पागलपन! इसके बाद फिर मानसिक स्थिरता आयी। किन्तु यह स्थिरता पहले जैसी नहीं थी। बड़ी दुनिया के बीच मेरी छोटी-सी दुनिया की यह स्थिरता थी।···माया—प्रेम! चरिता, इसका स्मरण दूसरी सब चीजों से ऊपर उभर आता है। प्रेम—अपने रोगियों के प्रति—हमारी सेवा करनेवालों का। हमें नीरोग करने की भावना से प्रेरित होकर, संसर्ग के

छूत के खतरों को उठाकर भी, केवल सेवा के खातिर हमारे साथ खतरे से भरा संसर्ग करनेवाले, कभी न थकनेवाले डॉक्टरों और नर्सों का प्रेम! फिर इस प्रेम में कितना आश्चर्य भरा हुआ था। एक चमत्कार देखने का सौभाग्य आपको और मुझे भी मिला है। हजारों वर्षों से जिसकी खोज चल रही थी, वह उपचार अब हाथ में आता दिख रहा है। प्रारंभ में यह साधना कितनी कष्टदायक थी और कितनी कठिनाई से हम इसे सहते थे? तथापि अभी भी धीरज की जरूरत तो है ही। और यह धीरज तो नीरोग होने की कच्ची आशा पर ही टिक सकता है। क्योंकि अभी तक भी यह निश्चय तो नहीं कि आदमी नीरोग हो ही जाता है। किन्तु जीवित मृत्यु को आगे बढ़ने से रोकने की संभावना मात्र है। इसके बाद सैकड़ों स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों को इस शापित नगरी में से बाहर सामान्य दुनिया में जाते हमने देखा है। अन्त में आप भी गयीं। जो लोग छूटकर गये हैं, उनके बीच आप काम कर रही हैं। इसलिए दूसरों की अपेक्षा आप अधिक अच्छी तरह जान सकती हैं कि घर पहुँचने के आनन्द में लोग इस बात को भूल जाते हैं कि अपना स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए कुछ सावधानी रखनी पड़ती है। जो भूल करते हैं, उन्हें फिर कोढ़िस्तान लौटना पड़ता और उपचार करवाना पड़ता है। फिर या तो मुक्ति मिल सकती है या सारा जीवन वहीं बिताना पड़ता है। इस तरह के कितने ही डर हैं। फिर भी हम जितने दिन वहाँ रहे, इस बीच कितने ही लोग वापस गये। यही बात उत्साहजनक है, क्योंकि इससे पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था।

लोगों को वापस जाते देखकर हम अनेक बार उत्साह में आकर बातें करते कि इस तरह की जीवित मृत्यु की संभावना ही मिट जाय, वह दिन हम देख सकेंगे। अखण्ड लगन से काम करनेवाले डॉक्टर पचास नहीं, तो सौ वर्ष बाद सही, ऐसा अधिक निश्चयात्मक उपचार जरूर ढूंढ़ निकालेंगे।

मेरे दिल में कम-से-कम इतना समाधान तो है चरिता कि जिस जन्म-भूमि को देखने की आशा मैंने एकदम छोड़ दी थी, उसे इन खिड़कियों में से मैं फिर देख रहा हूँ। मेरे हृदय में इसका आनन्द हो रहा है।

खेतों, विशाल मैदानों और छोटे-छोटे शहरों पर से होती हुई हमारी

गाड़ी वड़ी तेजी से गुजर रही है। यह सारा दृश्य मेरी जन्मभूमि है। मेरा स्वदेश है। कई वार—खास तौर पर आपके चले जाने के वाद मैंने इन्हें अपने सपनों में देखा है। भूत-प्रेत की भाँति अपनी प्यारी भूमि पर मैं अनेक वार विचरण करता। कैदखाने में मनुष्य को घर के सपने आया करते हैं। आज मैं मुक्त हूँ।

सेवक खाना लाता है, तभी मेरे डिब्बे का दरवाजा खुलता है। अगर वाहर के लोगों को मालूम हो जाय कि इस डिब्बे में कौन है, तो उनके दिलों में भय और घवराहट छा जाय। किन्तु वे यह जान नहीं पाते। अधिकारी इसका पूरा ध्यान रखते हैं।

शरीर से अभी मैं कैद में ही हूँ। किन्तु असली 'मैं' तो निकल भागा है। अव मैं मुक्त हूँ। मेरा जीव यहाँ के खेतों, जंगलों और शहरों में घूम रहा है। मैं फिर उस यौवन का अनुभव कर रहा हूँ, जो हमारे झण्डे के नीचे पूर्व के संसार में गया था। भय, निराशा और पीड़ा के वे सभी वर्ष अव मेरी स्मृति से लुप्त हो गये हैं। कल यह ट्रेन उसी शहर के वीच से मुझे ले जायगी, जिसमें मेरा जन्म हुआ था। जिस झरने के पास टॉम और मैं मछली पकड़ने के लिए जाते तथा जंगल की जिस सँकरी पट्टी में हमारा दल दुवले-पतले शिकारी कुत्तों को लेकर खरगोशों के पीछे पड़ जाता और अगर किस्मत सीधी होती, तो मरने का ढोंग किये पड़े हुए या पकड़ में आये खरगोश का शिकार कर भी लेता—शायद ये स्थान भी मुझे दिख जायँ। शहर के पास-वाले खेत, पानी की टंकी, स्टेशन से जानेवाली आम सड़क, वूढ़ा वॉट्स, उसकी टूटी-पुरानी गाड़ी और मरियल घोड़ा विलियर्ड रूम के ऊपर-वाला मैंजेस्टिक होटलवाला दुमंजली मकान—ये सव तो शायद अव नहीं रहे होंगे। फिर भी मुझे तो सव दिखेंगे ही। यदि जल्दी करूँगा, तो रेलवे लाइन के पूर्व आधे मील पर मेपल-कुंज के वीच की छोटी टेकरी पर हमारा मकान भी दीख जायगा। वह लम्बा-चौड़ा मकान, जो तीन पुश्तों से हमारा निवास रहा है।

जालीदार खिड़की से सिर लगाकर मैं वैठा हूँ। शाम का समय है। मैदान काले पड़ते जा रहे हैं। मैं उन पर अपनी नजर दौड़ा रहा हूँ। मुझे अपने सपने

आकार ग्रहण करते दीख रहे हैं। मेरे सामने प्रियजनों की मूर्तियाँ खड़ी हो रही हैं। मेरे ही षड्यंत्र के कारण ये सब समझ रहे हैं कि मैं तो मर चुका हूँ। मेरी माँ ! एक दिन उससे बगैर मिले ही मैं घर से निकल भागा। उसने माना था कि मैं तो सिर्फ एक-दो दिन के लिए ही कहीं जा रहा हूँ। झुर्रियों पड़ा हुआ उसका चेहरा मेरी आँखों के सामने है। उसकी आँखें मेरी आँखों में देख रही हैं। मेरा खयाल है कि सही बात सबको मालूम हो गयी है। किन्तु यह सब देखने के लिए मुझे इतनी नजदीक आना पड़ा है।

आपको पता है कि मेरे प्रियजनों में अब केवल—मावेल और जॉन बचे हैं। किन्तु कैसी विचित्र बात है कि वे मुझे कम-से-कम जीवित लगते हैं। जब कि माता-पिता और टॉम मेरे पास हैं, ऐसा लग रहा है। वे सब तुम्हें चाहते होते चरिता !

प्रिये, मेरी चन्द्रमुखी ! एक बार तो मुझे ऐसा लगा कि जब मैं लौटूँगा, तो आपको भी साथ लाऊँगा। किन्तु आज मुझे आपको संसार के दूसरे छोर पर छोड़ना पड़ रहा है।

अब थक गया हूँ। मुझे लेट जाना चाहिए। 'गुड नाइट' प्रिये !

—नेड।"

◆◆◆

दक्षिण अमेरिका के एक समाचार-पत्र से

न्यू ऑरलियां, लूजियाना

कल रात शहर में पहुँचनेवाली एक्सप्रेस के एक डिब्बे में से एक वृद्ध सैनिक नेड लैंगफर्ड का शव उतारा गया। उन्होंने स्पेन-अमेरिकन युद्ध में भाग लिया था। फिलीपाइन में सरकारी काम करते हुए लैंगफर्ड को कोढ़ का रोग लग गया। फिलीपाइन के कोढ़िस्तान—कूलियन से कारविल के कुष्टालय में उन्हें ले जाया जा रहा था और वहीं वे जा रहे थे। दूसरे मुसाफिरों की सुरक्षा के खयाल से इस पुराने सैनिक को एकान्त में ही अलग रखा गया था। उनके साथ स्वास्थ्य-विभाग का जो अधिकारी यात्रा कर रहा था, उसने वताया कि लूजियाना स्टेट में ट्रेन ने प्रवेश किया, उसके कुछ ही देर वाद लैंगफर्ड की मृत्यु हो गयी। इससे पहलेवाले दिन तो इनका स्वास्थ्य अच्छा मालूम हो रहा था। किन्तु जव ट्रेन इनके गाँव के पास से गुजरी और जिस मकान में इनका जन्म हुआ था, उसे उन्होंने देखा, तव वे वहुत भावनावश हो गये। प्रकट है कि वर्षों के कठिन परिश्रम से और पीड़ा-भार से जर्जर उनके हृदय की गति एकाएक रुक गयी।

लैंगफर्ड की अन्तिम क्रिया सैनिक सम्मान के साथ की जायगी। वेटन-रूज के राष्ट्रीय कब्रस्तान में उन्हें दफनाया जायगा। महारोग के शिकार वने दूसरे अमेरिकन सिपाहियों को भी वहीं दफनाया गया है।

महारोग संबंधी कतिपय प्रश्नोत्तर

प्रश्न : संसार में कितने महारोग हैं ?

उत्तर : कुछ भागों को छोड़कर अभी इसकी ठीक गिनती नहीं हो पायी है। किन्तु सावारणतया अनुमान लगाया जाता है कि इनकी संख्या तीस लाख के करीव होगी।

प्रश्न : महारोग कहाँ-कहाँ हैं ?

उत्तर : सवसे अधिक पूर्व और दक्षिण एशिया में। खास तौर पर चीन, भारत और मलयद्वीप में। इसके अलावा अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के भी कुछ भागों में है। किन्तु इक्के-दुक्के रोगी तो संसार के सभी भागों में मिल जाते हैं। गरम और समशीतोष्ण देशों में इसका उपद्रव अधिक है। लेकिन आइसलैण्ड जैसे अति शीत देश में भी यह है।

प्रश्न : भारत में इसका फैलाव कहाँ-कहाँ और कितना है ?

उत्तर : सन् १९३१ की जनगणना में इन रोगियों की संख्या १,४८,००० वतायी गयी है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि सचमुच देश में केवल इतने ही रोगी होंगे। यह गिनती वड़ी अधूरी होती है। वास्तविक संख्या इससे शायद दसगुनी तक हो अर्थात् १५ लाख। प्रत्यक्ष जाँच में कुछ भागों में दो से वीस प्रतिशत तक यह पाया गया है।

वर्मा में इसका जोर अधिक है। आसाम की दोनों घाटियों में इसका उपद्रव है। विहार और वंगाल के वीच, छोटा नागपुर और गंगा के किनारे-किनारे एक लम्वी दक्षिणोत्तर पट्टी चली गयी है, जिसमें इसका फैलाव अधिक है। यह पट्टी उड़ीसा और मद्रास इलाके के गोदावरी जिले तक दक्षिण में चली गयी है। इसके अतिरिक्त अरकाट, सेलम, त्रिवांकुर, कोचीन और मलावार में भी इसका प्रवेश है। मध्यप्रदेश के छत्तीसगढ़ विभाग में तथा विहार में भी इसका इतना ही जोर है। नेपाल, शेष विहार और उत्तर प्रदेश में यह कम

है, किन्तु है जरूर। कश्मीर में कदाचित् ही दिखाई पड़ता है। कोढ़ी जिलों के मजदूर दूसरे जिलों में जाते हैं, इस कारण मुक्त प्रदेशों में भी इसका संसर्ग फैल जाता है।

प्रश्न : भारत में महारोग का निवारण करनेवाली संस्थाएँ कौन-कौन सी हैं ?

उत्तर : संसार के अनेक देशों में अनेक वर्षों से निष्ठा और सेवाभाव से कोढ़ियों के लिए यथोचित काम करनेवाली एक संस्था है। नाम है—'मिशन टु लेपर्स'। इसकी स्थापना सन् १८७४ में अम्बाला में बहुत छोटे रूप में हुई थी। किन्तु आज वह इतनी बढ़ गयी है कि उसकी वार्षिक आय १४ करोड़ रुपये से भी ऊपर है। भारत में इसके अपने ३७ कुष्ठालय हैं। इसके अतिरिक्त वह १५ कुष्ठालयों की मदद करती है। इन सबमें कुल मिलाकर दस हजार रोगियों के रहने, खाने-पीने और औषधोपचार की व्यवस्था है। कोढ़ी माता-पिता के बच्चोंवाले घरों में लगभग ८०० बच्चों का पोषण हो रहा है। इनके अतिरिक्त छह हजार रोगी बाहर रहकर प्रतिवर्ष इलाज करवा रहे हैं। लगभग आठ लाख रुपये यह संस्था भारत में खर्च करती है। इसका मुख्य कुष्ठालय पुरुलिया (बिहार) में है। यह संस्था ईसाई मिशनरियों की है।

इसके अतिरिक्त लंदन की 'लेप्रसी रिलीफ असोसियेशन' की भारतीय शाखा भी महारोग-निवारण का काम करती है। यह संस्था राज्याश्रित है और इसकी वार्षिक आय तीन लाख से ऊपर है। सरकारी अस्पतालों द्वारा इसका काम चलता है। कलकत्ता के 'स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन' में महारोग-संशोधन का एक खास विभाग है। वह इस संस्था की सहायता से ही चल रहा है। महारोग का इलाज करनेवाले डॉक्टरों को प्रशिक्षण देने तथा जन-साधारण में इस रोग के विषय में ज्ञान-प्रचार का काम यह करती है।

इनके अलावा एक और संस्था है—महारोगी सेवा मण्डल, वर्धा। यह एक छोटी-सी, परन्तु पूर्णतया स्वतंत्र संस्था है। वर्धा तहसील में यह कितने ही दवाखाने और एक महारोग आश्रम दत्तापुर में चला रही है। श्री मनोहर दिवाण इसके संचालक हैं। इस कार्य के लिए अपना संपूर्ण जीवन अर्पण करने-वाले ये शायद सबसे पहले भारतीय हैं।

सरकार इस विषय का एक मासिक—'लेप्रसी इन इण्डिया' निकालती है। उसमें इस विषय की अधिक जानकारी मिल सकती है।

प्रश्न : क्या अमेरिका में महारोग है ?

उत्तर : वहुत दक्षिण में कुछ है। उत्तर में कहीं-कहीं पाया जाता है, पर वह प्रायः बाहर से ही आया हुआ होता है। अमेरिका में महारोगियों की कुल संख्या कोई एक हजार के लगभग मानी जाती है। वहाँ के स्वास्थ्य-विभाग द्वारा लूजियाना स्टेट के कारविल ग्राम में एक नमूनेदार कुष्ठालय चलाया जा रहा है। उसमें लगभग ३७० रोगी रहते हैं और अच्छी संख्या में स्वास्थ्य-विभाग के सेवक काम करते हैं। उपचार तथा अनुसन्धान के लिए एक अद्यतन ढंग की प्रयोगशाला भी वहाँ है। हवाई द्वीपों में प्युअरटोरिको तथा वरजिन द्वीपों में सेण्ट क्रोइज में कुष्ठालय हैं।

प्रश्न : ब्रिटेन में महारोग है ?

उत्तर : अक्तूबर १९४० के 'लेप्रसी रिव्यू' नामक पत्र में दिये आँकड़ों के अनुसार उस समय ३२ रोगी वहाँ विशेषज्ञों की देखभाल में उपचार करवा रहे थे। 'सेन्ट जाइल्स' वसतिगृह में महारोगियों की सँभाल होती है। 'ब्रिटिश एम्पायर लेप्रसी रिलीफ असोसियेशन' भी रोगियों के लिए विशेषज्ञों का उपचार उपलब्ध करवा देने तथा अन्य प्रकार की मदद करने का काम करता है।

प्रश्न : इस रोग की उत्पत्ति का कारण क्या है ? कुछ पता लगा है ?

उत्तर : अब सभी इस बात को स्वीकार करते हैं कि यह रोग माइको बैकटेरियम् लेप्री (Mycobacterium Leprae) नामक कुष्ठ जन्तुओं से पैदा होता है। इसका पता जरहार्ड आरमावर हैनसन नामक डॉक्टर ने ईसवी सन् १८७१ में लगाया।

प्रश्न : इस जन्तु की परवरिश शरीर के बाहर की जा सकती है ?

उत्तर : हैनसन के आविष्कार के बाद शरीर से बाहर स्वतंत्र रूप से इसके पालने के सैकड़ों प्रयत्न किये गये। किन्तु एक में भी निश्चित सफलता नहीं मिल सकी है।

प्रश्न : क्या यह रोग आनुवंशिक है ?

उत्तर : डॉक्टर सर्वानुमति से कहते हैं कि यह आनुवंशिक नहीं।

प्रश्न : क्या यह सच है कि कोढ़ की छूत लगने के वर्षों बाद कहीं डॉक्टरों के पहचानने लायक लक्षण वह प्रकट करता है ?

उत्तर : हाँ, तीस-तीस वर्ष बीच में बीत गये, ऐसे भी उदाहरण मिले हैं। किन्तु साधारणतया इतना समय नहीं बीतता। कहा जाता है कि यह अन्तर औसतन चार-पाँच वर्ष का होता है। कभी-कभी बहुत जल्दी भी पहचान में आ जाता है।

प्रश्न : क्या यह प्राणघातक होता है ?

उत्तर : सामान्यतः तो नहीं। अक्सर बीमार किसी दूसरे कारण से ही मरता है। लेखक ऐसे आदमियों को भी जानता है, जो चालीस वर्ष से इस रोग से पीड़ित हैं और फिर भी जी रहे हैं।

प्रश्न : यह रोग पीड़ा देता है ?

उत्तर : साधारणतया रोगी को रोग से तो बहुत कम तकलीफ होती है। किन्तु ज्ञान-तंतुओं पर जब इसका हमला होता है, तब बड़ी तीव्र पीड़ा होती है। इसी प्रकार बीच-बीच में जब पीड़ा के दौर (लेपर रिएक्शन) आते हैं, तब बड़ी बेचैनी और दुःख होता है। यह इस रोग का खास अनित्य लक्षण होता है। कभी-कभी यह हमला कुछ ही दिन टिकता है और कभी-कभी महीनों तक इसका शमन नहीं होता। कभी यह दौर नियत अवधि में और कभी-कभी अनियमित रूप से आता है।

प्रश्न : महारोग कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर : इसकी दो मुख्य अलग-अलग किस्में हैं। पिछली बार मिस्र देश में जो परिषद् हुई थी, उसमें इन्हें सौम्य (Neural) कुष्ठ और कालकुष्ठ (Lepromatous) कहा है। दूसरी किस्म को पहले त्वचा-कुष्ठ (Cutaneous) कहते थे। और भी एक प्रकार है। उसे अलग किस्म के रूप में नहीं गिनाया गया। क्योंकि उसमें दोनों के लक्षण एक साथ प्रकट होते हैं। इसलिए उसे संयुक्त या मिश्र कुष्ठ कहते हैं। साधारण स्वास्थ्य की दृष्टि से 'गुप्त कोढ़' और 'खुला कोढ़' भी इन्हें कहा जा सकता है। गुप्त कोढ़ संक्रामक नहीं माना जाता।

प्रश्न : यह रोग नष्ट किया जा सकता है ?

उत्तर : जब रोगी में इतना सुधार हो जाता है कि उसके खून में इस रोग के जन्तु मिलना बन्द हो जाता है, तब उसे जन्तु-मुक्त कहा जाता है। डॉक्टर लोग इसे रोग-मुक्त या नीरोग कहने के बजाय प्रायः रोगरुद्ध या रुका हुआ कहते हैं।

प्रश्न : इसकी छूत कैसे लगती है ?

उत्तर : इसका अभी निश्चित पता नहीं लग सका है। किन्तु नीरोगी और रोगी मनुष्य के स्पर्श-व्यवहार से यह लगता है।

प्रश्न : क्या यह रोग झट से लग जाता है ?

उत्तर : महारोग के सम्बन्ध में युगों से जो भ्रम चला आ रहा है, वह निराधार है। रोगी और नीरोगी स्त्री-पुरुषों के सम्बन्ध से भी यह शायद ही कभी लगता है। साधारणतः माना जाता है कि ऐसे संक्रमण के उदाहरण पाँच प्रतिशत से अधिक नहीं मिलते। किन्तु रोगी के घर में रहनेवाले बच्चों को इसके लगने का बहुत अंदेशा होता है।

प्रश्न : क्या छूत से निर्भय रहकर नीरोगी आदमी रोगी मनुष्य के साथ काम कर सकता है ?

उत्तर : संसार के अनक कुष्ठालयों में हजारों नीरोगी आदमी—डॉक्टर्स, नर्सें तथा अन्य सेवक दिन-रात रोगियों में काम कर रहे हैं। उनमें छूत लगने के उदाहरण बहुत कम पाये गये हैं। दूसरे संक्रामक रोगों में जितनी सावधानी बरती जाती है, वह इसमें भी अवश्य ही बरती जाती है।

प्रश्न : जनता में इस रोग के बारे में इतना भय और घृणा क्यों है ?

उत्तर : इसका कोई सन्तोषजनक जवाब नहीं मिलता। क्योंकि लोगों में इसके बारे में जो इतनी जबरदस्त घृणा है, उसके लिए कोई बलवान् कारण नहीं दिखाई देता। इसकी छूत लगने की क्रिया इतनी धीमी होती है कि यदि एक सामान्यतः नीरोग मनुष्य उसकी लस ले या रोगियों के संपर्क में रहकर जान-बूझकर रोग के जंतु लेने का प्रयत्न करे, तो भी प्रायः उसे इसमें सफलता नहीं मिलेगी। जिसका रोग बहुत बढ़ गया है, ऐसे रोगी का दर्शन अच्छा नहीं होता। किन्तु यह तो बहुत से रोगों के विषय में कहा जा सकता है। फिर भी उन रोगों के बारे में समाज के अन्दर ऐसी सर्वव्यापक घृणा नहीं पायी जाती। अधिकांश

बीमारों के शरीर पर वाहरी चिह्न बहुत कम पाये जाते हैं या बिलकुल नहीं होते। फलाँ आदमी को चिट्ठियों के जरिये रोग लग गया या धोबी के यहाँ कपड़े दिये, उससे छूत लग गयी आदि विचित्र किस्से सुने जाते हैं। किन्तु यह निरा अज्ञानजनित वहम है। (लेखक एक ऐसे भी आदमी को जानता है, जिसने महारोग सम्बन्धी सिनेमा फिल्म को छूते समय दस्ताने पहन लिये थे।) इस रोग को और इसके शिकार बने लोगों को जो नाम दे दिया गया है, उसके साथ घृणा की कल्पना जुड़ गयी है। किन्तु सच पूछिये, तो इस रोग में खास तौर पर घृणा करने लायक कुछ नहीं है।

प्रश्न : इस घृणा को दूर करने के लिए क्या किया जाना चाहिए ?

उत्तर : रोग का नाम बदल देना एक परिणामजनक मार्ग है। मनीला में जो लियोनार्ड वूड स्मारक परिषद् हुई थी, उसमें किसीने सुझाया था कि इसका नाम 'हैनसन रोग' रख दिया जाय। संभव है कि इससे अधिक अच्छा नाम नहीं मिलेगा। सैकड़ों वर्षों से कोढ़ के साथ जो अनुचित भय और घृणा जुड़ गये हैं, उन्हें दूर करने में वर्षों लग जायेंगे। किन्तु इन कमनसीब भाइयों के लिए यह करना है अत्यन्त जरूरी।

प्रश्न : स्त्रियों और पुरुषों में से किसे यह रोग जल्दी लगता है ?

उत्तर : साधारण अनुभव यह है कि बीमारों की संख्या स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में डयोढ़ी है।

प्रश्न : महारोग के विरुद्ध छिड़ी लड़ाई में सबसे अधिक आशाजनक तत्त्व क्या है ?

उत्तर : लेखक का मत है कि कोढ़ के विज्ञान और रोग को रोकने के सिलसिले में वैज्ञानिक विधि से अध्ययन करने की तरफ जो ध्यान दिया जाने लगा है, यह एक बहुत बड़ा आशा का चिह्न है। इस विषय में इतनी दिलचस्पी अभी इधर कुछ वर्षों से ही बढ़ी है।